प्रश्नव पत्र 4 **यज्ञादि कर्म**

विषय सूची

खण्ड -01

इकाई 01 रूद्रमहायज्ञ -1

दशविधिस्नांन, क्षौरकर्म, कलशयात्रा एवं मण्ड_पप्रवेश पंचागपूजन।

इकाई 02 रूद्रमहायज्ञ - 2

आचार्यवरण, पुण्यायवाचन,नान्दीएमुख श्राद्ध एवं वेदीपूजन।

इकाई 03 रूद्रमहायज्ञ - 3

मण्ड पपूजन, वेदपूजन, दिक्पानलपूजन एवं द्वारपालपूजन।

इकाई 04 रूद्रमहायज्ञ - 4

लिंगतोभद्रपूजन एवं संकल्पित पाठवाचन

इकाई 05 रूद्रमहायज्ञ - 5

हवन, बलिविधान, पूर्णाहुति, उत्तपरपूजन एवं विसर्जन।

खण्ड -02

इकाई 06 विष्णुमहायज्ञ -1

दशविधिस्नापन,क्षौरकर्म, कलशयात्रा एवं मण्ड_पप्रवेश पंचागपूजन

इकाई 07 विष्णुमहायज्ञ - 2

आचार्यवरण, पुण्यावाचन, नान्दीएमुख श्राद्ध एवं वेदीपूजन।

इकाई 08 विष्णुमहायज्ञ - 3

मण्ड पपूजन, वेदपूजन, दिक्पानलपूजन एवं द्वारपालपूजन।

इकाई 09 विष्णुमहायज्ञ - 4

सर्वतोभद्रपूजन एवं संकल्पित पाठवाचन

इकाई 10 विष्णुमहायज्ञ - 5

हवन, बलिविधान, पूर्णाहुति, उत्त5रपूजन एवं विसर्जन।

खण्ड -03

इकाई 11 शतचण्डील एवं सहस्रचण्डी_यज्ञ

दशविधिस्ना न् क्षौरकर्म, कलशयात्रा एवं मण्ड_पप्रवेश पंचागपूजन

इकाई 12 शतचण्डील एवं सहस्रचण्डी_यज्ञ

आचार्यवरण, पुण्यावाचन, नान्दीएमुख श्राद्ध एवं वेदीपूजन।

इकाई 13 शतचण्डीा एवं सहस्रचण्डी-यज्ञ

मण्ड पपूजन् वेदपूजन, दिक्पायलपूजन एवं द्वारपालपूजन।

इकाई 14 शतचण्डीा एवं सहस्रचण्डी-यज्ञ

सर्वतोभद्रपूजन एवं संकल्पित पाठवाचन

इकाई 15 शतचण्डी एवं सहस्रचण्डी_यज्ञ

हवन, बलिविधान, पूर्णाहुति, उत्तरपूजन एवं विसर्जन।

खण्ड -04

इकाई 16 पुराणादियज्ञ-1

दशविधिस्ना न् क्षौरकर्म, कलशयात्रा एवं मण्ड_पप्रवेश पंचागपूजन

इकाई 17 पुराणादियज्ञ- 2

दशविधिस्ना न् क्षौरकर्म, कलशयात्रा एवं मण्डजपप्रवेश पंचागपूजन

इकाई 18 पुराणादियज्ञ- 3

आचार्यवरण, पुण्यायवाचन,नान्दीतमुखश्राद्ध।

इकाई 19 पुराणादियज्ञ- 4

मण्ड पपूजन् वेदपूजन, दिक्पानलपूजन एवं द्वारपालपूजन।

इकाई 20 पुराणादियज्ञ- 5

सर्वतोभद्रपूजन गौरीतिलकमण्डूल, पुराणपारायण एवं संकल्पितपाठवाचन।

खण्ड 1:

इकाई 01: रूद्र महायज्ञ 1

दश विधि स्नानानि

प्रस्तादवना

प्रस्तुदत इकाई मेंरूद्र महायज्ञ विधान में दश विधि स्ना न एवं क्षौर कर्म मण्डाप प्रवेश पंचाग पूजन पर प्रकाश डाला गया है।

उददेश्यद-

प्रस्तुदत्तइकाई के अध्ययन से यज्ञ की प्रारम्भिक शिक्षा का सम्पू र्णज्ञान प्राप्तं होगा।

प्रश्नु -

१. दश विधि स्ना न किसे कहतेहै।

२. मण्डप प्रवेश यात्रा का सविस्तार वर्णन कीजिए।

रूदमहायज्ञ

दसविधि स्नानः किसी भी याज्ञिक कर्म में लगने से पूर्व में किए गए ज्ञाता रात पाप से निवित्त के लिए दस विधि स्नाना का विधान है।

तीर्थेपर्वण्यनुष्ठानेसर्वपातकनाशनम् ।

भस्मादि विविधैर्द्रव्यैः स्नानं दशविधं चरेत् ।।

यस्मिन्कस्मिन्ननुष्ठानेवाह्यान्तरविशुद्धये ।

समग्रफलप्राप्त्यर्थ स्नानं दशविधंस्मृतम् ।।

तीर्थस्नाने तथा प्रायश्चित्तादिषु केचन दशविधस्नानानि कुर्वन्ति ।

सङ्कल्पः -अद्येत्यादि अस्मिन् अमुक तीर्थे स्थाने वा मम देहशुद्ध्यर्थं मनोदेहाश्रित सर्वविधदोष शुद्धयर्थं दशविध स्नानमहं करिष्ये ।

तीर्थ तथा यज्ञ स्थान पर दस विधि स्नान करने से देह तथा आत्मशुद्धि होती है। ऐसा मनीषियों का मत है।

अथ हेमाद्रि प्रोक्त स्नान सङ्कल्पः

श्रावण्यादिनैमित्तिकस्नानेप्रायश्चित्तेतीर्थस्नानादिषुचहेमाद्रिप्रोक्तं महास्नान सङ्कल्पं कुर्यात् ॥

स्वस्ति श्री समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारणस्य रक्षाशिक्षाविचक्ष-णस्य प्रणतपारिजातस्य अशेषपराक्रमस्य श्रीमदनन्तवीर्यस्यादिनारायणस्य अचिन्त्यापरिमितशक्त्या ध्रियमाणस्य महाजलौघमध्येपरिभ्रममाणानामनेककोटि

ब्रह्माण्डानामेकतमेऽव्यक्तमहदहंकारपृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशाद्यावरणैरावृते अस्मिन्महति ब्रह्माण्डखण्डेआधारशक्तिश्रीमदादिवाराह दंष्ट्राग्रविराजिते कूर्मानन्त वासुकितक्षक कुलिक कर्कोटक पद्म महापद्म शंखाद्यष्टमहानागैर्धियमाणेऐरावत पुंडरीककुमुदांजन पुष्पदन्त सार्वभौमसुप्रतीकाष्टदिग्गजोपरि प्रतिष्ठितानां अतल वितल सुतल तलातल रसातल महातल पाताल लोकानामुपरिभागे भूर्लोक भुवर्लोक स्वर्लोक महर्लोक जनोलोक तपोलोक सत्यलोकाख्य सप्तलोकानामधोभागे चक्रवालशैलमहावलय नागमध्यवर्तिनो महाफणिराजशेषस्य सहस्रफणा मणिमण्डलमण्डिते दिग्दन्ति शुण्डादण्डोदंडिते अमरावती अशोकवती भोगवती सिद्धवती गान्धर्ववती काञ्च्यवन्ती अलकावती यशोवतीति पुण्यपुरी प्रतिष्ठिते लोकालोकाचलवलयिते लवण इक्षु सुरा सर्पिः दधि क्षीरोदकार्णव परिवृते जम्बू प्लक्ष कुश क्रौञ्च शाक शाल्मलि पुष्कराख्य सप्तद्वीपयुतेन्द्र कांस्य ताम्रगभस्ति नाग सौम्य गन्धर्व चारणभारतेति नवखण्ड मण्डिते सुवर्णगिरि कर्णिकोपेत महासरोरुहाकार पञ्चशत्कोटि योजनविस्तीर्ण भूमण्डले अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका द्वारावतीति सप्तपुरी प्रतिष्ठिते सुमेरुस्वर्णप्रस्थ चण्डप्रस्थ निषधत्रिकूट रजतकूट ताम्रकूट हिमवद्विन्ध्याचलानां हरिवर्ष किंपुरुष भारतवर्ष योश्च दक्षिणे नवसहस्र योजन विस्तीर्णे मलयाचल सह्याचल विंध्याचलानामुत्तरे चांद्रसूक्तावतक रमणक महारमणक पाञ्चजन्य सिंहललंकेति नवखण्ड मण्डिते गङ्गा भागीरथी गोदावरी क्षिप्रा यमुना सरस्वती नर्मदा तापी चन्द्रभागा कावेरी पयोष्णी कृष्णावेण्या भीमरथी तुङ्गभद्रा ताम्रपर्णी विशालाक्षी चर्मण्वती वेत्रवती कौशिकी गण्डकी

विश्वामित्री सरयू करतोया ब्रह्मानंदा महीत्यनेक पुण्यनदी विराजिते भरतखण्डे भारतवर्षे जम्बूद्वीपे रामक्षेत्रे कूर्मभूमी साम्यवति कुरुक्षेत्रादिसमभूमौ मध्यरेखायाः पूर्वदिग्भागे श्रीशैलात्पश्चिमदिग्भागे श्रीकृष्णा वेण्या कावेरी मध्यदेशे तुङ्गभद्राया उत्तरे तीरे श्रीगोदावर्या दक्षिणे तीरे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे हेमकूट मातङ्गमाल्यवत् किष्किन्धा सहित पंचक्रोश मध्ये चम्पकारण्य नैमिषारण्य बदरिकारण्य कामिकारण्य दण्डकारण्यार्बुदारण्य धर्मारण्य पद्मारण्य जम्बुकारण्य समस्त पुण्यारण्यानां मध्यदेशे भास्करक्षेत्रे सकलजगत्स्रष्टुः परार्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथमदिवसे अह्नो द्वितीये यामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादि द्वात्रिंशत्कल्पानां मध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायम्भुवादि मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृत त्रेता द्वापर कलिसंज्ञकानां चतुर्णा युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमचरणे भरतवर्षे भारतखण्डे जम्बूद्वीपे रामक्षेत्रे परशुरामाश्रमे दण्डकारण्यदेशे श्रीगोदावर्याः पश्चिमदिग्भागेश्रीमल्लवणाब्धेः उत्तरे तीरे श्रीशालिवाहन शाके बौद्धावतारे प्रभवादि षष्टि संवत्सराणां मध्येऽस्मिन् वर्तमाने अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौतुरुष्क स्पृष्ट द्रव्योपभोग तुरुष्कस्पर्श तुरुष्कदेशनिवासादीनाम् कुग्रामवास वानिष्ठुर दुर्गृह दुर्भाण्ड दुर्भोजनापक्वापाक यत्नकटकान्न नखनिकृन्तन नदीलंघन समुद्रस्नान ब्राह्मणवृत्तिच्छेदन अभक्ष्यभक्षणानिमित्त भार्याविसर्जन ब्राह्मणद्वेष द्विजभेद मित्रभेद स्त्रीपुरुषभेद स्थूलसूक्ष्म जीव हिंसन क्रूरकर्मानृत लुब्ध कपि शुन चौर पाखंड नारी लंपट चाण्डाल शवास्थि स्पर्श गुंजनभक्षण लशुनभक्षण मसूरान्न भक्षण मार्जारोच्छिष्टभोजन पतित पंक्ति भोजन पतितसंभाषणादीनाम् बालस्तेय ऋणापाकरणानाहिताग्नि तापक्रय परिवेद भृतकाध्ययनादान भृत्याध्यापन परदार परवित्त वात्सल्य स्त्री शूद्र क्षत्रविट् बन्धुनिन्दार्थोपजीवन नास्तिक्य व्रतलोप कुप्यपशु स्वाध्याय त्याग स्तेयायाज्ययाजन पितृ मातृ सुतत्याग तडागाराम विक्रय कन्यासंदूषण परनिंदकया जन तत्कन्याप्रदान कौटिल्य व्रतलोपन स्वार्थक्रियारम्भ परस्त्रीनिषेवण स्वाध्यायाग्नि सुतत्याग बांधवत्यागेन्धनार्थ द्रुमच्छेदन स्त्री हिंसौषधिजीवन हिंस्रमंत्रविधान व्यसनात्मविक्रय शूद्र प्रेष्य हीनयोनि निषेवणानाम् परान्नपुष्टत्वा सच्छास्त्राधिगतप्राकाराधिकारित्व भार्याविक्रयादि अपपातकानाम् तथा एकादशाहादि

श्राद्धान्न भोजन शूद्रदत्त घृतादिभोजन आपोशनरहितभोजन यज्ञोपवीतरहितान्नभोजन परान्नभोजन रेतोमूत्रादि मृल्लोष्टभक्षण वैश्वदेव रहितादि दूषितान्नभोजन शूद्रादिम्लेच्छान्नभोजन पुंसवन सीमंतोन्नयनादि भोजन जातकर्मादिभोजन नीलवस्त्र परिधान भोजनोच्छिष्ट भोजन कुत्सितपंक्तिभोजन चाण्डाल कूप भांडोदकपान चांडाल स्पृष्ट जलक्षीरादिपान द्विजद्रव्यापहरण श्राद्धदिनेगमन दिवामैथुन उन्मादक द्रव्यभक्षण सूर्योदयास्त शयन पतितादि दुष्ट प्रतिग्रहप्रायश्चित्त द्रव्यप्रतिग्रह स्वनिषिद्ध वृत्तिधनार्जन मिथ्या ब्राह्मणक्रोधोत्पादन बलात्कारित म्लेच्छादि संसर्ग म्लेच्छ भाषण ब्राह्मणान्नाह्वान देवागारकृतेष्ट शिलादिहरण व्रतभङ्ग खरोष्ट्रादियान कृतोपकारविस्मरण विविध विद्योपजीवन परमसन्मानदूरीकरण गुणयुक्तस्यापमान करणाकाल भोजनादेश भोजनसार्वकालिक परद्वेष्याभिनिवेश परमार्थाचिन्तन यजनयाजन. होमदानान्तराय करणादि सर्वपापानां विनाशार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं देव ब्राह्मण सवितृ सूर्यनारायणसन्निधौ अमुकतीर्थे स्नानमहं करिष्ये ।। परस्परानुरक्तद्वेषोत्पादनेन्द्रधनुःप्रदर्शन श्रद्धनिमंत्रितशिवनिर्माल्यस्पर्शशिवद्रव्योपजीवन विष्णुद्रव्योपजीवनोपाधिकत्रैवर्णिक देवार्चन द्वेष्याभिचारण कूटमंत्र कूटहोमकरणपूज्यापूजनापूज्यपूजन परवृत्तिहरण शरणागत परित्राणाकरणकपटपरविवाहान्तरायकरण देवर्षि द्विज निन्दाकरण ।।

संस्नाना से पूर्व संकल्प - हाथ में कुश अक्षत तथा द्रव्य लेकर लिखित संकल्प को करना चाहिए।

भस्म- स्नानम्

ॐ प्रसद्य भस्मना योनिम् , अपश्च पृथिवीमन्ने। स सृज्य मातृभिष्टुं , ज्योतिष्मान्पुनराऽसदः ।।

मृत्तिका- स्नानम्

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे, त्रेधा निदधे पदम्।समूढमस्य पा सुरे स्वाहा।

गोमय -स्नानम्

ॐ मा नस्तोके तनये मा न ऽआयुषि , मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः । मा नो वीरान् रुद्र भामिनी, वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे।

गोमूत्र –स्नानम्

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।

ॐ आप्यायस्व समेतु ते, विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे। -

दधि -स्नानम्

ॐ दधिक्राव्णो ऽअकारिषं, जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।

सुरभि नो मुखा करत्प्र णऽ, आयू षि तारिषत्।

घृत -स्नानम्

ॐ घृतं घृतपावानः, पिबत वसां वसापावानः ।

पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽ आदिशो विदिशऽ , उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।

सर्वोषधि - स्नानम्

ॐ ओषधयः समवदन्त, सोमेन सह राज्ञा ।

यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त, राजन् पारयामसि।

कुशोदक - स्नानम्

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोः, बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।

सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि, बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ॥

मधु-स्नानम्

ॐ मधु वाता ऽक्रतायते, मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।

ॐ मधु नक्तमुतोषसो, मधुमत्पार्थिव रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता ।

ॐ मधुमान्नो वनस्पतिः, मधुमाँ२ऽअस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।

शुद्धोदक- स्नानम्

अन्त में समग्र शुद्धता के लिए शुद्ध जल से सिंचन- स्नान किया जाए-

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो, मणिवालस्तऽ आश्विनाः, श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते, रुद्राय पशुपतये कर्णा यामाऽ, अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ॥

बताये गए प्रत्येक द्रव्यों को जल में डालकर मंत्र द्वारा स्नान करना चाहिए।

क्षौरकर्म

यज्ञ से पूर्व साधक को या के निमित्त अपने केश को हटवाना चाहिए. केश समर्पण का सूचक है। ऐसा मानकर सन्यासी/वैराणी को सिर तथा दाढ़ी मूछ बनवाना चाहिए। गृहस्थ को सिर का बाल बनवाना आवश्यक है।

कलश यात्रा -

किसी भी यज्ञ के प्रारम्भ के पूर्व जल यात्रा का विधान हैं समस्त बनधु बान्धव सहित तथा समस्त शिष्य सहित गाजे बाजे के साथ किसी तीर्थ या सरोवर अभव हो तो कूप के पास जा कर सबसे पहले जल जीव तथा स्थल मातृका का अवहन करना चाहिए।

अथ जल यात्रा विधिः

यज्ञ प्रारम्भ दिने यजमानः पूजा सामग्री गृहीत्वा वेदमन्त्रोच्चारण भगवन्नामसंकीर्तन वाद्यघोषपुरस्सरं आचार्यादि ऋत्विग्भिः नगरवासिभिः सुवासिनीभिश्च सह नदीं जलाशयं वा गच्छेत्। नद्यां जलाशये वा गत्वा प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य यजमानः सङ्कल्पंकुर्यात्।

देशकालौ सङ्कीर्त्य करिष्यमाणस्य अमुकयाग कर्मणः निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं वरुण देवता प्रीत्यर्थ वरुण देवस्य पूजनं अहं करिष्ये ॥

इति सङ्कल्प्य जलसमीपे रक्ताक्षतैः पीताक्षतैर्वा नव कोष्ठाननिर्माय तेषु दिक्षु-विदिक्षु अष्टौ कलशान् संस्थाप्य , मध्ये कलशमेकं संस्थापयेत्। अनन्तरं तेषु सर्वेषु कलशेषु जलं परिपूर्य तेषां गन्धाक्षत पुष्पादिना संपूज्य-पट्टवस्त्रैः पंक्तित्रये सप्त सप्त अक्षतपुञ्जान् विधाय तेषु क्रमेण जलमातृणां जीवमातृणां स्थलमातृणाञ्च आवाहनं स्थापनं पूजनञ्च कर्यात।

संकल्प के उपरान्त वस्त्र पृथ्वी पर विधाकर तीन जगह अक्षत के सात- 2 कुंज रखने चाहिए तथ उसी में जल जीव तथ स्थल मातृका क आवहन करना चाहिए।

अथ जल , जीव, स्थल मातृणां आवाहनं पूजनम् च मत्स्यै नमः मत्सीमावाहयामि स्थापयामि। कूर्म्ये नमः कूर्मीमा०। वाराही नमः वाराहीमा०। ददुर्य

नमः दर्दुरीमा० मकयै नमः मकरीमा० : जलूक्यै नमः जलूकीगा० तन्तुक्यै नमः तन्तुकीमा० । कुमायै नमः कुमारीमावाहयामि स्थापयामि। धनदायै नमः धनदामा० । नन्दायै नमः नन्दामा० । विमलायै नमः विमलामा० । मङ्गलायै नमः मङ्गलामा० । अचलायै नमः अचलामा० । पद्मायै नमः पद्मामा० ।

ऊर्म्यै नमः ऊर्मीमावाहयामि स्थापयामि। लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमा० । महामायायै नमः महामायामा० पानदेव्यै नमः पानदेवीमा० । वारुण्यै नमः वारुणीमा० । निर्मलायै नमः निर्मलामा० गोधायै नमः गोधामा० ।

सर्वाभ्यो मातृभ्यो नमः इति सम्पूज्य दशदिक्पालानां पूजनम् विधाय नद्यां जलाशये वा नदीस्तीर्थानि चावाहयेत्।

आवहन के पश्चात अंचोपचार पूजन कर दस दिगपाल इत्यादि का प्रणम कर तत्पशाच समस्त तीर्थोका आवहन करना चाहिए।

जल यात्रा विधि:

आयात च च देवी यमुना कूर्मयानस्थित सदा । प्राची सरस्वती पुण्या पयोष्णी गौतमी तथा ।। ३ ।। उर्मिला चन्द्रभागा सरयू गण्डकी तथा । वितस्ता च विपाशा च नर्मदा च पुनः पुनः ॥४॥ कावेरी कौशिकी चैव गोदावरी महानदी । मन्दाकिनी वशिष्ठा च तुङ्गभद्रा शशिप्रभा ।। ५ ।। अमरेशः प्रभासञ्च नैमिषं पुष्करं तथा । • कुरुक्षेत्रं प्रयागं गङ्गासागर सङ्गमम् ॥६॥ एता नद्यश्च तीर्थानि यानि सन्ति महीतले । तानि सर्वाणि आयान्तु पावनार्थ द्विजन्मनाम् । ७ ॥ इति नदीनां तीर्थानाञ्चावाहनं कृत्वा गङ्गादिनदीभ्यो नमः पुष्करादितीर्थेभ्यो नमः सम्पूज्य जलमध्ये वरुणदेवस्य पूजनम् । ॐ इमम्मे वरुणश्श्रुधी० इति मन्त्रेण वरुणं सम्पूज्य जले ॐ पञ्च नद्यः० इति

मन्त्रेणपञ्चामृतस्य प्रक्षेपः । पश्चात् जले द्वादश आज्याहुतीर्जुहुयात् । ॐ अद्भ्यः स्वाहा । ॐ वार्भ्यः स्वाहा। ॐ उदकाय स्वाहा । ॐ तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा । ॐ स्रवन्तीभ्यः स्वाहा । ॐ स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा । ॐ कूप्याभ्यः स्वाहा । ॐ सूद्याभ्यः स्वाहा । ॐ धार्याभ्यः स्वाहा । ॐ अर्णवाय स्वाहा । ॐ समुद्राय स्वाहा । ॐ सरिराय स्वाहा ।

अथवा ॐ अद्भ्यः सम्भृतः० इत्यादिमन्त्रैः घृतेन दध्ना वा सुवेण विंशतिवारं

आहुतीर्दद्यात्।

ततोऽर्घ्यपात्रे जलेन साकं गन्धाक्षत पुष्पाणि गृहीत्वा नद्यां जलाशये वा वारत्रयार्घ्यं दद्यात्। पश्चात् नद्यां श्रीफलं प्रक्षिपेत् । ततो देवतानां विसर्जनं कृत्वा आचार्यादि ऋत्विजां सुवासिनीनाञ्च पूजनं विधाय दक्षिणां च दद्यात् । पश्चात् पूजितान् नवकलशान् उत्थाप्य नवसंख्यानां सुवासिनीनां मस्तकोपरि धारयेत् । ततो यजमानः वेदमन्त्रैः भगवन्नामकीर्तनं कुर्वन् आचार्यादि ऋत्विग्भिः सह यज्ञस्थलं प्रति गच्छेत्। अर्धमार्गे स्थित्वा इन्द्रादि दश दिक्पालानां क्षेत्रपालस्य च आवाहनं पूजनं च कृत्वा सर्वेभ्यः बलिं दद्यात् । ततो यज्ञ मण्डपस्य पश्चिम द्वारस्य पूजनं विधाय तेनैव द्वारेण मण्डपे प्रविश्य पूजित नवकलशान् यज्ञ मण्डपस्य वारुण मण्डलोपरि स्थापयेत्। हरिः ॐ तत्सत्

तथा इन सब कर्मो के पश्चात नदी में गन्ध अक्षत पुष्प श्रीफल दक्षिणा इत्यादि छेड़कर नौ या नौ से ज्यादा विषय संख्या में कन्या या सुहागिन स्त्रियों के साथ या मण्डप की तरफ प्रस्थान करना चाहिए साथ में ब्राम्हणों द्वारा वेद मंत्र का वाचन होता रहना चाहिए मण्डप और जहां से जल यात्रा प्रारम्भ् हुई हो उसके मध्य में रूक कर इन्द्रादि तथा दसपाल तथा क्षेत्रपाल वा आवहन पूजन करना चाहिए।

मण्डप प्रवेश

मण्डप के समीप जलयात्रा पहुंचने पर प्रामाश्चित संकल्प करके तथा देव पितरो को प्रणाम करके मण्डप के प्रवेश करना चाहिए।

पंचांग पूजन

पूजा करने वाले साधक को पूर्वामुख बैठकर अपनी बायी ओर घ्ण्टा धूप घी का दीपक तथ दाहिनी ओर शंख जलपात्र पूजन सामग्री रखकर पूजन कार्य में रत होना चाहिए।

कर्मपात्र पूजन

एक पात्र में जल रखकर पंचोपचार पूजन करना चाहिए।

पूजनारम्भ विधिः

पूजन कर्ता को पूर्वाभिमुख बैठकर अपने बायीं ओर घण्टा , धूप, घृत का

दीपक तथा दाहिनी ओर शंख , जल पात्र तथा पूजन सामग्री रखकर पूजन करना चाहिये।

कर्मपात्र पूजनम् - अकुशमुद्रया तीर्थान्यावाह्य गन्धादिभिः वरुणं सम्पूज्य-

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती ।

नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।

पवित्री धारण- कुशा के मध्यम से आचार्य निम्न मंत्र बोलता हुआ पवित्र करे।

पवित्रीकरण मंत्र-

आचम्यॐ केशवाय नमः । ॐ माधवाय नमः । ॐ नारायणाय नमः । , हस्त प्रक्षालनम् । ॐ गोविन्दाय नमः । इसके बाद प्राणायाम करें। पवित्रधारणम्-- ॐ पवित्रेस्त्थो वैष्णव्यौसवितुर्व्वः प्रसवऽउत्त्पुनाम्य च्छिद्रेणपवित्रेणसूर्यस्यरश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्त्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

पवित्रकरणम्ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।

यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।

मंगल तिलकम् -- ॐ युञ्जन्ति ब्रघ्नमरुपंचरन्तं परितस्थुषः रोचन्ते रोचनादिवि। युञ्जन्तस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे शोणाधृष्णु नृवाहसा ।।

आसन शुद्धिः -- ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।

शिखा बन्धनम्-- ब्रह्म वाक्य सहस्राणि रुद्र वाक्य शतानि च ।

विष्णु स्मरण मात्रेण शिखा बन्धन करोम्यहम् ।।

आसन शुद्धि

कुशा के माध्यम से आसन पर कर्मपात्र पर जल छिड़कना चाहिए।

शिखा बन्धनम- ब्रम्ह वाक्य सहस्राणि रूद्र वाक्य शतनि च।

विष्णु स्मरण मात्रेण् शिख् बन्धन करोम्यहम्।

पृथिवी पूजनम्

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी । यच्छानः शर्म्मसप्प्रथाः ।। ॐ भूर्भुवः स्वः आधार शक्त्यै पृथिव्यै नमः , भगवते वाराहाय नमः , सिद्धासनाय नमः, कमलासनाय

नमः, कूर्मासनाय नमः, आवाहयामि पूजयामि। पूजन कर प्रार्थना करें--

प्रार्थना

इष्टं मे त्वं प्रयच्छस्व त्वामहं शरणं गतः।पु

त्रदार धनायुष्यंकरीभव ||

अनया पूजया सवराहः पृथिवी देवी प्रीयतां न मम।

स्वस्ति वाचनम्

हस्ते अक्षत पुष्पाणि गृहीत्वा आ नो भद्रादीन् मंगल मंत्रान् पठेयुः

हरिः ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोदब्धासोऽअपरीता सऽउद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्वृधे ऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥१॥

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवाना रातिरभिनो निवर्त्तताम्। देवाना सख्यमुपसेदिमाव्वयन्देवा नऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥ २ ॥

निविदाहूमहेव्वयम्भगम्मित्त्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्। अर्य्यमणंव्वरुण सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥३॥

तन्नो व्वातो मयोभु व्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना युवम् ॥४॥

तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्प्पतिन्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। ५।।

स्वस्ति न इन्द्रोतान्पूर्व्वयाव्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः

देवार्धन विधि प्रबन्धः

मसिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥६॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः पानी विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वामनवः सूरचक्षसो विश्वेदेवा अवसागमन्निह। ॥७॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितंय्यदायुः ॥ ८ ॥ शतमिन्नु शरदो ऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।। ९।।

अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्मातासपितासपुत्रः । व्विश्वे देवाऽअदितिः पञ्चजनाऽ अदितिर्जातमदितिर्जनित्त्वम् । १० ॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः व्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि ॥ ११ ॥ यतोयतः समीहसे ततो नोऽअभयकुरु । शन्नः कुरुप्प्रजाब्भ्योऽभयन्नः पशुभ्यः ॥ १२ ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिःसुशान्तिर्भवतु, सर्वारिष्ट शान्तिर्भवतु ।

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः ।उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । शचीपुरन्दराभ्यां नमः । मातृपितृ चरण कमलेभ्यो नमः । इष्टदेवताभ्यो नमः । कुलदेवताभ्यो नमः । ग्रामदेवताभ्यो नमः । स्थानदेवताभ्यो नमः । वास्तुदेवताभ्यो नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः | सर्वेभ्यो तीर्थेभ्यो सर्वाभ्यो शक्तिभ्यो एतत् कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः । अविघ्नमस्तु । कल्याणमस्तु । अयमारम्भः शुभाय भवतु । सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्चविकटोविघ्ननाशो विनायकः। धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षोभालचन्द्रो गजाननः द्वादशैतानिनामानिपठेच्छृणुयादपि ।

स्वस्ति वाचनम्

विद्यारम्भेविवाहेच प्रवेशे निर्गमेतथा ।संग्रामे सङ्कटेचैवविघ्नस्तस्यशुक्लाम्बरधरंदेवं शशिवर्ण चतुर्भुजम् ।प्रसन्नवदनंध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थंपूजितोसुरासुरैः ।सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतयेनमः ॥ सर्वमङ्गलमङ्गल्येशिवेसर्वार्थसाधिके ।शरण्येत्र्यम्बकेगौरिनारायणिनमोऽस्तुते ।।सर्वदासर्वकार्येषुनास्तितेषाममङ्गलम् ।येषां हृदयस्थोभगवान् मङ्गलायतनोहरिः ।।तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ।। लाभस्तेषां जयस्तेषांकुतस्तेषां पराजयः ।येषामिन्दीवरश्यामोहृदयस्थोजनार्दनः ।। यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्रपार्थो धनुर्धरः ।तत्रश्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम || अनन्यांश्चिन्तयन्तो मां येजना: पर्युपासते ।तेषांनित्याभियुक्तानां योगक्षेमंवहाम्यहम्।। स्मृतेसकल कल्याणं भाजनंयत्रजायते ।पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ।।सर्वेष्वारम्भकार्येषुत्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ।देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः

।।विश्वेशं माधवं दुण्ढिं दंडपाणिंचभैरवम् ।   वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणि कर्णिकाम् ।।वक्रतुण्ड निर्विघ्नंमहाकायसूर्यकोटि समप्रभ ।कुरुमे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ||विनायकं गुरुंगुरुं भानुंभानुं ब्रह्म विष्णु महेश्वरान् ।सरस्वतींप्रणम्यादौसर्वकार्यार्थ सिद्धये।

संकल्प

दाहिने हाथ में गंध अक्षत पुष्प द्रव्य एवं जल लेकर सङ्कल्प करें-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणो अह्नि द्वितीये परार्धे विष्णु पदे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैक देशे अमुकक्षेत्रे अमुकनगरे (ग्रामे वा) श्री गङ्गा यमुनयोः अमुकदिग्भागे देवब्राह्मणानां सन्निधौ श्रीमन्नृपति वीर विक्रमादित्य समयात अमुक संख्या परिमिते प्रवर्त्तमान सम्वत्सरे प्रभवादि षष्टि सम्वत्सराणां मध्ये अमुक नाम्नि सम्वत्सरे, अमुकायने, अमुकगोले, अमुकऋतौ, अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे, अमुकनक्षत्रे, अमुकयोगे, अमुककरणे, अमुक राशि स्थिते चन्द्रे, अमुक राशि स्थिते श्रीसूर्ये अमुक राशि स्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथं राशि स्थान स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह गण गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्माहं (वर्मा गुप्तो वा) सपरिवारः ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त पुण्य फल प्राप्त्यर्थं मम ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं अप्राप्त लक्ष्मी प्राप्त्यर्थं प्राप्त लक्ष्म्याश्चिरकाल संरक्षणार्थं सकल मनोभिलषित कामना संसिद्ध्यर्थं लोके सभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजय लाभादि प्राप्त्यर्थं समस्त भयव्याधि जरा पीडा मृत्यु परिहार द्वारा आयुः आरोग्य ऐश्वर्यादि अभिवृद्ध्यर्थं तथा च मम जन्मराशेः सकाशाद्ये केचिद्विरुद्ध चतुर्थाष्टम द्वादश स्थान स्थिताः क्रूरग्रहाः तैः सूचितं सूचयिष्यमाणञ्च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशद्वारा शुभफल प्रात्यर्थं पुत्रपौत्रादि सन्ततेरविच्छिन्न वृद्ध्यर्थं आदित्यादि नवग्रह अनुकूलता सिद्ध्यर्थं आधिदैविक आधिभौतिक आध्यात्मिक तापत्रयोपशमनार्थं धर्म अर्थ काम मोक्ष फलावाप्त्यर्थं यथोपलब्धोपचारैः अमुक देवस्य पूजन कर्मणि निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं गणपत्यादि देवतानां आवाहनं स्थापनं पूजनं च करिष्ये ।

श्री गणेशाम्विका अर्चनम

दो सुपारियों पर मौली लपेटकर उनको किसी पात्र में चावल पर अष्टदल कमल बनाकर स्थापित करें। फिर हाथ में अक्षत पुष्प लेकर नीचे लिखे मंत्रों द्वारा ध्यानकर आवाहन करें।

ध्यानम् –

विघ्नध्वान्त निवारणैकरतरणि विघ्नाटवीहव्यवाड् विघ्नव्याल कुलाभिमानगरुड़ो विघ्ने भपञ्चाननः ।

विघ्नोतुङ्ग गिरिप्रभेदनपवि र्विघ्नाम्बुधेर्वाडवो विघ्नान्यौघ घनप्रचण्डपवनो विघ्नेश्वरः पातु नः ।। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ध्यायामि ।

आवाहनम्-

हे हेरम्ब त्वमेह्येहि अम्बिका त्र्यम्बकात्मज । सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभ पितुः पितः ।। नागास्यं नागहारं त्वं गणराजं चतुर्भुजम् । भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशाङ्कुशपरश्वधैः ।। आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः । इहाऽगत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे ।।

मन्त्रः-

ॐ गणानां त्वा गणपति हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति हवामहे निधीनां त्वा निधिपति हवामहे व्वसो मम । आहमजानि गर्भधमात्त्वमजासि गर्भधम् ।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम् ।

लम्बोदरस्य जननी गौरी आवाहयाम्यहम् ।।

गौरी गणेश, कलश

हाथ में अक्षात पुष्प लेकर के गौरी गणेश कलश और नवग्रह का आवहन पूजन करना चाहिए।

कलशयात्रा

कलश में रोली से स्वस्तिक चिन्ह बनाकर एवं उसके गले में मौली बाँधकर ईशानकोण में अष्टदल बनाकर सप्तधान्य या चावल रखकर उसके ऊपर कलश को स्थापित कर निम्न लिखित विधि से पूजन करना चाहिए।

भूमिं स्पृशेत्-

ॐ मही द्यौः पृथिवी च नऽइमँ यज्ञम्मिमिक्षताम् । पिपृतान्नो भरमभिः ॥

विश्वाधाराऽसि धरणी शेषनागोपरि स्थिता । उद्धा वराहेण कृष्णेन शतबाहुना ॥

(भूमि का स्पर्श करें)

सप्तधान्यप्रक्षेप:-

ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा । यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त राजन्पारयामसि ॥

कलशं स्थापयेत्

ॐ आजिघ्र कलशं मय्या त्त्वा व्विशन्त्विन्दवः ।
पुनरुर्जा निवर्त्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्मा विशताद्द्रयिः।
हेमरूप्यादिसम्भूतं ताम्रजं सुदृढंनवम् ।
कलशं धौतकल्माषं छिद्र ब्रण विवर्जितम् ॥

(सप्तधान्य पर कलश का स्थापन करें)

कलशे जलपूरणम् -

कलश में जल मंत्र

कलश् को समस्त तीर्थों के जल को भर देना चाहिए।

कलशे जलपूरणम्-

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्त्थो
वरुणस्यऽऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद् ॥
जीवनं सर्वजीवानां पावनंपावनात्मकम् ।
बीजं सर्वोषधीनां च तज्जलं पूरयाम्यहम् ॥

(कलश में जल भरें)

गन्धप्रक्षेपः

ॐ त्वांगन्धर्व्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वांबृहस्पतिः ।
त्वामोषधेसोमोराजाव्विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत ॥
केशरागरुकङ्कोलघनसारसमन्वितम् ।
मृगनाभियुतं गन्धंकलशेप्रक्षिपाम्यहम्॥ ८

(कलश में चन्दन या रोली छोड़ें)

धान्यप्रक्षेपः -

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणायत्त्वों दानायत्त्वा व्यानायत्त्वा ।
दीर्घामनु प्प्रसितिमायुषेधान्देवोवः सविताहिरण्यपाणिः
प्रतिगृभ्णात्त्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषेत्त्वा महीनां पयोऽसि ।
धान्यौषधी मनुष्याणां जीवनं परमं स्मृतम् ।
निर्मिता ब्रह्मणा पूर्वं कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥

(कलश में सप्तधान्य छोड़ें।)

सर्वोषधिप्रक्षेपः -

ॐ या ऽओषधीः पूर्व्वा जातादेवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा ।
मनैनुब्बभ्रूणामहशतंधामानिसप्त च ॥
औषध्यः सर्ववृक्षाणां तृणगुल्ल्मलतास्तु याः ।

दूर्वासर्षप-संयुक्ताः कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥

(कलश में सर्वौषधि छोड़ें।)

- दूर्वाप्रक्षेपः

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्प्परि ।

एवानो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च ॥

दूर्वेह्यमृतसम्पन्ने शतमूलेशताङ्कुरे ।

शतं पातकसंहन्त्री कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥

(कलश में दूर्वा छोड़ें)

पञ्चपल्लवप्रक्षेपः

ॐअश्वत्थेवोनिषदनम्पर्णेवोव्वसतिष्कृता ।

गोभाजइत्किलासथयत्सनवथपूरुषम् ॥

अश्वत्थोदुम्बरप्लक्ष चूतन्यग्रोध पल्लवः ।

पञ्चैतान् पल्लवानस्मिन् कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ।।

(कलश में पञ्च पल्लव अथवा आम पल्लव रखें)

सप्तमृदप्रक्षेपः

ॐस्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी ।

यच्छानः शर्म्मसप्प्रथाः ॥

अश्वस्थानाद् गजस्थानाद्वल्मीकात्सङ्गमाद्दात् ।

राजस्थानाच्च गोष्ठाच्च मृदमानीय निक्षिपेत् ।।

(कलश में सप्तमृत्तिका या मिट्टी छोड़ें)

पूगीफलप्रक्षेपः -

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः ।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नोमुञ्चन्त्वहसः ॥

पूगीफलमिदं दिव्यं पवित्रं पुण्यदं नृणाम् ।

हारकं पापपुञ्जानां कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥

(कलश में सुपारी छोड़े)

पंचरत्नप्रक्षेप

ॐ परिवाजपतिःकविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् ।दधद्रत्नानिदाशुषे।

कनकंकुलिशंनीलंपद्मरागं चमौक्तिकम्॥

एतानिपञ्चरत्नानिकलशेप्रक्षिपाम्यहम्।

(कलश में पंचरत्न छोडें)

हिरण्यप्रक्षेप :-

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्यजातः पतिरेक आसीत् ।

सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमातरम्मै देवाय हविषा विधेम ।।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।

अनन्तपुण्यफलदंकलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥

(कलश में स्वर्णखण्ड छोड़ें)

रक्तसूत्रेण वस्त्रेण वा कलशं वेष्टयेत् -

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्मव्वरुथमासदत्स्वः ।

व्वासोऽ अग्नेव्विश्वरूपसंव्ययस्व व्विभावसो ॥

सूत्रं कर्पाससम्भूतं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा ।

येन बद्धजगत्सर्वं तेनेमं वेष्टयाम्यहम् ॥

(कलश में वस्त्र अथवा मौली लपेटें)

कलशस्योपरि पूर्णपात्रं न्यसेत् -

ॐ पूर्णादर्व्वि परापतसुपूर्णापुनरापत ।

व्वस्नेव व्विक्क्रीणावहाऽइषमूर्ज शतक्रतो ॥

पिधानंसर्ववस्तूनां सर्वकार्यार्थसाधनम् ।

सम्पूर्णः कलशो येन पात्रं तत्कलशोपरि ।।

(कलश पर पूर्णपात्र रखें)

पूर्णपात्रोपरि नारिकेलफलं न्यसेत् -

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणाम्मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽ इषाण ।

(पूर्णपात्र पर नारियल रखें)

वरुणं आवाहयेत् -

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेडमानो वरुणेहबोध्युरुश समानऽ आयुः प्रमोषीः ।।
भगवन्वरुणागच्छ त्वमस्मिन् कलशे प्रभो ।
कुर्वेऽत्रैव प्रतिष्ठां ते जलानां शुद्धिहेतवे । ।

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सायुधं सशक्तिकं सपरिवारं आवाहयामि स्थापयामि । ॐ अपांपतये वरुणाय नमः । इति पञ्चोपचारै: वरुणं सम्पूज्य -

कलशे देवानां नदीनां तीर्थानां च आवाहनम् –

कलाकला हि देवानां दानवानां कलाकलाः ।
संगृह्य निर्मितो यस्मात् कलशस्तेन कथ्यते ।।
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रिताः ।
मूलेत्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ।।
कुक्षौ तु सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
अर्जुन गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती ।।
कावेरी कृष्णवे च गङ्गा चैव महानदी ।
ताप्ती गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा ।।
विविधा जाता सर्वास्तथापराः ।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै ।।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।

ऋग्वेदोडथ यजुर्वेदः सामवेदो हाथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ॥
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु मम शान्त्यर्थ दुरितक्षयकारकाः ॥

(ऊपर के श्लोकों को पढ़ते हुए कलश पर अक्षत छोड़ें।)

षेडशमात्रिकापूजन

पूण्यः वाचन के उपरान्त पूजन क्रम में षोडश मातृका के पूजन का विधान है। सबसे पहले यजमान के दाहिनी ओर किसी चौकी या पाटे पर या वेदी पर ही कपड़ा बिछाकर सोलह चौकोर खानों का निर्माण करें , तथा प्रत्येक खानों में चावल गेहूँ रखकर एक एक देवताओं द्वारा आवाहन करें।

गणेश आवाहनम्

ॐ गणानान्त्वा गणपति गुं हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति गुं हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति गुं हवा महे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम्।

समीपे मातृवर्गस्य सर्वविघ्नहरं सदा।
त्रैलोक्यवन्दितं देवं गणेशं स्थापयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

1. गौरी-आवाहनम्

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

एकतन्त्रेण मातृकाणामावाहनम् -

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्याद्याः कुलदेवतान्तमातरो गणपतिसहिताः सुप्रष्ठिताः वरदाः भवन्तु।

2. पद्मा-आवाहनम्

ॐ हिरण्यरूपा ऽउषसो व्विरोक ऽउभाविन्द्राऽउदिथः सूर्य्यश्च। आरोहतं व्वरुण मित्त्र गर्त्तं ततश्चक्षाथामदिर्ति दितिं च मित्त्रोऽसि व्वरुणोऽसि॥

3.शची-आवाहनम्

ॐ निवेशनः संगमनो व्वसूनां व्विश्वा रूपाभिचष्ट्टे शचीभिः।

देव ऽइव सविता सत्य-धम्मर्ेन्द्रो न तस्त्थौ समरे पथीनाम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शच्यै नमः, शचीमावाहयामि स्थापयामि।

4. मेधा-आवाहनम्

ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः, मेधामावहयामि स्थापयामि।

5. सावित्री-आवाहनम्

ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्र्यै नमः, सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि।

6. विजया-आवाहनम्

ॐ भूर्भुवः स्वः विजयायै नमः, विजयावाहयामि स्थापयामि।

7. जया-आवाहनम्

ॐ बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्त्रश्चिश्चाकृणोति समनावगत्य।

इषुधिः संगकाः पृतनाश्च सर्व्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्प्रसूतः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः जयायै नमः, जयामावाहयामि स्थापयामि।

8. देवसेना-आवाहनम्

ॐ इन्द्र ऽआसात्रेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः।

देवसेनानामभि-भंजतीनांजयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः देवसेनायै नमः, देवसेनामावाहयामि स्थापयामि।

9. स्वधा-आवाहनम्

ॐ पितृब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधा नमः पितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधा नमः प्प्रपितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धद्ध्वम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि स्थापयामि।

10. स्वाहा-आवाहनम्

ॐ स्वाहा प्प्राणेब्भ्यः साधिपतिकेब्भ्यः। पृथिव्व्यै स्वाहाग्नये स्वाहात्त्तरिक्षाय स्वाहा व्वायवे स्वाहा दिवे स्वाहा सूर्य्याय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः, स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।

11. मातृ-आवाहनम्

ॐ आपो ऽअस्म्मात्रमातरः शुन्धयनतु घृतेन नो घृतप्प्वः पुनन्तु। व्विश्व गुं हि रिप्प्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाब्भ्यः शुचिरा पूत ऽएमि। दीक्षा-तपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवा गुं शग्ग्मां परिदधे भद्द्रं व्वर्णं पुष्य्यन्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मातृभ्यो नमः, मातृ आवाहयामि स्थापयामि।

12. लोकमातृ-आवाहनम्

ॐ रयिश्च मे रायश्च मे पुष्ट्टिश्च मे व्विभु च मे प्प्रभु च मे पूर्ण्णंच मे पूर्ण्णतरंच मे कुयवंच मेऽक्षितंच मेऽत्रंच मेऽक्षुच्च मे यज्ञेन कल्प्पत्रताम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः लोकमातृभ्यो नमः, लोकमातृ आवाहयामि स्थापयामि।

13. धृति-आवाहनम्

ॐ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरत्त्तरमृतं प्प्रजासु। यस्मात्र ऽऋते किंचन कर्म्म क्क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्प्पमस्तु।।

ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि स्थापयामि।

14. पुष्टि-आवाहनम्

ॐ अंगात्र्यात्क्म्भिषजा तदश्विनात्क्मानमंगैः समधात्सरस्वती। इन्द्रस्य रूप गुं शतमानमायुश्चन्द्रेण ज्ज्योतिरमृतन्दधानाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्ट्यै नमः, पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।

15. तुष्टि-आवाहनम्

ॐ भूर्भुवः स्वः तुष्ट्यै नमः, तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।

16. आत्मकुलदेवता-आवाहनम्

ॐ भूर्भुवः स्वः आत्मनः कुलदेवतायै नमः , आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि स्थापयामि।

17. मातृणां प्रतिष्ठा

ॐ मनो जूतिर्ज्जूषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्ट्टं य्यज गुं समिमन्दधातु। व्विश्वे देवास ऽइह मादयन्तामों 3 प्रतिष्ठ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्:- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्॥

पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नाने के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें , निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

गंधोदक स्नान-

इस स्नान के उपरान्त पुनः भगवान को शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्धादक स्नानम् - (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्व्व शुद्धवालो मणि वालस्त ऽआश्विनाः

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्राय पशुपते कर्ण्णा यामा

ऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः॥

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु॥

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हुए चढ़ाएं तथा भगवान को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत ऽआगात्स ऽउश्रेयान्भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंगरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें वस्त्र के उपरान्त भगवान को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्त्स्वः।

व्वासो ऽअग्गने व्विश्वरूप गुं संव्व्ययस्व विभावसो।।

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न वाक्य बोलते हुए भगवान को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचनं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात् यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिर्वबृत्याद गुं होश्चिद्या वरिवोवित्तरा सदादित्येीयस्त्वा।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमानी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ऊँ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामित्र्द्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।

त्वामोषधे सोपो राजा व्विद्द्वात्र्यक्ष्मादमुच्च्यत।।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ऊँ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया ऽअधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रा नविष्ठ्या मतीयोजात्र्विन्द्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान को अर्पित करें मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ऊँ ओषधीः प्प्रतिमोध्वं पुष्पतीः प्प्रसूवरीः।

अश्वा ऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च

समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्बा चढ़ाएं मन्त्र-

दूर्बा - (गणेश जी को कोमल दूर्बा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्रोण शतेन च।।

दूर्वाड.कुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयाणि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्बा गणेश जी को ही चढ़ती है , देवी जी पर दूर्बा न चढ़ाएं दूर्बा चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्प्राद्ध्वने शूघनासो व्वानप्प्रमियः पतयंत्रि यह्व्वाः।

घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठ्ठा भित्रदत्रूर्म्मिभिः पित्रवमानः।।

सिन्दूर शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामर्द चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान पर चढ़ाएं मन्त्र-

अबीरादि परिमलद्रव्यम् - (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्ज्याया हेतिं प्परिबाधमानः।

हस्तग्घ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्पुमान् पुमा गुं सं प्परिपातु व्विश्वतः।।

नाना-परिमलैर्द्रर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं मन्त्र-

धूपम् - (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्समान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि व्वह्नितम गुं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ॐ अग्निर्ज्ज्योतिज्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्यर्ज्ज्योतिज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहह सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वाह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , दीपं दर्शयामि।
(हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर कहकर हाथ धुल लें , तत पश्चात् नैवेद्य भगवान को अर्पण करें, नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ॐ नाभ्या ऽआसीदन्तरिक्ष गुं शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्त्रात्तथा लोकाँ2ऽअकल्प्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा।ॐ उदानाय स्वाहा।

ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , नैवेद्यं निवेदयामि।
लाचमनीयं समर्पयामि

मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ऋतु फल भगवान को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व गुं ह सः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान पर चंदन दिड़के अगुलियों के माध्यम से करोधवर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ अ गुं शुना ते अ गुं शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गइधस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतंवत्।

व्वसन्तोऽयासीदाज्ज्यंग्रीषम ऽइध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।

एलादिचु ूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , मुखवासार्थे पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बोल के पश्चात् भगवान को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाता, चक्षो सूर्यो अयात्।

श्रीय द्ववाइदूच पुष्प मुखा दधर्निजात।।

आरती के पश्चात् जल घुमाकर गिरा दें, हाथ पुष्प लेकर पुष्पाँजलि करें मन्त्र-

पुष्पाँजलि -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ गणपत्यादि-कुलदेवतान्त-मातृभ्यो नमः। सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ गणपत्यादि-कुलदेवतान्त-मातृभ्यो नमः:-

ऐसा कहते हुए वैदिक मंत्रों से षोडशोपचार पूजन करके प्रार्थना करें।

आवाहन के उपरान्त पूर्व लिखित विधा द्वारा षोड्शो प्रचार पूजन करना चाहिए ध्यान रहे मातृका यज्ञोपवीत न चढ़ाया जाए तथा विशेष अर्ध का भी विधान माहका के लिए नहीं है बाकि सभी देवताओं के पूजा की अनुरूप इनकी भी पूजा करें तथा निम्न मन्त्रों से प्रार्थना करें-

प्रार्थना

आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।

निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः।।1।।

बर्द्धन्तां कुलमातरो हि सततं धान्यं वाहनम्।

दीर्घायुंच यशश्च श्रीः समतां ज्ञानं महद् गौरवम्।।

पुत्रं पौत्रमथास्तु मंगलसदा सर्वत्र निर्विघ्नता।
पीडां पापरतिं हरन्तु जाड्यं तन्वन्तु छत्रं सुखम्।।2।।

हाथ में जल लेकर ‘‘अनया पूजया षोडशमातरः प्रीयन्ताम् न मम। ‘‘ कहकर सामने जल गिराकर पूजन समर्पित करें।

सप्तघृतमात्रिकापूजन

षोड्स मातृका के पूजन के उपरान्त सप्तघृत मातृका का आवाहन पूजन क्रमानुसार बताया गया है , किसी लकड़ी के पाटे पर सफेद कपड़ा बाँधकर अंकित चित्रानुसार श्री शब्द से सुसाज्जत कर आगनेय कोण में रख देना चाहिए तथा निम्न मन्त्रों द्वारा आवाहन करना चाहिए-

सप्तघृत-मातृका-निर्माण-विधिः

अग्निकोण में दिवाल में या पीढ़े को वस्त्रावेष्टित करके रोली या सिन्दूर से चित्रानुसार ऊपर से नीचे तक एक , दो, तीन, चार, पाँच, छह और सात बिन्दुओं को बनाकर अर्थात् ऊपर एक बिन्दु , उसके नीचे दो बिन्दु , पुनः उसके नीचे तीन बिन्दु , इसी प्रकार क्रमशः सात बिन्दु तक निर्माण करें तथा उन बिन्दुओं के ऊपर भाग में 'श्रीः' लिखें।

अथ सप्तघृत-मातृकाणामावाहनं1 पूजनंच

घृतधाराकरणम्- (सप्तघृतमातृकाओं पर घी से सात धार बनावें)

ऊँ व्वसोः पवित्त्रमसि शतशारं व्वसोः पवित्त्रमसि सहस्त्रधारम्।

देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्त्रेण शतधारेण सुप्प्वा..........

ऊँ तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्के व्वायव्व्या नाण्ण्या ग्ग्राम्म्याश्च्च ये।।
मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

इकाई 2 : रूद्रमहायज्ञ

आचार्यवरण

प्रस्ताभवना

प्रस्तुभत इकाई मेंपुण्यां वाचन एवं आचार्य पूजन पर प्रकाशडाला गया है।

उददेश्यभ-

इस इकाई के अध्य यन से पुण्यांवाचन एवं आचार्य पूजन सम्पूर्णज्ञान प्राप्तर होगा।

प्रश्नय -

१. पुण्यां-वाचन किसे कहतेहै।

२. पुण्यां-वाचन एवं आचार्य पूजन पसविस्तार वर्णन कीजिए।

किसी भी पूजा का आधारभूत आचार्य होता है। उसी के निर्देशन में पूजा प्रारम्भ होती है उसके बताए गए मार्ग में चल करके साधक अपनी साधना पूर्ण करता है, देवादि यज्ञ में आचार्य भगवान के समान माना गया है। देवताओं के समान श्रद्धा रखकर आचार्य का पूजन एवं वरण करना चाहिए आचार्य पूजन में मन्त्रों के द्वारा आचार्य का तिलक तथा ससंकल्प आचार्य को दक्षिणा देकर उसका पूजन करना चाहिए, और उसकी अपनी श्रद्धा से संतुष्ट करना चाहिए तथा प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारा कार्य निर्विघन रूप से प्रारम्भ हो और उकसी पूर्णतः ही निर्विघन रूप से हो आपके बताए गए नियमानुसार हम पूजन को तैयार हैं आचार्य हमको उचित निर्देशन देते हुए हमारी पूजा सम्पन्न करवाए, ऐसा मन में भाव लेकर आचार्य का पूजन करना चाहिए।

आचार्यः-

आचार्य किसी भी पूजा में मुख्य भूमिका का निर्वाहन करता है आचार्य को अपने यजमान के कल्याण हेतु लोभ   , मोह और क्रोध से परे होकर यजमान के

कल्याण के लिए साथ आए हुए नित्युज्यो (पण्डित सहायक) का सम्मान करते हुए यजमान की कल्याण की कामना के लिए जो ब्राह्मण के नवगुण हैं उनसे मुक्त होकर किसी भी या या पूजा का व आचार्यदल करना चाहिए क्रोध तथा लोभ और काम को त्यागकर वह अपने वैदिक मन्त्र तथा कर्मकाण्ड के माध्यम से साधक की साधना पूर्ण करवाना ही उसका लक्ष्य होना चाहिए।

विशेषः-

आचार्य चयन में ध्यान में देना चाहिए हम उसकी योज्ञता और साधना और कार्य कुशलता जो हमारे पूजन के लिए अत्यन्त आवश्यक है प्रयास यह रहे आचार्य पढ़ा लिखा तथा कुशल वैदिक विद्वान हो जरूरी नहीं की वो पुरोहित या सम्बन्ध में आने वाले आचार्य को ही हम वरण करें। प्रायः आचार्य की योग्यता को ध्यान में रखते हुए चाहिए पुरोहित का का परित्याग नहीं करना चाहिए यदि वह योग्य नहीं भी है तब भी पूजा में उसको अस्थान देकर के गणेश तथा सरल मन्त्रों को उससे जप करवाया जाए।

ब्राह्मण पूजन मन्त्रः-

ऊँ आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे[a] राजन्यः शूर ऽइषव्योति याधी महारथो जायतान्दोग्ध्री धेनुर्वोढा नड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः। सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतान्निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पंचन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभम्।
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कंकणम्।।
सर्वांगे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली।
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपाल चूडामणिः।।

यज्ञ की सम्पूर्णतः के लिए पूर्णः वाचन का विधान है पूर्णः वाचन ब्राह्मण या आचार्य द्वारा वचनों के माध्यम सेयजमान के कल्याण की कामना तथा वाचिक संकल्प द्वारा पूर्व अंकित आचार्य पूजन से सम्बन्धित है पूर्णः वाचन में वरुण कलश के साथ ही एक धातु कलश (लोटा) स्थापना करनी चाहिए जिस प्रकार पूर्व लिखित

कलश प्रतिष्ठा में वरुण कलश की प्रतिष्ठा होती है उन्हीं मन्त्रों के द्वारा और उसी विधा से सन्ति कलश की स्थापना एवं पूजन किया जाए साधारण शब्दों में पूजन के समय ही पूजन जिस दिन प्रारम्भ हो उसी दिन कलश के बगल ही एक जल पात्र और रखकर उसकी भी कलश के समान ही पूजन करना चाहिए तथा उसी जलपात्र से पूर्णयः वाचन करना चाहिए।

पूर्णयः वाचन प्रारम्भः-

यजमान पूर्व दिशा या उत्तर दिशा में मुख करके वज्र आशन या बीर आसन पर बैठ जाए तथा अपने हाथ की अंगुलियों को कमलवत बना ले कहने का अभिप्राय ये है कि अंजलि न बनाते हुए दोनों हाथों को तजर्नि को तजर्नि अंगूठे से अंगूठे को जोड़ दें बाकी अंगुलियां खुली रहें। आचार्य पूर्व पूजित जल पात्र यजमान के हाथों में रख दें तथा यजमान उस पात्र को अपने सर पर स्पर्श करवाने तथा ब्राह्मणों द्वारा मन्त्र के माध्यम से अपने दीर्घ आयु की कामना करता हुआ प्रार्थना करे तथा ब्राह्मणों को निम्न मन्त्र का वाचन करना चाहिए-

वरुण प्रार्थना- ॐ पाशपाणे नमस्तभ्यं पह्निनीजीवनायक।
पुण्याहवाचनं यावत् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।
दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णु पदानि च।
तेनाऽऽयुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।।

मन्त्र के उपरान्त या हो सके तो यह मन्त्र यजमान द्वारा ही बोलवाया जाए वह ज्यादा उत्तम होगा। यदि बोलने में न सक्षम हो तो आचार्य यजमान का प्रतिनिधित्व करे मन्त्र के पूर्ण होने के उपरान्त ही सभी ब्राह्मण

अस्तु दीर्घामायुः।। अस्तु दीर्घमायुः।। अस्तु दीर्घमायुः।।
ॐ त्रीणि पदा व्विचक्क्रमे व्विष्णुर्ग्गोपाऽअदाब्भ्यः। अतो धर्म्माणि धारयन्।।

इस वाक्य को कहकर के आशीर्वाद प्रदान करें, पुनः हाथ जोड़कर यजमान निम्न मन्त्र बोलता हुआ आशीर्वाद मांगे-

ब्राह्मण-पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुस्तु।

यजमान और ब्राह्मणों का यह संवा

ब्राह्मणः-

इस वाक्य को तीन बार बोलकर यजमान को आशीर्वाद प्रदान करें तथा कलश जमीन पर रखकर यजमान सभी ब्राह्मणों के हाथ में निम्न मन्त्र वाचन करता हुआ जल दे-

यजमान- ऊँ अपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम्।

ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु नः।।

ऊँ शिवा आपः सन्तु। ऐसा कहकर यजमान ब्राह्मणों के हाथ में जल दे।

ब्राह्मण ब्राह्मण-सन्तु शिवा आपः तीन बार इस वाक्य का उच्चारण करें तथा फिर यजमान निम्न मन्त्र बोलता हुआ पुष्प प्रदान करे-

यजमान - लम्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्कर।

सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं सदास्तु मे।। सौमनस्यमस्तु।

ब्राह्मण ब्राह्मण - अस्तु सोमनस्यम् पुनः तीन बार इन वाक्यों द्वारा पुष्प स्वीकार करें , तथा पुनः यजमान ब्राह्मण के हाथों में निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ अक्षत प्रदान करे-

यजमान - अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम्।

यद्यच्छेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम।।

अक्षतं चारिष्टं चास्तु।

ब्राह्मण ब्राह्मण - 'अस्त्वक्षतमरिष्टं च'। - ऐसा स्वीकार करें। निम्न वाक्यों द्वारा तीन बार बोलकर हाथ में गंध प्राप्त करे कहने का अभिप्राय यह है कि प्रत्येक सामग्री यजमान द्वारा मन्त्रों के माध्यम से ब्राह्मणों को प्रदान की जाए तथा ब्राह्मण वैदिक वाक्यों से तीन बार बोलकर आशीर्वाद देते जाए निम्न सामग्री यजमान ब्राह्मण को निम्न लिखित वाक्यों से प्रदान करें-

यजमान - (चन्दन) गन्धाः पान्तु।

ब्राह्मण - सौमंगल्यं चास्तु।

यजमान - (अक्षत) अक्षताः परन्तु।

ब्राह्मण - आयुष्यमस्तु

यजमान - (पुष्प) पुष्पाणि पान्तु।

ब्राह्मण - सौश्रियमस्तु।

यजमान - (सुपारी-पान) सफलताम्बूलानि पान्तु।

ब्राह्मण - ऐश्वर्यमस्तु।

यजमान - (दक्षिणा) दक्षिणाः पान्तु।

ब्राह्मण - बहुदेयं चास्तु।

यजमान - (जल) आपः पान्तु।

ब्राह्मण - स्वर्चितमस्तु।

यजमान - (हाथ जोड़कर) दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चायुष्यं चास्तु।

विप्राः - ॐ तथाऽस्तु। तथाऽस्तु।

यजमानः- (हाथ जोड़कर) यं कृत्वा सर्व वेद-यज्ञ-क्रियाकरण-कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोंगारमादिं कृत्वा ऋग्-यजुः सामऽऽथर्वाऽशीर्वचनं बहु ऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

विप्राः - ॐ वाच्यताम्। वाच्यताम्। वाच्यताम्।

यजमानः (हाथ जोड़कर) - ॐ व्रत-जप-नियम-तपः-स्वाध्याय-क्रतु-शम-दम-दया-दान-वशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्माणानां मनः समाधीयताम्।

ब्राह्मणाः - ॐ समाहित-मनसः स्मः। समाहित-मनसः स्मः। समाहित-मनसः स्मः।

यजमानः - ॐ प्रसीदत्त भवन्तः।

ब्राहमणाः - ॐ प्रसन्नाः स्मः। प्रसन्नाः स्मः। प्रसन्नाः स्मः।

इसके बाद जल पात्र उठा करके यजमान के सम्मुख दो पात्र रखें जाएं जिसको प्रथम और द्वितीय की संज्ञा दी जाए निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ जल प्रथम पात्र को डाले।

पुण्याह्वाचन

पुण्याह वाचन कलश उत्थाप्य दक्षिणप◌ाखे एकस्मिन कांस्यपात्र शरावव: (दक्षिणभागे संस्थापति पात्रे) शनैः शनैः कलशाद् जलं पातयेत्।)

यजमान:- ॐ शान्तिरस्तु। ॐ पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु। ॐ आयुष्ममस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवमस्तु। ॐ शिवं कर्माऽस्तु। ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ वेदसमृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु। ॐ धन-धान्यसमृद्धिरस्तु। ॐ पुत्रपौत्र-समृद्धिरस्तु ॐ इष्टसम्पदस्तु।

तथा अब निम्न मन्त्र को पढ़ते हुए द्वितीय पात्र में

ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु। यत्पापं रोगं अशुभं अकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।

पुन: निम्न मन्त्र को पढ़ते हुए प्रथम पात्र में -

ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। ॐ उत्तरोत्तरमहरहरभि-वृद्धिरस्तु। ॐ उत्तरोत्तरा: क्रिया: शुभा: शोभना: सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथिकरणे सुमुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गा-पांचालयौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगा: विश्वेदेवा: प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगा: मरुद्गणा: प्रीयन्ताम्। ॐ वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणा: प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरीपुरोगा उमामातर: प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मपुरोगा सर्वे वेदा: प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णु-पुरोगा: सर्वे-देवा: प्रीयन्ताम्। ॐ ऋषयश्छन्दांसि-आचार्या वेदा देवा यज्ञाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मा ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ अम्बिका-सरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्।

ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वा: कुलदेवता: प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा: ग्रामदेवता: प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा इष्टदेवता: प्रीयतन्ताम्।

तथा द्वितीय पात्र में निम्न मन्त्रां द्वारा-

ॐ **हताश्च ब्रह्मद्विष:। हताश्च परिपन्थिन:। ॐ हताश्च विघ्नकर्त्तार:। ॐ शत्रव:**

पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु घोराणि। ॐ शाम्यन्तु पापानि। ॐ शाम्यन्तु ईतयः। ॐ शाम्यन्तूपद्रवाः।

पुनः निम्न मन्त्र द्वारा प्रथम पात्र जल डाला जाए-

पात्रे - ॐ शुभानि वर्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा ओषधयः सन्तु। ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहुतयः सन्तु। ॐ शिवा अतिथयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्। ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

ॐ शुक्राऽंगारक-बुध-बृहस्पति-शनैश्चर-राहु-केतु-सोम-सहितादित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान पर्जन्यः प्रीयताम। ॐ भगवान स्वामी महासेनः प्रीयताम्। पुरोऽनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु। याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। प्रायः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

इसके बाद कलश बगल रख दें तथा प्रथम पात्र का जल घर तथा परिवार के लोगों के ऊपर छिड़कवा दें तथा द्वितीय पात्र का जल नैपित्य था घर के किसी सदस्य द्वारा घर के बाहर एकान्त में डलवा दें पुण्यः वाचन करते समय सावधानी के साथ ही पात्रों में जल डालें प्रथम पात्र का जल इधर उधर गिरजाए तो कोई बात नहीं मगर द्वितीय पात्र का जल बड़ी सावधानी पूर्वक द्वितीय पात्र में ही डालना चाहिए तो इधर उधर नहीं गिरना चाहिए और ना हि उसके छीटें कहीं पड़ने चाहिए जल के मार्जन के उपरान्त बताए गए नियमानुसार निम्न वैदिक मन्त्रों द्वारा ब्राह्मण अपना आशीर्वाद प्रदान करें-

यजमान - ॐ एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

ब्राह्मण - वाच्यताम्।

इसके बाद यजमान फिरसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करे-

यजमान - ॐ ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्।

(पहली बार) वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ पुण्याहम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः! मम ..... करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः

(दूसरी बार) पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ पुण्याहम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम ....करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः

(तीसरी बार) पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ पुण्याहम्।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।

पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।

यजमान - पृथिव्यामुद्धतायां तु यल्कल्याणं पुरा कृतम्।

(पहली बार) ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारर गृहे

करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ कल्यापाम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

(दूसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ कल्याणम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः। मम सकुटुम्बस्य सपिरवारस्य गृहे

(तीसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ कल्याणम्।

ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्या शूद्राय चार्याय च स्वाह चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे

कामः समृद्ध्यतामुप मादो नमतु।

यजमान - ॐ सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता।

(पहली बार) सम्पूर्णा सुप्रभावा च तामृद्धिं प्रब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ ऋद्ध्यताम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

(दूसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ ऋद्ध्यताम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

(तीसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ ऋद्ध्यताम्।

ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम। दिवं पृथिव्या अध्याऽरुहामाविदाम दिवान्त्स्वर्ज्योतिः।।

यजमान - ॐ स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा।

(पहली बार) विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः।। भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बभ्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणाय अमुककर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ आयुष्मते स्वस्ति।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणाय अमुककर्मणे (दूसरी बार) स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ आयुष्मते स्वस्ति।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणाय अमुककर्मणे (तीसरी बार) स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ आयुष्मते स्वस्ति।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।

स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

यजमान - ॐ समुद्रमनाज्जाता जगदानन्दकारिका।

(पहली बार) हरिप्रिया च मांगल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणाय अमुककर्मणः श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ अस्तु श्रीः।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः (दूसरी बार) श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ अस्तु श्रीः।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः (तीसरी बार) श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ अस्तु श्रीः।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण।

यजमान - ॐ मृकण्डुसूनोरायुर्यद् ध्रुवलामशयोस्तथा।

आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम्।।

ब्राह्मण - ॐ शतं जीवन्तु भवन्तः।

ॐ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।

मुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।।

यजमान - ॐ शिवगौरीविवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे।

धनदस्य गृहे या श्रीरस्मां सास्तु सद्मनि।।

ब्राह्मण - ॐ अस्तु श्रीः।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय। पशूना रूपमन्नस्य रसो यशः

श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा।।

यजमान - प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्।

भगवांछाश्वतो नित्यं नो वै रक्षतु सर्वतः।।

ब्राह्मण - ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्।

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव।

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय स्याम पतयो रयीणाम्।।

प्रण्यः वाचन के उपरान्त प्रथम पात्र का जल लेकर ब्राह्मण यजमान की पत्नी को यजमान बाग में बिठाकर निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा तथा सम्भव हो तो पूरे परिवार को पूजा स्थल पर बैठकार प्रथम पात्र के जल से निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ माजन करे-

यजमान - आयुष्पते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे।

श्रिये दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः।।

देवेन्द्रस्य यथा स्वस्ति यथा स्वस्ति गुरोर्गृहे।

एकलिंगे यथा स्वस्ति तथा स्वस्ति सदा मम।।

ब्राह्मण - ॐ आयुष्मते स्वस्ति।

ॐ प्रति पन्थामपद्यहि स्वस्तिगामनेहसम्।

येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु।।

ॐ पुण्याहवाचनसमृद्धिरस्तु।।

यजमान - अस्मिन् पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिरुपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात् श्रीमहागणपतिप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु।

दक्षिणाका संकल्प - कृतस्य पुण्याहवाचनकर्मणः समृद्ध्यर्थं पुण्याह

ॐ पयः पृथिव्यांपय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो थाः।

सरस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पंचधा सो

देशेऽभवत्सरित्।।

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमा सीद।।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।

पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।

सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभि विश्चाम्यसौ।

(शु० य० 9/30)

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।

सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिंचामि।।

(शु० य० 18/3)

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।

अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभि षिंचामि सरस्वत्यै।

भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभि षिंचामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभि षिंचामि।।(शु० य० 20/3)

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भंद्रतन्न आ सुव।।

ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः।

सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे।। (शु० य० 20/7)

ॐ त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄँ पाहि शृणुधी गिरः।

रक्षा तोकमुत त्मना।(शु० य० 18/77)

ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्र प्र दातारं तारिष उर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्व शान्ति शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।

शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।

सुशान्तिर्भवतु।

सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।

एते त्वामभिषिंचन्तु सर्वकामार्थसिद्धये।।

शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु। अमृताभिषेकोऽस्तु।।

दक्षिणादान - ॐ अद्य......कृतैतत्पुण्याहवाचनकर्मणः सांगता-सिद्धर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणोभ्यो यथाशक्ति मनसोद्दिष्टां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

नान्दी मुख श्राद्ध

पितृ अवाहन - सबसे पहले पलास पत्र से बने पत्तल को चार भागो मे बाट लेफिर संकल्प के साथ पितरों का अवाहन करना चाहिऐ

संकल्पः- हाथ मे कुश अक्षत जल पुष्प और द्रव्य लेकर संकल्प करें संकल्पमात्र से ही पितरों का अवाहन माना जाता है।

संकल्पः-

अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्राणां मातृपितामही प्रपितामहीनां अमुकामुकदेवीनां गायत्रीसावित्रीसरस्वती स्वरूपिण्यां नान्दीमुखीनां अमुकगोत्राणां पितृपितामहप्रपितामहानां अमुकामुकदेवानां वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां नान्दीमुखानां तथा अमुक गोत्राणां प्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां अमुकामुकदेवानां सपत्नीकानां अग्निवरुणप्रजापति स्वरूपाणां नान्दीमुखानां प्रीतये अमुककर्मनिमित्तकं सत्यवसुसंज्ञकविश्वेदेवपूर्वकं संक्षिप्त सङ्कल्पविधिना नान्दी मुखश्राद्धमहं करिष्ये।।

न स्वधाशर्मवर्मेति पितृनाम चोच्चरेत्।

न कर्म पितृतीर्थेन न कुशा द्विगुणीकृताः।।

न तिलैर्नापसव्येन पित्र्यामन्त्रविवर्जितम्।
अस्मच्छब्दं न कुर्वीत श्राद्धे नान्दीमुखे क्वचित्।।

पाद प्रक्षालनम - बने हुए चार खानो मे क्रमसः एक-एक खानों मे संकल्प के बाद संकल्प के साथ हाथ मे जल लेकर छोड़ना चाहिऐ -

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

ॐ मातृ-पितामही प्रपितामहाः नान्दीमुख्यः

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं यः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

आसन - पाद प्रक्षाल के बाद बतलायी गयी पूर्वाक्रियानुसार ही एक-एक खानोमे आसन प्रदान करना चाहिऐ

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः , नान्दीश्राद्धेक्षणी क्रियेतां तथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।

ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः , नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्त्यो भवन्त्यःतथा प्राप्नुवामः।

ॐ पितृ-पितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तःतथा प्राप्नुवामः।

ॐ मातामह-प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने को नमो नमः , नान्दीश्राद्धेक्षण क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।

दूर्वादि पूजन- आसन के बाद विश्वेदेव तथा पित्तरो के लिए पित्तरो (मातृ

पितामही प्रपितामही पितामह प्रपितामह सपतनीक मातामह प्रमातामह वृद्धमातामह) के लिए आसन पर क्रमसः जल वस्त्र यज्ञोपवीत चन्दन अक्षत पुष्प धूप दीपनैवेद्य ऋतुफल पान सुपारी चढाना चाहिऐ-

अत्रापः पान्तु। इमे वाससी सुवाससी। इमानि यज्ञोपवीतानि सुयज्ञोपवीतानि। अयं वो गन्धः सुगन्धः। इमे अक्षताः स्वक्षताः। इमानि पुष्पाणि सुपुष्पाणि। अयं वो धूपः सुधूपः। अयं वो दीपः सुदीपः। इदं नैवेद्यं सुनैवेद्यम्। इमानि ऋतुफलानि सुऋतुफलानि। इदं ताम्बूलं सुताम्बूलम्। इदं पूगीफलं सुपूगीफलम्।

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः

ॐ भूर्भुवः स्वः इदंगन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

देवार्जन विधि प्रबन्धः

ॐ पितृ-पितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।।

भोजनादिक संकल्प - पूजन के उपरान्त पित्तरो के निमित भोजन के निमित्त कुछ न कुछ खाद्य पदार्थ मुन्नका आंवला तथा दक्षिणा लेकर प्रत्येक खानों मे छोड़ना चाहिए

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्ताऽऽमान्न निष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृत रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ मातृ पितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं

युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्ताऽऽमान्न निष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृत रूपेण स्वाहासम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ पितृ पितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म-ब्राह्मण भोजन पर्याप्ताऽऽमान्न निष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृत रूपेण स्वाहा

सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राह्मण भोजनपर्याप्ताऽऽमान्न निष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृत रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

सक्षीरयवमुदकदानम्

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।

मातृ-पितामही प्रपितामह्यःनान्दीमुख्यःप्रीयन्ताम्।

पितृ-पितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।

नान्दी-मुखाः प्रीयन्ताम्।

मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाःसपत्नीकाः

जलाऽक्षतपुष्पप्रदानम्

जल, पुष्प एवं चावल सभी आसनों पर छोडें

चतुर्थस्थानेषु- शिवा आपः सन्तु इति जलम्। सौमनस्यमस्तु इति पुष्पम्। अक्षतं चाऽरिष्टं चाऽस्तु इत्यक्षताः।

जलधारादानम् पितरों के लिए अंगूठे की ओर से पूर्वाग्र जलधारा दें।

ॐ अघोराः पितरः सन्तु। इति पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात्।।

आशीर्वाद प्रार्थना हाथ जोड़कर प्रार्थना करें।

यजमानः कृताञ्जलिः प्रार्थयेत्-

ॐ गोत्रन्नो वर्धतां दातारो नोऽभिवर्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नो ऽअस्तु। अन्नं च नो बहुभवेदतिथीश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्या आशिषः सन्तु।

ब्राह्मणाः सन्त्वेताः सत्या आशिषः।

दक्षिणादानम्-

मुनक्का, आँवला, यव तथा अदरख मूल आदि लेकर दक्षिणा सहित अलग- अलग संकल्प पूर्वक अर्पण करें।

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक यव मूल निष्क्रयिणी दक्षिणां दातुं अहं उत्सृजे।

ॐ मातृ पितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक यव मूल निष्क्रयिणी दक्षिणां दातुं अहं उत्सृजे।

ॐ पितृ पितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक यव मूल निष्क्रयिणी दक्षिणां दातुं अहं उत्सृजे।

ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः

विसर्जन विधान - हाथ मे जल अक्षत पुष्प लेकर सभी आसनो पर छोड़ा जाताहै तथा आशीर्वाद की कामना करना चाहिए

देवार्चन विधि प्रबन्धः

ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक यव मूल निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुं अहं उत्सृजे। मन्त्रः - (यजमानः वदेत्) (यजमान स्वयं कहे।)

ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ २ ऽइयक्षते। ॐ इडामग्ने पुरुदस सनिंगोः शश्वत्तम हव मानाय साध। स्यान्नः सूनुस्तनयो व्विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्त्वस्मे।। अनेन नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम् इति यजमानः।

ब्राह्मणाः-- सुसम्पन्नम्।

विसर्जन- तथा हाथ जोड़कर सभी पित्तरो का अपने-अपने लोक जाने के लिएनिवेदन करना चाहिए

विसर्जनम् - निम्न मंत्र पढ़कर विसर्जन करें।

ॐ व्याजेवाजेऽवत व्वाजिनो नो धनेषुविप्प्राऽअमृताऽऋतज्ञाः।

अस्य मद्ध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः।

अनुव्रजनम्

ॐ आ मा व्याजस्य प्रसवो जगम्यादेमे द्यावापृथिवी व्विश्वरूपे।

आ मा गन्तां पितरा मातरा चा मा सोमोऽअमृतत्वेन गम्म्यात्।।

अस्मिन् नान्दी श्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात् श्री गणपति प्रसादाच्च सर्वः परिपूर्णोऽस्तु। अस्तु परिपूर्णः इति विप्राः।

वेदीपूजन

चतुषष्टियोगिनी, वास्तुपुरुष

वेदिका स्थापन पूजा

सनातन परम्परानुसार वैदिक क्रमानुसार पूजन क्रम में षोड़शमात्रृका सप्तघृत मातृका पूजनोपरान्त यजमान के दाईं ओर या पूर्वाभिमुख बैठे साधक के दाहिने आगनेय कोण पर चतुर खष्ट योगिनी की रचना करनी चाहिए जिसमें चौसठ खाने होते हैं प्रत्येक खानों में चित्रानुसार रंगयुक्त चावल रखना चाहिए ध्यान रहे वेदी का निर्माण सफेद या लाल वस्त्र बिछाकर चौसठ खानों का निर्माण करना चाहिए, तथा चावल से सुसज्जित कर लिम्नलिखित मन्त्रों द्वारा चतुर पष्ठी योगिनी का आवाहन सावधानी पूर्वक करना चाहिए , पंक्तिबद्ध तरीके से आचार्य के निर्देशानुसार साधक हाथ में चावल लेकर एक-एक कोष्ठक में डाले तथा आचार्य प्रत्येक नाम मन्त्रों से आवाहन करें, पूर्व और दक्षिण के कोने को आगनेय कोण कहा जाता है, तथा चित्रानुसार रचना करके वेदी का आवाहन तथा वैदिक मन्त्रों द्वारा पूर्व लिखित विधानुसार श्रद्धायुक्त होकर पूजन करना चाहिए।

चतु:षष्टि योगिनी मण्डकलम्

पूर्व

आवाहन मन्त्र

अथ चतु:षष्ठि-योगिनीनामावाहनं पूजनश्च

आग्नेय दिशा में (पूर्व दक्षिण के कोने में) योगिनी वेदी रख करके अक्षत छोड़ते हुए बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से छोड़ते हुए वेदी के बांयी ओर दक्षिण दिशा की ओर से पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः 64 योगिनीयों का आवाहन करें-

प्रथम पंक्तौ- (पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः आठ कोष्ठकों में आवाहन करें)

1. ऊँ भूर्भुवः स्वः गजाननायै नमः, गजाननामावाहयामि-स्थापयामि।

2. ऊँ भूर्भुवः स्वः सिंमुख्यै नमः, सिंहमुखीमावाहयामि-स्थापयामि।

3. ऊँ भूर्भुवः स्वः गृध्रास्यायै नमः, गृध्रास्यामावाहयामि-स्थापयामि।

4. ऊँ भूर्भुवः स्वः काकतुण्डिकायै नमः , काकतुण्डिकामावाहयामि-स्थापयामि।

5. ऊँ भूर्भुवः स्वः उष्ट्रग्रीवायै नमः, उष्ट्रग्रीवामावाहयामि-स्थापयामि।

6. ऊँ भूर्भुवः स्वः हयग्रीवायै नमः, हयग्रीवामावाहयामि-स्थापयामि।

7. ऊँ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः, वाराहीमावाहयामि-स्थापयामि।

8. ऊँ भूर्भुवः स्वः शरभाननायै नमः, शरभाननामावाहयामि-स्थापयामि।

द्वितीय पंक्तौ- (पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः आठ कोष्ठकों में आवाहन करें)

9. ऊँ भूर्भुवः स्वः उलूकिकायै नमः, उलूकिकामावाहयामि-स्थापयामि।

10. ऊँ भूर्भुवः स्वः शिवाख्यायै नमः, शिवाख्यामावाहयामि-स्थापयामि।

11. ऊँ भूर्भुवः स्वः मयूर्यै नमः, मयूरीमावाहयामि-स्थापयामि।

12. ऊँ भूर्भुवः स्वः विकटाननायै नमः, विकटाननामावाहयामि-स्थापयामि।

13. ऊँ भूर्भुवः स्वः अष्टवक्रायै नमः, अष्टवक्रामावाहयामि-स्थापयामि।

14. ऊँ भूर्भुवः स्वः कोटराक्ष्यै नमः, कोटराक्षीमावाहयामि-स्थापयामि।

15. ऊँ भूर्भुवः स्वः कुब्जायै नमः, कुब्जामावाहयामि-स्थापयामि।

16. ऊँ भूर्भुवः स्वः विकटलोचनायै नमः , विकटलोचनामावाहयामि-स्थापयामि।

तृतीय पंक्तौ - (पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः आठ कोष्ठकों में आवाहन करें)

17. ऊँ भूर्भुवः स्वः शुष्कोदर्यै नमः, शुष्कोदरीमावाहयामि-स्थापयामि।

18. ऊँ भूर्भुवः स्वः ललजिह्वायै नमः, ललजिह्वामावाहयामि-स्थापयामि।

19. ऊँ भूर्भुवः स्वः श्वदंष्ट्रायै नमः, श्वदंष्ट्रामावाहयामि-स्थापयामि।

20. ऊँ भूर्भुवः स्वः वानराननायै नमः, वानराननामावाहयामि-स्थापयामि।

21. ऊँ भूर्भुवः स्वः ऋक्षाक्ष्यै नमः, ऋक्षाक्षीमावाहयामि-स्थापयामि।

22. ऊँ भूर्भुवः स्वः केकराक्ष्यै नमः, केराक्षीमावाहयामि-स्थापयामि।

23. ऊँ भूर्भुवः स्वः वृहत् तुण्डायै नमः, वृहततुण्डामावाहयामि-स्थापयामि।

24. ऊँ भूर्भुवः स्वः सुराप्रियायै नमः, सुराप्रियामावाहयामि-स्थापयामि।

चतुर्थ पंक्तौ- (पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः आठ कोष्ठकों में आवाहन करें)

25. ऊँ भूर्भुवः स्वः कपालहस्तायै नमः, कपालहस्तामावाहयामि-स्थापयामि।

26. ऊँ भूर्भुवः स्वः रक्ताक्ष्यै नमः, रक्ताक्षीमावाहयामि-स्थापयामि।

27. ऊँ भूर्भुवः स्वः शुक्यै नमः, शुकीमावाहयामि-स्थापयामि।

28. ऊँ भूर्भुवः स्वः श्येन्यै नमः, श्येनीमावाहयामि-स्थापयामि।

29. ऊँ भूर्भुवः स्वः कपोतिकायै नमः, कपोतिकामावाहयामि-स्थापयामि।

30. ऊँ भूर्भुवः स्वः पाशहस्तायै नमः, पाशहस्तामावाहयामि-स्थापयामि।

31. ऊँ भूर्भुवः स्वः दण्डहस्तायै नमः, दण्डहस्तामावाहयामि-स्थापयामि।

32. ऊँ भूर्भुवः स्वः प्रचण्डायै नमः, प्रचण्डामावाहयामि-स्थापयामि।

पंचम पंक्तौ- (पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः आठ कोष्ठकों में आवाहन करें)

33. ऊँ भूर्भुवः स्वः चण्डविक्रमायै नमः , चण्डविक्रमामावाहयामि-स्थापयामि।

34. ऊँ भूर्भुवः स्वः शिशुघ्न्यै नमः, शिशुघ्नीमावाहयामि-स्थापयामि।

35. ऊँ भूर्भुवः स्वः काल्यै नमः, कालीमावाहयामि-स्थापयामि।

36. ऊँ भूर्भुवः स्वः पापहन्त्र्यै नमः, पापहन्त्रीमावाहयामि-स्थापयामि।

37. ऊँ भूर्भुवः स्वः रुधिरपायिन्यै नमः, रुधिरपायिनीमावाहयामि-स्थापयामि।

38. ऊँ भूर्भुवः स्वः वसाधयायै नमः, वसाधयामावाहयामि-स्थापयामि।

39. ऊँ भूर्भुवः स्वः गर्भभक्षायै नमः, गर्भभक्षामावाहयामि-स्थापयामि।

40. ऊँ भूर्भुवः स्वः शवहस्तायै नमः, शवहस्तामावाहयामि-स्थापयामि।

षष्ठ पंक्तौ - (पश्चिम से पूर्वकी ओर क्रमशः आठ कोष्ठकों में आवाहन करें)

41. ऊँ भूर्भुवः स्वः आन्त्रमालिन्यै नमः , आन्त्रमालिनीमावाहयामि-स्थापयामि।

42. ऊँ भूर्भुवः स्वः स्थूलकेश्यै नमः, स्थूलकेशीमावाहयामि-स्थापयामि।

43. ऊँ भूर्भुवः स्वः वृहत्कुक्ष्यै नमः, वृहतकुक्षीमावाहयामि-स्थापयामि।

44. ऊँ भूर्भुवः स्वः सर्पास्यायै नमः, सर्पास्यामावाहयामि-स्थापयामि।

45. ऊँ भूर्भुवः स्वः प्रेतवाहनायै नमः, प्रेतवाहनामावाहयामि-स्थापयामि।

46. ऊँ भूर्भुवः स्वः दन्त शूक-करायै नमः , दन्तशूक-करामावाहयामि-

स्थापयामि।

47. ऊँ भूर्भुवः स्वः क्रौंचयै नमः, क्रौंचीमावाहयामि-स्थापयामि।

48. ऊँ भूर्भुवः स्वः मृगशीर्षायै नमः, मृगशीर्षामावाहयामि-स्थापयामि।

सप्तम पंक्तौ - (पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः आठ कोष्ठकों में आवाहन करें)

49. ऊँ भूर्भुवः स्वः वृषाननायै नमः, वृषाननामावाहयामि-स्थापयामि।

50. ऊँ भूर्भुवः स्वः व्यात्तास्यायै नमः, व्यात्तास्यामावाहयामि-स्थापयामि।

51. ऊँ भूर्भुवः स्वः धूमनिश्वासायै नमः, धूमनिश्वासमावाहयामि-स्थापयामि।

52. ऊँ भूर्भुवः स्वः व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नमः , व्योमैक-चरणोर्ध्वदृशमावाहयामि-स्थापयामि।

53. ऊँ भूर्भुवः स्वः तापिन्यै नमः, तापिनीमावाहयामि-स्थापयामि।

54. ऊँ भूर्भुवः स्वः शोषणीदृष्ट्यै नमः, शोषणीदृष्टिमावाहयामि-स्थापयामि।

55. ऊँ भूर्भुवः स्वः कोटर्यै नमः, कोटरीमावाहयामि-स्थापयामि।

56. ऊँ भूर्भुवः स्वः स्थूलनासिकायै नमः , स्थूलनासिकामावाहयामि-स्थापयामि।

अष्टम पंक्तौ - (पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः आठ कोष्ठकों में आवाहन करें)

57. ऊँ भूर्भुवः स्वः विद्युत् प्रभायै नमः, विद्युत् प्रभामावाहयामि-स्थापयामि।

58. ऊँ भूर्भुवः स्वः वलाकास्यायै नमः, वलाकास्यामावाहयामि-स्थापयामि।

59. ऊँ भूर्भुवः स्वः मार्जार्यै नमः, मार्जारीमावाहयामि-स्थापयामि।

60. ऊँ भूर्भुवः स्वः कटपूतनायै नमः, कटपूतनामावाहयामि-स्थापयामि।

61. ऊँ भूर्भुवः स्वः अट्टाट्ट-हासायै नमः, अट्टाट्ट-हासामावाहयामि-स्थापयामि।

62. ऊँ भूर्भुवः स्वः कामाक्ष्यै नमः, कामाक्षीमावाहयामि-स्थापयामि।

63. ऊँ भूर्भुवः स्वः मृगाक्ष्यैः नमः, मृगाक्षीमावाहयामि-स्थापयामि।

64. ऊँ भूर्भुवः स्वः मृगलोचनायै नमः, मृगलोचनामावाहयामि-स्थापयामि।

वेदी के पूर्व भाग में जो तीन कोष्ठक हैं उनमें तीन कलश रखकर , कलश का

आवाहन करें - ऊँ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जा निवर्त्तस्व सानः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्माविशतादद्रयिः। दक्षिण में काली , मध्य में लक्ष्मी तथा उत्तर वाले में सरस्वती का आवाहन करें-

1. ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री महाकालयै नमः,

श्री महाकालीमावाहयामि-स्थापयामि।

2. ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः,

श्री महालक्ष्मीमावाहयामि-स्थापयामि।

3. ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री महासरस्वत्यै नमः,

श्री महासरस्वतीमावाहयामि-स्थापयामि।

ऊँ आवाहयाम्यहं देवीम् योगिनीम् परमेश्वरीम्।

योगाभ्यासेन सन्तुष्टाः परध्यान समन्विताः।।

चतुःषष्टि समाख्याता योगिन्यो हि वरप्रदाः।

पूजां गृहण्न्तु मद्दतां पुत्र-पौत्र-प्रवर्धिनीम्।।

आवाहिताः चतुःषष्टियोगिन्यः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत।।

वेदी कलशों के ऊपर क्रमशः महाकाली , महालक्ष्मी तथा महासरस्वती तीनों की मूर्ति (सोने, चाँदी या ताँते की मूर्ति) अग्न्युत्तारण प्रतिष्ठा करके स्थापित कर पूजन करें। प्रतिमा के अभाव में नारियल रखें।

आवाहन के उपरान्त निम्न वैदिक मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठा करनी चाहिए-

प्रतिष्ठा-

ऊँ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ गुं समिमन्दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयान्तामोम्3प्रतिष्ठा।

वास्तु पुरुष-

वैदिक परम्परानुसार यज्ञ के पूजा क्रम में पश्चिम और दक्षिण के कोनों से चौकोर समबाहु वेदी का निर्माण करना चाहिए तथा चित्रानुसार इसमें भी सौसठ खाने बनाने चाहिए तथा वास्तु पीठ में नौ नौ उर्ध्व तिर्यक रेखाएँ चित्रानुसार खीचना चाहिए

तथा चित्रानुसार रंगे हुए चावल से प्रत्येक कोष्ठक को भर लेना चाहिए ध्यान रहे वास्तु पुरुष देवता वास्तु के प्रधान देवता होते हैं , वास्तु (घर) देवता घर की शान्ति , सुख, समृद्धि में वृद्धि करते हैं, चित्रानुसार वेदी रचना के उपरान्त पूर्व बतायी गयी विद्या द्वारा नाम मन्त्रों से आवाहन आचार्य के निर्देशानुसार करना चाहिए तथा साधक द्वारा हाथ चावल लेकर निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा चावल डालते हुए आवाहन करना चाहिए-

वास्तुमण्डल निर्माण विधि

एक हाथ की चौकोर काठ की चौकी पर श्वेत वस्त्र बांधकर बराबर-बराबर आठ-आठ खाने कुल चौसठ (64) खाने बनावे तथा चारों कोने के तीन-तीन खानों को आधे से रेखांकित करें , तत्पश्चात् पुस्तक के अन्त में दिये गये वास्तु-मण्डल वेदी चित्र के अनुसार उन खानों को रंगीन अक्षत से पूरित करके यज्ञमण्डल अथवा पूजन स्थल के नैर्ऋत्यकोण में रखकर आवाहन व पूजन करें।

वास्तुपीठ में जो 9-9 उर्ध्व तिर्यक रेखाएँ होती हैं , उन रेखाओं के देवताओं का नाम भी प्राप्त होता है अतः उनका भी आवाहन पूजन समीचीन होगा।

८१ कोष्ठाजत्मपक गहवास्तुक मण्डपलम्

पूर्व

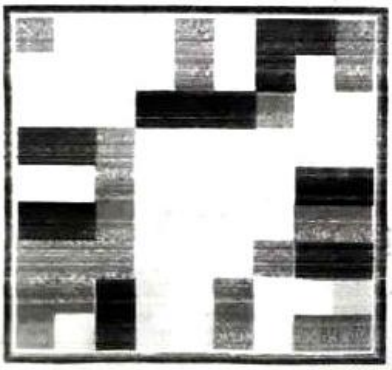

रेखा देवता आवाहनम्

पश्चिम से पूर्व के रेखा देवता

1. ॐ लक्ष्म्यै नमः। 2. ॐ यशोवत्यै नमः। 3. ॐ कान्तायै नमः। 4. ॐ

सुप्रियायै नमः। 5. ॐ विमलायै नमः। 6. ॐ शिवायै नमः। 7. ॐ सुभगायै नमः। 8. ॐ सुमत्यै नमः। 9. ॐ इडायै नमः।

दक्षिण से उत्तर के रेखा देवता

1. ॐ धन्यायै नमः। 2. ॐ प्राणायै नमः। 3. ॐ विशालायै नमः। 4. ॐ स्थिरायै नमः। 5. ॐ भद्रायै नमः। 6. ॐ जयायै नमः। 7. ॐ निशायै नमः। 8. ॐ विरजायै नमः। 9. ॐ विभावायै नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः रेखादेवताभ्यो नमः, सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत।

ॐ भूर्भुवः स्वः रेखादेवताभ्यो नमः , सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अथ वास्तुमण्डल-देवानामावाहनं पूजनंच

(अक्षत पुष्प से क्रमशः वास्तुमण्डल चित्र में लिखे गए क्रम के अनुसार देवताओं का आवाहन करें।)

1. ॐ भूर्भुवः स्वः शिखिने नमः, शिखिनमावाहयामि-स्थापयामि।
2. ॐ भूर्भुवः स्वः पर्जन्याय नमः, पर्जन्यमावाहयामि-स्थापयामि।
3. ॐ भूर्भुवः स्वः जयन्ताय नमः, जयन्तमावाहयामि-स्थापयामि।
4. ॐ भूर्भुवः स्वः कुलिशाय नमः, कुलिशमावाहयामि-स्थापयामि।
5. ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याय नमः, सूर्यमावाहयामि-स्थापयामि।
6. ॐ भूर्भुवः स्वः सत्याय नमः, सत्यमावाहयामि-स्थापयामि।
7. ॐ भूर्भुवः स्वः भृशाय नमः, भृशमावाहयामि-स्थापयामि।
8. ॐ भूर्भुवः स्वः आकाशय नमः, आकाशमावाहयामि-स्थापयामि।
9. ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः, वायुमावाहयामि-स्थापयामि।
10. ॐ भूर्भुवः स्वः पूष्णे नमः, पूष्णमावाहयामि-स्थापयामि।
11. ॐ भूर्भुवः स्वः वितथाय नमः, वितथमावाहयामि-स्थापयामि।
12. ॐ भूर्भुवः स्वः गृहक्षताय नमः, गृहक्षतमावाहयामि-स्थापयामि।
13. ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः, यममावाहयामि-स्थापयामि।
14. ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाय नमः, गन्धर्वमावाहयामि-स्थापयामि।

15. ऊँ भूर्भुवः स्वः भृंगराजाय नमः, भृंगराजमावाहयामि-स्थापयामि।
16. ऊँ भूर्भुवः स्वः मृगाय नमः, मृगमावाहयामि-स्थापयामि।
17. ऊँ भूर्भुवः स्वः पितृभ्यः नमः, पितृनावाहयामि-स्थापयामि।
18.ऊँ भूर्भुवः स्वः दौवारिकाय नमः, दौवारिकमावाहयामि-स्थापयामि।
19. ऊँ भूर्भुवः स्वः सुग्रीवाय नमः, सुग्रीवमावाहयामि-स्थापयामि।
20. ऊँ भूर्भुवः स्वः पुष्पदन्ताय नमः, पुष्पदन्तमावाहयामि-स्थापयामि।
21. ऊँ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि-स्थापयामि।
22. ऊँ भूर्भुवः स्वः असुराय नमः, असुरमावाहयामि-स्थापयामि।
23. ऊँ भूर्भुवः स्वः शोषाय नमः, शोषमावाहयामि-स्थापयामि।
24. ऊँ भूर्भुवः स्वः पापाय नमः, पापमावाहयामि-स्थापयामि।
25. ऊँ भूर्भुवः स्वः रोगाय नमः, रोगमावाहयामि-स्थापयामि।
26. ऊँ भूर्भुवः स्वः अहये नमः, अहिमावाहयामि-स्थापयामि।
27. ऊँ भूर्भुवः स्वः मुख्याय नमः, मुख्यमावाहयामि-स्थापयामि।
28. ऊँ भूर्भुवः स्वः भल्लाटाय नमः, भल्लाटमावाहयामि-स्थापयामि।
29. ऊँ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः, सोममावाहयामि-स्थापयामि।
30. ऊँ भूर्भुवः स्वः सर्पाय नमः, सर्पमावाहयामि-स्थापयामि।
31. ऊँ भूर्भुवः स्वः अदित्यै नमः, अदितिमावाहयामि-स्थापयामि।
32. ऊँ भूर्भुवः स्वः दित्यै नमः, दितिमावाहयामि-स्थापयामि।
33. ऊँ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः, अप आवाहयामि-स्थापयामि।
34. ऊँ भूर्भुवः स्वः सावित्राय नमः, सावित्रमावाहयामि-स्थापयामि।
35. ऊँ भूर्भुवः स्वः जयाय नमः, जयमावाहयामि-स्थापयामि।
36. ऊँ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि-स्थापयामि।
37. ऊँ भूर्भुवः स्वः अर्यमणे नमः, अर्यमणमावाहयामि-स्थापयामि।
38. ऊँ भूर्भुवः स्वः सवित्रे नमः, सवित्रमावाहयामि-स्थापयामि।
39. ऊँ भूर्भुवः स्वः विवस्वते नमः, विवस्वतमावाहयामि-स्थापयामि।
40. ऊँ भूर्भुवः स्वः बिबुधाधिपाय नमः, बिबुधाधिपमावाहयामि-स्थापयामि।

41. ॐ भूर्भुवः स्वः मित्राय नमः, मित्रमावाहयामि-स्थापयामि।
42. ॐ भूर्भुवः स्वः राजयक्ष्मणे नमः, राजयक्ष्माणमावाहयामि-स्थापयामि।
43. ॐ भूर्भुवः स्वः पृथ्वीधराय नमः, पृथ्वीधरमावाहयामि-स्थापयामि।
44. ॐ भूर्भुवः स्वः आपवत्साय नमः, आपवत्समावाहयामि-स्थापयामि।
45. ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि-स्थापयामि।
46. ॐ भूर्भुवः स्वः चरक्यै नमः, चरकीमावाहयामि-स्थापयामि।
47. ॐ भूर्भुवः स्वः विदार्यै नमः, विदारीमावाहयामि-स्थापयामि।
48. ॐ भूर्भुवः स्वः पूतनायै नमः, पूतनामावाहयामि-स्थापयामि।
49. ॐ भूर्भुवः स्वः पापराक्षस्यै नमः, पापराक्षसीमावाहयामि-स्थापयामि।
50. ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि-स्थापयामि।
51. ॐ भूर्भुवः स्वः अर्यम्णे नमः, अर्यम्णमावाहयामि-स्थापयामि।
52. ॐ भूर्भुवः स्वः जृम्भकाय नमः, जृम्भकमावाहयामि-स्थापयामि।
53. ॐ भूर्भुवः स्वः पिलिपिच्छाय नमः, पिलिपिच्छमावाहयामि-स्थापयामि।
54. ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि-स्थापयामि।
55. ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि-स्थापयामि।
56. ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः, यममावाहयामि-स्थापयामि।
57. ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि-स्थापयामि।
58. ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि-स्थापयामि।
59. ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः, वायुमावाहयामि-स्थापयामि।
60. ॐ भूर्भुवः स्वः कुबेराय नमः, कुबेरमावाहयामि-स्थापयामि।
61. ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि-स्थापयामि।
62. ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्मामावाहयामि-स्थापयामि।
63. ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि-स्थापयामि।
64. ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पतये नमः, वास्तोष्पतिमावाहयामि-स्थापयामि।

ॐ तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्के व्वायव्व्या नाण्ण्या ग्ग्राम्म्याश्च्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

वास्तु मन्त्र-

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वादेशो ऽअनमीवो भवानः।
यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे सं चतुष्पदे।।
ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तुपुरुषाय नमः। वास्तुपुरुषं आवाहयामि स्थापयामि।

वेदिकास्थापन-पूजन- 2

क्षेत्रपाल, कुण्डस्थ देवता-पूजन

क्षेत्रपाल

वैदिक परम्परा में यज्ञिक पूजन क्रमानुसार पश्चिम और उत्तर के कोने में समबाहु निर्माण कर उसको सफेद वस्त्र से सुसज्जित कर लें तथा चित्रानुसार नौ कोष्ठक (खाने) में बांटना चाहिए तथा प्रत्येक खानों में एको पंचासत क्षेत्रपाल रचना चाहिए तथा सावधानी पूर्वक प्रत्येक खानों में आचार्य के निर्देशानुसार नाम मन्त्रों द्वारा हाथ में चावल लेकर साधक क्षेत्रपाल का आवाहन करें , क्षेत्रपाल क्षेत्र की तथा यज्ञ के रक्षक देवता होते हैं, इनकी पूजा पूरी श्रद्धा के साथ करनी चाहिए।

आवाहन मन्त्र

पूर्वेदले सप्तकोष्ठेषु (पूर्वदल के सात कोष्ठकों में आवाहन करें)

1. ॐ भूर्भुवः स्वः अजराय नमः, अजरमावाहयामि स्थापयामि।

2. ॐ भूर्भुवः स्वः व्यापकाय नमः, व्यापकमावाहयामि स्थापयामि।

3. ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रचौराय नमः, इन्द्रचौरमावाहयामि स्थापयामि।

4. ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रमूर्त्तये नमः, इन्द्रमूत्तिमावाहयामि स्थापयामि।

5. ॐ भूर्भुवः स्वः उक्षाय नमः, उक्षमावाहयामि स्थापयामि।

6. ॐ भूर्भुवः स्वः कूष्माण्डाय नमः, कूष्माण्डमावाहयामि स्थापयामि।

7. ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि।

आग्नेयदले सप्तकोष्ठेषु (अग्निकोण वाले दल के सात कोष्ठकों में आवाहन करें)

8. ऊँ भूर्भुवः स्वः वटुकाय नमः, वटुकमावाहयामि स्थापयामि।

9. ऊँ भूर्भुवः स्वः विमुक्ताय नमः, विमुक्तमावाहयामि स्थापयामि।

10. ऊँ भूर्भुवः स्वः लिप्तकामाय नमः, लिप्तकाममावाहयामि स्थापयामि।

11. ऊँ भूर्भुवः स्वः लीलाकाय नमः, लीलाकमावाहयामि स्थापयामि।

12. ऊँ भूर्भुवः स्वः एकदंष्ट्राय नमः, एकदंष्ट्रमावाहयामि स्थापयामि।

13. ऊँ भूर्भुवः स्वः ऐरावताय नमः, ऐरावतमावाहयामि स्थापयामि।

14. ऊँ भूर्भुवः स्वः ओषधिघ्नाय नमः, ओषधिघ्नमावाहयामि स्थापयामि।

दक्षिणदले षड्कोष्ठेषु (दक्षिण वाले दल के छः कोष्ठकों में आवाहन करें)

15. ऊँ भूर्भुवः स्वः बन्धनाय नमः, बन्धनमावाहयामि स्थापयामि।

16. ऊँ भूर्भुवः स्वः दिव्यकाय नमः, दिव्यकमावाहयामि स्थापयामि।

17. ऊँ भूर्भुवः स्वः कम्बलाय नमः, कम्बलमावाहयामि स्थापयामि।

18. ऊँ भूर्भुवः स्वः भीषणाय नमः, भीषणमावाहयामि स्थापयामि।

19. ऊँ भूर्भुवः स्वः गवयाय नमः, गवयमावाहयामि स्थापयामि।

20. ऊँ भूर्भुवः स्वः घण्टाय नमः, घण्टामावाहयामि स्थापयामि।

नैर्ऋत्यदलेषड्कोष्ठेषु (नैर्ऋत्यकोण वाले दल के छः कोष्ठकों में आवाहन करें)

21. ऊँ भूर्भुवः स्वः व्यालाय नमः, व्यालमावाहयामि स्थापयामि।

22ा. ऊँ भूर्भुवः स्वः अणवे नमः, अणुमावाहयामि स्थापयामि।

23. ऊँ भूर्भुवः स्वः चन्द्रवारुणाय नमः, चन्द्र-वारुणमावाहयामि स्थापयामि।

24. ऊँ भूर्भुवः स्वः पटाटोपाय नमः, पटाटोपमावाहयामि स्थापयामि।

25. ऊँ भूर्भुवः स्वः जटालाय नमः, जटालमावाहयामि स्थापयामि।

26. ऊँ भूर्भुवः स्वः क्रतवे नमः, क्रतुमावाहयामि स्थापयामि।

पश्चिमदलेषड्कोष्ठेषु (पश्चिम दल के छः कोष्ठकों मंे आवाहन करें)

27. ऊँ भूर्भुवः स्वः घण्टेश्वराय नमः, घण्टेश्वरमावाहयामि स्थापयामि।
28. ऊँ भूर्भुवः स्वः विटंगकाय नमः, विटंगकमावाहयामि स्थापयामि।
29. ऊँ भूर्भुवः स्वः मणिमानाय नमः, मणिमानमावाहयामि स्थापयामि।
30. ऊँ भूर्भुवः स्वः गणबन्धवे नमः, गणबन्धुमावाहयामि स्थापयामि।
31. ऊँ भूर्भुवः स्वः डामराय नमः, डामरमावाहयामि स्थापयामि।
32. ऊँ भूर्भुवः स्वः ढुण्डिकर्णाय नमः, ढुण्डिकर्णमावाहयामि स्थापयामि।

वायव्यदले षड्कोष्ठेषु (वायव्यकोण के दल में छः कोष्ठकों में आवाहन करें)

33. ऊँ भूर्भुवः स्वः स्थविराय नमः, स्थविरमावाहयामि स्थापयामि।
34. ऊँ भूर्भुवः स्वः दन्तुराय नमः, दन्तुरमावाहयामि स्थापयामि।
35. ऊँ भूर्भुवः स्वः धनदाय नमः, धनदमावाहयामि स्थापयामि।
36. ऊँ भूर्भुवः स्वः नागकर्णाय नमः, नागकर्णमावाहयामि स्थापयामि।
37. ऊँ भूर्भुवः स्वः महाबलाय नमः, महाबलमावाहयामि स्थापयामि।
38. ऊँ भूर्भुवः स्वः फेत्काराय नमः, फेत्कारमावाहयामि स्थापयामि।

उत्तरदलेषड्कोष्ठेषु (उत्तर दिशा के दल के छः कोष्ठकों में आवाहन करें)

39. ऊँ भूर्भुवः स्वः चीकराय नमः, चीकरमावाहयामि स्थापयामि।
40. ऊँ भूर्भुवः स्वः सिंहाय नमः, सिंहमावाहयामि स्थापयामि।
41. ऊँ भूर्भुवः स्वः मृगाय नमः, मृगमावाहयामि स्थापयामि।
42. ऊँ भूर्भुवः स्वः यक्षाय नमः, यक्षमावाहयामि स्थापयामि।
43. ऊँ भूर्भुवः स्वः मेघवाहनाय नमः, मेघवाहनमावाहयामि स्थापयामि।
44. ऊँ भूर्भुवः स्वः तीक्ष्णोष्ठाय नमः, तीक्ष्णोष्ठमावाहयामि स्थापयामि।

ईशानदलेषड्कोष्ठेषु (ईशानकोण वाले दल के छः कोष्ठकों में आवाहन करें)

45. ऊँ भूर्भुवः स्वः अनलाय नमः, अनलमावाहयामि स्थापयामि।
46. ऊँ भूर्भुवः स्वः शुक्लतुण्डाय नमः, शुक्लतुण्डमावाहयामि स्थापयामि।
47. ऊँ भूर्भुवः स्वः सुधालापाय नमः, सुधालापमावाहयामि स्थापयामि।

48. ॐ भूर्भुवः स्वः बर्बरकाय नमः, बर्बरकमावाहयामि स्थापयामि।

49. ॐ भूर्भुवः स्वः पवनाय नमः, पवनमावाहयामि स्थापयामि।

50. ॐ भूर्भुवः स्वः पावनाय नमः, पावनमावाहयामि स्थापयामि।

मध्यदले (मध्यदल के कोष्ठक में आवाहन करें)

51. ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय नमः, क्षेत्रपालमावाहयामि स्थापयामि।

- वेदी के सामने (या ऊपर) कलश स्थापन करें- ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा व्विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जा निवर्तस्व सानः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्माव्विशताद्रयिः।
- वेदी के मध्य में एक धातुकलश स्थापित कर उसका पूजन करके कलश के ऊपर भैरव की ताम्र या लौह की मूर्ति का आवाहन करके अग्न्युत्तारण, प्रतिष्ठा कर पूजन करें। मूर्ति के अभाव में यंत्र अथवा नारियल रख सकते हैं।

भैरव-आवाहन मंत्र-

ॐ नहि स्पश मवि दत्र न्य मस्माद् वैश्वानरात् पुरुएतारमग्नेः।
एमेन म वृधत्रमृता अमर्त्यम् वैश्वानरं क्षैत्र जित्याय देवाः।।

ॐ भूत प्रेत पिशाचाद्यैरावृतं शूल-पाणिनम्।
आवाहये क्षेत्रपालं तु कर्मण्यस्मिन् सुखायनः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भैरवाय नमः भैरवमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञ गुं समिमन्दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् 3 प्रतिष्ठ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अजरादिमण्डलदेवता सहित री क्षेत्रपालय नमः , सुप्रतिष्ठतो वरदो भव।।

निर्माण विधि

एक हाथ लम्बी , चौड़ी तथा ऊँची काठ की चौकी या वेदी में श्वेत , रक्त या

पीत वस्त्रावेष्टित करके चार-चार तिर्यक एवं ऊर्ध्व रेखा करने पर नव कोष्ठक का मण्डल बनेगा जिसमें प्रत्येक कोष्ठक में छः-छः पद (चित्रानुसार) बनावे , पूर्व एवं अग्निकोण के कोष्ठक में सात-सात पद तथा मध्य के कोष्ठक में एक पद बनाने पर इक्यावन (51) पद का क्षेत्रपाल मण्डल बनेगा।

कुण्डस्थ देवता पूजन

यज्ञशाल के मध्य में हवन कुण्ड की रचना करें, हवन कुण्ड में कण्ठ तथा तीन परिधि (सतरज तम) तथा कुण्ड के ऊपर योनी की रचना करें तथा कुण्ड की रचना के उपरान्त सर्वप्रथम निम्न मन्त्रों द्वारा **विश्वकर्मा का आवाहन मन्त्र**

आवाहनम् - (कुण्ड को स्पर्श करते हुए आवाहन करें)

आवाहयामि तत्कुण्डं विश्वकर्म-विनिर्मितम्।

शरीरं यच्च ते दिव्यमग्न्यधिष्ठानमद्भुतम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः कुण्डाय नमः, कुण्डमावाहयामि स्थापयामि।

तथा विश्वकर्मा के आवाहन के पश्चात् श्वेत वर्णालंकृत ऊपरी मेखला (ऊपर की परिधि में) निम्न मन्त्र से विष्णु का आवाहन निम्न मन्त्रों द्वारा करें-

यहाँ बनाना है

उपरिमेखलायाम् श्वेतवर्णालंकृतायां विष्णु आवाहनम् -

ऊँ इदं विष्णुर्व्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्। समूढमस्य पा ऊँ सुरे स्वाहा।।

विष्णो यज्ञपते देव दुष्टदैत्यनिषूदन।

विभो यज्ञस्य रक्षार्थं कुण्डे सन्निहितो भव।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः नमः, मावाहयामि स्थापयामि।

तथा मध्य में रक्त वर्णालंकृत ब्रह्मा का आवाहन निम्न मन्त्रों द्वारा करें-

मध्यमेखलायां रक्तवर्णालंकृतायां ब्रह्माऽवाहनम् -

ऊँ ब्रह्म-जज्ज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसी-मतः सुरुचो व्वेनऽआवः। सबुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य व्विष्ठ्ष्ठाः सतश्च योनिम सतश्च व्विवः।।

हंसपृष्ठसमारुढ आदिदेव जगत्पते।

रक्षार्थं मम यज्ञस्य मेखलायां स्थिरो भव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।।

इसके उपरान्त अधोमेखला (नीचे वाली परिधि) कृष्ण वर्णालंकृत मेखला में भगवान रुद्र का आवाहन निम्न मंत्रों से करें-

अधो मेखलायां कृष्णवर्णालंकृतायां रुद्रावाहनम्ॢ -

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः।।

गंगाधर महादेव वृषारूढ महेश्वर।

आगच्छ मम यज्ञेऽस्मिन्रक्षार्थं राक्षसां गणात्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि स्थापयामि।।

मेखला में देवताओं के आवाहन के उपरान्त मध्य कुण्ड के ऊपर रचित योनी का निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा आवाहन करें-

योन्यावाहनम् -

ॐ क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि। मात्वा हिऽसीन्माहिऽसीः।।

आगच्छ देवि कलयाणि जगदुत्पत्तिहेतुके।

मनोभवयुते रम्ये योनि त्वं सुस्थिरा भव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः जगदुत्पत्तिकायै मनोभवयुतायै योन्यै नमः , योनिमावाहयामि स्थापयामि।।

और हवन कुण्ड के कण्ठ में निम्न मन्त्र द्वारा भगवान रुद्र का पुनः आवाहन करें-

कुण्डस्य रुद्रावाहनम् -

ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठादिव रुद्द्राऽउपश्श्रिताः। तेषा साहस्र-योजनेवधत्वानि तन्मसि।। नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वाऽअधः क्षमाचराः। तेषाः सहस्र-योजनेवधत्वानि सत्मसि।।

कुण्डस्य कण्ठदेशोऽयं नीलजीमूतसन्निभः।

अस्मिन्नावाहये रुद्रं शितिकण्ठं कपालिनम्।।

कुण्ड मंगलरूपेण सर्वकुण्डे प्रतिष्ठितः।

परितोमेखलास्त्वत्तो रचिता विश्वकर्मणा।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः कण्ठे रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि स्थापयामि।।

कण्ठ के आवाहन के पश्चात कुण्ड के मध्य में नाभि का आवाहन करें जिसके मन्त्र निम्न हैं-

कुण्डमध्ये नाभ्यावाहनम् -

ऊँ नाभिर्म्मे चित्तं व्विज्ञानपायुर्म्मे पचितिर्ब्भसत्। आनन्द-नन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्ग्यम्पसः। जंगधाभ्याम्पभ्दयां धर्म्मोसि व्विशि राजा प्प्रतिष्ठितः।।

पद्माकाराऽथवा कुण्ड-सदृशाकृति-बिभ्रती।

आधारः सर्वकुण्डानां नाभिमावाहयाम्यहम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः नाभ्यै नमः, नाभिमावाहयामि स्थापयामि।।

पूजा क्रम में पुनः कुण्ड के अन्दर नैवित्य कोण में वास्तु पुरुष का आवाहन निम्न मन्त्रों से करें-

कुण्डाभ्यन्तरे नैर्ऋत्यकोणे वास्तुपुरुषावाहनम्-

ऊँ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवो भवानः।

यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।

आवाहयामि देवेशं वास्तुदेवं महाबलम्।

देवदेवं गणाध्यक्षं पाताल-तलवासिनम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः नैर्ऋत्यकोणे वास्तुपुरुषाय नमः , वास्तुपुरुषनाभिमावाहयामि स्थापयामि।।

(इस प्रकार आवाहन करके प्रतिष्ठा करें।)

तथा आवाहन के उपरान्त वैदिक मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठा एवं पूर्व लिखित विधा द्वारा षोड्सोपचार पूजन करना चाहिए तथा किसी पत्ते पर दही उड़द रख कर निम्न मन्त्रों से बलिदान करना चाहिए तथा दाहिने हाथ में जल लेकर के समर्पित करना चाहिए मन्त्र-

प्रतिष्ठा -

ऊँ मनोजूतिर्ज्जुषतामाजस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञ , समिमन्दधातु विश्वेदेवा स इह मादयन्तामों 3 प्रतिष्ठा।।

ऊँ भूर्भुवः विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्ताः सर्वे कुण्डस्थदेवाः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्तेभ्यः कुण्डस्थदेवेभ्यो नमः। अथवा पुरुषसूक्त मन्त्रों से कुण्ड के आवाहित सभी देवताओं का एक तंत्र से षोडशोपचार पूजन करके प्रार्थना करें।

वेदिकास्थापन-पूजन- 3, नवग्रह, स्थापन एवं पूजन

नवग्रह स्थापना एवं पूजन -

यज्ञ मण्डप में उत्तर पूर्व के कोने में (इसान) समबाहु एक वेदी की रचना करनी चाहिए जिसमें सफेद वस्त्र डालकर चित्रानुसार नौ खानों में बांट देना चाहिए प्रत्येक खानों में चित्रानुसार एक-एक मन्त्रों द्वारा आवाहन करना चाहिए वेदी में सभी गृहों का स्थान निश्चित है निश्चित स्थान पर ही गृहों को स्थान देना चाहिए।

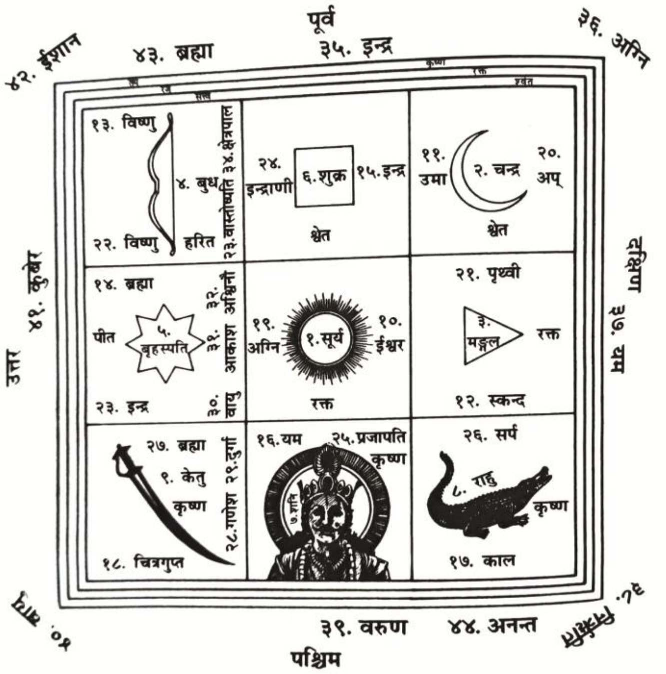

निर्माण विधि

एक हाथ लम्बी , चौड़ी तथा ऊँची काठ की चौकी या वेदी में श्वेत , रक्त या पीत वस्त्रावेष्टित करके पीत या रक्त रंग से अथवा कुंकुम से पूर्वापर चार-चार रेखा करने से नव पद का नवग्रह मण्डल बनता है , चित्रानुसार ग्रहों की आकृति का निर्माण रंगीन अक्षत से करके यज्ञमण्डप में (पूजन स्थल में) ईशान कोण में रखकर इनका आवाहन पूजन करना चाहिए। ग्रहों के प्रत्येक कोष्ठक में दाहिनी ओर अधि देवताओं का तथा बाईं ओर प्रत्यधि देवताओं का आवाहन होता है, साथ ही पंचलोकपालों का वेदी के बाहर दशों दिशाओं में इन्द्रादि दशदिक्पालों का आवाहन पूजन किया जाता है।

सूर्यावाहन

वेदी के मध्य में भगवान सूर्य का आवाहन निम्न मन्त्र द्वारा करें-

1. सूर्यावाहनम - (नवग्रह वदा के मध्य कोष्ठक में)

ॐ आकृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेश्यत्रमृतं मर्त्यंच।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

जपा-कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम्।।

नवगृह वेदी के अग्नि कोण वाले कोष्ठक में चन्द्रमा का आवाहन निम्न मन्त्रों से करें-

2. चन्द्र-आवाहनम् -

ॐ इमन्देवा ऽअसपत्न गुं सुबद्धवम्महते क्षत्त्राय महते ज्ज्यैष्ठ्याय महते जान राज्ज्यायेन्द्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्त्रमस्यै व्विश ऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्म्माकं ब्ब्राह्मणाना गुं राजा।।

दक्षिण कोष्ठक में मंगल (भौम) का आवाहन मन्त्र-

3. भौम-आवाहनम् -

ॐ अग्निर्म्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्व्याऽअयम्। अपा गुं सि जित्र्वति।।

इसानुकोण के कोष्ठक में बुद्ध का आवाहन मन्त्र-

4. बुध-आवाहनम् - (नवग्रह वेदी के ईशानकोण के कोष्ठक में)

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्प्रतिजागृहि त्वमिष्ष्टापूर्त्ते स गुं सृजेथामयंच। अस्म्मिन्त्सधस्थे अद्ध्युत्तरस्म्मिन् व्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत्।।

वेदी के उत्तर कोष्ठक में बृहस्पति का आवाहन करें-

5. बृहस्पति-आवाहनम् - (नवग्रह वेदी के उत्तर कोष्ठक में)

ॐ बृहस्प्पते ऽअति यदर्य्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।

यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्प्रजात तदस्म्मासु द्द्रविणं धेहि चित्त्रम्।।

नवगृह के पूर्व खाने में शुक्र का आवाहन

6. शुक्र-आवाहनम् - (नवग्रह वेदी के पूर्व कोष्ठक में)

ॐ अन्नात्परिस्स्रुतो रसं व्व्रह्मणा व्व्यपिबत्क्षत्त्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं व्विपान गं͘ु शुक्क्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।।

नवगृह वेदी के पश्चिम कोष्ठक में शनि का आवाहन

7. शनि-आवाहनम् - (नवग्रह वेदी के पश्चिम कोष्ठक में)

ॐ शन्नो देवीरभिष्ष्टय ऽ आपो भवन्तु पीतये।

शः व्योरभिस्स्रवन्तु नः।।

नवगृह वेदी के नैदित्व कोण में राहु का आवाहन

8. राहु-आवाहनम् -

ॐ कया नश्चित्त्र ऽआभुवदूती सदावृधः सखा।

कया शचिष्ठ्या व्वृता।।

नवगृह वेदी के वायब्य कोण में केतु का आवाहन

9. केतु-आवाहनम् - (नवग्रह वेदी के वायव्यकोण के कोष्ठक में)

ॐ केतुं कृण्ण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्या ऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।।

वैदिक मन्त्रों द्वारा आचार्य के निर्देशानुसार बने हुए मण्डल पर चावल डालते हुए नवगृह का आवाहन करना चाहिए , तथा वैदिक मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठा करके पूर्व लिखित विधा द्वारा पूजन करना चाहिए।

इकाई 3 : महायज्ञ- 3

वेदिकास्थापन-पूजन- 4, असंख्यातरुद्र,इन्द्रादिदश दिक्पाल, अष्टद्वारपाल, पंचलोकपाल, इन्द्रध्वज-हनुमत्ध्वज-स्थापन

प्रस्ता ावना

उक्त् इकाई में वेदिकास्थापन-पूजन , असंख्यातरुद्र, इन्द्रादिदशदिक्पाल, अष्टद्वारपाल, पंचलोकपाल, इन्द्रध्वज-हनुमत्ध्वज-स्थापन पर प्रकाश डाला गया है।

उददेश्या-

इस इकाई के अध्य यन से वेदिकास्थापन-पूजन, असंख्यातरुद्र, इन्द्रादिदशदिक्पाल, अष्टद्वारपाल, पंचलोकपाल, इन्द्रध्वज-हनुमत्ध्वज-स्थापन आदि का ज्ञान प्राप्तक होगा।

प्रश्नद -

१. वेदिकास्थापन-पूजन, असंख्यातरुद्र, इन्द्रादिदशदिक्पाल, अष्टद्वारपाल, पंचलोकपाल, इन्द्रध्वज-हनुमत्ध्वज-स्थापन किसे कहते है।

२. वेदिकास्थापन-पूजन, असंख्यातरुद्र, इन्द्रादिदशदिक्पाल, अष्टद्वारपाल, पंचलोकपाल, इन्द्रध्वज-हनुमत्ध्वज-स्थापन के विषय में वर्णन कीजिए।

असंख्यात रुद्र -

असंख्यात रुद्र तथा इन्द्राधि दसधिक पाल नवगृह वेदी के दाहिनी ओर दक्षिण दिशा की तरफ असंख्यात रुद्र की रचना करके कलश स्थापन करना चाहिए, मन्त्र-

ॐ आजिग्घ्र कलशं मह्या त्वा व्विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जा निवर्त्तस्व सानः
सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्माव्विशताद्द्रयिः।।

ॐ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम्।
तेषा ऽ सहस्र योजने वधन्वानितन्मसि।।

रुद्राः रुद्रगणाश्चैव असंख्याताः प्रकीर्तिताः।

तेषामावाहये भक्त्या स्वीकुर्वन्त्वर्चनं मम।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः असंख्यात रुद्रेभ्यो नमः , असंख्यात रुद्रान् आवाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा-

ऊँ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं य्यज्ञ गुं समिमं दधातु। व्विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामों3 प्रतिष्ठ।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः असंख्यात रुद्रेभ्यो नमः , असंख्यातरुद्रानः सुप्रतिष्ठताः वरदाः भवन्तु।

पूर्व लिखित पूजन विधा द्वारा षोड्शो पचार पूजन करना चाहिए-

प्रार्थना

ऊँ रुद्राः रुद्रगणाश्च रुद्र-सुहृदाः शान्तं शिवं शंकरम्।
कैलाशाचल-वासिनः शिव-समाः सर्वे च शूलं धराः।।
वृषभस्था च भुजंगहार-भसिता-भस्मांगरागान्विताः।
ते सर्वे शिवरूपि-भद्ररुद्राः कुर्वन्तु नः मंगलम्।।

हाथ में जल लेकर के असंख्यात रुद्र को समर्पित करें-

इस प्रकार प्रार्थना करके पूजन समर्पित करें- अनेन पुजनेन असंख्यात् रुद्राः प्रीयन्तां न मम।।

मण्डप पूजनम्

अथ मण्डप पूजनम्

आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य ।। अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं करिष्यमाण सनवग्रहमख अमुकयाग कर्मणि मण्डप पूजां करिष्ये। तत्राऽदौ षोडश स्तम्भ पूजा-

(१)**ततो मध्यवेदीशान स्तम्भे रक्तवर्णं ब्रह्माणं पूजयेत् - एह्येहि विप्रेन्द्र पितामहादौ हंसाधिरूढ़ त्रिदशैकवन्द्य । श्वेतोत्पलाभास कुशाम्बुहस्त गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ।।**

ऊँ ब्रह्मा यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेन ऽ आवः। स बुध्न्या उपमा ऽ अस्य

व्विष्टाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः ॥ ॐ भू० ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि॥ ततो गन्धादिभिः सम्पूज्य ॥ नमस्कारः-

कृष्णाजिनाम्बरधरं पद्मासन चतुर्मुख । जटाधर जगद्धातः प्रसीद कमलोद्भव ॥

इति प्रार्थ्य-

ॐ सावित्र्यै नमः ॥ ॐ वास्तुदेवतायै नमः ॥ ॐ ब्राह्मयै नमः ॥ ॐ गङ्गायै नमः ॥ इमाः सम्पूज्य स्तम्भमालभेत्

महावेद्यां तमीशाने ऋजुं वसुकरात्मकम् ।

सर्वविघ्नविनाशार्थ स्तम्भं चैवालभाम्यहम् ॥

ॐ ऊर्द्धव ऽऊ पुण ऽऊतये तिष्ठा देवो न सविता ॥ ऊर्दो व्वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्व्वघद्भिर्व्वि ह्वयामहे ॥ ततः स्तम्भशिरसि ॥ ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमी-दसदन्मातरं पुरः ॥ पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥ ॐ नागमात्रे नमः ॥

अथ शाखाबन्धनानि पूजयेत् -

नमोऽस्तु शाखाबन्धाय सुदृढाय महात्मने । महामण्डप रक्षार्थ नतयः सन्तु मे सदा ॥

ॐ यतो यतः समीहसे ततो नो ऽ अभयं कुरु । शं नः कुरु प्प्रजाब्भ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ ॐ सर्वेभ्यो नमः ॥ अनेन पूजनेन मध्यवेदीशान कोणस्थितस्तम्भाधिष्ठातृदेवताः प्रीयन्ताम् ॥१॥

(१) ततो मध्यवेद्याग्नेय कोण स्तम्भे कृष्णवर्ण विष्णुं पूजयेत्- आवाहयेत् तं गरुडोपरि स्थितं रमार्द्धदेहं सुराराजवन्दितम्। केशान्तकं चक्रगदाब्जहस्तं भजामि देवं वसुदेवसूनुम् ॥ आगच्छ भगवन्विष्णो स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव ॥

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पा सुरे स्वाहा ॥ॐ भू० विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि ॥ गन्धादिभिःसम्पूज्य - नमस्कार:-

देवदेव पाहि जगन्नाथ विष्णो यज्ञपते विभो। दुःखाम्बुधेरस्मान् भक्तानुग्रहकारक ॥

ॐ लक्ष्यै नमः ॥ आदित्यायै नमः ॥ वैष्णव्यै नमः ॥ वसुदायै नमः ॥सम्पूज्य - स्तम्भमालभेत्

महावेद्याश्चाग्निकोणे सुदृढं वस्त्रशोभितम् । सर्वकार्य प्रसिद्ध्यर्थ स्तम्भं चैवालभाम्यहम् ॥

ॐ ऊद्धर्व S ऊषुण० ॥ स्तम्भशिरमिॐ आयं गौः ० ॥ नागमात्रे नमः ॥ शाखोद्वन्धनानि पू०॥ॐ यतो यतः ॥ ॐ सर्वेभ्यो नमः ॥२॥

(३) महावेद्यां नैर्ऋत्यकोण स्तम्भं श्वेतं शङ्करं पूजयेत् पार्वतीप्राणबल्लभ ।

गङ्गाधर महादेव आगच्छ भगवन्नीश स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त ऽइषेव नमः । बाहुभ्यामुत ते नमः ॥ ॐ भू० शम्भो इहागच्छा, इह तिष्ठ शम्भवे नमः शम्भुं आवाहयामि। सम्पूज्यनमस्कार

पञ्चवक्त्र महादेवमम स्वस्तिकरोभव ॥

चन्द्रमौले महादेव मम स्वस्तिकरोभव ॥

ॐ गौर्यै नमः ॥ ॐ माहेश्वयै नमः ॥ ॐ शोभनायै नमः ॥ ॐ भद्रायै नमः ॥ सम्पूज्य ॥ स्तम्भमालभेत् ॥ ॐ ऊर्द्धव ऊषुण० ॥ स्तम्भशिरसि ॥ ॐ आयं गौः ॥ ॐ नागमात्रे नमः ॥ ततः शाखोद्वन्धनानि पूजयेत् ॥

उद्वन्धन नमस्तेऽस्तु मण्डपं रक्ष मेऽधुना ।

अतस्त्वां पूजयाम्येव नित्यं मे वरदो भव ॥

ॐ यतो यतः० ॥३॥

(४). महावेद्यां वायव्यकोणे पीतस्तम्भे इन्द्रं पूजयेत् –

मवावाहो सर्वाभरणभूषित।

शचीपते आगच्छ भगवन् इन्द्र स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ।

ॐ त्रातारमिन्द्रवितारामिन्द्र हवे हवे सुहव शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र स्वस्ति नो मघवा धात्त्विन्द्रः ॥ ॐ भू० इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठइन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयेत् - सम्पूज्य नमस्कार :-

देवराज गजारूढ पुरन्दर शतक्रतो ।

वज्रहस्त महाबाहो वाञ्छितार्थप्रदो भव।

ॐ इन्द्राण्यै नमः ।। ॐ आनन्दायै नमः ।। ॐ विभूत्यै नमः ।। ॐ अदित्यै नमः ।। सम्पूज्य ।। स्तम्भमालभेत् ।। ॐ ऊर्व ऽऊषुण० ।। स्तम्भशिरसि ।। ॐ आयं गौ: 0 नागमात्रे नमः ।। शाखोद्बन्धनानि पूजयेत् -

तिर्यक्काष्ठयुते देवि रज्जुपाशयुते सदा ।

महामण्डप रक्षार्थ अर्चयिष्यामि त्वां मुदा ।।

ॐ यतो यतः

(५) ततो बाह्ये ईशाने रक्तस्तम्भे सूर्यम् -

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् । ॐ भू० सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठा ।। सूर्यायनमः सूर्य आवाहयामि ।। सम्पूज्य नमस्कारः

पद्महस्त रथारूढ पद्मासन सुमङ्गल।

क्षमां कुरु दयालो त्वं ग्रहराज नमोऽस्तु ते।।

ॐ शौर्यै नमः ।। ॐ भूत्यै नमः ।। ॐ सावित्र्यै नमः ।। ॐ मङ्गलायै नमः ।। सम्पूज्य - स्तमभमालभेत् ।। ॐ ऊर्दा ऽऊषुण० ।।५।।

(६) ईशानपूर्वयोर्मध्ये श्वेतस्तम्भे गणेशम्

लम्बेदर महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम् ।

आगच्छ गणनाथस्त्वं स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ।

ॐ गणानां त्वा गणपति हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिष्क हवामहे व्वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ।। ॐ गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ ।। गणपतये नमः गणपतिं आवाहयामि ।। सम्पूज्य नमस्कार :-

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः ।

नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः ।।

ॐ सरस्वत्यै नमः ।। ॐ विघ्नहरायै नमः ।। ॐ जयायै नमः ।। सम्पूज्य

स्तमभमालभेत् ।। ॐ ऊर्ध्व ऽ ऊषुण० ।।६।।

(७) पूर्वाग्नेययोर्मध्ये कृष्णवर्णस्तम्भे यमम् –

एह्येहि दण्डायुध धर्मराज कालाञ्जनाभास विशालनेत्र ।

विशालवक्षः स्थल रौद्ररूप गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ।।

ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्य्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मवानक्तु पृथिव्याः स ंस्पृश स्पाहि ।। अचिरसि शोचिरसि तपोऽसि ।। ॐ भू० यम इहागच्छ इह तिष्ठ यमाय नमः यममावाहयामि।। सम्पूज्य नमस्कार-

धर्मराज महाकाय दक्षिणाधिपते यम।

रक्तेक्षण महाबाहो मम पीडां निवारय ।

ॐ सन्ध्यायै नमः ।। ॐ आञ्जन्यै नमः ।। ॐ क्रूरायै नमः ।। ॐ नियन्त्र्यै नमः सम्पूज्य - स्तम्भमालभेत् ।। ॐ ऊर्द्ध ऽऊषुण० ।।७।।

(८) आग्नेयकोणे कृष्णवर्णस्तम्भे नागराजम् –

आशीविष समोपेत नागकन्या विराजित ।

आगच्छ नागराजेन्द्र स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ।

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।। ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।। ॐ भू० नागराज इहागच्छ इह तिष्ठ नागराजाय नमः ।।

सम्पूज्य नमस्कार :-

खड्गखेटधराः फणामण्डलमण्डिताः ।

एकभोगाः साक्षश्रोत्राः वरदाः सन्तु मे सदा ।।

ॐ मध्यमसन्ध्यायै नमः ।। ॐ धरायै नमः ।। ॐ पद्मायै नमः ।। ॐ महापद्मायै नमः ।। सम्पूज्य - स्तम्भमालभेत् ।। ॐ ऊर्ध्व ऽऊषुण० ।।८ ।।

(९) अग्निदक्षिणयोर्मध्ये श्वेत स्तम्भे स्कन्दम् -

मयूरवाहनं शक्तिपाणिं वै ब्रह्माचारिणम् ।

आगच्छ भगवन् स्कन्द स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ।

ॐ यदक्रन्दः प्रथम जायमान ऽउद्यन्तसमुद्रादुत वा पुरीषात् । श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽउपस्तुत्यं महिजातं ते ऽअर्बन् । ॐ भू० स्कन्द इहागच्छ इह तिष्ठ स्कन्दाय नमः ।। सम्पूज्य नमस्कारः-

मयूरवाहन स्कन्दः गौरीसुत षडानन ।

कार्तिकेय महाबाहो दयां कुरु दयानिधे ।।

ॐ पश्चिमसन्ध्यायै नमः ।। सम्पूज्य - स्तम्भमालभेत् ।। ॐ ऊर्ध्व ऽऊषुण० ।।९।।

(१०) दक्षिणनैऋत्ययोर्मध्ये धूम्रस्तम्भे वायुम्

ध्वजाहस्तं गन्धवहं त्रैलोक्यान्तर चारिणम् ।

आगच्छ भगवन् वायो स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ।।

ॐ व्वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि । नियुत्वान्त्सोमपीतये । ॐ भू० वायो इहागच्छ इह तिष्ठ वायवो नमः सम्पूज्य नमस्कार :-

धावन्धरणिपृष्ठस्थ ध्वजहस्त समीरण ।

दण्डहस्त मृगारूढ वरं देहि वरप्रद ।।

ॐ वायव्यै नमः ।। ॐ गायत्र्यै नमः। मध्यमसन्ध्यायै नमः सम्पूज्य - स्तम्भमालभेत् ।। ॐ ऊर्व ऽऊषुण० ।।१०।।

(११) नैऋत्ये पीतस्तम्भे सोमम् –

सुधाकरं द्विजाधीशं त्रैलोक्यं प्रीतिकारकम् ।

आगच्छ भगवन् सोम स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ।।

ॐ आप्यायस्व समेतु ते व्विश्वतः सोम वृष्ण्यम् ।। भवा व्वाजस्य सङ्गथे ।। ॐ भू० सोम इहागच्छ इह तिष्ठ सोमाय नमः सम्पूज्य नमस्कार :-

अत्रिपुत्र निशानाथ द्विजराज सुधाकर ।

अश्वारूढं गदाहस्तं वंर देहि वरप्रद ।।

ॐ सावित्र्यै नमः ॐ अमृतकलायै नमः ।। ॐ पश्चिमसन्ध्यायै नमः ।। सम्पूज्य – स्तम्भमालभेत् ।। ॐ ऊर्ध्व S ऊषुण० ।।११।।

(१२) नैऋत्य-पश्चिमयोर्मध्ये श्वेतस्तम्भे वरुणम्-

कुम्भीरथ' समारूढं मणिरत्न समन्वितम्।

आगच्छ देव वरुण स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ॥

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके ॥ ॐ भू०

वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ वरुणाय नमः सम्पूज्य - नमस्कारः -

शङ्खस्फटिकवर्णाभः श्वेतहाराम्बरावृतः ।

पाशहस्त महाबाहो दयां कुरु दयानिधे ।

ॐ वारुण्यै नमः । ॐ पाशधारिण्यै नमः ॥ ॐ बृहत्यै नमः ॥ सम्पूज्य ॥
स्तम्भमालभेत् ॥ ०ॐ ऊर्व ऽऊषुण० ॥ १२ ॥

(१३) पश्चिम वायव्य अन्तराले श्वेतस्तम्भे अष्टवसून् –

शुद्धस्फटिक सङ्काशान् नानावस्त्र विराजितान्।

आवाहयामि स्तम्भेस्मिन् वसूनष्टौ सुखावहान् ॥

ॐ व्वसुभ्यास्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वाऽऽ दित्येभ्यस्त्वा सञ्जानाथां द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्यावताम् ॥ व्यन्तु व्वयोऽक्कत रिहाणा मरुतां पृषतीर्गच्छ वशा पृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह। चक्षुष्पा ऽ अग्नेऽसि चक्षुर्मे पाहि ॥

ॐ भू० अष्टवसव इहागच्छत इह तिष्टत वसुभ्यो नमः ॥ सम्पूज्य - नमस्कारः-

दिव्यवस्त्रा दिव्यदेहा पुष्पमाला विभूषिताः॥

वसवोऽष्टौ महाभागा वरदाः सन्तु मे सदा ॥

ॐ व्विश्वकर्मान्हविषा व्वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यम्। तस्मै व्विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो व्विहव्यो यथासत् ॥

ॐ विश्वकर्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ भू० विश्वकर्मणे नमः सम्पूज्य -नमस्कार :-

नमामि विश्वकर्माणं द्विभुजं विश्वदर्शितम्।

त्रैलोक्य सूत्रकर्तारं महाबल पराक्रमम् ॥

ॐ सिनीवाल्यै नमः ॥ ॐ सावित्र्यै नमः ॥ ॐ वास्तुदेवतायै नमः॥ सम्पूज्य -
स्तम्भमालभेत् ॥ ॐ ऊर्द्धव ऊषुण० ॥ १६ ॥

स्तम्भशिरसि बलिकासु ।। नागमात्रे नमः ।।

सर्वेषां नागराजानां पाताल तलवासिनाम् ।।

नागमातर आयान्तु भवन्तु सगणाः स्थिराः ।।

ॐ आयं गौ:0-इति सम्पूज्य नमस्कार:- नमोऽस्तु बलिकाबन्ध सुदृढत्वं शुभाप्तिदम् ।। एनं महामण्डपं तु रक्ष रक्ष निरन्तरम् । ॐ यतो यतः ०।। प्रार्थना - शेषादि नागराजानः समस्ता मम मण्डपे ।। ॐ

पूजां गृह्णन्तु सततं प्रसीदन्तु ममोपरि ।। ततो भूमिस्पर्शः - ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरमि व्विश्वधाया व्विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीदृ ंह पृथिवी मा हि ं सीः ।। पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा -

नमस्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन ।।

नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुष पूर्वज ।।

ॐ नृसिंह उग्ररूप ज्वल ज्वल प्रज्ज्वल प्रज्ज्वल स्वाहा।। ॐ नमः शिवाय इति पुष्पाञ्जलिं मण्डपभूमौ विकिरेत् ।।

-: इति षोडश स्तम्भ पूजा :-

मण्डप पूजनम्

तोरणपूजनम्

ततो मण्डपाद्बहिः पूर्वे तोरणद्वासमीपं आगत्य आचम्य प्राणानायम्य- देशकालौ सङ्कीर्त्य० अस्मिन् अमुकयागकर्मणि पूर्वादि तोरणपूजां करिष्ये ।। मौलीबन्धनम् -

> **सुदृढं तोरण पूर्वे अश्वत्थं काञ्चनप्रभम् ।**
>
> **रक्षार्थं चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन् सुशोभितम् ।।**

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम् ।। ॐ भू० ऋग्वेदाधिष्ठिताय सुदृढतोरणाय नमः ।। इति सम्पूज्य - तत्र त्रिशूलश्रृङ्गेषु प्रादक्षिण्येन ।। इन्द्र-राहुभ्यां नमः ।। ॐ धात्रे नमः ।। ॐ भग- बृहस्पतिभ्यां नमः ।। सम्पूज्य प्रार्थयेत् -

> **यथा मेरुगिरे श्रृङ्गं देवानामालयः सदा ।**

तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् देवाधिष्ठानको भव ।।

तत्रैकं कलशं प्रतिष्ठाप्य। कलशोपरि ॐ ध्रुवाय नमः ।।

ॐ अध्वराय नमः ।। मध्ये ॐ मेधापतये नमः सम्पूज्य

ततो दक्षिणे गत्वा आचम्य मौलीबन्धनम् -

औदुम्बरं च विकटं याम्ये तोरणमुत्तमम् ।।

रक्षार्थ चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन् सुखाय नः।।

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा व्वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण ऽ आप्यायवामग्ध्न्या ऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा ऽअयक्ष्मा मावस्तेन ईशत माघश सो ध्रुवा ऽअस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वीर्य्यजमानस्य पशून्पाहि ।।

ॐ भू० सुभद्रतोरणाय नमः ।। सुभद्रतोरणं आवाहयामि।। विकट-तोरणाय नमः ।। सम्पूज्य - तत्र त्रिशूलश्रृङ्गेषु प्रादक्षिण्येन ।। ॐ सूर्य-पूषाभ्यां नमः ।। मध्ये मित्राय नमः ।। ॐ वरुणाऽङ्गारकाभ्यां नमः।। सम्पूज्य प्रार्थयेत् -

यथा मेरुगिरेः श्रृङ्गं देवानामालयः सदा ।

तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् देवाधिष्ठानको भव ।।

तत्रैकं कलशं संस्थाप्य । कलशोपरि।। ॐ पर्जन्याय नमः ।। ॐ अशोकाय नमः ।। मध्ये धरायै नमः ।। इति सम्पूज्य -

पश्चिमे गत्वा आचम्य ।। मौलीबन्धनम् -

प्लाक्षं पश्चिमे भीमं तोरणं स्वर्ण सन्निभम्।

रक्षार्थचैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन् सुखाय नः।।

ॐ अग्न ऽआयहि वीतये गृणानो हव्यदातये । निहोता सत्सि वर्हिषि ।। ॐ सुभीमतोरणाय नमः ।। सुकर्मतोरणाय नमः ।। सम्पूज्य - तत्र त्रिशूलश्रृङ्गेषु प्रादक्षिण्येन ।। ॐ अर्यम-शुक्राभ्यां नमः।। मध्ये ॐ अंशवे नमः ।। ॐ विवस्वत् बुधाभ्यां नमः । सम्पूज्य प्रार्थयेत् -

यथा मेरुगिरेः श्रृङ्गं देवानामालयः सदा ।

तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् देवाधिष्ठानको भव ।।

तत्रैकं कलशं संस्थाप्य ।। कलशोपरि ॐ अनिलाय नमः ।। मध्ये ॐ वाक्पतये नमः ।। इति सम्पूज्य -

ततो उत्तरे गत्वा ।। आचम्य || मौलीबंन्धनम् -

न्यग्रोधतोरणमिव उत्तरे शशिप्रभम् ।

रक्षार्थ चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन् सुखाय नः ।।

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ।। शं य्योरभि स्रवन्तु नः ।। ॐ सुहोत्र तोरणाय नमः ।। ॐ सुप्रभ तोरणाय नमः ।। सम्पूज्य - तत्र त्रिशुलश्रृङ्गेषु प्रादक्षिण्येन ।। ॐ त्वष्ट-सोमाभ्यां नमः ।। ॐ सवितृ-केतुभ्यां नमः ।। ॐ विष्णु-शनिभ्यां नमः ।। सम्पूज्य प्रार्थयेत् -

यथा मेरुगिरेः श्रृङ्गदेवानामालयः सदा ।

तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् देवाधिष्ठानको भव ।।

तत्रैकं कलशं संस्थाप्य। कलशोपरि ।। ॐ प्रत्यूषाय नमः ।। ॐ प्रभासाय नमः ।। मध्ये ॐ विघ्नेशाय नमः ।। सम्पूज्य - प्रार्थयेत् - तोरणाधिष्ठिता देवाः पूजिता भक्तिमार्गतः ।। ते सर्वे मम यज्ञेऽस्मिन् रक्षां कुर्वन्तु वः सदा ।

-: इति तोरण पूजा:-

ततो मण्डपस्य द्वार पूजनम्

पूर्वे गत्वा आचम्य प्राणानायम्य। देशकालौ सङ्कीर्त्य० अस्मिन् अमुकयाग कर्मणि मण्डपस्य पूर्वादिद्वारपूजां करिष्ये ।।

आयाहि वज्रसंघात पूर्वद्वारकृपाधिप ।

ऋग्वेदाधिपतेनाम्ना सुशोभन नमोऽस्तु ते ।।

द्वौ कलशौ स्थापयेत् ।। प्रथमदक्षिणकलशोपरि।। ॐ प्रशान्ताय नमः ।। द्वितीयोत्तर-कलशोपरि।। ॐ शिशिराय नमः ।। ततो मध्ये तृतीयप्रथम स्वापित कलशोपरि ।। ॐ ऐरावताय नमः ।। सम्पूज्य प्रार्थयेत् -

सवस्त्रं सजलं गन्धं पुष्प पल्लव संयुतम् ।

सरत्नं स्थापयाम्येव द्वारेऽस्मिन् कलशद्वयम् ।।

ॐ द्वारश्रियै नमः, इति ऊर्ध्वम् ।। अधः देहल्यै नमः ।। दक्षिणशाखायाम् । ॐ गणेशाय नमः ।। वामशाखायां ॐ स्कन्दाय नमः ।। द्वारकलशयोः ।। ॐ गंगायै नमः ।। ॐ यमुनायै नमः ।। सम्पूज्य-ऋग्वेदिनौ पूजयेत् ।। ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।। होतारं रत्नधातमम् ।।

कर्मनिष्ठा तपोयुक्ता ब्राह्मणा वेदपारगाः ।

जपार्थं चैव सूक्तानां यज्ञे भवत ऋत्विजौ।

मध्यकलशोपरि ।।

एह्येहि सर्वामरसिद्धसाध्यैरभिष्टुतो वज्रधराऽमरेश ।

संवीज्यमानोऽप्सरसा गणेन रक्षाऽध्वरं नो भगवन् नमस्ते ।।

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र हवे हवे सुहव शूरमिन्द्रम् ।

ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ।।

इमां पताकां पीतां च ध्वजं पीतं सुशोभनम् ।

आलभामि सुरेशाय शचीप्रीत्यै नमो नमः ।।

ध्वजपताकयोर्मध्ये ।। ॐ हेतुकाराय नमः ।। ॐ क्षेत्रपालाय नमः इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् -

इन्द्रः सुरपतिः श्रेष्ठो वज्रहस्तो महाबलः ।

शतयज्ञाधिपो देवस्तस्मै नित्यं नमो नमः ।।

ततो बलिदानम् ।।

माषभक्तबलिं देव गृहाणेन्द्र शचीपते ।।

यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ।।

ॐ नमो भगवते इन्द्राय सकलसुराणामधिपतये सवाहनाय सपरिवाराय सशक्तिकाय तत्पार्षदेभ्यः सर्वेभ्यो देवेभ्यः सर्वेभ्यो भूतेभ्यः इमं सदीप दधि माष भक्तबलिं समर्पयामि।। भो इन्द्र स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव । अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयताम् ।।

ततोऽग्निकोणमागत्य कलशं संस्थाप्य कलशोपरि।। ॐ पुण्डरीकाय नमः ।। ॐ अमृताय नमः ।। सम्पूज्य - नमस्कार:-

एह्येहि सर्वामरहव्यवाह मुनिप्रवर्य्यैरभितोऽभिजुष्ट।

तेजोवता लोकगणेन सार्द्ध ममाऽध्वरं पाहि कवे नमस्ते ।।

प्रार्थना-

सप्तार्चिषं च विभ्राणं अक्षमालां कमण्डलुम्।

ज्वालामालाकुलं रक्तं शक्तिहस्तमजासनम् ।।

ॐ त्वन्नो ऽ अग्ने तव देवपायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य । त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेष ४ रक्षमाणस्तव व्रते ।। ॐ भू० अग्नये नमः सम्पूज्य - ध्वजपताकामालभ्य-

पताकामाग्नये रक्तां गन्धमाल्यादिभूषिताम् ।

स्वाहायुक्ताय देवाय ह्यालभामि हविर्भुजे ।।

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे ।। देवाँ आसादयादिह ।। ध्वज पताकयोः ।। ॐ कुमुदाक्षाय नमः ।। ॐ क्षेत्रपालाय नमः ।।

सम्पूज्य नमस्कारः

आग्नेयपुरुषो रक्तः सर्वदेवमयोऽव्ययः ।

धूम्रकेतुरजोऽध्यक्षस्तस्मै नित्यं नमोनमः ।।

बलिदानम् -

इमं माषबलिं देव गृहाणाग्ने हुताशन ।

यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ।।

अग्नये साङ्गाय सपरिवाराय सशक्तिकाय इमं सदीप दधि माष भक्तबलिं समर्पयामि। भो अग्ने स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता आरोग्यकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव ।। अनेन बलिदानेन अग्निः प्रीयताम् ।।

दक्षिणो गत्वा - द्वारकलशौ प्रतिष्ठाप्य कलशोपरि ॐ पर्जन्याय नमः ।।

ॐ अशोकाय नमः ।। मध्यकलशे ॐ वामनदिग्गजाय नमः ।। सम्पूज्य प्रार्थयेत् -

सवस्त्रं सजलं गन्धं पुष्प पल्लव संयुतम्। .

सरत्नं स्थापयाम्येव द्वारेऽस्मिन् कलशद्वयम् ।।

ततो द्वारोर्वे ॐ द्वारश्रियै नमः अधः ॐ देहल्यै नमः । ।। द्वारशाखयोः ।। ॐ पुष्पदन्ताय नमः।। द्वारकलशयोः ।। ॐ गोदावयै नमः ।। ॐ कृष्णायै नमः ।। सम्पूज्य प्राथयेत् -

वैवस्वत महादेव नमस्ते धर्मसाक्षिक ।

शिवाज्ञया पिहितो देव दिशं रक्ष भवानिह ।।

ततो यजुर्वेदिनौ पूजयेत् - ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽ आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेत ईशत माघश सोध्रुवा अस्मिन्गोपतौ

स्यात वह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि ।।

ततो मध्यकलशोपरि -

एह्येहि वैवस्वत धर्मराज सर्वामरैरर्चित धर्ममूर्ते।

शुभाऽशुभानन्दशुचामधीश शिवाय नः पाहि मखं नमस्ते ।।

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे ।। ॐ भू० यमं साङ्गं सपरिवारं आवाहयामि ।।, सम्पूज्य - ध्वज पताकामालभ्य -

कृष्णवर्णा पताकां च कृष्णवर्णध्वजं तथा।

अन्तकायालभामीह क्रतुकर्मणि साक्षिणे ।।

इमां पताकां रम्यां च ध्वजं माल्यादिभूषितम् ।।

यम देव गृहाण त्वं प्रसीद करुणाकर ।।

ध्वज-पताके सम्पूज्य प्रार्थयेत् -

यमस्तु महिषारूढो दण्डहस्तो महाबलः ।

धर्मसाक्षी विशुद्धात्मा तस्मै नित्यं नमो नमः ।

ततो बलिदानम्-

इमं माषबलिं देव यज्ञ गृहाणान्तक वै यम ।

संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदोभव ।।

यमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधि माष भक्तबलिं समर्पयामि। भो यम बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव ।। अनेन बलिदानेन यमः प्रीयताम् ।।

नैर्ऋते गत्वा - कलशं प्रतिष्ठाप्य

नैऋतिं खड्गहस्तं च सर्वलोकैक पावनम् ।।

अवाहयामि यज्ञेऽस्मिन् पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ।।

कलशोपरि ॐ कुमुदाय नमः ।। ॐ दुर्जयाय नमः ।। सम्पूज्य कलशे-

एह्येहि रक्षोगणनायकस्त्वं विशालवेताल पिशाचसंधैः ।

ममाध्वरं पाहि पिशाचनाथ लोकेश्वर त्वं भगवन् नमस्ते ।।

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य ।।
अन्यमस्मदिच्छ सा त ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ।। ॐ भू० निऋतिं साङ्गं सपरिवारं आवाहयामि। सम्पूज्य –

ध्वज पताकामालभ्य

पताकां निऋतिं चैव नीलवर्ण ध्वजं तथा।

पिशाचगणनाथाय आलभामि ममाध्वरे ।।

सम्पूज्य - ध्वज पताकयोः ॐ कुमुदाक्षाय नमः ।। ॐ क्षेत्रपालाय नमः

सम्पूज्य प्रार्थयेत् -

सर्वप्रेताधिपो देवो निऋतिनीलविग्रहः ।।

करे खड्गधरो नित्यं निर्ऋतये नमो नमः ।।

ततो बलिदानम् -

इमं माषबलिं यक्षों गृहाण निर्ऋतिप्रभो ।

यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ।।

निर्ऋतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधि माष भक्तबलिं समर्पयामि ।। भो निर्ऋते बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव ।। अनेन बलिदानेन निर्ऋतिः प्रीयताम् ।।

पश्चिमे गत्वा - ततः कलशौ प्रतिष्ठाप्य

सम्पूज्य - नमस्कारः-

नमोऽस्तु कामरूपाय प्रत्यग्द्वाराश्रिताय च।

सामवेदाधिपस्त्वं हि नाम्ना कल्याणकारक ।।

कलशोपरि ॐ भूतसञ्जीवनाय नमः ।। ॐ अमृताय नमः ।। मध्यकलशे - ॐ अनन्ताख्य दिग्गजाय नमः ।। द्वारोर्ध्वश्रियै नमः ।। अधः देहल्यै नमः ।। द्वारशाखयोः- ॐ नन्दिन्यै नमः ॐ चण्डायै नमः ।। द्वार कलशयोः।। रेवायै नमः ॐ ताप्यै नमः ।। सम्पूज्य - ततः सामवेदिनौ

पूजयेत्-

ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि वर्हिषि ।। इति सम्पूज्य - मध्यकलशे-

एह्येहि यादोगण वारिधीनां गणेन पर्जन्य सहाऽप्सरोभिः ।

विद्याधरेन्द्रामरगीयमान पाहि त्वमस्मान् भगवन्नमस्ते ।।

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणेह बोद्ध्युरुश समान ऽआयुः प्रमोषीः ।। ॐ भू० वरुणं साङ्ग सपरिवारं आवाहयामि।। सम्पूज्य -

ध्वज पताकामालभ्य-

श्वेतवर्णा पताकां च ध्वजं श्वेतमयं शुभम्।

वरुणाय जलेशाय ह्यालभामि सुखाप्तये ।।

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मद्वाधमं विमध्यमः श्रथाय ।। अथा व्वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम ।। इति सम्पूज्यप्रार्थयेत् -

पाहशस्तस्तु वरुणः साम्भसां पतिरीश्वरः ।

शमं नयाऽशु विघ्नानि नमस्ते पाशपाणये ।।

ततो बलिदानम् -

इमं माषबलिं देव गृहाण जलधीश्वर ।

यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ।।

वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधि माष भक्तबलिं समर्पयामि। भो वरुण बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव ।। अनेन बलिदानेन वरुणः प्रीयताम् न मम ।।

वायव्ये गत्वा ।। कलशं प्रतिष्ठाप्य कलशे ॐ पुष्पदन्ताय नमः ।। ॐ सिद्धार्थाय नमः ।। गन्धादिभिः सम्पूज्य - कलशोपरि-

एह्येहि यज्ञे मम रक्षणाय मृगाधिरूढ़ः सह सिद्धसङ्घः ।

प्राणाधिपः कालकवेः सहाय गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ।।

ॐ आनो नियुद्धिः शतिनीभिरध्वर सहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम् ।। व्वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।। ॐ भू० वायवे नमः सम्पूज्य - ध्वज पताकामालभ्य-

पताकां वायवे धूम्रवर्णध्वजं तथा।

आलभाम्यनुरूपाय धूम्रां हिताय च।। प्राणदाय

ॐ वायो ये ते सहास्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि ।। नियुत्वान्सोमपीतये ।। सम्पूज्य प्रार्थयेत् -

अनाकारो महौजाश्च सर्वगन्ध वहः प्रभुः ।

तस्मै पूज्याय जगतो वायवेऽहं नमामि च।।

ततो बलिदानम् -

माषभक्तबलिं वायो मया दत्तं गृहाण भो।

यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥

वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधि माष भक्तबलिं समर्पयामि। भो वायो साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिको मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता शान्ति कर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन वायुः प्रीयताम् ॥

उत्तरे गत्वा - द्वारकलशौ संस्थाप्य सम्पूज्य नमस्कारः -

नमस्ते दिव्यरूप त्वं अथर्वाधिपते प्रभो।

कलावधिपतिर्नाम्नामङ्गलंचोत्तरानन ॥

कलशोपरि ॐ धनदाय नमः ॐ श्रीप्रदाय नमः ॥ मध्यकलशे ॐ सार्वभौमादिग्गजाय नमः ॥ सम्पूज्य - द्वारोर्ध्व ॐ द्वारश्रियै नमः अधः ॐ देहल्यै नमः ॥ द्वारशाखयोः क्रमेण ॐ महाकालाय नमः ॥ ॐ भृङ्गिणे नमः ॥ द्वारकलशयोः ॐ नर्मदायै नमः ॥ ताप्यै नमः ॥ सम्पूज्य - अथर्वाणौ

पूजयेत्-

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये। राँ य्योरभि स्रवन्तु नः ॥ मध्यकलशे-

एह्येहि यज्ञेश्वर यज्ञरक्षां विधत्स्व नक्षत्रगणेन सार्द्धम्।

सर्वोषधीभिः पितृभिः सहैव गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ॥

ॐ वय सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि ॥

ॐ भू० सोमाय नमः सोमं आवाहयामि ॥ सम्पूज्य –

ध्वज पताकामालभ्य-

हरितवर्णा पताकां च हरित् वर्णमयं ध्वजम्।

कुबेपाय लभाम्येव पूजयेच्च सदार्थिना ॥

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा व्वाजस्य सङ्गथे ॥

सम्पूज्य प्रार्थयेत् -

गौरोपमपुमान् स्थूलः सर्वौषधिरसादयः ।

नक्षत्राधिपतिः सोमस्तस्मै नित्यं नमो नमः ।।

ततो बलिदानम् -

इमं माषभक्तबलिं देव गृहाण त्वं धनप्रद ।

यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ।।

सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधि माष भक्तबलिं समर्पयामि ।। भो सोम बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव ।। अनेन बलिदानेन सोमः प्रीयताम् ।।

ईशाने गत्वा - कलशं संस्थाप्य कलशे ॐ सुप्रतीकाय नमः ।। ॐ मङ्गलाय नमः ।। सम्पूज्य - 'पुनः कलशोपरि-

एह्येहि विश्वेश्वर नस्त्रिशूल कपालखट्वाङ्घधरेण सार्द्धम्।

लोकेश भूतेश्वर यज्ञसिद्ध्यै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ।।

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेद सामसदवृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ।। ॐ भू० ईशानाय नमः ईशानं आवाहयामि।। सम्पूज्य - ध्वज पताकामालभ्य-

ईशानाय ध्वजं श्वेतं पताकां गन्धभूषिताम्।

आलभामि महेशाय वृषारूढाय शूलिने ।।

ॐ तमीशानं० ।। सम्पूज्य - प्रार्थयेत् –

सर्वाधिपो महादेव ईशानः शुक्ल ईश्वरः । शूलपाणिर्विरूपाक्षः तस्मै नित्यं नमो नमः ।। ततोबलिदानम् –

इमंमाषबलिं देव गृहाणेशानशङ्कर।

यज्ञ संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ।

ईशानाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधि माष भक्तबलिं समर्पयामि। भो ईशान बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता

शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव ॥
अनेन बलिदानेन ईशानः प्रीयताम् ॥

ईशानेन्द्रयोर्मध्ये गत्वा - कलशं प्रतिष्ठाप्य कलशे-

एह्येहि विष्णवाधिपते सुरेन्द्र लोकेन सार्द्ध पितृदेवताभिः ।

सर्वस्य धातास्यमितप्रभावो विशाऽध्वरं नः सततं शिवाय ॥

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो व्वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः । यः शव सते स्तुबते धायि पज्ज्र ऽइन्द्रज्येष्ठा ऽ अस्म्माँ ऽअवन्तु देवाः ॥

ॐ भू० ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं० आवाहयामि सम्पूज्य - ध्वज पताकामालभ्य-

पद्मवर्ण पताकां च पद्मवर्णध्वजं तथा।

आलभामि सुरेशाय ब्रह्मणेऽनन्त शक्तये ॥

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथम पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेन ऽ आवः ॥ स बुध्ध्याऽ उपमा ऽअस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः ॥ सम्पूज्य प्रार्थयेत् -

पद्मयोनिश्चतुर्मूर्ति वेदव्यास पितामहः ।

यज्ञाध्यक्षश्चतुर्वक्त्रस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥

ततो बलिदानम् -

इमं माषबलिं ब्रह्मन् गृहाण कमलासन ।

यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥

ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधि माषभक्तबलिं समर्पयामि। भो ब्रह्मन् बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव । अनेन बलिदानेन ब्रह्मा प्रीयताम् ॥

नैऋत्य पश्चिमयोर्मध्ये गत्वा - कलशं प्रतिष्ठाप्य वरुणाय नमः । इति सम्पूज्य - पुनः कलशोपरि -

एह्येहि पातालधरामरेन्द्र नागङ्गना किन्नरगीयमान ।

यक्षोरगेन्द्रामरलोकसंघैरनन्त रक्षाऽध्वरमस्मदीयम् ॥

ॐ स्योना पृथिवी नो भवान्नृक्षरा निवेशनी। यच्छानः। शर्मा सप्प्रथाः ।।

ॐ भू० अनन्ताय नमः अनन्तं आवाहयामि।। सम्पूज्य - ध्वजपताकामाल्भ्य-

मेघवर्णां पताकां च मेघवर्ण ध्वजं तथा।

आलभामि ह्यनन्ताय धरणीधारिणे नमः ।।

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।

ये ऽ अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः । सम्पूज्य प्रार्थयेत् -

घनवर्णा पताकेमां ध्वजं गन्धविभूषितम् ।

स्थापयामि प्रसन्नाय अनन्ताय नमो नमः ।।

ततो बलिदानम् ।।

इमं माषबलिं शेष गृहाणाऽनन्त पन्नग ।

यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ।।

अनन्ताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधि माष भक्तबलिं समर्पयामि। भो अनन्त बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता शान्तिकर्ता पृष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव ।। अनेन बलिदानेन अनन्तः प्रीयताम् ।।

पुनः ईशाने गत्वा - महाध्वजं पूजयेत् -

ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्न्यः शूर ऽइषव्योतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्ध्रिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य व्वीरो ज्जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्च्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ।। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।। वंशे ॐ किन्नरेभ्यो नमः ।। ॐ पन्नगेभ्यो नमः ।। सम्पूज्य आलभेत्-

इमं विचित्रवर्ण तु महाध्वजविनिर्मितम् ।

महाध्वजं चाऽलभामि महेन्द्राय सुप्रीतये ।।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं० ||

अमुं महाध्वजं चित्र सर्वविघ्नविनाशकम् ।

महामण्डपमध्ये तु स्थापयामि सुरार्चने ॥

ॐ इन्द्रस्य व्वृष्णो वरुणस्य राज्ञ ऽ आदित्यानां मरुता शर्द्ध ऽउग्रम् । महाम्मनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात् ॥

अनया पूजया इन्द्रः प्रीयताम् ।

ततो मण्डप षोडशवलिकासु ॥

ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥ वंशेषु किन्नरेभ्यो नमः ॥ मण्डप पृष्ठदेशे पन्नगेभ्यो नमः ॥

इति सम्पूज्य-ततो मण्डपाद्बहिः पूर्वेशानसमीपे किञ्चिद्भूमिं गोमयेनोपलिप्य तत्र अष्टदलं विरच्य अष्टदलेषु - ॐ नमो गणेभ्यो ० सम्पूज्य - प्रार्थयेत् -

त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च।

ब्रह्म-विष्णु-शिवैः सार्द्ध रक्षां कुर्वन्तु मे सदा ॥

देव दानव गन्धर्वः यक्ष राक्षस पन्नगाः ।

ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च॥

सर्वे ममाध्वरे रक्षां प्रकुर्वन्तु मुदान्विताः ॥

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च क्षेत्रपालगणैः सह।

रक्षन्तु मण्डपं सर्वे घ्नन्तु रक्षांसि सर्वतः॥

ततः अक्षतपुत्रेषु पूर्वादिक्रमेण - त्रैलोक्यस्थेभ्यः स्थावरेभ्यो नमः स्थावरान् आवाहयामि ॥१॥ ॐ त्रैलोक्यस्थेभ्यश्चरेभ्यो नमः ॥२॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ॥३॥ ॐ विष्णवे नमः ॥४॥ ॐ शिवाय नमः ॥५॥ ॐ देवेभ्यो नमः ॥६ ॥ ॐ दानवेभ्यो नमः ॥७॥ ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः ॥८ ॥ ॐ यक्षेभ्यो नमः ॥९॥ ॐ राक्षसेभ्यो नमः ॥१०॥ ॐ पन्नगेभ्यो नमः ॥११॥ ॐ ऋषिभ्यो नमः ॥१२॥ ॐ मनुष्येभ्यो नमः ॥ १३॥ ॐ देवमातृभ्यो नमः ॥१४॥ सम्पूज्य - इन्द्रादि लोकपालेभ्यो घृतौदन बलिदानम् - ॐ नमो भगवते इन्द्राय पूर्वदिग्वासिभ्यः इन्द्रपार्षदेभ्यो दिगीश क्षेत्रपालादिभ्यो बलिः अयमुपतिष्ठतु स्वाहा ॥ पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा -

नन्दे जय नन्दय वासिष्ठे वसुभिः प्रजया सह।

भार्गवदायादे प्रजानां विजयावहे ॥१॥

पूर्णे गिरीश दायादे पूर्ण कर्म कुरुष्व माम्।

भद्रे काश्यपि दायादे कुरु भद्रं सदा मम ।।२।।

सर्वबीजौषधी युक्ते सर्वरत्नौषधी वृते।

रुचिरे नन्दने नन्दे वाशिष्ठे नन्दतामिह ।।३।।

प्रजापतिसुते देवि चतुरस्त्रे महीयसि ।

सुव्रते शुभगे देवि गृहे काश्यपि रम्यताम् ।।४।।

पूजिते परमाचार्यैः गन्धमाल्यैरलंकृते ।

भवभूतिकरे देवि गृहे भार्गवि रम्यताम् ।।५।।

अव्यये चाऽक्षते पूर्णे मुनेराङ्गिरसः सुते।

मनुष्यधेनु हस्तश्च पशु वृद्धिकरी भव ।।६।।

इति पुष्पाञ्जलिः- एवं आग्नेयादि लोकपालानां बलिदानम् -

ततः ईशान्यां वंशपात्रादौ सार्वभौतिकं माषभक्तबलिं दद्यात् - अस्मिन् अमुकयागकर्मणि मण्डप पूजाङ्गविहितं मातृगण क्षेत्रपाल प्रीतये भूतप्रेत पिशाचादि निवृत्त्यर्थं सार्वभौतिक बलिदानं करिष्ये ।। नूतन वंश शूर्पे माषभक्त बलिं दद्यात्–

ॐ नमोस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां व्वर्षमिषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दशप्प्रतीची चीर्दशोदीचीर्द्दशोर्वाः। तेभ्यो नमो ऽअस्तु ते नोऽव्वन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ।।

इति मन्त्रेण सर्वभूतेभ्यो गन्धादिभिः सम्पूज्य प्रार्थतेय् - ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ० ।।

अधश्चैव तु ये लोका असुराश्चैव पन्नगाः।

सपत्नी-परिवाराश्च प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम् ।।१।।

नक्षत्राधिपतिश्चोर्ध्व नक्षत्रैः परिवारितः ।

स्थानञ्चैव पितृणां तु सर्वे गृह्णन्त्विमं बलिम् ।।२।।

ये केचिदिह यज्ञेऽस्मिन्नागता बलिकांक्षिणः ।

तेभ्यो बलिं प्रयच्छामि नमस्कृत्य पुनः पुनः ।।३।।

बलिं गृह्णन्त्विमं देवा आदित्या वसवस्तथा।

मरुतोऽप्यश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः।।४।।

असुरा यातुधानश्च पिशाचा मातरो नगाः।

शाकिन्यो यक्ष-वेताला योगिन्यः पूतना शिवाः।।५।।

जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वा आद्या विद्याधरा नराः।

दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विध्नविनायकाः।।६।।

सौम्या भवन्तु ते तृप्त्या देवासुर गणास्तथा।

ते गृह्णन्तु मया दत्तं बलिं वै सार्वभौतिकम्।।७।।

अनेन सार्वभौतिक बलिदानेन सार्वभौतिकाधिपती रुद्रः प्रीयताम्।। हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य मण्डपं प्रविशेत्।।

इति मण्डप पूजा।

इन्द्राधि दसदिक पाल-

दसदिक पाल यज्ञ मण्डप में इन्द्राधि दसदिक पाल का स्थान रखना चाहिए पात्र में जल भर कर नारियल से पूर्ण करते हुए निहित स्थानों पर रखना चाहिए।

पूर्व दिशा में इन्द्र का आवाहन मन्त्र-

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र, हवेहवे सुहव, शूरमिन्द्रम्।

ह्वयामि शक्क्रं पुरुहूतमिन्द्र, स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।।

इन्द्रं सुरपतिश्रेष्ठं वज्रहस्तं महाबलम्।

आवाहये यज्ञसिद्धयै शतयज्ञाधिपं प्रभुम्।।

अग्निकोण में अग्नि का आवाहन मन्त्र-

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

2. अग्निः- (अग्निकोण में अग्नि का आवाहन करें)

ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्न्वश्च व्वन्द्य।

त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेष, रक्षमाणस्तव व्व्रते।।

त्रिपादं सप्तहस्तं च द्विमर्द्धानं द्विनासिकम्।

षण्नेत्रं च चतुः श्रोत्रमग्निमावाहयाम्यहम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

दक्षिण दिशा में यम का आवाहन मन्त्र -

3. यमः- (दक्षिण में यम का आवाहन करें)

ऊँ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा।

स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्त्रे।।

महामहिषमारुढ़ दण्डहस्तं महाबलम्।

यज्ञ-संरक्षणार्थाय यममावाहायाम्यहम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि।

नेरित्व कोण में नेरित्व का आवाहन मन्त्र-

4. निर्ऋतिः- (नैऋत्यकोण में निर्ऋति का आवाहन करें)

ऊँअसुन्न्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्न्वहि तस्क्करस्य।

अन्न्यमस्मदिच्छ सा त ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुब्भ्यमस्तु।।

सर्वप्रेताधिपं देवं निर्ऋतिं नीलविग्रहम्।

आवाहये यज्ञसिद्ध्यै नरारूढं वरप्रदम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।

पश्चिम दिशा में वरुण का आवाहन मन्त्र-

5. वरुणः- (पश्चिम दिशा में वरुण का आवाहन करें।)

ऊँ तत्वा यामि ब्ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्तै यजमानो हविर्ब्भिः।

अहेडमानो व्वरुणेह बोध्युरुश, स मा न ऽआयुः प्रमोषीः।।

शुद्ध-स्फटिक-संगाश जलेशं यादशां पतिम्।

आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि।

वायब्य में वायु का आवाहन मन्त्र-

6. वायु:- (वायव्य कोण में वायु का आवाहन करें।)

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर, सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। व्वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।

मनोजवं महातेजं सर्वश्चारिणं शुभम्।

यज्ञ-संरक्षणार्थाय वायुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायते नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि।

उत्तर में सोम का आवाहन मन्त्र करें-

7. सोम:- (उत्तर दिशा में सोम का आवाहन करें।)

ॐ व्व्यय, सोम व्रते तव मनस्तनूषु विभ्रतः।

प्रजावन्तः सचेमहि।।

इसान कोण में इसान का आवाहन मन्त्र-

8. ईशान:- (ईशान कोण में ईशान का आवाहन करें।)

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेद-सामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।

सर्वाधिपं महादेवं भूतानां पतिमव्ययम्।

आवाहये तमीशानं लोकानामभयप्रदम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

इसान और पूर्व के मध्य में ब्रह्मा का आवाहन मन्त्र-

9. ब्रह्मा:- (पूर्व-ईशान के मध्य में ब्रह्मा का आवाहन करें।)

ॐ अस्म्मे रुद्द्रा मेहना पर्व्वतासो व्वृत्रहत्ये भरहतौ सजोषाः। यः श , सते स्तुवते धायि पज्ज्र ऽइन्द्रज्जेष्ठा ऽअस्माँ2 ऽअवन्तु देवाः।।

पद्मयोनिं चतुर्मूर्तिं वेदगर्भं पितामहम्।

आवाहयामि ब्रह्माणं यज्ञ-संसिद्धि-हेतवे।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

नैरित्य और पश्चिम के मध्य में अनन्त का आवाहन मन्त्र-

10. अनन्त - (नैऋत्य-पश्चिम के मध्य में अनन्त का आवाहन करें।)

ऊँ स्योना पृथिविनो भवात्रृक्षरा निवेशनी।
यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः।।
अनन्तं सर्वनागानामधिपं विश्वरूपिणम्।
जगतां शान्तिकर्तारं मण्डले स्थापयाम्यहम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा मन्त्र -

पूर्व में लिखित मंत्रों द्वारा प्रतिष्ठा करें।

पूर्व विधा द्वारा इनकी भी पूजा करके प्रार्थना करनी चाहिए।

ऊँ तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्क्रे व्वायव्व्या नाण्ण्या ग्ग्राम्म्याश्च्च ये।।
मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्ः- (पंचामृत से स्नान करावें)

ऊँ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।
पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नाने के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें , निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान

करवाएं-

पंचलोक पाल

यज्ञशाल में किसी पात्र में सुपारी या पांच कलश या नवगृह में भी पंचलोकपाल का आवाहन सुविधानुसार करें जिसके स्थान एवं मन्त्र निम्नलिखित हैं-

गणेश का आवाहन मन्त्र-

1. गणपतिः- (राहो उत्तरे गणपतिमावाहयत्।)

ॐ गणानां त्वा गणपति , हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति , हवामहे निधीनां त्वा निधिपति, हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम्।।

लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।

आवाहयाम्यहं देवं गणेशं सिद्धिदायकर्म्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

दुर्गा का आवाहन मन्त्र-

2. दुर्गाः- (शनेरुतरे दुर्गामावाहयेत्।)

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातितीयतो वेदः।

स नः पर्षदति दुर्गाणि नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्रिः।।

पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे।

नानाजाति-कुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।

वायु का आवाहन मन्त्र-

3. वायुः- (सूर्यस्योत्तरे वायुमावाहयेत्।)

ॐ व्वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि।

नियुत्वान्सोमपीतये।।

आवाहयाम्यहं वायुं भूतानां देहधारिणाम्।

सर्वाधारं महावेगं गृगवाहनमीश्वरम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि।

आकाश का आवाहन मन्त्र-

4. आकाश:- (राहीर्दक्षिणे आकाशमावाहयेत्।)

ऊँ घृतं घृतपावानः पिबत व्वसां व्वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश ऽआदिशो व्विदिश ऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।।

अनाकारं शब्दगुणं द्यावाभूम्यन्तर-स्थितम्।

आवाहयाम्यहं देवमाकाशं सर्वगं शुभम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः आकाशाय नमः, आकाशमावाहयामि स्थापयामि।

अश्वनिकुमार का आवाहन मन्त्र-

5. अश्विनौ - (केतोर्दक्षिणे अश्विनौ आवाहेत्।)

ऊँ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती।

तया यज्ञं मिमिक्षतम्।।

प्रतिष्ठा मन्त्र-

पूर्व में लिखित मन्त्रों द्वारा प्रतिष्ठा करें।

एवं पूर्वालिखित विधा द्वारा पूजन करना चाहिए।

अष्ट द्वार पाल:-

यज्ञ मण्डप की रचना में द्वार पालों का स्थान बतलाया गया है , प्रारम्भ में भी द्वार पाल के स्थान पर द्वारपालों का स्थापन एवं पूजन करना चाहिए।

इन्द्रद्ध्वज-हनुमतध्वज -

इन दोनों ध्वजों की चर्चा भी पूर्व की जा सकी है , पूर्व लिखित निर्देशानुसार इसका भी पूजन एवं स्थापन करें।

इकाई 4 : रूद्रमहायज्ञ

लिंगोतोभद्र पूजन एवं संकल्पित पाठवाचन

प्रस्तागवना

प्रस्तुगत इकाई मेंलिंगोतोभद्र पूजन एवं संकल्पित पाठवाचन पर प्रकाश डाला गया है।

उददेश्य -

इस इकाई के अध्य यन सेलिंगोतोभद्र पूजन एवं संकल्पित पाठवाचन का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त होगा।

प्रश्नय -

१. लिंगोतोभद्र पूजन किसे कहते है।

२. लिंगोतोभद्र पूजन एवं संकल्पित पाठवाचन दोनों बिन्दु पर सविस्तार वर्णन कीजिए।

चतुर्लिंगतो भद्र पूजन

भगवान शिव की पूजा में चतुर्लिंगतोभद्र का विशेष प्रयोग किया जाता है। वैसे लिंगतोभद्र के कई प्रकार हैं , जैसे – एक लिंगतोभद्र, चतुर्लिंगतो भद्र, अष्टलिंगतोभद्र और द्वादशलिंगतोभद्र। वेदी में निर्मित शिवलिंगों की संख्या के आधार पर ये सभी नाम निर्धारित होते हैं । इन सभी प्रकारों में चतुर्लिंगतो भद्र मंडल का विशेष प्रयोग किया जाता है। चतुर्लिंगतो भद्र मंडल में अष्ट भैरव , अष्टमूर्ति या अष्टरुद्र, अष्टकुल नाग, शूल या त्रिशूल एवं कुछ मुख्य नामों से भगवान शिव का स्थापन-पूजन किया जाता है। भगवान शिव का एक नाम आशुतोष है , भगवान आशुतोष शीघ्र प्रसन्न होते हैं और साधक के अभीष्ट की सिद्धि होती है। साथ ही उनके अनुग्रह से उपासक को शिव सायुज्य भी प्राप्त होता है।

१. असिताङ्गभैरव : ॐ नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनाम्पतये नमोनमः सहमानायनिव्व्याधिनऽ आव्व्याधिनीनाम्पतये नमोनमो निषङ्गिणे ककुभायस्तेनानाम्पतये नमोनमो निचेरवे परिचरायारण्यानाम्पतये नमोनमो वञ्चते ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असिताङ्गभैरव इहागच्छ इह तिष्ठ ।

ॐ भूर्भुवः स्वः असिताङ्गभैरवाय नमः ॥१॥

२. रुरुभैरव : ॐ श्वित्र ऽआदित्यानामुष्ट्रो घृणीवान् वार्ध्रीनसस्ते मत्या ऽअरण्याय सृमरो रुरू रौद्रः क्वयिः कुटरुर्दात्यौहस्ते वाजिनां कामाय पिकः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः रुरुभैरव इहागच्छ इह तिष्ठ । ॐ भूर्भुवः स्वः रुरुभैरवाय नमः ॥२॥

३. चण्डभैरव : ॐ उग्रं लोहितेन मित्र □सौव्व्रत्येन रुद्रं दौर्व्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साद्ध्यान् प्रमुदा॥ भवस्य कण्ठय □रुद्रस्यान्तः पार्श्वं महादेवस्य यकृच्छर्व्वस्य व्वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः चण्डभैरव इहागच्छ इह तिष्ठ । ॐ भूर्भुवः स्वः चण्डभैरवाय नमः ॥३॥

४. क्रोधभैरव : ॐ इन्द्रस्य क्रडोऽदित्यै पाजस्यन्दिशाञ्जत्रवोऽदित्यै भसज्जीमूता हृदयौपशेनान्तरिक्ष पुरीतता नभ ऽउदर्येण चक्रवाकौ मतस्न्नाब्भ्यान्दिवं वृक्काभ्याङ्गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीन्हा वल्मीकान् ल्कोमभिग्ग्लौर्गुल्मान् हिराभिः स्रवन्तीर्ह्रदान् कुक्षिब्भ्या □समुद्रमुदरेण व्वैश्श्वानरं भस्म्मना ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः क्रोधभैरव इहागच्छ इह तिष्ठ । ॐ भूर्भुवः स्वः क्रोधभैरवाय नमः ॥४॥

५. उन्मत्तभैरव : ॐ उन्नत ऽऋषमो वामनस्त ऽऐन्द्राव्वैष्णवा ऽउन्नतः शितिबाहुः शितिपृष्ठ्ठास्त ऽऐन्द्राबार्हस्पत्याः शुकरूपा व्वाजिनाः कल्माषा ऽआग्निमारुताः श्यामाः पौष्णाः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः उन्मत्तभैरव इहागच्छ इह तिष्ठ । ॐ भूर्भुवः स्वः उन्मत्तभैरवाय नमः ॥५॥

६. कपालभैरव : ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्याऽउन्नयामि।समापोऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कपालभैरव इहागच्छ इह तिष्ठ । ॐ भूर्भुवः स्वः कपालभैरवाय नमः॥६॥

७. भीषणभैरव : ॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च । सासह्वाँश्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भीषणभैरव इहागच्छ इह तिष्ठ । ॐ भूर्भुवः स्वः भीषणभैरवाय नमः ॥७॥

८. संहारभैरव : ॐ नमः शम्भवाय च मयेभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः संहारभैरव इहागच्छ इह तिष्ठ । ॐ भूर्भुवः स्वः संहारभैरवाय नमः ॥८॥

९. भव : ॐ नमः श्वब्भ्यः श्वपतिब्भ्यश्च वो नमोनमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्व्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्ग्रीवाय च शितिकण्ठाय च नमः कपर्द्दिने ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भव इहागच्छ इह तिष्ठ । ॐ भूर्भुवः स्वः भवाय नमः ॥९॥

१०. सर्व : ॐ अग्नि हृदयेनाशनि हृदयाग्रेण पशुपतिं कृत्स्नहृदयेन भवं यक्ना । शर्वं- मतस्नाभ्यामीशानं मन्युना महादेवमन्तः पर्शव्येनोग्रं देवं वनिष्ठुना वसिष्ठहनुः शिङ्गीनि कोश्याभ्याम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सर्व इहागच्छ इह तिष्ठ । ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वाय नमः ॥१०॥

११. पशुपति : ॐ उग्रं लोहितेन मित्र सौव्व्रत्येन रुद्रं दौर्व्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साद्ध्यान् प्प्रमुदा॥ भवस्य कष्ठय रुद्रस्यान्तः पार्श्वं महादेवस्य यकृच्छर्व्वस्य व्वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पशुपति इहागच्छ इह तिष्ठ । ॐ भूर्भुवः स्वः पशुपतये नमः ॥११॥

१२. ईशान : ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ईशान इहागच्छ इह

तिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः ॥१२॥

१३. रुद्र : ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतो त ऽइषवे नमः॥ बाहुब्भ्यामुत ते नमः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्र इहागच्छ इह तिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः ॥१३॥

१४. उग्र : ॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च। सासह्वाँश्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः उग्र इहागच्छ इह तिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः उग्राय नमः ॥१४॥

१५. भीम : ॐ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यते यनाय ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भीम इहागच्छ इह तिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः भीमाय नमः ॥१५॥

१६. महान्त : ॐ मानोमहान्तमुतमानोऽअर्ब्भकम्मानऽउक्षन्तमुतमानऽउक्षितम्। मानोव्वधीःपितरम्मोतमातरम्मानः प्प्रियास्तन्वो रुद्द्ररीरिषः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः महान्त इहागच्छ इह तिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः महान्ते नमः ॥१६॥

१७. अनन्त : ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी यच्छा नः शर्मसप्रथाः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्त इहागच्छ इह तिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः ॥१७॥

१८. वासुकि : ॐ देहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे। निहारश्च हरासि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वासुकि इहागच्छ इह तिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः वासुकये नमः ॥१८॥

१९. तक्षक : ॐ नमस्तक्षब्भ्यो रथकारेब्भ्यश्च वो नमोनमः कुलालेब्भ्यः कम्मारेब्भ्यश्च वो नमोनमो निषादेब्भ्यः पुञ्जिष्ठेब्भ्यश्च वो नमोनमः श्वनिब्भ्योमृगयुब्भ्यश्च वो नमोनमः श्वब्भ्यः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तक्षक इहागच्छ इह तिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः तक्षकाय नमः ॥१९॥

२०. कुलिश : ॐ पुरुषमृगश्चन्द्रमसो गोधा कालका दार्वाघाटस्ते व्वनस्प्पतीनां कृकवाकुः सावित्त्रो ह □सो व्वातस्य नाक्क्रो मकरः कुलीपयस्तेऽकूपारस्य ह्रियै शल्ल्यकः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कुलिश इहागच्छ इह तिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः कुलिशाय नमः ॥२०॥

२१. कर्कोटक : ॐ सोमाय कुलुङ्ग ऽआरण्योऽजो नकुलः शका ते पौष्ष्णाः क्क्रोष्ट्टा मायोरिन्द्रस्य गौरमृगः पिद्वो न्यङ्कुः कक्कटस्तेऽनुमस्यै प्प्रतिश्रुत्कायै चक्रवाकः ॥ ॐ

भूर्भुवः स्वः कर्कोटक इहागच्छ इह तिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः कर्कोटकाय नमः ॥२१॥

२२. शङ्खपाल : ॐ अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः ॥ तमीमहे महागयम् ॥ उपयामगृहीतोऽस्यग्ग्नये त्वा व्वर्चस ऽएष ते योनिरग्ग्नये त्त्वा व्वर्चसे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शङ्खपाल इहागच्छ इह तिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः शङ्खपालाय नमः॥२२॥

२३. कम्बल : ॐ सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिण ऽऊर्ष्णासूत्त्रेण कवयो व्वयन्ति ॥ अश्विना यज्ञ □सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं व्वरुणो भिषज्यन् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कम्बल इहागच्छ इह तिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः कम्बलाय नमः ॥२३॥

२४. अश्वतर : ॐ अश्वस्तूपरो गोमृगस्ते प्प्राजापत्याः कृष्णग्ग्रीव ऽआग्नेयो रराटे पुरस्तात्सारस्वती मेष्यधस्ताद्धन्वीराश्विनावधोरामौ बाह्वोः सौमापौष्णः श्यामो नाब्भ्या □सौर्य्ययामौ श्श्वेतश्च्च कृष्णश्च्च पार्श्वयोस्त्वाष्ट्रौ लौमशसक्थौ सक्थ्यीर्वायव्यः श्वेतः पुच्छ ऽइन्द्राय स्वपस्याय व्वेहद्वैष्णवो व्वामनः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अश्वतर इहागच्छ इह तिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः अश्वतराय नमः ॥२४॥

२५. शूल : ॐ नमः श्वब्भ्यः श्वपतिब्भ्यश्च वो नमोनमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्व्वाच पशुपतये च नमो नीलग्ग्रीवाय च शितिकण्ठाय च नमः कपर्द्दिने ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शूल इहागच्छ इह तिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः शूलाय नमः ॥२५॥

२६. चन्द्रमौलि : ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रमौलि इहागच्छ इह तिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रमौलिने नमः ॥२६॥

२७. चन्द्रमा : ॐ चुन्द्रमा ऽअप्स्वन्तरा सुपर्णो द्यावते दिवि। रयिं पिशङ्ग बहुलं पुरुस्पृह □हरि रेति कनिक्क्रदत् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रमा इहागच्छ इह तिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रमसे नमः ॥२७॥

२८. वृषभध्वज : ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनोऽनिमिष ऽएकवीरः शत □सेना अजयत्साकमिन्द्रः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वृषभध्वज इहागच्छ इह तिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः वृषभध्वजाय नमः ॥२८॥

२९. त्रिलोचन : ॐ सुगा वौ देवा सदना ऽअकर्म्म य ऽओजग्मेद □सवनं जुषाणाः ॥ भरमाणा व्वहमाना हवी □ष्यस्म्मे धत्त व्वसवो व्वसूनि स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिलोचन इहागच्छ इह तिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिलोचनाय नमः ॥२९॥

३०. शक्तिधर : ॐ रुद्राः स □सृज्ज्य पृथिवी बृहज्ज्योतिः समीधिरं ॥ तेषां भानुरजस्र□च्छुक्को देवेषु रोचते ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शक्तिधर इहागच्छ इह तिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः शक्तिधराय नमः ॥३०॥

३१. महेश्वर : ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः महेश्वर इहागच्छ इह तिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः महेश्वराय नमः ॥३१॥

३२. शूलपाणि : ॐ यावांकशामधुमत्यश्विना सूनृतावती तया यज्ञम्मिमिक्षताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शूलपाणि इहागच्छ इह तिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः शूलपाणये नमः ॥३२॥

प्राणप्रतिष्ठा – ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तन्नोत्वरिष्टं यज्ञ □समिमं दधातु॥ विश्वेदेवा स इह मादयंतामों३ प्रतिष्ठ॥ ॐ चतुर्लिंगतोभद्र देवताः इहागच्छत सर्वतोभद्रोपरि तिष्ठत॥

चतुर्लिंगतोभद्र मंडल पूजन मंत्र

एकतंत्र पूजा नाममंत्र – ॐ भूर्भुवः स्वः चतुर्लिंगतोभद्रस्थ असिताङ्गभैरवादि देवताभ्यो नमः।

इकाई 5 : रूद्रमहायज्ञ-6

हवन बलिविधान पूर्णाहूति उत्त-र पूजन एवं विसर्जन

प्रस्तावना

प्रस्तुवत इकाई में हवन बलिविधान पूर्णाहूति उत्तजर पूजन एवं विसर्जन पर प्रकाश डाला गया है।

उददेश्यव-

इस इकाई के अध्य यन सेहवन बलिविधान पूर्णाहूति उत्तपरपूजन एवं विसर्जन के बारे में ज्ञान प्राप्तब होगा।

प्रश्ने -

१. हवन बलिविधान पूर्णाहूति उत्तगरपूजन एवं विसर्जन किसे कहते है।

२. हवन बलिविधान पूर्णाहूति उत्तगरपूजन एवं विसर्जन पर सविस्तार वर्णन कीजिए।

कुण्डस्थदेवतापूजनपूर्वकाग्निस्थापनम्

सपत्नीको यजमानः कुण्डस्य समीपे कुण्डपश्चिमदिग्भागे उपविश्य आचमनं प्राणायामञ्च कृत्वा संकल्पं कुर्यात् ।। अद्येत्यादि० शुभपुण्यतिथौ मया सग्रहमखामुकयागकर्मणः साङ्गत्तासिद्धयर्थम् अस्मिन्कुण्डे कुण्डस्थदेवतानाम् आवाहनप्रतिष्ठापूजनानि तथा च कुण्डे पञ्चभूसंस्कारपूर्वकम् अग्निस्थापनं करिष्ये ।। प्रारब्धस्य

ततः आचार्यानुज्ञया कश्चिद्विप्र उत्थाय हस्ते कुशान् गृहीत्वा तैः अग्न्यायतं (कुण्डं) सम्मार्ज्य । ॐ आपोहिष्ट्मयो० । ॐ योव शिवतमो० । ॐ तस्माऽअरङ्गम् ।। कुशोदकेन प्रोक्षयेत् ।। तत आवाहयेत् आवाहयामि तत्कुण्डं विश्वकर्मविनिर्मितम् । शरीरं यच्च ते दिव्यमग्न्यधिष्ठानमद्भुतम् । ॐ भूर्भुवः स्वः कुण्डाय नमः कुण्डम् आवाह० स्थाप० ।। प्रार्थयत् - ये च कुण्डे स्थिता देवाः कुण्डाङ्गे याश्च देवताः । ऋद्धिं यच्छन्तु ते सर्वे यज्ञसिद्धिं ददन्तु इत्यावाह्य कुण्डमध्ये देवान् आवायहेत् व्विश्श्वकर्म्मन्हविषाव्वर्द्धनेन-त्त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्वम् ।

समनमन्तपूर्बीरयमुग्रोव्विहव्योयथासत् नः ॥ ॐ तरम्मैव्विशः उपयामगृहीतोसीन्द्रायत्त्वाव्विश्व- कर्म्मणऽएषते योनिरिन्द्रायत्त्वाव्विश्श्वकर्माणे ॥ कुण्डमध्ये-ॐ भूर्भुः स्वः विश्वकर्मणे नमः विश्वकर्माणम् आवा० स्थाप० । भो विश्वकर्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ प्रार्थयेत् - ब्रह्म वक्त्रं भुजौक्षत्रं ऊरूवैश्यः प्रकीर्तितः । पादौ यस्य तु शूद्रो हि विश्वकर्मात्मने नमः। अज्ञानात्ज्ञानतो वापि दोषाः स्युः खननोद्धवाः ॥ नाशय त्वखिलाँस्ताँस्तु विश्वकर्मन्नमोऽस्तु ते॥

तत्रादौ मेखलादेवतानाम् आवाहनम् - ॐ उपरिमेखलायाम् - ॐ इंदव्विपाष्णुर्व्विचक्रमेत्त्रेधानिदधेपदम् । समूढमस्यपा सुरेस्वाहा ॥ विष्णो यज्ञपते देव दुष्टदैत्यनिषूदन ॥ विभो यज्ञस्य रक्षार्थ कुण्डे सन्निहितो भव । ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुम् आवा० स्थाप० ॥ भो विष्णोइहागच्छ इह तिष्ठ ॥१॥

मध्यमेखलायां रक्तवर्णालङ्कृतायाम् ॐ ब्रह्म
यज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतःसुरुचोव्वेनऽआवः ॥
सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यव्विष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चव्विवः ॥
हंसपृष्ठ समारूढ़आदिदेव जगत्पते ।
रक्षार्थ मम यज्ञस्य मेखलायां स्थिरो भव ॥
ॐ भूर्भुवः स्वःब्रह्मणे नमः ब्रह्माणम् आवा० स्थाप० ॥
भो ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ॥२॥

अधो मेखलायां कृष्णवर्णालङ्कृतायाम् ॐ नमस्तेरुद्रमन्यवऽउतोतइषवेनमः॥ बाहुब्भ्यामुततेनमः ॥ गंगाधर महादेव वृषारूढ महेश्वर । आगच्छ मम यज्ञेऽस्मिन्रक्षार्थं रक्षसां गणात् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः रुद्रम् आवा० स्थाप० ॥ भो रुद्र इहागच्छ इह तिष्ठ ॥३॥

अथ योन्यावाहनम्- ॐ क्षत्रस्ययोनिरसिक्षत्रस्यनाभिरसि ॥ मात्त्वाहिथं सीन्माहिथं सीः ॥ आगच्छ देवि कल्याणि जगदुत्पत्तिहेतुके ॥ मनोभवयुते रम्ये योनि त्वं सुस्थिरा भव ॥१॥ जगदुत्पत्तिकायै मनोभवयुतायै योन्यै नमः योनिमावा० स्थापा० ॥ भो जगदुत्पत्तिके मनोभवयुते योनि

इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ प्रार्थयेत् सेवन्ते महतीं योनिं देवर्षिसिद्धमानवाः ॥

चतुरशीतिलक्षाणि पन्नगाद्याः सरीसृपाः ॥ पशवः पक्षिणः सर्वे संसरन्ति यतो भुवि ॥ योनिरित्येव विख्याता जगदुत्पत्तिहेतुका ॥

मनोभवयुता देवीरतिसौख्यप्रदायिनी। मोहयित्री सुराणाञ्च जगद्धात्रि नमोऽस्तु ते ।

योने त्वंविश्वरूपाऽसि प्रकृतिर्विश्वधारिणी ॥ कामस्था कामरूपा च विश्वयोन्यै नमोनमः ॥

अथ कण्ठ देवता आवाहनम् ॐ नीलग्रीवाःशितिकण्ठादिवरुद्राऽउपश्रिताः ।।तेषा सहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥ कुण्डस्य कण्ठदेशोऽयं नीलजीमूतसन्निभः ॥ अस्मिन्नावाहये रुद्रं शितिकण्ठ कपालिनम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कण्ठे रुद्राय नमः रुद्रम् आवा० स्थाप० । भो रुद्र इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ प्रार्थयेत् - कण्ठ मङ्गलरूपेण सर्वकुण्डे प्रतिष्ठितः । परितो मेखलास्त्वत्तो रचिता विश्वकर्मणा ॥

अथ नाभ्यावाहनम् ॐ नाभिम्मैचित्तं व्विज्ञानम्पायुर्मे पचितिर्भसत् । आनन्दनन्दावाण्डौमे भगः सौभाग्यम्पसः जङ्याभ्याम्पद्भ्यां धर्मोस्म्मि-व्विशिराजाप्प्रतिष्ठितः ॥ पद्माकाराऽथवा कुण्डसदृशाकृतिबिभ्रती। आधारः सर्वकुण्डानां नाभिमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः नाभ्यैनमः नाभिम् आवा० स्थाप० ॥ भो नाभे इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ प्रार्थयेत् नाभे त्वं कुण्डमध्ये तु सर्वदेवैः प्रतिष्ठिता । अतस्त्वां पूजयामीह शुभदा सिद्धिदा भव॥

अथ कुण्डमध्ये नैर्ऋत्यकोणे वास्तुपुरुषावाहनम् - ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः ॥ यत्त्वेमहेप्रतितन्नो जुषस्व शन्नोभवद्विपदे शं चतुष्पदे ॥ पा० गृ० ॥ आवाहयामि देवेशं वास्तुदेव महाबलम् । देवदेवं गणाध्यक्ष पातालतलवासिनम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः नैर्ऋत्यकोणे वास्तुपुरुषाय नमः वास्तुपुरुषम् आ० स्था० । भो वास्तुपुरुष इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ ततः प्रार्थयेत् यस्य देहे स्थिता क्षोणी ब्रह्माण्डं विश्वमंगलम्। व्यापिनं भीमरूपञ्च सुरूपं विश्वरूपिणम् ॥ पितामहसुतं मुख्यं वन्दे वास्तोष्पतिं प्रभुम् ॥ वास्तुपुरुष देवेश सर्वविघ्नहरो भव । शान्तिं कुरु सुखं देहि

सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे ॥

एवं कुण्डस्थितान् सर्वान्देवानावाद्यैकतन्त्रेण प्रतिष्ठां कुर्यात् ॥
हस्तेऽक्षतानादाय ॥ ॐ मनोजूतिर्जु० ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्ताः सर्वे कुण्डस्थदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवेयुः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्तेभ्यः कुण्डस्थदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि सम० ॥ इति सम्पूज्य। कुण्डाद्बहिः एकस्मिन्पात्रे बलिदानार्थं दध्योदनं संस्थाप्य बलिदानं कुर्यात् ॥ हस्ते जलं गृहीत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मादि- वास्तुपुरुषान्तेभ्यः कुण्डस्थदेवताभ्यो नमः । दध्योदनबलिं सम० ॥ अनेन विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्ताः सर्वे कुण्डस्थदेवताः प्रीयन्तां न मम।

पञ्चभूसंस्कारः

अस्मिन् स-नवग्रहमख-अमुक यज्ञ कर्मणि पञ्च भू संस्कार पूर्वकं अग्नि स्थापनं करिष्ये ।

कुशैः परिसमुह्य, तान् कुशानैशान्यां परित्यज्य १ , गोमयो- दकेनोपलिप्य २ , स्रुवेण त्रिरुल्लिख्य ३ , अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य ऐशान्यां परित्यज्य ४ , जलेनाऽभ्युक्ष्य ५।

अग्निस्थापनम्

अग्निकोणादग्नि मानीय किञ्चित् क्रव्यादांशं नैरृत्यां दिशि परित्यज्य-

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्बुवे । देवाँर ॥ आसादयादिह ॥

इति मन्त्रेणाऽग्निमुपसमाधायाऽग्निं स्थापयेत् ।

ततोऽग्नौ आवाहनादिमुद्राः प्रदर्शयेत् ॥ भो अग्ने त्वं आवाहितो भव । भो अग्ने त्वं सन्निहितो भव । भो अग्ने त्वं सन्निरुद्धो भव । भो अग्ने त्वं सकलीकृतो भव। भो अग्ने त्वं अवगुण्ठितो भव । भो अग्ने त्वं अमृतीकृतो भव । भो अग्ने त्वं परमीकृतो भव । इति तत्तन्मुद्राः प्रदर्थ्य अग्नि ध्यायेत् -
ॐचत्त्वारिश्रृङ्गात्रयोऽअस्यपादाद्वेशीर्षसप्तहस्तासोऽअस्य त्रिधावद्धोव्बृषभोरोरवीतिमहोदेवोमयाँ २ऽआविवेश ॥ रुद्रेतजः समुद्भूतं द्विमूर्धानं द्विनासिकम् ॥ षण्णेत्रं च चतुः श्रोतं त्रिपादं सप्तहस्तकम् । याम्यभागे चतुर्हस्तं सव्यभागे

त्रिहस्तकम् ॥ सुवं सुचिञ्च शक्तिञ्च ह्यक्षमालाञ्च दक्षिणे। तोमरं व्यंजनं चैव घृतपात्रञ्च वामके । बिभ्रतं सप्तभिर्हस्तैद्विमुखं सप्तजिह्वकम् ॥ याम्यायने चतुर्जिवं त्रिजिह्व चोत्तरे मुखम् । द्वादशकोटिमूर्त्याख्यं द्विपञ्चाशत् कलायुतम् ।

आत्माभिमुखमासीनं ध्यायेच्चैवं हुताशनम् ॥ गोत्रमग्नेस्तु शाण्डिल्यं शाण्डिल्यासितदेवलाः । त्रयोऽमी प्रवरा माता त्वरणी वरुणः पिता ॥ रक्तमाल्याम्बरधरं स्वाहास्वधावषट्कारैरङ्गितं रक्तपद्मासनस्थितम् । मेषवाहनम् ॥ शतमङ्गलनामानं वह्निमावाहयाम्यहम् ॥ त्वं मुखं सर्वदेवानां सप्तार्चिरमितद्युते । आगच्छ भगवन्नग्ने कुण्डेऽस्मिन्सन्निधो भव । भो वैश्वानर शाण्डिल्यगोत्र शाण्डिल्यासितदेवलेतित्रिप्रवरान्वित भूमिमातः वरुणपितः मेषध्वज प्राङ्मुख मम सम्मुखो भव । इति ध्यात्वा आवाहयेत् । ॐ मनोजूतिर्जु० ॥ ॐ शतमङ्गलनामाग्ने सुप्रतिष्ठितो वरदो भव । इति प्रतिष्ठाप्य पूजनं कुर्यात् । ॐ भूर्भुवः स्वः शतमङ्गलनाम्ने वैश्वानराय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि सम० । इति कुण्डस्य नैर्ऋत्यकोणे मध्ये वा अग्नि सम्पूज्य प्रार्थयेत् - अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्। हिरण्यवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम् ॥

कुशकण्डिका करणम्

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनम् । अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम् । ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम् । यावत्कर्म समाप्यते तावत् त्वं ब्रह्मा भव इति यजमानः। भवामि इति ब्रह्मा वदेत् ।

ततो ब्रह्मणाऽनुज्ञातः प्रणीताप्रणयनम् । तद्यथा-प्रणीता पात्रं पुरतः कृत्वा , वारिणा परिपूर्य, कुशैराच्छाद्य, प्रथमासने निधाय, ब्रह्मणो मुखमवलोक्य द्वितीयासने निदध्यात् ।

ईशानादि पूर्वाग्रैः कुशैः परिस्तरणम्। तद्यथा-ततो आग्नेयादीशानान्तम् , बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय । ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं प्रागग्रैः , नैऋत्याद्वायव्यान्तम्, अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं प्रागग्रैः इतरथावृत्तिः । उदगग्रैर्वा । उदगग्रैर्वा ।

पात्रासादनम्--

ततः पात्रासादनं कुर्यात् । तद्यथा-त्रीणि पवित्रे द्वे । प्रोक्षणीपात्रम् । आज्यस्थाली । चरुस्थाली । सम्मार्जनकुशाः पञ्च । उपयमन्कुशाः सप्त। समिधस्तिस्रः । स्रुवः । आज्यम् । तण्डुलाः । पूर्णपात्रम् । वृषनिष्क्रयदक्षिणा । उपकल्पनीयानि द्रव्याणि निधाय ।

ततो द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय । द्वौ मूलेन प्रदक्षिणीकृत्य , सर्वान् युगपदनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां धृत्वा । त्रिभिस्छिद्यः । द्वौ ग्राह्यौ , त्रिस्त्याज्यः, प्रोक्षणीपात्रे प्रणीतोदकमासिच्य, त्रिःपूर्ण, पवित्राभ्यामुत्पवनम् । प्रोक्षण्याः सव्यहस्तकरणम् । दक्षिणेनोद्दिङ्गनम् । प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणम् । प्रोक्षण्युदकेन आज्यस्थाल्याः प्रोक्षणम्। चरुस्थाल्याः प्रोक्षणम् । सम्मार्जनकुशानां प्रोक्षणम् । उपयमन कुशानां प्रोक्षणम् । समिधां प्रोक्षणम्। स्रुवस्य प्रोक्षणम् । आज्यस्य प्रोक्षणम् । तण्डुलानां प्रोक्षणम्। पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम्। उपकल्पनीयानां पदार्थानां प्रोक्षणम् । असञ्चरे प्रोक्षणीनिधाय ।

आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः । चरुस्थाल्यां प्रणीतोदकासेक- पूर्वकं तण्डुलप्रक्षेपः। ब्रह्मणो दक्षिणतः आज्याधिश्रयणम् । चरोरधिश्रयणं स्वयमाज्यस्तोत्तरतः । ज्वलदुल्मुकेनोभयोः पर्यग्नि करणम् । इतरथावृत्तिः । उदकोस्पर्शः । अर्धश्रिते चरौ अधोमुखस्य स्रुवस्य प्रतपनम् । सम्मार्जनकुशैः स्रुवस्योर्ध्वमुखस्य सम्मार्जनम् । अग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं सम्मृज्य , प्रणीतोदकेनाभ्युक्षणम् । सम्मार्जन्कुशानामग्नौ प्रक्षेपः । पुनः प्रतपनं , दक्षिणदेशे निधानम्। आज्योद्वासनम् । चरुं पूर्वेणानीयाऽग्नेरुत्तरतः चरोरुद्वासनम् । अग्नेरुत्तरतः एवाज्यस्य आज्यस्योत्तरतश्चरुं स्थापयेत् । आज्योत्पवनम् । स्थापयेत् । प्रदक्षिणीकृत्य

आज्यावेक्षणम् । अपद्रव्यनिरसनम् । पुनः प्रोक्षण्युत्पवनम् । वामहस्ते उपयमनकुशानादाय । उत्तिष्ठन् । समिधोभ्यादाय, घृताक्ताः

समिधस्तिस्रः अग्नौ क्षिपेत्। प्रोक्षण्युदकेन सपवित्रहस्तेन ईशानादि अग्नेः प्रदक्षिण पर्युक्षणम् । इतरथावृत्तिः ।

पवित्रयोः प्रणीतासु निधानम्। दक्षिण जान्वाच्य । ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्धः ।

समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाऽऽज्यहोमः ।

अग्नेरुत्तरभागे (मनसा) - ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये नमम ।

अग्नेर्दक्षिणभागे- ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय न मम ।

समिद्धतमे-- ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम।

ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम ।

ततः सूर्यादिग्रहाणामधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-गणपत्यादि- पञ्चलोकपाल-वास्तोष्पति-क्षेत्रपालदेवतानां इन्द्रादि दश दिक्पाल देवतानां च प्रत्येकं समिच्चरु-तिलाऽऽज्य-द्रव्यैरष्टोत्तर- शतमष्टाविंशतिमष्टौ वाऽऽहुतीर्जुहुयात्।

संकल्पः- अस्मिन् अमुक यज्ञ तद्दशांश होम कर्मणि इमानि समिच्चरु तिलाज्यादिहविर्द्रव्यैः विहितसंख्याहुतिपर्याप्तं या या यक्ष्यमाण देवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तं न मम। यथा दैवतानि सन्तु । अथ वराहुतिः ॐ गणानान्त्वा० स्वाहा। ॐ अम्बे० स्वाहा।

स असंख्यात्यादि ग्रहमण्डलस्थ देवतानां हवनम्

अर्कः पलाशः खदिरोह्यपामार्गोऽथ पिप्पलः । औदुम्बरः शमी दूर्वा कुशाश्च समिधः क्रमात् ॥

ॐ आदित्याय स्वाहा ॥१॥

ॐ सोमाय स्वाहा ॥२॥

ॐ भौमाय स्वाहा ॥३॥

ॐ बुधाय स्वाहा ॥४॥

ॐ बृहस्पतये स्वाहा ॥५॥

ॐ शुक्राय स्वाहा ॥६॥

ॐ शनैश्चराय स्वाहा ॥७॥

ॐ राहवे स्वाहा ॥८॥

ॐ केतवे स्वाहा ॥९॥

ॐ ईश्वराय स्वाहा ॥१०॥

ॐ उमायै स्वाहा ||११||

ॐ स्कन्दाय स्वाहा । ।१२ ।।

अथाग्निपूजनं स्विष्टकृद्धवनञ्च

ॐ अग्ने नय सुपथा राये ऽअस्मान्विश्वानि देव व्वयुनानि व्विद्वान्। युयोद्ध्यस्म्मज्जु हुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम ऽउक्तिं व्विधेम।। ॐ स्वाहा स्वधायुतमृडनामाग्नये वैश्वानराय नमः । इति मन्त्रेणाग्निं सम्पूज्य ततो हुतशेषद्रव्यं वामहस्ते गृहीत्वा दक्षिणहस्तेनाज्यपूर्ण स्रुवं गृहीत्वा दक्षिणं जान्वाच्य ब्रह्मणाऽन्वारब्धः स्विष्टकृद्धवनं कुर्यात्-

ॐ अग्नयेस्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम । इति हुतशेषाऽऽज्यस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः ।

भूरादि नवाहुति प्रदानम्

ॐ भूः स्वाहा । इदमग्नये न मम ।।१।। ॐ भुवः स्वाहा । इदं वायवे न मम ।।२।। ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।।३।।

ॐ त्वन्नो अग्ने व्वरुणस्य विद्वान देवस्य हेडोऽ अवयासि सीष्ठाः । यजिष्ठोव्वनितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषासि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा । इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ।।४।।

ॐ स त्वन्नोऽ अग्नेवमो भवोती नेदिष्ठो ऽअस्याऽ उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्वनो व्वरुण रराणो व्रीहि मृडीक सुहवोन ऽएधि स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ।।५।।

ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽ असि । अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजः स्वाहा। इदमग्नये अयसे न मम ।।६।।

ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नोऽ अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ।।७।।

ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधमं व्विमध्यम श्रथाय । अथा व्वयमादित्यव्रते तवानागसोऽअदितये वरुणायादित्यायादितये न मम ।।८।। स्याम स्वाहा । इदंॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम ।।९।।

बलिप्रदानम्

अथ एकतन्त्रेण दशदिक्पालानां बलिदानम् - ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहार्बोच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहार्बोच्यै दिशे स्वाहोर्ध्वायै दिशे स्वाहार्बोच्यै दिशे स्वाहार्बोच्यै दिशे स्वाहा वाँच्चैदिशे स्वाहा ॥१॥

ॐ इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यो नमः, देवबलये नमः इत्यनेन गन्धाऽक्षतपुष्पैः बलिं सम्पूज्य, हस्ते जलं गृहीत्वा--

ॐ इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः एतान् सदीपान् दधिमाषभक्तबलीन् समर्पयामि।

भो भो इन्द्रादिदशदिक्पालाः दिशं रक्षत बलिं भक्षत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवत। एभिर्बलिदानैः इन्द्रादि दशदिक्पालाः प्रीयन्ताम् न मम।

अथ एकतन्त्रेण नवग्रहमण्डलस्थदेवतानां बलिदानम्- ॐ ग्रहा ऽऊर्जा हुतयो व्यन्तो व्विप्राय मतिम्। तेषां व्विशिष्प्रियाणां वोहमिषमूर्ज समग्रभमुपयामगृहीतोसीन्द्राय त्त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्त्वा जुष्टतमम्।

सूर्यादिनवग्रहेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यःअधिदेव प्रत्यधिदेवता गणपत्यादि पञ्चलोकपाल वास्तोष्पति सहितेभ्यः इमं सदीप दधि माष भक्त बलिं समर्पयामि।

भो भो सूर्यादि नवग्रहाः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिता इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवत। अनेन बलिदानेन सूर्यादि ग्रह मण्डलस्थ देवताः प्रीयन्तां न मम।

अथ वास्तुमण्डलस्थ देवतानां बलिदानम् ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्वावेशो ऽअनमीवो भवा नः॥ यत्वे महे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मादि वास्तु मण्डल देवता सहिताय साङ्गाय सपरिवाराय

सायुधाय सशक्तिकाय वास्तुपुरुषाय इमं सदीपं आसादित बलिं समर्पयामि।

भो भो ब्रह्मादि वास्तु मण्डल देवता सहित वास्तुपुरुष इमं बलिं गृहाण। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरु । आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव । अनेन बलिदानेन बह्मादि वास्तु मण्डल देवता सहित वास्तु पुरुषः प्रीयताम् न मम।

मातृणामप्येकबलिदानम्- ॐ अम्बेऽ अम्बिकेऽ म्बालिके न मा नयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ।

भो भो गौर्यादयः षोडशमातरः इमं बलिं गृहणीत आयुः कर्त्यः क्षेमकर्ण्यः शान्तिकर्ण्यः पुष्टिकर्त्यः तुष्टिकर्त्यः वरदा भवत । अनेन बलिदानेन गौर्यादि मातरः प्रीयन्ताम् न मम ।

अथ योगिनी मण्डलस्थ देवीनां बलिदानम्- ॐ योगेयोगे तवस्तरं व्वाजेवाजे हवामहे ।। सखाय ऽइन्द्रमूतये ।

भो भो चतुः षष्टियोगिन्यः बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्त्यः क्षेमकर्ण्यः शान्तिकर्त्यः पुष्टिकर्त्यः तुष्टिकर्त्यः वरदा भवत । अनेन बलिदानेन चतुःषष्टि योगिन्यः प्रीयन्ताम् न मम।

अथ प्रधान देवता बलिदानम्- ॐ इदं व्विष्णुर्व्विचक्क्रमे० अथवा ॐ नमस्ते रुद्र० । अम्बेऽ अम्बिके०।

कूष्माण्ड बलिदानम्

देशकालद्युच्चार्य० मम सुकुटुम्बस्य सर्वाऽरिष्ट प्रशान्ति सर्वाभीष्ट कामसिद्धि कल्पोक्त फलावाप्तिद्वारा श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती त्रिगुणत्मिका स्वरूपिणी श्री दुर्गादेव्याः प्रीत्यर्थं कूष्माण्ड बलिदानं करिष्ये। तदङ्गत्त्वेन पञ्चोपचारैः बलिपूजनं च करिष्ये ।तत्पश्चात् -

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ।।

इत्यनेन दुर्गादेवीं पञ्चोपचारैः सम्पूज्य , तत्पुरतः स्वयमुदङ्मुखं च पीठे वस्त्रगुण्ठितं कूष्माण्डं निधाय , कूष्माण्डबलये नमः इत्यनेन पञ्चोपचारैः सम्पूज्य ,

अभिमन्त्रयेत्-

पशुस्त्वं बलिरूपेण मम भाग्यादवस्थितः ।
प्रणमामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणम् ॥१॥
चण्डिकाप्रीतिदानेन दातुरापद् विनाशनम् ।
चामुण्डाबलिरूपाय बले तुभ्यं नमोऽस्तु ते ॥२॥
यज्ञार्थं बलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयम्भुवा ।
अतस्त्वां घातयाम्यद्य यस्माद्यज्ञे मतो वधः ॥३॥

रसना त्वं चण्डिकायाः सुरलोक प्रसाधकः । इति । ह्रां ह्रीं खड्ग , आं हूं फट् । इति पठित्वा हस्ते शस्त्रं गृहीत्वा , वीरासने उपविश्य ॐ कालि कालि वज्रेश्वरि लौहदण्डाय नमः इति पठन् कूष्माण्डं छेदयेत् । छेदनावसरे न विलोकयेत्। ततश्छिन्ने बलौ कुङ्कुमेननुलेपयेत् । कौशिकि रुधिरेणाप्यायताम् इति देव्यै अर्धं निवेद्य , अवशिष्टार्धस्य तेनैव खड्गेन पुनः पञ्चभागान् कृत्वा - पूतनायै बलिभागं निवेदयामि । चरक्यै बलिभागं निवेदयामि। विदार्ये बलिभागं निवेदयामि । पापराक्षस्यै बलिभागं निवेदयामि । क्षेत्रपालाय बलिभागं निवेदयेत्--

क्षेत्रपाल बलिदानम्

एक बांस के पात्र में पत्ता बिछाकर उसमें काला उड़द , दही, भात और जलपात्र रखकर सिन्दूर, कज्जल द्रव्य, चौमुखा दीपक प्रज्वलित कर संकल्प करें -

ॐ अद्येत्यादि० मम सकल अरिष्ट शान्ति पूर्वकं प्रारब्धकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थ क्षेत्रपाल पूजनं बलिदानं च करिष्ये ।

अथ क्षेत्रपाल बलिदान मन्त्रः -

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद् व्वैश्वानरात्पुर ऽएतारमग्नेः । एमेनमव्वृधन्नमृता ऽअमर्त्य व्वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः ।

नमो वै क्षेत्रपालस्त्वं भूतप्रेतगणैः सह।
पूजा बलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा ॥
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे।
आयुरारोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा ॥

ॐ क्षौं क्षेत्रपालाय सांगाय भूत प्रेत पिशाच डाकिनी शाकिनी पिशाचिनी मारीगण वेतालादि परिवार सहिताय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय इमं सचतुर्मुख दीप दधि माष भक्तबलिं समर्पयामि ।

ऐसा बोलकर प्रार्थना करें -

भो क्षेत्रपाल क्षेत्रं रक्ष बलिं भक्ष मम सपरिवारस्य सकुटुम्बस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव । अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयतां न मम ।

(नापित अथवा किसी भृत्य आदि के द्वारा बलि को चौराहे पर रखवा दें बलि ले जाने वाले व्यक्ति के पीछे दरवाजे तक जल का छींटा दें और द्यौः शान्ति इत्यादि मन्त्र बोलें ।)

पूर्णाहुत्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पादिभिः सम्पूज्य--

अथ पूर्णाहुतिमन्त्राः-

ॐ समुद्रादूर्म्मिर्मधुमाँ २।। उदारदुपा शुना सममृतत्वमानट् ।।
घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः ।।१।।
व्वयं नाम प्रब्रव्वामा घृतस्यास्मिन्यज्ञे धारयामा नमोभिः ।।
उप ब्रह्मा श्रृणवच्छस्यमानं चतुः । श्रृङ्गेवमीद् गौर ऽएतत् ।।२।।
चत्वारि श्रृङ्गत त्रयो ऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो ऽअस्य ।।
त्रिधा वद्धो व्वृषभो रोरवीति महो देवो मर्तयाँ २।। ऽआविवेश ।।३।।
त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन् ।।
इन्द्र ऽएक सूर्य ऽएकञ्जजान व्वेनादेक स्वधया निष्ट्तक्षुः ।।४।।
एता ऽअर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्व्रजा रिपुणा नावचक्षे।।
घृतस्य धारा ऽअभिचाकशीमि हिरण्ययो व्वेतसो मध्य ऽआसाम् ।।५।।
सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेना ऽअन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः ।।
एते ऽअर्षन्त्यूर्म्मयो घृतस्य मृगाऽ इव क्षिपणोरीषमाणाः । ।६ ।।
सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूधनासो व्वातप्प्रमियः पतयन्ति यवाः।।
घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः ।।७।।

अभिप्प्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्ण्यः स्मयमानासो ऽअग्निम् ॥
घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्य्यति जातवेदाः ॥८॥
कन्या ऽइव व्वहतुमेतवा ऽउ ऽअञ्ज्यञ्जाना ऽअभिचाकशीमि ।
यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा ऽअभि तत्त्पवन्ते ॥९॥
अभ्यर्षत सुष्टुतिङ्गच्व्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त ॥
इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्त्पवन्ते ॥१० ॥
धामन्ते व्विश्वं भुवनमधि श्श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि ॥
अपामनीके समिथे य ऽआभृतस्तमश्याम मधुमन्तन्त ऽऊर्मिम् ॥११॥
पुनस्त्वादित्या रुद्रा व्वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो व्वसुनीथ यज्ञैः ॥
घृतेन त्वं तन्वं व्वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥१२॥
सप्त ते ऽअग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऽऋषयः सप्त धाम प्रियाणि ॥
सप्त होत्राः सप्तधा त्त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा । ।१३ ॥
मूर्धानं दिवो ऽअरतिं पृथिव्या व्वैश्वानरमृत ऽआ जातमग्निम् ॥
कविं सम्म्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥१४॥
पूर्णा दर्व्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत ॥
व्वस्नेव व्विक्क्रीणा वहा ऽइषमूर्ज शतक्क्रतो स्वाहा ॥१५॥

इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नये अद्भ्यश्च न मम-इति प्रोक्षणीपात्रे स्रुवाऽवशिष्टं घृतं त्यजेत् ।

अथ वसोर्धारामन्त्राः- ॐ सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऽऋषयः स धाम प्रियाणि ॥ सप्त होत्राः सप्तधात्त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्वघृतेन स्वाहा ॥१॥

शुक्क्रज्योति च चित्त्रज्योति च सत्यज्योतिश् च ज्योतिष्माँश् च । शुक्क्रश् च ऽऋतपाश्श्चात्य वहाः ॥२॥ ईदृङ् चान्यादृङ् च सदृङ् च प्रतिदृङ् च । मितश्च्च सम्मितश्च्च सभराः ॥३॥ ऋतश् च सत्यश् च ध्रुवश्च धरुणश् च । धर्त्ता च व्विधर्त्ता च व्विधारयः ॥४॥ ऋतजिच्चसत्त्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश् च । अन्तिमित्त्रश् च दूरे ऽअमित्त्रश् च गणः ॥५॥ ई दृक्षास ऽएतादृक्षासऽऊषुणः न सदृक्षासः प्रतिसदृक्षास ऽएतन । मितासश्च्च सम्मितासो नो ऽअद्य सभरसो मरुतो यज्ञे ऽअस्म्मिन् ॥६॥ स्वतवाँश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च। क्क्रीडी च शाकी चोज्जेषी ॥७॥ इन्द्रं

दैवीविंशो मरुतोऽनुवर्मानोऽभवन्यथेन्द्रं दैवीव्विंशो मरुतोऽनुवर्मानो भवन्। एवमिमं यजमानं दैवीश्च्च व्विशो मानुषीश्च्चानुवर्मानो भवन्तु ॥८ ॥ इम स्तनमूर्जस्वन्तं धयापां प्रपी नमग्ग्ने सरिरस्य मध्येऽ उत्त्सं जुषस्व मधुमन्तमर्व्वन्त्स मुद्रिय सदनमा विशस्व ॥९॥

घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्वृते श्वितो घृतम्म्वस्य धाम ॥ अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं व्वृषभ व्वक्षि हव्यम् ॥१०॥

ॐ व्वसोः पवित्रमसि शतधारं व्वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् ॥ देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा ॥११॥ इदमग्नये वैश्वानराय न मम । अवशिष्ट आज्यं रुद्रकलशे त्यागः ।

अथ कुण्डाग्नेः प्रदक्षिणामन्त्रः :- ॐ अग्ने नय सुपथा राये ऽअस्मान्विश्वानि देव व्वयुनानि विद्वान् । यु योद्ध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम ऽउक्ति व्विधेम ॥

अथाग्नि स्तुतिः--

जिते ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन।
नमस्ते स्तु हृषीकेश महापुरुषपूर्वज ॥
देवानां दानवानां च सामान्यमधिदैवतम् ।
सर्वदा चरणद्वन्द्वं ब्रजामि एकत्स्वमसि लोकस्य सृष्टा शरणं, तव ॥
संहारकस्तथा । अध्यक्षश्चानुमन्ता च गुणमाया समावृतः ॥
संसारसागरं घोरं अनन्तक्लेशभाजनम् ।
त्वमेव शरणं प्राप्य निस्तरन्ति मनीषिणः ॥
न ते रूपं न चाकारोनायुधानि न चास्पदम् ।
तथापि पुरुषाकारोभक्तानां त्वं प्रकाशसे ॥
चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च।
हूयते च पुनर्द्धाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः ॥

अथ भस्मधारणमन्त्र :- ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे । -

कश्यपश्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम्। यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिण बाहुमूले । तन्नो

(तत्ते) ऽअस्तु त्रायुषमिति हृदि।

संस्रवप्राशनम्--

ततः प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षिप्तस्य आज्यस्य यजमानेन अनामिकांगुष्ठाभ्यां प्राशनं कार्यम्।

मन्त्रः-

ॐ यस्माद्यज्ञ पुरोडाशाद्यज्वानो ब्रह्मरूपिणः।

तं संस्रव पुरोडाशं प्राश्नामि सुख पुण्यदम्॥

ततः आचम्य प्रणीतापात्रे निहिते पवित्रं आदाय ग्रन्थिं मुक्त्वा ताभ्यां शिरः सम्मृज्य ते पवित्रे अग्नौ प्रक्षिपेत्।

अथ ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्-

कृतस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गत्तासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं च इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे। इत्युक्त्वा ब्रह्मणे पूर्णपात्रं दद्यात्।

पूर्णपात्र ग्रहणानन्तरं ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवीत्वा प्रतिगृह्णातु इति ब्रह्मा वदेत्।

ततः प्राणीतापात्रं पश्चादानीय निनयेत्। अग्नेः पश्चात् प्रणीताविमोकः।

ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्ते कृण्वन्तु भेषजम्। इत्यनेन यजमानं उपयमन कुशैर्मार्जयेत्। ततः उपयमन कुशाना अग्नौ प्रक्षेपः। ब्रह्म ग्रन्थि विमोकः।

गोदान सङ्कल्पः--

कृतस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं इदं गोनिष्क्रय भूतं द्रव्यं अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

भूयसी दक्षिणा सङ्कल्पः--

कृतस्य अमुकयागकर्मणः न्यूनातिरिक्त दोषपरिहारार्थं नानानां- गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नट-नर्तक-गायकेभ्यो दीनानाथेभ्यो पङ्गु अन्धेभ्यश्च यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां यथा काले विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

श्रेयो दानम्--

आचार्यः हस्ते जल अक्षतान् पूगीफलं आदाय - ॐ भवन्नियोगेन

मया एर्भिब्राह्मणैः सह अस्मिन् अमुकयागाख्ये कर्मणि यत्कृतं आचार्यत्वं तदुत्पन्नं श्रेयः तत् अमुना जलाक्षत पूगीफलेन तुभ्यमहं सम्प्रददे। तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भव। भवामि इति यजमानः ब्रूयात्।

दक्षिणा सङ्कल्पः--

अद्य कृतस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गत्तासिद्धयर्थं तत्सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं च आचार्यादिभ्यो हस्तगत दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

ब्राह्मण भोजन सङ्कल्पः--

कृतस्य अमुकयागकर्मणः तत्सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं च यथासङ्ग्याकान् ब्राह्मणान् पक्वान्नेन मिष्ठान्नेन भोजयिष्ये। तेभ्यः दक्षिणादिकं च दास्ये। तेन श्री कर्माङ्ग देवता प्रीयतां न मम।

पीठदान सङ्कल्पः--

कृतस्य अमुकयागकर्मणाः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफल प्राप्त्यर्थं च इदं प्रधानपीठं ग्रहपीठं मातृकापीठं सोपस्करं दक्षिणा सहितम् आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

अथ देवानामुत्तर पूजने सूक्त निर्णयः- विष्णुयागे पुरुष

सूक्तेन, रुद्रयागे रुद्रसूक्तेन तथा शक्तियागे श्रीसूक्तेन देवतानां पूजनं कर्त्तव्यम्।

अथोत्तर पूजनम्--

कृतस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं आवाहितदेवतानां उत्तरपूजनं करिष्ये।

अथाभिषेकः---

ततो आचार्यः स्थापितयोः रुद्रकलश प्रधानकलशयोः जलं एकस्मिन् पात्रे एकीकृत्य तज्जलेन दूर्वा कुशा पञ्चपल्लवैः प्राडमुखं सपरिवारं यजमानं अभिषिञ्चेयुः।

तत्राभिषेक मन्त्राः-

ॐ देवस्य त्त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो सरस्वत्यै हस्ताभ्याम्। साम्म्राज्ज्येनाभिषिञ्चामि ॥ व्वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः

ॐ देवस्य त्त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्म्राज्येनाभिषिञ्चामि ॥

ॐ देवस्यत्त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥ अश्विनौभैषज्ज्येन तेजसे ब्ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्ज्येन व्वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि ॥ ३ ॥

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु महेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः ॥१॥
प्रद्युम्नश्चाऽनिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निरुद्धश्च यमो वै निर्ऋतिस्तथा ॥२॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा ॥३॥
कीर्तिर्लक्ष्मीधृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ॥४॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसिताऽर्कजाः ॥५॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देव - दानव गन्धर्वा यक्ष राक्षस पन्नगाः ॥६॥
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाऽप्सरसां गणाः ॥७॥
अस्त्राणि सर्वशास्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ॥८॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ॥९॥
अमृताभिषेकोऽस्तु।

छायापात्र दानम्--

कांस्यपात्रे स्थिताज्यं च आत्मरूपं निरीक्ष्य तु। ससुवर्णं तु यो दद्यात् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

ॐ रूपेण वो रूपमभ्यागां तुथो वो व्विश्ववेदा व्विभजतु। ऋतस्य पथा प्प्रेत चन्द्रदक्षिणा व्वि स्वः पश्श्य व्वयन्तरिक्षं यतस्व सदस्यैः ॥ इति मन्त्रमुक्त्वा आज्यावेक्षणं कृत्वा संकल्पं कुर्यात्।

अद्येत्यादि० मम कलत्रादिभिः सह दीर्घायुः आरोग्यसुतेजस्वित्वसुभगत्व सर्वपाप प्रशमनोत्तर जन्मराशेः सकाशात् नामराशेः सकाशाद्वाजन्मलग्नात् वर्षलग्नात् गोचराद्वा ये केचित् चतुर्थ अष्टमद्वादश आदिअनिष्ट स्थान स्थिताः क्रूरग्रहास्तैः सूचितं सूचयिष्यमाणञ्च यत्सर्वारिष्टंतद्विनाशार्थं सर्वदा तृतीयैकादश शुभस्थान स्थितवत् उत्तम फल प्राप्त्यर्थंकांस्यपात्रे उपन्यस्तं घृत बिन्दुकणिका समसंख्यावच्छिन्न नैरुज्यचिरञ्जीवित्वकामैतत् स्वशरीर छाया अवलोकित घृत पूरितं कांस्य पात्रंस्वर्णसहितं सुपूजितं श्रीमहामृत्युञ्जय देवता प्रीत्यर्थं चन्द्रमा प्रजापति-बृहस्पति दैवतं यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।

देवतानां विसर्जनम्--

ॐ उत्तिष्ठ ब्ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे।
उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव ऽइन्द्र प्राशूर्भवा सचा ॥१॥
ॐ यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा।
एषते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्व्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहा ॥२॥
यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादायमामकीम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥१॥
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानंपरमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवा तत्र गच्छ हुताशन ॥२॥
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषुयत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः ॥३॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।

न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ।।४ ।।

ॐ विष्णवे नमः ।। ॐ विष्णवे नमः ।। ॐ विष्णवे नमः ।।

अथ अवभृथ स्नान विधिः

यजमानः प्रधानवेद्युपरि स्थापितं प्रधानकलशं , हवनकुण्डाद् बहिः पतितं हवनीयद्रव्यं, सुक्- सुवादियज्ञपात्रं पूजनसामग्रीं च गृहीत्वा वेदमन्त्रोच्चारण-भगवन्नामकीर्तन-वाद्यघोषपुरस्सरं आचार्यादिऋत्विग्भिः नगरवासिभिश्च सह नदीं जलाशयं वा गच्छेत् । अर्धमार्गोपरि क्षेत्रपालं सम्पूज्य क्षेत्रपालाय बलिं दद्यात् । नदीं जलाशयं वा गत्वा आचार्यादयः स्वस्तिवाचनं कृत्वा संकल्पं कुर्यात् ।

देशकालौ सङ्कीर्त्य मम सर्वेषां परिवाराणां तथान्येषांसमुपस्थितानां जनानाञ्च सर्वविधकल्याणपूर्वकं धर्मार्थकाममोक्ष-चतुर्विधपुरुषार्थ सिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीतिपूर्वकं च कृतस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्थं च पुण्यकालेऽस्मिन्अस्यां नद्यां जलाशये वा माङ्गलिकं अवभृथस्नानंसमस्तसमुपस्थितजनैःसह अहं करिष्ये ।

अनन्तरं नद्यां जलाशये वा जलमातृणां आवाहनं पूजनं च कुर्यात्।

ॐ मत्स्यै नमः मत्सीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ कूर्म्यै नमः कूर्मीमावा० । ॐ वारायै नमः वाराहीमावा० । ॐ दर्दुर्ये नमः दर्दुरीमावा० । ॐ मकर्यै नमः मकरीमावा० । ॐ जलूक्यै नमः जलूकीमावा० । ॐ तन्तुक्यै नमः, तन्तुकीमावा० ।

खण्ड 2 : विष्णुः महायज्ञ1

इकाई 6 : दशविधि स्नानानि

प्रस्ता◌ावना

प्रस्तुात इकाई में विष्णु◌् महायज्ञ में प्रयुक्तः दश विधि स्नाान क्षौर कर्लशयात्रा एवं पंचाग पूजन पर प्रकाश डाला गया है।

उददेश्या-

प्रस्तुातइकाई के अध्यडयन से विष्णुा महायज्ञ एवं दश विधि स्नावन पर सम्पूार्ण ज्ञान प्राप्तु होगा।

प्रश्नप -

१. दश विधि स्ना न में प्रयुक्त होने वाले सामग्रियों का विर्णन लिखें।

२. मण्डप प्रवेश यात्रा का सविस्तार वर्णन कीजिए।

रूद्रमहायज्ञ विधान के जैसे ही विष्णुमहायज्ञ में भी दशविधि स्नान क्षौरकर्म कलशयात्रा मण्डप प्रवेश एवं पंचागपूजन किया जाता है। जो कि यहाँ संक्षेप में निर्देशित किया गया है। एतावता इन सब सम्पूर्ण विषयों को भलीभांति समझने के लिए खण्ड एक की इकाई एक में प्रकाश डालें।

दसविधि स्नानः किसी भी याज्ञिक कर्म में लगने से पूर्व में किए गए ज्ञाता रात पाप से निवित्त के लिए दस विधि स्नाना का विधान है।

तीर्थेपर्वण्यनुष्ठानेसर्वपातकनाशनम् ।

भस्मादि विविधैर्द्रव्यैः स्नानं दशविधं चरेत् ।।

यस्मिन्कस्मिन्ननुष्ठानेवाह्यान्तरविशुद्धये ।

समग्रफलप्राप्त्यर्थ स्नानं दशविधंस्मृतम् ।।

तीर्थस्नाने तथा प्रायश्चित्तादिषु केचन दशविधस्नानानि कुर्वन्ति ।

सङ्कल्पः -अद्येत्यादि अस्मिन् अमुक तीर्थे स्थाने वा मम देहशुद्ध्यर्थं मनोदेहाश्रित सर्वविधदोष शुद्धयर्थं दशविध स्नानमहं करिष्ये ।

तीर्थ तथा यज्ञ स्थान पर दस विधि स्नान करने से देह तथा आत्मशुद्धि होती है। ऐसा मनीषियों का मत है।

अथ हेमाद्रि प्रोक्त स्नान सङ्कल्पः

श्रावण्यादिनैमित्तिकस्नानेप्रायश्चित्तेतीर्थस्नानादिषुचहेमाद्रिप्रोक्तं महास्नान सङ्कल्पं कुर्यात् ॥

स्वस्ति श्री समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारणस्य रक्षाशिक्षाविचक्ष-णस्य प्रणतपारिजातस्य अशेषपराक्रमस्य श्रीमदनन्तवीर्यस्यादिनारायणस्य अचिन्त्यापरिमितशक्त्या ध्रियमाणस्य महाजलौघमध्येपरिभ्रममाणानामनेककोटि ब्रह्माण्डानामेकतमेऽव्यक्तमहदहंकारपृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशाद्यावरणैरावृते अस्मिन्महति ब्रह्माण्डखण्डेआधारशक्तिश्रीमदादिवाराह दंष्ट्राग्रविराजिते कूर्मानन्त वासुकितक्षक कुलिक कर्कोटक पद्म महापद्म शंखाद्यष्टमहानागैर्धियमाणेऐरावत पुंडरीककुमुदांजन पुष्पदन्त सार्वभौमसुप्रतीकाष्टदिग्गजोपरि प्रतिष्ठितानां अतल वितल सुतल तलातल रसातल महातल पाताल लोकानामुपरिभागे भूर्लोक भुवर्लोक स्वर्लोक महर्लोक जनोलोक तपोलोक सत्यलोकाख्य सप्तलोकानामधोभागे चक्रवालशैलमहावलय नागमध्यवर्तिनो महाफणिराजशेषस्य सहस्रफणा मणिमण्डलमण्डिते दिग्दन्ति शुण्डादण्डोदंडिते अमरावती अशोकवती भोगवती सिद्धवती गान्धर्ववती काञ्च्यवन्ती अलकावती यशोवतीति पुण्यपुरी प्रतिष्ठिते लोकालोकाचलवलयिते लवण इक्षु सुरा सर्पिः दधि क्षीरोदकार्णव परिवृते जम्बू प्लक्ष कुश क्रौञ्च शाक शाल्मलि पुष्कराख्य सप्तद्वीपयुतेन्द्र कांस्य ताम्रगभस्ति नाग सौम्य गन्धर्व चारणभारतेति नवखण्ड मण्डिते सुवर्णगिरि कर्णिकोपेत महासरोरुहाकार पञ्चशत्कोटि योजनविस्तीर्ण भूमण्डले अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका द्वारावतीति सप्तपुरी प्रतिष्ठिते सुमेरुस्वर्णप्रस्थ चण्डप्रस्थ निषधत्रिकूट रजतकूट ताम्रकूट हिमवद्विन्ध्याचलानां हरिवर्ष किंपुरुष भारतवर्ष योश्च दक्षिणे नवसहस्र योजन विस्तीर्णे मलयाचल सह्याचल विंध्याचलानामुत्तरे चांद्रसूक्तावतक रमणक महारमणक पाञ्चजन्य सिंहललंकेति नवखण्ड मण्डिते गङ्गा भागीरथी गोदावरी क्षिप्रा यमुना सरस्वती नर्मदा तापी चन्द्रभागा कावेरी पयोष्णी कृष्णावेण्या भीमरथी तुङ्गभद्रा ताम्रपर्णी विशालाक्षी चर्मण्वती वेत्रवती कौशिकी गण्डकी

विश्वामित्री सरयू करतोया ब्रह्मानंदा महीत्यनेक पुण्यनदी विराजिते भरतखण्डे भारतवर्षे जम्बूद्वीपे रामक्षेत्रे कूर्मभूमी साम्यवति कुरुक्षेत्रादिसमभूमौ मध्यरेखायाः पूर्वदिग्भागे श्रीशैलात्पश्चिमदिग्भागे श्रीकृष्णा वेण्या कावेरी मध्यदेशे तुङ्गभद्राया उत्तरे तीरे श्रीगोदावर्या दक्षिणे तीरे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे हेमकूट मातङ्गमाल्यवत् किष्किन्धा सहित पंचक्रोश मध्ये चम्पकारण्य नैमिषारण्य बदरिकारण्य कामिकारण्य दण्डकारण्यार्बुदारण्य धर्मारण्य पद्मारण्य जम्बुकारण्य समस्त पुण्यारण्यानां मध्यदेशे भास्करक्षेत्रे सकलजगत्स्रष्टुः परार्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथमदिवसे अह्नो द्वितीये यामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादि द्वात्रिंशत्कल्पानां मध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायम्भुवादि मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृत त्रेता द्वापर कलिसंज्ञकानां चतुर्णा युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमचरणे भरतवर्षे भारतखण्डे जम्बूद्वीपे रामक्षेत्रे परशुरामाश्रमे दण्डकारण्यदेशे श्रीगोदावर्याः पश्चिमदिग्भागेश्रीमल्लवणाब्धेः उत्तरे तीरे श्रीशालिवाहन शाके बौद्धावतारे प्रभवादि षष्टि संवत्सराणां मध्येऽस्मिन् वर्तमाने अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौतुरुष्क स्पृष्ट द्रव्योपभोग तुरुष्कस्पर्श तुरुष्कदेशनिवासादीनाम् कुग्रामवास वानिष्ठुर दुर्गृह दुर्भाण्ड दुर्भोजनापक्वापाक यत्नकटकान्न नखनिकृन्तन नदीलंघन समुद्रस्नान ब्राह्मणवृत्तिच्छेदन अभक्ष्यभक्षणानिमित्त भार्याविसर्जन ब्राह्मणद्वेष द्विजभेद मित्रभेद स्त्रीपुरुषभेद स्थूलसूक्ष्म जीव हिंसन क्रूरकर्मानृत लुब्ध कपि शुन चौर पाखंड नारी लंपट चाण्डाल शवास्थि स्पर्श गुंजनभक्षण लशुनभक्षण मसूरान्न भक्षण मार्जारोच्छिष्टभोजन पतित पंक्ति भोजन पतितसंभाषणादीनाम् बालस्तेय ऋणापाकरणानाहिताग्नि तापक्रय परिवेद भृतकाध्ययनादान भृत्याध्यापन परदार परवित्त वात्सल्य स्त्री शूद्र क्षत्रविट् बन्धुनिन्दार्थोपजीवन नास्तिक्य व्रतलोप कुप्यपशु स्वाध्याय त्याग स्तेयायाज्ययाजन पितृ मातृ सुतत्याग तडागाराम विक्रय कन्यासंदूषण परनिंदकया जन तत्कन्याप्रदान कौटिल्य व्रतलोपन स्वार्थक्रियारम्भ परस्त्रीनिषेवण स्वाध्यायाग्नि सुतत्याग बांधवत्यागेन्धनार्थ द्रुमच्छेदन स्त्री हिंसौषधिजीवन हिंस्रमंत्रविधान व्यसनात्मविक्रय शूद्र प्रेष्य हीनयोनि निषेवणानाम् परान्नपुष्टत्वा सच्छास्त्राधिगतप्राकाराधिकारित्व भार्याविक्रयादि अपपातकानाम् तथा एकादशाहादि

श्राद्धान्न भोजन शूद्रदत्त घृतादिभोजन आपोशनरहितभोजन यज्ञोपवीतरहितान्नभोजन परान्नभोजन रेतोमूत्रादि मृल्लोष्टभक्षण वैश्वदेव रहितादि दूषितान्नभोजन शूद्रादिम्लेच्छान्नभोजन पुंसवन सीमंतोन्नयनादि भोजन जातकर्मादिभोजन नीलवस्त्र परिधान भोजनोच्छिष्ट भोजन कुत्सितपंक्तिभोजन चाण्डाल कूप भांडोदकपान चांडाल स्पृष्ट जलक्षीरादिपान द्विजद्रव्यापहरण श्राद्धदिनेगमन दिवामैथुन उन्मादक द्रव्यभक्षण सूर्योदयास्त शयन पतितादि दुष्ट प्रतिग्रहप्रायश्चित्त द्रव्यप्रतिग्रह स्वनिषिद्ध वृत्तिधनार्जन मिथ्या ब्राह्मणक्रोधोत्पादन बलात्कारित म्लेच्छादि संसर्ग म्लेच्छ भाषण ब्राह्मणान्नाह्वान देवागारकृतेष्ट शिलादिहरण व्रतभङ्ग खरोष्ट्रादियान कृतोपकारविस्मरण विविध विद्योपजीवन परमसन्मानदूरीकरण गुणयुक्तस्यापमान करणाकाल भोजनादेश भोजनसार्वकालिक परद्वेष्याभिनिवेश परमार्थाचिन्तन यजनयाजन. होमदानान्तराय करणादि सर्वपापानां विनाशार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं देव ब्राह्मण सवितृ सूर्यनारायणसन्निधौ अमुकतीर्थे स्नानमहं करिष्ये ।।परस्परानुरक्तद्वेषोत्पादनेन्द्रधनुःप्रदर्शन श्रद्धनिमंत्रितशिवनिर्माल्यस्पर्शशिवद्रव्योपजीवन विष्णुद्रव्योपजीवनोपाधिकत्रैवर्णिक देवार्चन द्वेष्याभिचारण कूटमंत्र कूटहोमकरणपूज्यापूजनापूज्यपूजन परवृत्तिहरण शरणागत परित्राणाकरणकपटपरविवाहान्तरायकरण देवर्षि द्विज निन्दाकरण

।। इति हेमाद्रि प्रोक्त स्नान सङ्कल्पः ।।

संस्नाना से पूर्व संकल्प - हाथ में कुश अक्षत तथा द्रव्य लेकर लिखित संकल्प को करना चाहिए।

भस्म- स्नानम्

ॐ प्रसद्य भस्मना योनिम् , अपश्च पृथिवीमन्ने। स सृज्य मातृभिष्टुं , ज्योतिष्मान्पुनराऽसदः ।।

मृत्तिका- स्नानम्

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे, त्रेधा निदधे पदम्।समूढमस्य पा सुरे स्वाहा।

गोमय -स्नानम्

ॐ मा नस्तोके तनये मा न ऽआयुषि , मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः । मा नो वीरान्

रुद्र भामिनी, वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे।

गोमूत्र –स्नानम्

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।ॐ आप्यायस्व समेतु ते , विश्वतः सोम वृष्ण्यम्।

भवा वाजस्य संगथे। -

दधि -स्नानम्

ॐ दधिक्राव्णो ऽअकारिषं, जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्र णऽ, आयू षि तारिषत्।

घृत -स्नानम्

ॐ घृतं घृतपावानः , पिबत वसां वसापावानः । पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽ आदिशो विदिशऽ, उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।

सर्वोषधि - स्नानम्

ॐ ओषधयः समवदन्त , सोमेन सह राज्ञा । यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त , राजन् पारयामसि।

कुशोदक - स्नानम्

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोः , बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि, बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ॥

मधु-स्नानम्

ॐ मधु वाता ऽक्रतायते , मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। ॐ मधु नक्तमुतोषसो, मधुमत्पार्थिव रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता ।ॐ मधुमान्नो वनस्पतिः , मधुमाँ२ऽअस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।

शुद्धोदक- स्नानम्

अन्त में समग्र शुद्धता के लिए शुद्ध जल से सिंचन- स्नान किया जाए-

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो, मणिवालस्तऽ आश्विनाः, श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते, रुद्राय पशुपतये कर्णा यामाऽ, अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ॥

बताये गए प्रत्येक द्रव्यों को जल में डालकर मंत्र द्वारा स्नान करना चाहिए।

क्षौरकर्म-

यज्ञ से पूर्व साधक को या के निमित्त अपने केश को हटवाना चाहिए. केश समर्पण का सूचक है। ऐसा मानकर सन्यासी/वैराणी को सिर तथा दाढ़ी मूछ बनवाना चाहिए। गृहस्थ को सिर का बाल बनवाना आवश्यक है।

कलश यात्रा -

किसी भी यज्ञ के प्रारम्भ के पूर्व जल यात्रा का विधान हैं समस्त बनधु बान्धव सहित तथा समस्त शिष्य सहित गाजे बाजे के साथ किसी तीर्थ या सरोवर अभव हो तो कूप के पास जा कर सबसे पहले जल जीव तथा स्थल मातृका का अवहन करना चाहिए।

देवार्धन विधि प्रबन्धः

मसिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥६॥

पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः पानी विदथेषु जग्मयः । अग्निजिह्वामनवः सूरचक्षसो विश्वेदेवा अवसागमन्निह । ॥७॥

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितंय्यदायुः ॥ ८ ॥

शतमिन्नु शरदो ऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् । पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ।। ९ ।।

अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्मातासपितासपुत्रः । व्विश्वे देवाऽअदितिः पञ्चजनाऽ अदितिर्जातमदितिर्जनित्त्वम् । १० ॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः व्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि ॥ ११ ॥

यतोयतः समीहसे ततो नोऽअभयकुरु । शन्नः कुरुप्प्रजाब्भ्योऽभयन्नः पशुभ्यः ॥ १२ ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिःसुशान्तिर्भवतु, सर्वारिष्ट शान्तिर्भवतु।

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः ।उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । शचीपुरन्दराभ्यां नमः । मातृपितृ चरण कमलेभ्यो नमः । इष्टदेवताभ्यो नमः । कुलदेवताभ्यो नमः । ग्रामदेवताभ्यो नमः । स्थानदेवताभ्यो नमः । वास्तुदेवताभ्यो नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः | सर्वेभ्यो तीर्थेभ्यो सर्वाभ्यो शक्तिभ्यो एतत् कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः । अविघ्नमस्तु । कल्याणमस्तु । अयमारम्भः शुभाय भवतु ।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।लम्बोदरश्चविकटोविघ्ननाशो विनायकः । धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षोभालचन्द्रो गजानन: द्वादशैतानिनामानिपठेच्छृणुयादपि ।

कलशार्चनम्

कलश में रोली से स्वस्तिक चिन्ह बनाकर एवं उसके गले में मौली बाँधकर ईशानकोण में अष्टदल बनाकर सप्तधान्य या चावल रखकर उसके ऊपर कलश को स्थापित कर निम्न लिखित विधि से पूजन करना चाहिए।

भूमिं स्पृशेत्-

ॐ मही द्यौः पृथिवी च नऽइमँ यज्ञम्मिमिक्षताम् । पिपृतान्नो भरमभिः ।। विश्वाधाराऽसि धरणी शेषनागोपरि स्थिता । उद्धा वराहेण कृष्णेन शतबाहुना ।।

(भूमि का स्पर्श करें)

सप्तधान्यप्रक्षेप:-

ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा ।

यस्म्मै कृणोति ब्राह्मणस्त राजन्पारयामसि ।।

कलशं स्थापयेत्

ॐ आजिघ्र कलशं मय्या त्त्वा व्विशन्त्विन्दवः ।

पुनरुर्जा निवर्त्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्मा विशताद्द्रयिः।

हेमरूप्यादिसम्भूतं ताम्रजं सुदृढंनवम् ।

कलशं धौतकल्माषं छिद्र ब्रण विवर्जितम् ।।

(सप्तधान्य पर कलश का स्थापन करें)

कलशे जलपूरणम् -

कलश में जल मंत्र

कलश् को समस्त तीर्थों के जल को भर देना चाहिए।

कलशे जलपूरणम्-

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्त्थो
वरुणस्यऽऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद् ।।
जीवनं सर्वजीवानां पावनंपावनात्मकम् ।
बीजं सर्वोषधीनां च तज्जलं पूरयाम्यहम् ।।

(कलश में जल भरें)

गन्धप्रक्षेपः

ॐ त्वांगन्धर्व्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वांबृहस्पतिः ।
त्वामोषधेसोमोराजाव्विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत ।।
केशरागरुकङ्कोलघनसारसमन्वितम् ।
मृगनाभियुतं गन्धंकलशेप्रक्षिपाम्यहम्।। ८

(कलश में चन्दन या रोली छोड़ें)

धान्यप्रक्षेपः -

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणायत्त्वो दानायत्त्वा व्यानायत्त्वा ।
दीर्घामनु प्प्रसितिमायुषेधान्देवोवः सविताहिरण्यपाणिः
प्रतिगृभ्णात्त्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषेत्त्वा महीनां पयोऽसि ।
धान्यौषधी मनुष्याणां जीवनं परमं स्मृतम् ।
निर्मिता ब्रह्मणा पूर्वं कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ।।

(कलश में सप्तधान्य छोड़ें।)

सर्वोषधिप्रक्षेपः -

ॐ या ऽओषधीः पूर्व्वा जातादेवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा ।

मनैनुब्बभ्रूणामहशतंधामानिसप्त च ॥

औषध्यः सर्ववृक्षाणां तृणगुल्ल्मलतास्तु याः ।

दूर्वासर्षप-संयुक्ताः कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥

(कलश में सर्वौषधि छोड़ें।)

- दूर्वाप्रक्षेपः

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्प्परि ।

एवानो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च ॥

दूर्वेह्यमृतसम्पन्ने शतमूलेशताङ्कुरे ।

शतं पातकसंहन्त्री कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥

(कलश में दूर्वा छोड़ें)

पञ्चपल्लवप्रक्षेपः

ॐअश्वत्थेवोनिषदनम्पर्णेवोव्वसतिष्कृता ।

गोभाजइत्किलासथयत्सनवथपूरुषम् ॥

अश्वत्थोदुम्बरप्लक्ष चूतन्यग्रोध पल्लवः ।

पञ्चैतान् पल्लवानस्मिन् कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ।।

(कलश में पञ्च पल्लव अथवा आम पल्लव रखें)

सप्तमृदप्रक्षेपः

ॐस्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी ।

यच्छानः शर्म्मसप्प्रथाः ॥

अश्वस्थानाद् गजस्थानाद्वल्मीकात्सङ्गमाद्दात् ।

राजस्थानाच्च गोष्ठाच्च मृदमानीय निक्षिपेत् ।।

(कलश में सप्तमृत्तिका या मिट्टी छोड़ें)

पूगीफलप्रक्षेप: -

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नोमुञ्चन्त्वहसः ॥
पूगीफलमिदं दिव्यं पवित्रं पुण्यदं नृणाम् ।
हारकं पापपुञ्जानां कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥

(कलश में सुपारी छोड़े)

पंचरत्नप्रक्षेप

ॐ परिवाजपतिःकविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् ।दधद्रत्नानिदाशुषे।
कनकंकुलिशंनीलंपद्मरागं चमौक्तिकम्॥
एतानिपञ्चरत्नानिकलशेप्रक्षिपाम्यहम्।

(कलश में पंचरत्न छोडें)

हिरण्यप्रक्षेप :-

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्यजातः पतिरेक आसीत् ।
सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमातरम्मै देवाय हविषा विधेम । ।
हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदंकलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥

(कलश में स्वर्णखण्ड छोड़ें)

रक्तसूत्रेण वस्त्रेण वा कलशं वेष्टयेत् -

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्मव्वरुथमासदत्स्वः ।
व्वासोऽ अग्नेव्विश्वरूपसंव्ययस्व व्विभावसो ॥
सूत्रं कर्पाससम्भूतं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा ।
येन बद्धजगत्सर्वं तेनेमं वेष्टयाम्यहम् ॥

(कलश में वस्त्र अथवा मौली लपेटें)

कलशस्योपरि पूर्णपात्रं न्यसेत् -

ॐ पूर्णादर्व्वि परापतसुपूर्णापुनरापत ।

व्वस्नेव व्विक्क्रीणावहाऽइषमूर्ज शतक्रतो ॥

पिधानंसर्ववस्तूनां सर्वकार्यार्थसाधनम् ।

सम्पूर्णः कलशो येन पात्रं तत्कलशोपरि ।।

(कलश पर पूर्णपात्र रखें)

पूर्णपात्रोपरि नारिकेलफलं न्यसेत् -

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणाम्मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽ इषाण ।

(पूर्णपात्र पर नारियल रखें)

वरुणं आवाहयेत् -

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः ।

अहेडमानो वरुणेहबोध्युरुश समानऽ आयुः प्रमोषीः ॥

भगवन्वरुणागच्छ त्वमस्मिन् कलशे प्रभो ।

कुर्वेऽत्रैव प्रतिष्ठां ते जलानां शुद्धिहेतवे ।।

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सायुधं सशक्तिकं सपरिवारं आवाहयामि स्थापयामि । ॐ अपांपतये वरुणाय नमः । इति पञ्चोपचारै: वरुणं सम्पूज्य -

कलशे देवानां नदीनां तीर्थानां च आवाहनम् –

कलाकला हि देवानां दानवानां कलाकलाः ।

संगृह्य निर्मितो यस्मात् कलशस्तेन कथ्यते ॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रिताः ।

मूलेत्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥

कुक्षौ तु सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।

अर्जुन गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती ॥

कावेरी कृष्णवे च गङ्गा चैव महानदी ।

ताप्ती गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा ।।
विविधा जाता सर्वास्तथापराः ।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै ।।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो हाथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ।।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ।
आयान्तु मम शान्त्यर्थ दुरितक्षयकारकाः ।।

(ऊपर के श्लोकों को पढ़ते हुए कलश पर अक्षत छोड़ें।)

पंचाग पूजन तथा पूजन मंत्र खण्ड एक की इकाई से देखें।

इकाई 7 : आचार्यवरण

प्रस्ता ूवना

प्रस्तु ूत इकाई में पुण्याकर्वा,चआचार्य पूजन एवं वेदी स्थारपन पूजन पर प्रकाश डाला गया है।

उददेश्या-

इस इकाई के अध्य यन से पुर्ण्यानवाचन एवं आचार्य पूजन सम्पूर्ज्ञाण प्राप्तर होगा।

प्रश्नय -

१. पुर्ण्या-वाचन किसे कहतेहै।
२. पुर्ण्या-वाचन एवं आचार्य पूजन परसविस्तार वर्णन कीजिए।

रूद्रमहायज्ञ विधान के जैसे ही विष्णुमहायज्ञ में भी दशविधि स्नान क्षौरकर्म कलशयात्रा मण्डप प्रवेश एवं पंचागपूजन किया जाता है। जो कि यहाँ संक्षेप में निर्देशित किया गया है। एतावता इन सब सम्पूर्ण विषयों को भलीभांति समझने के लिए खण्ड एक की इकाई एक में प्रकाश डालें।

क. आचार्य पूजन का।

किसी भी पूजा का आधारभूत आचार्य होता है। उसी के निर्देशन में पूजा प्रारम्भ होती है उसके बताए गए मार्ग में चल करके साधक अपनी साधना पूर्ण करता है, देवादि यज्ञ में आचार्य भगवान के समान माना गया है। देवताओं के समान श्रद्धा रखकर आचार्य का पूजन एवं वरण करना चाहिए आचार्य पूजन में मन्त्रों के द्वारा आचार्य का तिलक तथा ससंकल्प आचार्य को दक्षिणा देकर उसका पूजन करना चाहिए, और उसकी अपनी श्रद्धा से संतुष्ट करना चाहिए तथा प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारा कार्य निर्विघन रूप से प्रारम्भ हो और उकसी पूर्णतः ही निर्विघन रूप से हो आपके बताए गए नियमानुसार हम पूजन को तैयार हैं आचार्य हमको उचित निर्देशन

देते हुए हमारी पूजा सम्पन्न करवाए, ऐसा मन में भाव लेकर आचार्य का पूजन करना चाहिए।

आचार्यः-

आचार्य किसी भी पूजा में मुख्य भूमिका का निर्वाहन करता है आचार्य को अपने यजमान के कल्याण हेतु लोभ , मोह और क्रोध से परे होकर यजमान के कल्याण के लिए साथ आए हुए नित्युज्यो (पण्डित सहायक) का सम्मान करते हुए यजमान की कल्याण की कामना के लिए जो ब्राह्मण के नवगुण हैं उनसे मुक्त होकर किसी भी या या पूजा का व आचार्यदल करना चाहिए क्रोध तथा लोभ और काम को त्यागकर वह अपने वैदिक मन्त्र तथा कर्मकाण्ड के माध्यम से साधक की साधना पूर्ण करवाना ही उसका लक्ष्य होना चाहिए।

विशेषः-

आचार्य चयन में ध्यान में देना चाहिए हम उसकी योज्ञता और साधना और कार्य कुशलता जो हमारे पूजन के लिए अत्यन्त आवश्यक है प्रयास यह रहे आचार्य पढ़ा लिखा तथा कुशल वैदिक विद्वान हो जरूरी नहीं की वो पुरोहित या सम्बन्ध में आने वाले आचार्य को ही हम वरण करें। प्रायः आचार्य की योग्यता को ध्यान में रखते हुए चाहिए पुरोहित का का परित्याग नहीं करना चाहिए यदि वह योग्य नहीं भी है तब भी पूजा में उसको अस्थान देकर के गणेश तथा सरल मन्त्रों को उससे जप करवाया जाए।

ब्राह्मण पूजन मन्त्रः-

ऊँ आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्टे[a] राजन्यः शूर ऽइषव्योति याधी महारथो जायतान्दोग्ध्री धेनुर्वोढा नड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः। सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतान्निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पंचन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभम्।

नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कंकणम्।।

सर्वांगे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली।

गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपाल चूडामणिः।।

क. वाचन का।

यज्ञ की सम्पूर्णतः के लिए पूर्णः वाचन का विधान है पूर्णः वाचन ब्राह्मण या आचार्य द्वारा वचनों के माध्यम सेयजमान के कल्याण की कामना तथा वाचिक संकल्प द्वारा पूर्व अंकित आचार्य पूजन से सम्बन्धित है पूर्णः वाचन में वरुण कलश के साथ ही एक धातु कलश (लोटा) स्थापना करनी चाहिए जिस प्रकार पूर्व लिखित कलश प्रतिष्ठा में वरुण कलश की प्रतिष्ठा होती है उन्हीं मन्त्रों के द्वारा और उसी विधा से सन्ति कलश की स्थापना एवं पूजन किया जाए साधारण शब्दों में पूजन के समय ही पूजन जिस दिन प्रारम्भ हो उसी दिन कलश के बगल ही एक जल पात्र और रखकर उसकी भी कलश के समान ही पूजन करना चाहिए तथा उसी जलपात्र से पूर्णयः वाचन करना चाहिए।

पूर्णयः वाचन प्रारम्भः-

यजमान पूर्व दिशा या उत्तर दिशा में मुख करके वज्र आशन या बीर आसन पर बैठ जाए तथा अपने हाथ की अंगुलियों को कमलवत बना ले कहने का अभिप्राय ये है कि अंजलि न बनाते हुए दोनों हाथों को तजर्नि को तजर्नि अंगूठे से अंगूठे को जोड़ दें बाकी अंगुलियां खुली रहें। आचार्य पूर्व पूजित जल पात्र यजमान के हाथों में रख दें तथा यजमान उस पात्र को अपने सर पर स्पर्श करवाने तथा ब्राह्मणों द्वारा मन्त्र के माध्यम से अपने दीर्घ आयु की कामना करता हुआ प्रार्थना करे तथा ब्राह्मणों को निम्न मन्त्र का वाचन करना चाहिए-

वरुण प्रार्थना- ॐ पाशपाणे नमस्तभ्यं पद्मिनीजीवनायक।

पुण्याहवाचनं यावत् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।

दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णु पदानि च।

तेनाऽऽयुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।।

मन्त्र के उपरान्त या हो सके तो यह मन्त्र यजमान द्वारा ही बोलवाया जाए वह ज्यादा उत्तम होगा। यदि बोलने में न सक्षम हो तो आचार्य यजमान का प्रतिनिधित्व करे मन्त्र के पूर्ण होने के उपरान्त ही सभी ब्राह्मण

अस्तु दीर्घामायुः।। अस्तु दीर्घमायुः।। अस्तु दीर्घमायुः।।

ऊँ त्रीणि पदा व्विचक्क्रमे व्विष्ण्णुर्ग्गोपाऽअदाब्भ्यः। अतो धर्म्माणि धारयन्।।

इस वाक्य को कहकर के आशीर्वाद प्रदान करें, पुनः हाथ जोड़कर यजमान निम्न मन्त्र बोलता हुआ आशीर्वाद मांगे-

ब्राह्मण-पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुस्तु।

यजमान और ब्राह्मणों का यह संवा

ब्राह्मणः-

इस वाक्य को तीन बार बोलकर यजमान को आशीर्वाद प्रदान करें तथा कलश जमीन पर रखकर यजमान सभी ब्राह्मणों के हाथ में निम्न मन्त्र वाचन करता हुआ जल दे-

यजमान- ऊँ अपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम्।

ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु नः।।

ऊँ शिवा आपः सन्तु। ऐसा कहकर यजमान ब्राह्मणों के हाथ में जल दे।

ब्राह्मण ब्राह्मण-सन्तु शिवा आपः तीन बार इस वाक्य का उच्चारण करें तथा फिर यजमान निम्न मन्त्र बोलता हुआ पुष्प प्रदान करे-

यजमान - लम्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्कर।

सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं सदास्तु मे।। सौमनस्यमस्तु।

ब्राह्मण ब्राह्मण - अस्तु सोमनस्यम् पुनः तीन बार इन वाक्यों द्वारा पुष्प स्वीकार करें , तथा पुनः यजमान ब्राह्मण के हाथों में निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ अक्षत प्रदान करे-

यजमान - अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम्।

यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम।।

अक्षतं चारिष्टं चास्तु।

ब्राह्मण ब्राह्मण - 'अस्त्वक्षतमरिष्टं च'। - ऐसा स्वीकार करें। निम्न वाक्यों द्वारा तीन बार बोलकर हाथ में गंध प्राप्त करे कहने का अभिप्राय यह है कि प्रत्येक सामग्री

यजमान द्वारा मन्त्रों के माध्यम से ब्राह्मणों को प्रदान की जाए तथा ब्राह्मण वैदिक वाक्यों से तीन बार बोलकर आशीर्वाद देते जाए निम्न सामग्री यजमान ब्राह्मण को निम्न लिखित वाक्यों से प्रदान करें-

यजमान - (चन्दन) गन्धाः पान्तु।

ब्राह्मण - सौमंगल्यं चास्तु।

यजमान - (अक्षत) अक्षताः परन्तु।

ब्राह्मण - आयुष्यमस्तु

यजमान - (पुष्प) पुष्पाणि पान्तु।

ब्राह्मण - सौश्रियमस्तु।

यजमान - (सुपारी-पान) सफलताम्बूलानि पान्तु।

ब्राह्मण - ऐश्वर्यमस्तु।

यजमान - (दक्षिणा) दक्षिणाः पान्तु।

ब्राह्मण - बहुदेयं चास्तु।

यजमान - (जल) आपः पान्तु।

ब्राह्मण - स्वर्चितमस्तु।

यजमान - (हाथ जोड़कर) दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चायुष्यं चास्तु।

विप्राः - ॐ तथाऽस्तु। तथाऽस्तु।

यजमान:- (हाथ जोड़कर) यं कृत्वा सर्व वेद-यज्ञ-क्रियाकरण-कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोंगारमादिं कृत्वा ऋग्-यजुः सामऽऽथर्वाऽशीर्वचनं बहु ऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

विप्राः - ॐ वाच्यताम्। वाच्यताम्। वाच्यताम्।

यजमानः (हाथ जोड़कर) - ॐ व्रत-जप-नियम-तपः-स्वाध्याय-क्रतु-शम-दम-दया-दान-वशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्माणानां मनः समाधीयताम्।

ब्राह्मणाः - ॐ समाहित-मनसः स्मः। समाहित-मनसः स्मः। समाहित-

मनसः स्मः।

यजमानः - ॐ प्रसीदत्त भवन्तः।

ब्राहमणाः - ॐ प्रसन्नाः स्मः। प्रसन्नाः स्मः। प्रसन्नाः स्मः।

इसके बाद जल पात्र उठा करके यजमान के सम्मुख दो पात्र रखें जाएं जिसको प्रथम और द्वितीय की संज्ञा दी जाए निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ जल प्रथम पात्र को डाले।

पुष्याहवाचन

पुण्याह वाचन कलश उत्थाप्य दक्षिणपाख्े एकस्मिन कांस्यपात्र शरावव: (दक्षिणभागे संस्थापति पात्रे) शनैः शनैः कलशाद् जलं पातयेत्।)

यजमान:- ॐ शान्तिरस्तु। ॐ पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु। ॐ आयुष्ममस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवमस्तु। ॐ शिवं कर्माऽस्तु। ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ वेदसमृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु। ॐ धन-धान्यसमृद्धिरस्तु। ॐ पुत्रपौत्र-समृद्धिरस्तु ॐ इष्टसम्पदस्तु।

तथा अब निम्न मन्त्र को पढ़ते हुए द्वितीय पात्र में

ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु। यत्पापं रोगं अशुभं अकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।

पुनः निम्न मन्त्र को पढ़ते हुए प्रथम पात्र में -

ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। ॐ उत्तरोत्तरमहरहरभि-वृद्धिरस्तु। ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथिकरणे सुमुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गा-पांचालयौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगाः विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगाः मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मपुरोगा सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णु-पुरोगाः सर्वे-देवाः प्रीयन्ताम्। ॐ ऋषयश्छन्दांसि-आचार्या वेदा देवा यज्ञाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मा ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ अम्बिका-सरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्।

ऊँ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ऊँ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ऊँ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। ऊँ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। ऊँ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। ऊँ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ऊँ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ऊँ सर्वाः ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ऊँ सर्वा इष्टदेवताः प्रीयतन्ताम्।

तथा द्वितीय पात्र में निम्न मन्त्रां द्वारा-

ऊँ **हताश्च ब्रह्मद्विषः। हताश्च परिपन्थिनः। ऊँ हताश्च विघ्नकर्त्तारः। ऊँ शत्रवः पराभवं यान्तु। ऊँ शाम्यन्तु घोराणि। ऊँ शाम्यन्तु पापानि। ऊँ शाम्यन्तु ईतयः। ऊँ शाम्यन्तूपद्रवाः।**

पुनः निम्न मन्त्र द्वारा प्रथम पात्र जल डाला जाए-

पात्रे - ऊँ शुभानि वर्धन्ताम्। ऊँ शिवा आपः सन्तु। ऊँ शिवा ऋतवः सन्तु। ऊँ शिवा ओषधयः सन्तु। ऊँ शिवा वनस्पतयः सन्तु। ऊँ शिवा अग्नयः सन्तु। ऊँ शिवा आहुतयः सन्तु। ऊँ शिवा अतिथयः सन्तु। ऊँ अहोरात्रे शिवे स्याताम्। ऊँ निकामे निकामे नः पर्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

ऊँ शुक्राऽगारक-बुध-बृहस्पति-शनैश्चर-राहु-केतु-सोम-सहितादित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ऊँ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ऊँ भगवान पर्जन्यः प्रीयताम। ऊँ भगवान स्वामी महासेनः प्रीयताम्। पुरोऽनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु। याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। प्रायः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

इसके बाद कलश बगल रख दें तथा प्रथम पात्र का जल घर तथा परिवार के लोगों के ऊपर छिड़कवा दें तथा द्वितीय पात्र का जल नैपित्य था घर के किसी सदस्य द्वारा घर के बाहर एकान्त में डलवा दें पुण्यः वाचन करते समय सावधानी के साथ ही पात्रों में जल डालें प्रथम पात्र का जल इधर उधर गिरजाए तो कोई बात नहीं मगर द्वितीय पात्र का जल बड़ी सावधानी पूर्वक द्वितीय पात्र में ही डालना चाहिए तो इधर उधर नहीं गिरना चाहिए और ना हि उसके छीटें कहीं पड़ने चाहिए जल के मार्जन के उपरान्त बताए गए नियमानुसार निम्न वैदिक मन्त्रों द्वारा ब्राह्मण अपना आशीर्वाद

प्रदान करें-

यजमान - ॐ एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

ब्राह्मण - वाच्यताम्।

इसके बाद यजमान फिरसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करे-

यजमान - ॐ ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्।
(पहली बार) वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः।।
भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे
करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ पुण्याहम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः! मम ..... करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः
(दूसरी बार) पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ पुण्याहम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम ....करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः
(तीसरी बार) पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ पुण्याहम्।
ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।

यजमान - पृथिव्यामुद्धतायां तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्।
(पहली बार) ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः।।
भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारर गृहे
करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ कल्यापाम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे
(दूसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ऊँ कल्याणम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः। मम सकुटुम्बस्य सपिरवारस्य गृहे

(तीसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ऊँ कल्याणम्।

ऊँ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्या शूद्राय चार्याय च स्वाह चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुप मादो नमतु।

यजमान - ऊँ सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता।

(पहली बार) सम्पूर्णा सुप्रभावा च तामृद्धिं प्रब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ऊँ ऋद्ध्यताम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

(दूसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ऊँ ऋद्ध्यताम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

(तीसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ऊँ ऋद्ध्यताम्।

ऊँ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम। दिवं पृथिव्या अध्याऽरुहामाविदाम दिवान्त्स्वर्ज्योतिः।।

यजमान - ऊँ स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा।

(पहली बार) विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः।। भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बभ्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणाय अमुककर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ऊँ आयुष्मते स्वस्ति।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणाय अमुककर्मणे (दूसरी बार) स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ आयुष्मते स्वस्ति।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणाय अमुककर्मणे (तीसरी बार) स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ आयुष्मते स्वस्ति।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।

स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

यजमान - ॐ समुद्रमनाज्जाता जगदानन्दकारिका।

(पहली बार) हरिप्रिया च मांगल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणाय अमुककर्मणः श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ अस्तु श्रीः।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः (दूसरी बार) श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ अस्तु श्रीः।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः (तीसरी बार) श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ अस्तु श्रीः।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।
इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण।

यजमान - ॐ मृकण्डुसूनोरायुर्यद् ध्रुवलामशयोस्तथा।

आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम्।।

ब्राह्मण - ॐ शतं जीवन्तु भवन्तः।

ॐ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।

मुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।।

यजमान - ॐ शिवगौरीविवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे।

धनदस्य गृहे या श्रीरस्मां सास्तु सद्मनि।।

ब्राह्मण - ॐ अस्तु श्रीः।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय। पशूना रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा।।

यजमान - प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्।

भगवांछाश्वतो नित्यं नो वै रक्षतु सर्वतः।।

ब्राह्मण - ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्।

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव।

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय स्याम पतयो रयीणाम्।।

प्रण्यः वाचन के उपरान्त प्रथम पात्र का जल लेकर ब्राह्मण यजमान की पत्नी को यजमान बाग में बिठाकर निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा तथा सम्भव हो तो पूरे परिवार को पूजा स्थल पर बैठकार प्रथम पात्र के जल से निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ माजन करे-

यजमान - आयुष्पते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे।

श्रिये दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः।।

देवेन्द्रस्य यथा स्वस्ति यथा स्वस्ति गुरोर्गृहे।

एकलिंगे यथा स्वस्ति तथा स्वस्ति सदा मम।।

ब्राह्मण - ॐ आयुष्मते स्वस्ति।

ॐ प्रति पन्थामपद्महि स्वस्तिगामनेहसम्।

येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु।।

ॐ पुण्याहवाचनसमृद्धिरस्तु।।

यजमान - अस्मिन् पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिरुपविष्ट

ब्राह्मणानां वचनात् श्रीमहागणपतिप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु।
दक्षिणाका संकल्प - कृतस्य पुण्याहवाचनकर्मण: समृद्ध्यर्थं पुण्याह
ॐ पय: पृथिव्यांपय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो था:।
सरस्वती: प्रदिश: सन्तु मह्यम्।।
ॐ पंच नद्य: सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतस:। सरस्वती तु पंचधा सो
देशेऽभवत्सरित्।।
ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि
वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमा सीद।।

ॐ पुनन्तु मा देवजना: पुनन्तु मनसा धिय:।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेद: पुनीहि मा।।

ॐ देवस्य त्वा सवितु: प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभि विश्वाम्यसौ।
(शु० य० 9/30)

ॐ देवस्य त्वा सवितु: प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्ने: साम्राज्येनाभिषिंचामि।।

(शु० य० 18/3)

ॐ देवस्य त्वा सवितु: प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभि षिंचामि सरस्वत्यै।
भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभि षिंचामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभि
षिंचामि।।(शु० य० 20/3)

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रंतन्न आ सुव।।

ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पति:।
सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु न: शुभे।। (शु० य० 20/7)
ॐ त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄँ पाहि शृणुधी गिर:।

रक्षा तोकमुत त्मना।(शु० य० 18/77)

ऊँ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्र प्र दातारं तारिष उर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

ऊँ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्व शान्ति शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।
शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।

सुशान्तिर्भवतु।

सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिंचन्तु सर्वकामार्थसिद्धये।।
शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु। अमृताभिषेकोऽस्तु।।

दक्षिणादान - ऊँ अद्य......कृतैतत्पुण्याहवाचनकर्मणः सांगता-सिद्धर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणोभ्यो यथाशक्ति मनसोद्दिष्टां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

आचार्य वरण पूणर्यावाचन नान्दीमुख श्राद्ध तथा वेदीस्थापन पूजन खण्ड एक के इकाई दो के निर्देशानुसार यहां भी उसी प्रकार आवाहन एवं पूजन करें।

इकाई 8 : वेदिकास्थापन-पूजन- 4, असंख्यातरुद्र, इन्द्रादिदशदिक्पाल, अष्टद्वारपाल, पंचलोकपाल, इन्द्रध्वज-हनुमत्ध्वज-स्थापन

प्रस्ता्वना

उक्त् इकाई में असंख्यातरुद्र, इन्द्रादिदशदिक्पाल, अष्टद्वारपाल, पंचलोकपाल, इन्द्रध्वज-हनुमत्ध्वज-स्थापन पर प्रकाश डाला गया है।

उददेश्या-

इस इकाई के अध्य यन से असंख्यातरुद्र, इ न्द्रादिदशदिक्पाल, अष्टद्वारपाल, पंचलोकपाल, इन्द्रध्वज-हनुमत्ध्वज-स्थापन आदि का ज्ञान प्राप्तप होगा।

प्रश्नप -

१. असंख्यातरुद्र, इन्द्रादिदशदिक्पाल, अष्टद्वारपाल, पंचलोकपाल, इन्द्रध्वज-हनुमत्ध्वज-स्थापन कैसे करते है।

२. दशदिगपाल के नाम अलग'अलग लिखिए।

असंख्यात रुद्र -

असंख्यात रुद्र तथा इन्द्राधि दसधिक पाल नवगृह वेदी के दाहिनी ओर दक्षिण दिशा की तरफ असंख्यात रुद्र की रचना करके कलश स्थापन करना चाहिए, मन्त्र-

ऊँ आजिग्घ्र कलशं मह्या त्वा व्विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जा निवर्त्तस्व सानः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्माव्विशताद्द्रयिः।।

ऊँ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम्।

तेषा ऽ सहस्र योजने वधन्वानितन्मसि।।

रुद्राः रुद्रगणाश्चैव असंख्याताः प्रकीर्तिताः।

तेषामावाहये भक्त्या स्वीकुर्वन्त्वर्चनं मम।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः असंख्यात रुद्रेभ्यो नमः , असंख्यात रुद्रान् आवाहयामि

स्थापयामि।

प्रतिष्ठा-

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं य्यज्ञ गुं समिमं दधातु। व्विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामों3 प्रतिष्ठ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यात रुद्रेभ्यो नमः , असंख्यातरुद्रानः सुप्रतिष्ठताः वरदाः भवन्तु।

पूर्व लिखित पूजन विधा द्वारा षोड्शो पचार पूजन करना चाहिए-

ॐ तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।

पशूँस्ताँश्चक्के व्वायव्व्या नाण्ण्या ग्ग्राम्म्याश्च्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्ः- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नाने के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें , निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

गंधोदक स्नान-

इस स्नान के उपरान्त पुनः भगवान को शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्धादक स्नानम् - (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्व्व शुद्धवालो मणि वालस्त ऽआश्विनाः
श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपते कर्ण्णा यामा
ऽअवलिप्पा रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्त्याः।।
गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु।।

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हुए चढ़ाएं तथा भगवान को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत ऽआगात्स ऽउश्रेयान्भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।
शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालंगरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें वस्त्र के उपरान्त भगवान को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्त्स्वः।
व्वासो ऽअग्गने व्विश्वरूप गुं संव्व्ययस्व विभावसो।।
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न वाक्य बोलते हुए भगवान को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचनं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात् यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिर्वबृत्याद गुं होश्चिद्या वरिवोवित्तरा

सदादित्यीयस्त्वा।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमानी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामित्रद्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।

त्वामोषधे सोपो राजा व्विद्द्वात्र्यक्ष्मादमुच्च्यत।।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया ऽअधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रा नविष्ठ्या मतीयोजात्र्विन्द्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुड्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान को अर्पित करें मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ॐ ओषधीः प्प्रतिमोध्वं पुष्पतीः प्प्रसूवरीः।

अश्वा ऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्बा चढ़ाएं मन्त्र-

दूर्बा - (गणेश जी को कोमल दूर्बा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्रोण शतेन च।।

दूर्वाड.कुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयाणि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्बा गणेश जी को ही चढ़ती है , देवी जी पर दूर्बा न चढ़ाएं दूर्बा चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्प्राद्ध्वने शूघनासो व्वानप्प्रमियः पतयंत्रि यह्वाः।

घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठ्ठा भित्रदत्रूर्म्मिभिः पित्रवमानः।।

सिन्दूर शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान पर चढ़ाएं मन्त्र-

अबीरादि परिमलद्रव्यम् - (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावें)

ऊँ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्ज्याया हेतिं प्परिबाधमानः।

हस्तग्घ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्पुमान् पुमा गुं सं प्परिपातु व्विश्वतः।।

नाना-परिमलैर्द्रर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ऊँ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं मन्त्र-

धूपम् - (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ऊँ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्समान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं

धूर्व्वामः।

देवानामसि व्वह्नितम गुं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ॐ अग्निज्र्ज्योतिज्जर्योनिरग्निः स्वाहा सूर्य्यर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहह सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वाह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , दीपं दर्शयामि।

(हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर कहकर हाथ धुल लें , तत पश्चात् नैवेद्य भगवान को अर्पण करें, नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ॐ नाभ्या ऽआसीदन्तरिक्ष गुं शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्त्रात्तथा लोकाँ2ऽअकल्प्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा।ॐ उदानाय स्वाहा।

ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , नैवेद्यं निवेदयामि। लाचमनीयं समर्पयामि

मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ऋतु फल भगवान को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्ष्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व गुं ह सः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान पर चंदन दिड़के अगुलियों के माध्यम से करोधवर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ अ गुं शुना ते अ गुं शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गइधस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

ऊँ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतंवत्।

व्वसन्तोऽयासीदाज्ज्यंग्रीषम ऽइध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।

एलादिचुर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , मुखवासार्थे पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बोल के पश्चात् भगवान को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ऊँ हिरण्ण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाता, चक्षो सूर्यो अयात्।

श्रीय द्ववाइदूच पुष्प मुखा दधर्निजात।।

आरती के पश्चात् जल घुमाकर गिरा दें, हाथ पुष्प लेकर पुष्पाँजलि करें मन्त्र-

पुष्पाँजलि -

ऊँ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर!।।

पूजन के उपरान्त निम्न मन्त्रों से प्रार्थना करनी चाहिए-

प्रार्थना

ऊँ रुद्राः रुद्रगणाश्च रुद्र-सुहृदाः शान्तं शिवं शंकरम्।

कैलाशाचल-वासिनः शिव-समाः सर्वे च शूलं धराः।।

वृषभस्था च भुजंगहार-भसिता-भस्मांगरागान्विताः।

ते सर्वे शिवरूपि-भद्ररुद्राः कुर्वन्तु नः मंगलम्।।

हाथ में जल लेकर के असंख्यात रुद्र को समर्पित करें-

इस प्रकार प्रार्थना करके पूजन समर्पित करें- अनेन पुजनेन असंख्यात् रुद्राः प्रीयन्तां न मम।।

उक्त इकाई में असंख्यातरूद्र के पूजन विधान पर प्रकाश डाला गया है। मण्डप पूजन वेद पूजन दिग्पाल पूजन एवं द्वारपाल पूजन खण्ड एक के इकाई तीन में सविस्तार वर्णन किया गया है। उक्त विषय को वहां से देखें।

इकाई 9 : सर्वतोभद्र पूजन

प्रस्ताविना

प्रस्तुित इकाई मेंसर्वतोभद्र पूजन पर प्रकाश डाला गया है।

उददेश्यि-

इस इकाई के अध्य यन सेसर्वतोभद्र पूजन का सम्पू र्णज्ञान प्राप्त होगा।

प्रश्नय -

१. सर्वतोभद्र वेदी में कोष्ट्कों की संख्या लिखिए।

२. सर्वतोभद्र पूजन पर सविस्तार वर्णन कीजिए।

यज्ञशाला के मध्य में या अग्नि या इसान कोण के मध्य में एवं पूर्व दिशा में एक विशेष वेदी का निर्माण करना चाहिए जिसकी लम्बाई , चौड़ाई सब वेदियों से बड़ी हो यहां पर प्रधान वेदी के रूप में सर्वतो भद्र मण्डल देवता की चर्चा कर रहे हैं , एक चौकोर वेदी की रचना कर सफेद वस्त्र पर ऊपर नीचे से चित्रानुसार 18 कोष्ठक बनाएं-

निर्माण विधि

काठ की सवा हाथ लम्बी , चौड़ी एवं ऊँची चौकी अथवा वेदी में श्वेत , पीत अथवा वस्त्रावेष्टित करके पीत या रक्त रंग से अथवा कुंकुम से पूर्वापर (खड़ी एवं तिरछी) उन्नीस रेखा खींचने से अठारह-अठारह कोष्ठक का सर्वतोभद्र मण्डल (वेदी) बनता है। वेदी के चारों कोनों में तीन पद का श्वेत खण्डेन्दु , पांच कोष्ठक कृष्ण श्रृंखला ग्यारह पद की हरित या नीला वल्ली नव कोष्ठक का रक्त भद्र चौबीस पर का श्वेत वापी, बीस पद की पीत परिधि (वेदी के अन्दर की परिधि) तथा मध्य वेदी में पांच श्वेत पद में अष्टदल बनाना चाहिए। वेदी के बाहर सत्व-श्वेत से , रज-रक्तवर्ण से तथा तम-कृष्ण से तीन परिधि बनावें। उक्त पदों (कोष्ठकों) को रक्त, पीत, हरित एवं कृष्ण वर्ण से तण्डुल (अक्षत) रंगकर पूरित करना चाहिए। वेदी बनाकर यज्ञमण्डप में (पूजा स्थल में) पूर्व दिशा के मध्य में स्थापित करके पूजन करना चाहिए। यज्ञमण्डप के छोटे या

बड़े होने पर उसी अनुपात में वेदी की लम्बाई चौड़ाई भी कम ज्यादा आधी डेढ़ गुणा या दो गुना करना चाहिए।

सर्वतोभद्र मण्ड लम्

पूर्व

नोट-अक्षत ही पूजन में ग्राह्य एवं सर्वश्रेष्ठ है अतः वेदी रंगीन अक्षतों से ही पूरित करना चाहिए कुछ लोग नानावर्ण की दाल प्रयुक्त करते हैं वह शास्त्रसम्मत नहीं है। वैसे भी अनुष्ठानादि कार्य में द्विदल (दाल) वर्जित है।

रंगीन चावलों से सुसज्जित करने के उपरान्त निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा देवताओं का आवाहन करें मन्त्र-

सर्वतोभद्र-मण्डल (वेदी) निर्माण-विधिः

सवा हाथ की चौकोर काठ की चौकी पर श्वेत वस्त्र बांधकर बराबर-बराबर 18-18 खाने बनावे तथा पुस्तक के अन्त में दिये गये सर्वतोभद्र वेदी चित्र के अनुसार उन खानों में रंगीन अक्षत से पूरित करके यज्ञ मण्डप अथवा पूजन स्थल के पूर्व भाग में, मध्य में रखकर आवाहन व पूजन करें।

अथ सर्वतोभद्र-मण्डल-देवानामावाहनं पूजनश्च

(किसी भी देवी देवताओं के पूजन , अनुष्ठान यज्ञादि में प्रधान वेदी के रूप में सर्वतोभद्रमण्डल का निर्माण तथा पूजन किया जा सकता है। प्रायः लोग विष्णु इत्यादि देवताओं के पूजन में इसका प्रयोग करते हैं।

- **अक्षत छोड़ते हुए देवताओं का आवाहन करें।**

- आवाहयामि.. के बाद स्थापयामि, पूजयामि का भी उच्चारण करें।

1. ब्रह्मा (मध्य कर्णिकायाम्) - ऊँ भूभुर्व स्वः ब्रह्मणे नमः , ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।
2. सोमः (उत्तरवाप्याम्) - ऊँ भूभुर्व स्वः सोमाय नमः , सोममावाहयामि स्थापयामि।
3. ईशानः (ऐशान्यां खण्डेन्दौ) - ऊँ भूभुर्व स्वः ईशानाय नमः , ईशानमावाहयामि स्थापयामि।
4. इन्द्रः (पूर्वे वाप्याम्) - ऊँ भूभुर्व स्वः इन्द्राय नमः , इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।
5. अग्निः (आग्नेय्यां खण्डेन्दौ) - ऊँ भूभुर्व स्वः अग्नये नमः , अग्निमावाहयामि स्थापयामि।
6. यमः (दक्षिणे वाप्याम्) - ऊँ भूभुर्व स्वः यमाम नमः , यममावाहयामि स्थापयामि।
7. निर्ऋतिः (नैर्ऋत्यां खण्डेन्दौ) - ऊँ भूभुर्व स्वः निर्ऋतये नमः , निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।
8. वरुणः (पश्चिमे वाप्याम्) - ऊँ भूभुर्व स्वः वरुणाय नमः , वरुणमावाहयामि स्थापयामि।
9. वायुः (वायव्यां खण्डेन्दौ) - ऊँ भूभुर्व स्वः वायवे नमः , वायुमावाहयामि स्थापयामि।
10. अष्टवसवः (यम-निर्ऋतिमध्ये भद्रे) - ऊँ भूभुर्व स्वः अष्टवसुभ्यो नमः , अष्टवसून् आवावाहयामि स्थापयामि।
11. एकादशरुद्राः (यम-निर्ऋतिमध्ये) - ऊँ भूभुर्व स्वः एकादश-रुद्रभ्यो नमः, एकादश-रुद्रानावाहयामि स्थापयामि।
12. द्वादशादित्याः (ईशानेन्द्रमध्ये भद्रे) - ऊँ भूभुर्व स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः, द्वादशादित्यानावाहयामि स्थापयामि।
13. अश्विनौः (इन्द्राग्निमध्ये भद्रे) - ऊँ भूभुर्व स्वः अश्विभ्यां नमः , अश्विनौ

आवाहयामि स्थापयामि।

14. विश्वेदेवाः (अग्नि-यममध्ये भद्रे) - ॐ भूभुर्व स्वः सर्पतृक-विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, सपैतृक-विश्वान् देवानावाहयामि स्थापयामि।

15. सप्तयक्षाः (यम-निर्ऋतिमध्ये भद्रे) - ॐ भूभुर्व स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः , सप्तयक्षानामावाहयामि स्थापयामि।

16. नागाः (निर्ऋति-वरुणमध्ये भद्रे) - ॐ भूभुर्व स्वः अष्टकुल-नागेभ्यो नमः, अष्टकुल-नागानावाहयामि स्थापयामि।

17. गन्धर्वाप्सरसः (वरुण-वायुमध्ये भद्रे) - ॐ भूभुर्व स्वः गन्धर्वाऽप्सराभ्यो नमः, गन्धर्वऽसरस आवाहयामि स्थापयामि।

18. स्कन्दः (ब्रह्म-सोममध्ये वाप्यां लिंगो वा) - ॐ भूभुर्व स्वः स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि।

19. वृषभः (तदुत्तरे) - ॐ भूभुर्व स्वः वृषभाय नमः , वृषभमावाहयामि स्थापयामि।

20. शूलमहाकालौ (तदुत्तरे) - ॐ भूभुर्व स्वः शूलमहाकालाभ्यां नमः , शूलमहाकालौ आवाहयामि स्थापयामि।

21. दक्षादिसप्तगणाः (ब्रह्मेशानमध्ये श्रृंखलायाम्) - ॐ भूभुर्व स्वः दक्षादि-सप्तगणेभ्यो नमः, दक्षादि-सप्तगणान् आवाहयामि स्थापयामि।

22. दुर्गा (ब्रह्मेन्द्रमध्ये वाप्याम्) - ॐ भूभुर्व स्वः दुर्गायै नमः , दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।

23. विष्णुः (तत्पूर्वे) - ॐ भूभुर्व स्वः विष्णवे नमः , विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

24. स्वधा (ब्रह्माग्निमध्ये श्रृंखलायाम्) - ॐ भूभुर्व स्वः स्वधायै नमः , स्वधामावाहयामि स्थापयामि।

25. मृत्युरोगाः (ब्रह्म-यममध्ये वाप्याम्) - ॐ भूभुर्व स्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः , मृत्युरोगान् आवाहयामि स्थापयामि।

26. गणपतिः (ब्रह्मनिर्ऋतिमध्ये श्रृंखलायाम्) - ॐ भूभुर्व स्वः गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

27. अपः (ब्रह्म-वरुणमध्ये वाप्याम्) - ॐ भूभुर्व स्वः अद्भ्यो नमः , अप आवाहयामि स्थापयामि।

28. मरुतः (ब्रह्म-वायुमध्ये श्रृंखलायाम्) - ॐ भूभुर्व स्वः मरुद्भ्यो नमः , मरुत आवाहयामि स्थापयामि।

29. पृथ्वी (ब्रह्मणः पादमूले) - ॐ भूभुर्व स्वः पृथिव्यै नमः , पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि।

30. गंगादि नद्यः (तदुत्तरे) - ॐ भूभुर्व स्वः गंगादिनदीभ्यो नमः , गंगादिनदी आवाहयामि स्थापयामि।

31. सप्तसागराः ः (तदुत्तरे) - ॐ भूभुर्व स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः , सप्तसागरान् आवाहयामि स्थापयामि।

32. मेरुः (कर्णिकापरिधौ) - ॐ भूभुर्व स्वः मेरवे नमः , मेरुमावाहयामि स्थापयामि।

33. गदा (सत्वबाह्यपरिधौ) - ॐ भूभुर्व स्वः गदायै नमः , गदामावाहयामि स्थापयामि।

34. त्रिशूलः (ऐशान्याम्) - ॐ भूभुर्व स्वः त्रिशूलाय नमः , त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि।

35. वज्रः (पूर्वे) - ॐ भूभुर्व स्वः वज्राय नमः, वज्रमावाहयामि स्थापयामि।

36. शक्तिः (योग्नेय्याम्) - ॐ भूभुर्व स्वः शक्तये नमः , शक्तिमावाहयामि स्थापयामि।

37. दण्डः (दक्षिणे) - ॐ भूभुर्व स्वः दण्डाय नमः , दण्डमावाहयामि स्थापयामि।

38. खड्गः (नैर्ऋत्याम्) - ॐ भूभुर्व स्वः खड्गाय नमः , खड्गमावाहयामि स्थापयामि।

39. पाशः (पश्चिमे) - ॐ भूभुर्व स्वः पाशाय नमः , पाशमावाहयामि स्थापयामि।

40. अंकुशः (वायव्याम्) - ॐ भूभुर्व स्वः अंकुशाय नमः , अंकुशमावाहयामि स्थापयामि।

41. गौतमः (तद्बाह्यो उत्तरे रक्तपरिधौ सोमादिक्रमेण) - ॐ भूभुर्व स्वः गौतमाय नमः, गौतममावाहयामि स्थापयामि।

42. भरद्वाजः (ईशान्याम्) - ॐ भूभुर्व स्वः भरद्वाजाय नमः , भरद्वाजमावाहयामि स्थापयामि।

43. विश्वामित्रः (पूर्वे) - ॐ भूभुर्व स्वः विश्वामित्राय नमः , विश्वामित्रमावाहयामि स्थापयामि।

44. कश्यपः (आग्रेय्याम्) - ॐ भूभुर्व स्वः कश्यपाय नमः , कश्यपमावाहयामि स्थापयामि।

45. जमदग्निः (दक्षिणे) - ॐ भूभुर्व स्वः जमदग्नये नमः , जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि।

46. वशिष्ठः (नैर्ऋत्याम्) - ॐ भूभुर्व स्वः वसिष्ठाय नमः , वसिष्ठमावाहयामि स्थापयामि।

47. अत्रिः (पश्चिमे) - ॐ भूभुर्व स्वः अत्रये नमः , अत्रिमावाहयामि स्थापयामि।

48. अरुन्धती (वायव्याम्) - ॐ भूभुर्व स्वः अरुन्धत्यै नमः , अरुन्धतीमावाहयामि स्थापयामि।

49. ऐन्द्रीः (पूर्वे) - ॐ भूभुर्व स्वः ऐन्द्रयै नमः, ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि।

50. कौमारी (आग्नेय्याम्) - ॐ भूभुर्व स्वः कौमार्य्यै नमः , कौमारीमावाहयामि स्थापयामि।

51. ब्राह्मीः (दक्षिणे) - ॐ भूभुर्व स्वः ब्राह्मयै नमः , ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि।

52. वाराही (नैर्ऋत्याम्) - ॐ भूभुर्व स्वः वाराह्यै नमः , वाराहीमावाहयामि स्थापयामि।

53. चामुण्डाः (पश्चिमे) - ॐ भूभुर्व स्वः चामुण्डायै नमः , चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि।

54. वैष्णवी (वायव्ये) - ॐ भूभुर्व स्वः वैष्णव्यै नमः , वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि।

55. माहेश्वरीः (उत्तरे) - ॐ भूर्भुर्व स्वः माहेश्वर्यै नमः , माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि।

56. वैनायकी (ईशान्याम्) - ॐ भूर्भुर्व स्वः वैनायक्यै नमः , वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि।

विष्णु महायज्ञ में सर्वतोभद्र के पूजन के उपरांत पाठ वाचन एवं जप का विधान है यजमान के संकल्पानुसार पाठ एवं जप करें।

इकाई 10 : हवन बलिविधान पूर्णाहूति उत्तरर पूजन एवं विसर्जन

प्रस्ताोवना

प्रस्तुोत इकाई में हवन बलिविधान पूर्णाहूति उत्तपर पूजन एवं विसर्जन पर प्रकाश डाला गया है।

उददेश्ये-

इस इकाई के अध्य यन सेहवन बलिविधान पूर्णाहूति उत्तपरपूजन एवं विसर्जन के बारे में ज्ञान प्राप्तब होगा।

प्रश्ने -

१. बलिविधान पर प्रकाश डालिए।

२. उत्तिर पूजन का सविस्तार वर्णन कीजिए।

कुण्डस्थदेवतापूजनपूर्वकाग्निस्थापनम्

सपत्नीको यजमानः कुण्डस्य समीपे कुण्डपश्चिमदिग्भागे उपविश्य आचमनं प्राणायामञ्च कृत्वा संकल्पं कुर्यात् ॥ अद्येत्यादि० शुभपुण्यतिथौ मया सग्रहमखामुकयागकर्मणः साङ्गत्तासिद्धयर्थम् अस्मिन्कुण्डे कुण्डस्थदेवतानाम् आवाहनप्रतिष्ठापूजनानि तथा च कुण्डे पञ्चभूसंस्कारपूर्वकम् अग्निस्थापनं करिष्ये ॥ प्रारब्धस्य

ततः आचार्यानुज्ञया कश्चिद्विप्र उत्थाय हस्ते कुशान् गृहीत्वा तैः अग्न्यायतं (कुण्डं) सम्मार्ज्य । ॐ आपोहिष्ट्मयो० । ॐ योव शिवतमो० । ॐ तस्म्माऽअरङ्गम् ॥ कुशोदकेन प्रोक्षयेत् ॥ तत आवाहयेत् आवाहयामि तत्कुण्डं विश्वकर्मविनिर्मितम् । शरीरं यच्च ते दिव्यमग्न्यधिष्ठानमद्भुतम् । ॐ भूर्भुवः स्वः कुण्डाय नमः कुण्डम् आवाह० स्थाप० ॥ प्रार्थयत् - ये च कुण्डे स्थिता देवाः कुण्डाङ्गे याश्च देवताः । ऋद्धिं यच्छन्तु ते सर्वे यज्ञसिद्धिं ददन्तु इत्यावाह्य कुण्डमध्ये देवान् आवायहेत् व्विश्श्वकर्म्मन्हविषाव्वर्द्धनेन-त्त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्वम् । समनमन्तपूर्बीरयमुग्ग्रोव्विहव्व्योयथासत् नः ॥ ॐ तरम्मैव्विशः उपयामगृहीतोसीन्द्रायत्त्वाव्विश्व- कर्म्मणऽएषते योनिरिन्द्रायत्त्वाव्विश्श्वकर्माणे ॥

कुण्डमध्ये-ॐ भूर्भुः स्वः विश्वकर्मणे नमः विश्वकर्माणम् आवा० स्थाप० । भो विश्वकर्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ।। प्रार्थयेत् - ब्रह्म वक्त्रं भुजौक्षत्रं ऊरूवैश्यः प्रकीर्तितः । पादौ यस्य तु शूद्रो हि विश्वकर्मात्मने नमः। अज्ञानात्ज्ञानतो वापि दोषाः स्युः खननोद्भवाः ।। नाशय त्वखिलाँस्ताँस्तु विश्वकर्मन्नमोऽस्तु ते।।

तत्रादौ मेखलादेवतानाम् आवाहनम् - ॐ उपरिमेखलायाम् - ॐ इंदव्विपाष्णुर्व्विचक्रमेत्त्रेधानिदधेपदम् । समूढमस्यपा सुरेस्वाहा ।। विष्णो यज्ञपते देव दुष्टदैत्यनिषूदन ।। विभो यज्ञस्य रक्षार्थ कुण्डे सन्निहितो भव । ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुम् आवा० स्थाप० ।। भो विष्णोइहागच्छ इह तिष्ठ ।।१।।

मध्यमेखलायां रक्तवर्णालङ्कृतायाम् ॐ ब्रह्म

यज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतःसुरुचोव्वेनऽआवः ।।

सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यव्विष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चव्विवः ।।

हंसपृष्ठ समारूढ़आदिदेव जगत्पते ।

रक्षार्थ मम यज्ञस्य मेखलायां स्थिरो भव ।।

ॐ भूर्भुवः स्वःब्रह्मणे नमः ब्रह्माणम् आवा० स्थाप० ।।

भो ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ।।२।।

अधो मेखलायां कृष्णवर्णालङ्कृतायाम् ॐ नमस्तेरुद्रमन्यवऽउतोतइषवेनमः ।।

बाहुब्भ्यामुततेनमः ।। गंगाधर महादेव वृषारूढ महेश्वर । आगच्छ मम यज्ञेऽस्मिन्रक्षार्थं रक्षसां गणात् ।। ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः रुद्रम् आवा० स्थाप० ।। भो रुद्र इहागच्छ इह तिष्ठ ।।३।।

अथ योन्यावाहनम्- ॐ क्षत्रस्ययोनिरसिक्षत्रस्यनाभिरसि ।।

मात्त्वाहिथं सीन्माहिथं सीः ।। आगच्छ देवि कल्याणि जगदुत्पत्तिहेतुके ।। मनोभवयुते रम्ये योनि त्वं सुस्थिरा भव ।।१।। जगदुत्पत्तिकायै मनोभवयुतायै योन्यै नमः योनिमावा० स्थापा० ।। भो जगदुत्पत्तिके मनोभवयुते योनि इहागच्छ इह तिष्ठ ।। प्रार्थयेत् सेवन्ते महतीं योनिं देवर्षिसिद्धमानवाः ।।

चतुरशीतिलक्षाणि पन्नगाद्याः सरीसृपाः ।। पशवः पक्षिणः सर्वे संसरन्ति यतो भुवि ।। योनिरित्येव विख्याता जगदुत्पत्तिहेतुका ।।

मनोभवयुता देवीरतिसौख्यप्रदायिनी। मोहयित्री सुराणाञ्च जगद्धात्रि नमोऽस्तु ते ।

योने त्वंविश्वरूपाऽसि प्रकृतिर्विश्वधारिणी ।। कामस्था कामरूपा च विश्वयोन्यै नमोनमः ।।

अथ कण्ठ देवता आवाहनम् ॐ नीलग्रीवाःशितिकण्ठादिवरुद्राऽउपश्रिताः ।।तेषा सहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ।। कुण्डस्य कण्ठदेशोऽयं नीलजीमूतसन्निभः ।। अस्मिन्नावाहये रुद्रं शितिकण्ठ कपालिनम् ।। ॐ भूर्भुवः स्वः कण्ठे रुद्राय नमः रुद्रम् आवा० स्थाप० । भो रुद्र इहागच्छ इह तिष्ठ ।। प्रार्थयेत् - कण्ठ मङ्गलरूपेण सर्वकुण्डे प्रतिष्ठितः । परितो मेखलास्त्वत्तो रचिता विश्वकर्मणा ।।

अथ नाभ्यावाहनम् ॐ नाभिम्मैचित्तं व्विज्ञानम्पायुर्मे पचितिर्भसत् । आनन्दनन्दावाण्डौमे भगः सौभाग्यम्पसः जङ्याभ्याम्पद्भ्यां धर्मोस्मिम-व्विशिराजाप्रतिष्ठितः ।। पद्माकाराऽथवा कुण्डसदृशाकृतिबिभ्रती। आधारः सर्वकुण्डानां नाभिमावाहयाम्यहम् ।। ॐ भूर्भुवः स्वः नाभ्यैनमः नाभिम् आवा० स्थाप० ।। भो नाभे इहागच्छ इह तिष्ठ ।। प्रार्थयेत् नाभे त्वं कुण्डमध्ये तु सर्वदेवैः प्रतिष्ठिता । अतस्त्वां पूजयामीह शुभदा सिद्धिदा भव।।

अथ कुण्डमध्ये नैर्ऋत्यकोणे वास्तुपुरुषावाहनम् - ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः ।। यत्त्वेमहेप्रतितन्नो जुषस्व शन्नोभवद्विपदे शं चतुष्पदे ।। पा० गृ० ।। आवाहयामि देवेशं वास्तुदेव महाबलम् । देवदेवं गणाध्यक्ष पातालतलवासिनम् ।। ॐ भूर्भुवः स्वः नैऋत्यकोणे वास्तुपुरुषाय नमः वास्तुपुरुषम् आ० स्था० । भो वास्तुपुरुष इहागच्छ इह तिष्ठ ।। ततः प्रार्थयेत् यस्य देहे स्थिता क्षोणी ब्रह्माण्डं विश्वमंगलम्। व्यापिनं भीमरूपञ्च सुरूपं विश्वरूपिणम् ।। पितामहसुतं मुख्यं वन्दे वास्तोष्पतिं प्रभुम् ।। वास्तुपुरुष देवेश सर्वविघ्नहरो भव । शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे ।।

एवं कुण्डस्थितान् सर्वान्देवानावाद्यैकतन्त्रेण प्रतिष्ठां कुर्यात् ।। हस्तेऽक्षतानादाय ।। ॐ मनोजूतिर्जु० ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्ताः सर्वे कुण्डस्थदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवेयुः ।। ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्तेभ्यः कुण्डस्थदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि सम० ।। इति सम्पूज्य। कुण्डाद्बहिः एकस्मिन्पात्रे बलिदानार्थं दध्योदनं संस्थाप्य बलिदानं कुर्यात् ।। हस्ते जलं गृहीत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मादि- वास्तुपुरुषान्तेभ्यः कुण्डस्थदेवताभ्यो नमः । दध्योदनबलिं सम० ।। अनेन विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्ताः सर्वे कुण्डस्थदेवताः प्रीयन्तां न मम।

पञ्चभूसंस्कारः

अस्मिन् स-नवग्रहमख-अमुक यज्ञ कर्मणि पञ्च भू संस्कार पूर्वकं अग्नि स्थापनं करिष्ये ।

कुशैः परिसमुह्य, तान् कुशानैशान्यां परित्यज्य १ , गोमयो- दकेनोपलिप्य २ , सुवेण त्रिरुल्लिख्य ३ , अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य ऐशान्यां परित्यज्य ४ , जलेनाऽभ्युक्ष्य ५।

कुशकण्डिका करणम्

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनम् । अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम् । ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम् । यावत्कर्म समाप्यते तावत् त्वं ब्रह्मा भव इति यजमानः। भवामि इति ब्रह्मा वदेत् ।

ततो ब्रह्मणाऽनुज्ञातः प्रणीताप्रणयनम् । तद्यथा-प्रणीता पात्रं पुरतः कृत्वा , वारिणा परिपूर्य, कुशैराच्छाद्य, प्रथमासने निधाय, ब्रह्मणो मुखमवलोक्य द्वितीयासने निदध्यात् ।

ईशानादि पूर्वाग्रैः कुशैः परिस्तरणम्। तद्यथा-ततो आग्नेयादीशानान्तम् , बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय । ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं प्रागग्रैः , नैऋत्याद्वायव्यान्तम्, अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं प्रागग्रैः इतरथावृत्तिः । उदगग्रैर्वा । उदगग्रैर्वा ।

कूष्माण्ड बलिदानम्

देशकालद्युच्चार्य० मम सुकुटुम्बस्य सर्वाऽरिष्ट प्रशान्ति सर्वाभीष्ट कामसिद्धि

कल्पोक्त फलावाप्तिद्वारा श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती त्रिगुणत्मिका स्वरूपिणी श्री दुर्गादेव्याः प्रीत्यर्थं कूष्माण्ड बलिदानं करिष्ये। तदङ्गत्त्वेन पञ्चोपचारैः बलिपूजनं च करिष्ये ।तत्पश्चात् -

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ।।

इत्यनेन दुर्गादेवीं पञ्चोपचारैः सम्पूज्य , तत्पुरतः स्वयमुदङ्मुखं च पीठे वस्त्रगुण्ठितं कूष्माण्डं निधाय , कूष्माण्डबलये नमः इत्यनेन पञ्चोपचारैः सम्पूज्य , अभिमन्त्रयेत्-

पशुस्त्वं बलिरूपेण मम भाग्यादवस्थितः ।
प्रणमामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणम् ।।१।।
चण्डिकाप्रीतिदानेन दातुरापद् विनाशनम् ।
चामुण्डाबलिरूपाय बले तुभ्यं नमोऽस्तु ते ।।२।।
यज्ञार्थं बलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयम्भुवा ।
अतस्त्वां घातयाम्यद्य यस्माद्यज्ञे मतो वधः ।।३।।

रसना त्वं चण्डिकायाः सुरलोक प्रसाधकः । इति । ह्रां ह्रीं खड्ग , आं हूं फट् । इति पठित्वा हस्ते शस्त्रं गृहीत्वा , वीरासने उपविश्य ॐ कालि कालि वज्रेश्वरि लौहदण्डाय नमः इति पठन् कूष्माण्डं छेदयेत् । छेदनावसरे न विलोकयेत्। ततश्छिन्ने बलौ कुङ्कुमेननुलेपयेत् । कौशिकि रुधिरेणाप्यायताम् इति देव्यै अर्धं निवेद्य , अवशिष्टार्धस्य तेनैव खड्गेन पुनः पञ्चभागान् कृत्वा - पूतनायै बलिभागं निवेदयामि । चरक्यै बलिभागं निवेदयामि। विदार्यै बलिभागं निवेदयामि । पापराक्षस्यै बलिभागं निवेदयामि । क्षेत्रपालाय बलिभागं निवेदयेत्--

क्षेत्रपाल बलिदानम्

एक बांस के पात्र में पत्ता बिछाकर उसमें काला उड़द , दही, भात और जलपात्र रखकर सिन्दूर, कज्जल द्रव्य, चौमुखा दीपक प्रज्वलित कर संकल्प करें -

ॐ अद्येत्यादि० मम सकल अरिष्ट शान्ति पूर्वकं प्रारब्धकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थ क्षेत्रपाल पूजनं बलिदानं च करिष्ये।

अथ क्षेत्रपाल बलिदान मन्त्रः -

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद् व्वैश्वानरात्पुर ऽएतारमग्नेः। एमेनमव्वृधन्नमृता ऽअमर्त्य व्वैश्वानरं क्षैत्रजित्त्याय देवाः।

नमो वै क्षेत्रपालस्त्वं भूतप्रेतगणैः सह।
पूजा बलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा ।।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे।
आयुरारोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा ।।

ॐ क्षौं क्षेत्रपालाय सांगाय भूत प्रेत पिशाच डाकिनी शाकिनी पिशाचिनी मारीगण वेतालादि परिवार सहिताय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय इमं सचतुर्मुख दीप दधि माष भक्तबलिं समर्पयामि।

ऐसा बोलकर प्रार्थना करें -

भो क्षेत्रपाल क्षेत्रं रक्ष बलिं भक्ष मम सपरिवारस्य सकुटुम्बस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयतां न मम।

(नापित अथवा किसी भृत्य आदि के द्वारा बलि को चौराहे पर रखवा दें बलि ले जाने वाले व्यक्ति के पीछे दरवाजे तक जल का छींटा दें और द्यौः शान्ति इत्यादि मन्त्र बोलें।)

पूर्णाहुत्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पादिभिः सम्पूज्य--

अथोत्तर पूजनम्--

कृतस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं आवाहितदेवतानां उत्तरपूजनं करिष्ये।

अथाभिषेकः---

ततो आचार्यः स्थापितयोः रुद्रकलश प्रधानकलशयोः जलं एकस्मिन् पात्रे एकीकृत्य तज्जलेन दूर्वा कुशा पञ्चपल्लवैः प्राङमुखं सपरिवारं यजमानं अभिषिञ्चेयुः ।

तत्राभिषेक मन्त्राः-

ॐ देवस्य त्त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो सरस्वत्यै हस्ताभ्याम् । साम्म्राज्ज्येनाभिषिञ्चामि ॥ व्वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः

ॐ देवस्य त्त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् । सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्म्राज्येनाभिषिञ्चामि ॥

ॐ देवस्यत्त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥ अश्विनौभैषज्ज्येन तेजसे ब्ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्ज्येन व्वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि ॥ ३ ॥

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु महेश्वराः ।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः ॥१॥
प्रद्युम्नश्चाऽनिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निरुद्धश्च यमो वै निर्ऋतिस्तथा ॥२॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः ।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा ॥३॥
कीर्तिर्लक्ष्मीधृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ॥४॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः ।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसिताऽर्कजाः ॥५॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देव - दानव गन्धर्वा यक्ष राक्षस पन्नगाः ॥६॥
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाऽप्सरसां गणाः ॥७॥

अस्त्राणि सर्वशास्त्राणि राजानो वाहनानि च ।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ॥८॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः ।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ॥९॥
अमृताभिषेकोऽस्तु ।

छायापात्र दानम्--

कांस्यपात्रे स्थिताज्यं च आत्मरूपं निरीक्ष्य तु । ससुवर्णं तु यो दद्यात् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

ॐ रूपेण वो रूपमभ्यागां तुथो वो विश्ववेदा विभजतु । ऋतस्य पथा प्रेत चन्द्रदक्षिणा वि स्वः पश्य व्यन्तरिक्षं यतस्व सदस्यैः ॥ इति मन्त्रमुक्त्वा आज्यावेक्षणं कृत्वा संकल्पं कुर्यात् ।

अद्येत्यादि० मम कलत्रादिभिः सह दीर्घायुः आरोग्यसुतेजस्वित्वसुभगत्व सर्वपाप प्रशमनोत्तर जन्मराशेः सकाशात् नामराशेः सकाशाद्वाजन्मलग्नात् वर्षलग्नात् गोचराद्वा ये केचित् चतुर्थ अष्टमद्वादश आदिअनिष्ट स्थान स्थिताः क्रूरग्रहास्तैः सूचितं सूचयिष्यमाणञ्च यत्सर्वारिष्टंतद्विनाशार्थं सर्वदा तृतीयैकादश शुभस्थान स्थितवत् उत्तम फल प्राप्त्यर्थंकांस्यपात्रे उपन्यस्तं घृत बिन्दुकणिका समसंख्यावच्छिन्न नैरुज्यचिरञ्जीवित्वकामैतत् स्वशरीर छाया अवलोकित घृत पूरितं कांस्य पात्रंस्वर्णसहितं सुपूजितं श्रीमहामृत्युञ्जय देवता प्रीत्यर्थं चन्द्रमा प्रजापति-बृहस्पति दैवतं यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ।

देवतानां विसर्जनम्--

ॐ उत्तिष्ठ ब्ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे ।
उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव ऽइन्द्र प्राशूर्भवा सचा ॥१॥
ॐ यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा ।
एषते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्व्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहा ॥२॥
यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादायमामकीम् ।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥१॥

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानंपरमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवा तत्र गच्छ हुताशन ॥२॥
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषुयत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः ॥३॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥४॥
ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥

अथ अवभृथ स्नान विधिः

यजमानः प्रधानवेद्युपरि स्थापितं प्रधानकलशं , हवनकुण्डाद् बहिः पतितं हवनीयद्रव्यं, स्रुक्- स्रुवादियज्ञपात्रं पूजनसामग्रीं च गृहीत्वा वेदमन्त्रोच्चारण-भगवन्नामकीर्तन-वाद्यघोषपुरस्सरं आचार्यादिऋत्विग्भिः नगरवासिभिश्च सह नदीं जलाशयं वा गच्छेत्। अर्धमार्गोपरि क्षेत्रपालं सम्पूज्य क्षेत्रपालाय बलिं दद्यात्। नदीं जलाशयं वा गत्वा आचार्यादयः स्वस्तिवाचनं कृत्वा संकल्पं कुर्यात्।

देशकालौ सङ्कीर्त्य मम सर्वेषां परिवाराणां तथान्येषांसमुपस्थितानां जनानाञ्च सर्वविधकल्याणपूर्वकं धर्मार्थकाममोक्ष-चतुर्विधपुरुषार्थ सिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीतिपूर्वकं च कृतस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्थं च पुण्यकालेऽस्मिन्अस्यां नद्यां जलाशये वा माङ्गलिकं अवभृथस्नानंसमस्तसमुपस्थितजनैःसह अहं करिष्ये।

अनन्तरं नद्यां जलाशये वा जलमातृणां आवाहनं पूजनं च कुर्यात्।

ॐ मत्स्यै नमः मत्सीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ कूर्म्यै नमः कूर्मीमावा०। ॐ वारायै नमः वाराहीमावा०। ॐ दर्दुर्ये नमः दर्दुरीमावा०। ॐ मकर्यै नमः मकरीमावा०। ॐ जलूक्यै नमः जलूकीमावा०। ॐ तन्तुक्यै नमः, तन्तुकीमावा०।

इस इकाई में हवन बलिविधान पूर्णाहूति उत्तर पूजन एवं विसर्जन के विषय में निर्देश दिया गया है इन उक्त विधान को विस्तार से जानने के लिए खण्ड एक की इकाई पांच का अनुसरण करें।

खण्ड3 : सतचण्डी एवं सहस्त्रचण्डी यज्ञ
इकाई 11 : दश विध स्नानानि

प्रस्तारवना

प्रस्तुरत इकाई में सतचण्डी एवं सहस्त्रचण्डी यज्ञ साथ ही दश विध स्नानानि महायज्ञ साथ ही दश विधि स्नाचन पर प्रकाशडाला गया है।

उददेश्य -

प्रस्तु तइकाई के अध्यपयन से दश विधि स्नामन ज्ञान प्राप्तर होगा।

प्रश्नु -

१. दश विधि स्ना न में भस्मय स्ना न मंत्र लिखे ।

२. पृथ्वी पूजन का मंत्र लिखें।

संस्नाना से पूर्व संकल्प - हाथ में कुश अक्षत तथा द्रव्य लेकर लिखित संकल्प को करना चाहिए।

भस्म- स्नानम्

ॐ प्रसद्य भस्मना योनिम् , अपश्च पृथिवीमन्ने। स सृज्य मातृभिष्टुं , ज्योतिष्मान्पुनराऽसदः ॥

मृत्तिका- स्नानम्

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे, त्रेधा निदधे पदम्।समूढमस्य पा सुरे स्वाहा।

गोमय -स्नानम्

ॐ मा नस्तोके तनये मा न ऽआयुषि , मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः । मा नो वीरान् रुद्र भामिनी, वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे।

गोमूत्र –स्नानम्

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।ॐ आप्यायस्व समेतु ते , विश्वतः सोम वृष्ण्यम्।

भवा वाजस्य संगथे। -

दधि -स्नानम्

ॐ दधिक्राव्णो ऽअकारिषं, जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्र णऽ , आयू षि तारिषत्।

घृत -स्नानम्

ॐ घृतं घृतपावानः , पिबत वसां वसापावानः । पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽ आदिशो विदिशऽ, उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।

सर्वोषधि - स्नानम्

ॐ ओषधयः समवदन्त , सोमेन सह राज्ञा । यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त , राजन् पारयामसि।

कुशोदक - स्नानम्

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोः , बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि, बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ।।

मधु-स्नानम्

ॐ मधु वाता ऽऋतायते , मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। ॐ मधु नक्तमुतोषसो, मधुमत्पार्थिव रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता ।ॐ मधुमान्नो वनस्पतिः , मधुमाँ२ऽअस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।

शुद्धोदक- स्नानम्

अन्त में समग्र शुद्धता के लिए शुद्ध जल से सिंचन- स्नान किया जाए-

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो, मणिवालस्तऽ आश्विनाः, श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते, रुद्राय पशुपतये कर्णा यामाऽ, अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ।।

बताये गए प्रत्येक द्रव्यों को जल में डालकर मंत्र द्वारा स्नान करना चाहिए ।

क्षौरकर्म-

यज्ञ से पूर्व साधक को या के निमित्त अपने केश को हटवाना चाहिए. केश समर्पण का सूचक है। ऐसा मानकर सन्यासी/वैराणी को सिर तथा दाढ़ी मूछ बनवाना चाहिए। गृहस्थ को सिर का बाल बनवाना आवश्यक है।

कलश यात्रा -

किसी भी यज्ञ के प्रारम्भ के पूर्व जल यात्रा का विधान हैं समस्त बनधु बान्धव सहित तथा समस्त शिष्य सहित गाजे बाजे के साथ किसी तीर्थ या सरोवर अभव हो तो कूप के पास जा कर सबसे पहले जल जीव तथा स्थल मातृका का अवहन करना चाहिए।

अथ जल यात्रा विधिः

यज्ञ प्रारम्भ दिने यजमानः पूजा सामग्री गृहीत्वा वेदमन्त्रोच्चारण भगवन्नामसंकीर्तन वाद्यघोषपुरस्सरं आचार्यादि ऋत्विग्भिः नगरवासिभिः सुवासिनीभिश्च सह नदीं जलाशयं वा गच्छेत्। नद्यां जलाशये वा गत्वा प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य यजमानः सङ्कल्पंकुर्यात् ।

देशकालौ सङ्कीर्त्य करिष्यमाणस्य अमुकयाग कर्मणः निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं वरुण देवता प्रीत्यर्थ वरुण देवस्य पूजनं अहं करिष्ये ।।

इति सङ्कल्प्य जलसमीपे रक्ताक्षतैः पीताक्षतैर्वा नव कोष्ठाननिर्माय तेषु दिक्षु-विदिक्षु अष्टौ कलशान् संस्थाप्य , मध्ये कलशमेकं संस्थापयेत्। अनन्तरं तेषु सर्वेषु कलशेषु जलं परिपूर्य तेषां गन्धाक्षत पुष्पादिना संपूज्य-पट्टवस्त्रैः पंक्तित्रये सप्त सप्त अक्षतपुञ्जान् विधाय तेषु क्रमेण जलमातृणां जीवमातृणां स्थलमातृणाञ्च आवाहनं स्थापनं पूजनञ्च कर्यात।

संकल्प के उपरान्त वस्त्र पृथ्वी पर विधाकर तीन जगह अक्षत के सात- 2 कुंज रखने चाहिए तथ उसी में जल जीव तथ स्थल मातृका क आवहन करना चाहिए।

अथ जल , जीव, स्थल मातृणां आवाहनं पूजनम् च मत्स्यै नमः मत्सीमावाहयामि स्थापयामि । कूर्म्ये नमः कूर्मीमा० । वाराही नमः वाराहीमा० । ददुर्य नमः दर्दुरीमा० मकयै नमः मकरीमा० : जलूक्यै नमः जलूकीगा० तन्तुक्यै नमः तन्तुकीमा० । कुमायै नमः कुमारीमावाहयामि स्थापयामि। धनदायै नमः धनदामा० । नन्दायै नमः नन्दामा० । विमलायै नमः विमलामा० । मङ्गलायै नमः मङ्गलामा० । अचलायै नमः अचलामा० । पद्मायै नमः पद्मामा० ।

ऊर्म्यै नमः ऊर्मीमावाहयामि स्थापयामि। लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमा० । महामायायै

नमः महामायामा० पानदेव्यै नमः पानदेवीमा० । वारुण्यै नमः वारुणीमा० । निर्मलायै नमः निर्मलामा० गोधायै नमः गोधामा० ।

सर्वाभ्यो मातृभ्यो नमः इति सम्पूज्य दशदिक्पालानां पूजनम् विधाय नद्यां जलाशये वा नदीस्तीर्थानि चावाहयेत्।

आवहन के पश्चात अंचोपचार पूजन कर दस दिगपाल इत्यादि का प्रणम कर तत्पशाच समस्त तीर्थोंका आवहन करना चाहिए।

जल यात्रा विधि:

आयात च च देवी यमुना कूर्मयानस्थित सदा । प्राची सरस्वती पुण्या पयोष्णी गौतमी तथा ।। ३ ।। उर्मिला चन्द्रभागा सरयू गण्डकी तथा । वितस्ता च विपाशा च नर्मदा च पुनः पुनः ।।४।। कावेरी कौशिकी चैव गोदावरी महानदी । मन्दाकिनी वशिष्ठा च तुङ्गभद्रा शशिप्रभा ।। ५ ।। अमरेशः प्रभासञ्च नैमिषं पुष्करं तथा । • कुरुक्षेत्रं प्रयागं गङ्गासागर सङ्गमम् ।।६।। एता नद्यश्च तीर्थानि यानि सन्ति महीतले । तानि सर्वाणि आयान्तु पावनार्थ द्विजन्मनाम् । ७ ।। इति नदीनां तीर्थानाञ्चावाहनं कृत्वा गङ्गादिनदीभ्यो नमः पुष्करादितीर्थेभ्यो नमः सम्पूज्य जलमध्ये वरुणदेवस्य पूजनम् । ॐ इमम्मे वरुणश्श्रुधी० इति मन्त्रेण वरुणं सम्पूज्य जले ॐ पञ्च नद्यः० इति

मन्त्रेणपञ्चामृतस्य प्रक्षेपः । पश्चात् जले द्वादश आज्याहुतीर्जुहुयात् । ॐ अद्भ्यः स्वाहा । ॐ वार्भ्यः स्वाहा। ॐ उदकाय स्वाहा । ॐ तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा । ॐ स्रवन्तीभ्यः स्वाहा । ॐ स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा । ॐ कूप्याभ्यः स्वाहा । ॐ सूद्याभ्यः स्वाहा । ॐ धार्याभ्यः स्वाहा । ॐ अर्णवाय स्वाहा । ॐ समुद्राय स्वाहा । ॐ सरिराय स्वाहा ।

अथवा ॐ अद्भ्यः सम्भृतः० इत्यादिमन्त्रैः घृतेन दध्ना वा स्रुवेण विंशतिवारं आहुतीर्दद्यात्।

ततोऽर्घ्यपात्रे जलेन साकं गन्धाक्षत पुष्पाणि गृहीत्वा नद्यां जलाशये वा वारत्रयार्घ्यं दद्यात्। पश्चात् नद्यां श्रीफलं प्रक्षिपेत् । ततो देवतानां विसर्जनं कृत्वा आचार्यादि ऋत्विजां सुवासिनीनाञ्च पूजनं विधाय दक्षिणां च दद्यात् । पश्चात् पूजितान् नवकलशान् उत्थाप्य नवसंख्यानां सुवासिनीनां मस्तकोपरि धारयेत् । ततो

यजमानः वेदमन्त्रैः भगवन्नामकीर्तनं कुर्वन् आचार्यादि ऋत्विग्भिः सह यज्ञस्थलं प्रति गच्छेत्। अर्धमार्गे स्थित्वा इन्द्रादि दश दिक्पालानां क्षेत्रपालस्य च आवाहनं पूजनं च कृत्वा सर्वेभ्यः बलिं दद्यात् । ततो यज्ञ मण्डपस्य पश्चिम द्वारस्य पूजनं विधाय तेनैव द्वारेण मण्डपे प्रविश्य पूजित नवकलशान् यज्ञ मण्डपस्य वारुण मण्डलोपरि स्थापयेत्। हरिः ॐ तत्सत्

तथा इन सब कर्मो के पश्चात नदी में गन्ध अक्षत पुष्प श्रीफल दक्षिणा इत्यादि छेड़कर नौ या नौ से ज्यादा विषय संख्या में कन्या या सुहागिन स्त्रियों के साथ या मण्डप की तरफ प्रस्थान करना चाहिए साथ में ब्राम्हणों द्वारा वेद मंत्र का वाचन होता रहना चाहिए मण्डप और जहां से जल यात्रा प्रारम्भ् हुई हो उसके मध्य में रूक कर इन्द्रादि तथा दसपाल तथा क्षेत्रपाल वा आवहन पूजन करना चाहिए।

मण्डप प्रवेश

मण्डप के समीप जलयात्रा पहुंचने पर प्रामाश्चित संकल्प करके तथा देव पितरो को प्रणाम करके मण्डप के प्रवेश करना चाहिए।

पंचांग पूजन

पूजा करने वाले साधक को पूर्वामुख बैठकर अपनी बायी ओर घ्ण्टा धूप घी का दीपक तथ दाहिनी ओर शंख जलपात्र पूजन सामग्री रखकर पूजन कार्य में रत होना चाहिए।

कर्मपात्र पूजन

एक पात्र में जल रखकर पंचोपचार पूजन करना चाहिए।

पूजनारम्भ विधिः

पूजन कर्ता को पूर्वाभिमुख बैठकर अपने बायीं ओर घण्टा , धूप, घृत का दीपक तथा दाहिनी ओर शंख , जल पात्र तथा पूजन सामग्री रखकर पूजन करना चाहिये।

कर्मपात्र पूजनम् - अकुशमुद्रया तीर्थान्यावाह्य गन्धादिभिः वरुणं सम्पूज्य-

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती ।

नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।

पवित्री धारण- कुशा के मध्यम से आचार्य निम्न मंत्र बोलता हुआ पवित्र करे।

पवित्रीकरण मंत्र-

आचम्यॐ केशवाय नमः । ॐ माधवाय नमः । ॐ नारायणाय नमः ।   , हस्त प्रक्षालनम् । ॐ गोविन्दाय नमः । इसके बाद प्राणायाम करें। पवित्रधारणम्-- ॐ पवित्रेस्त्थो वैष्णव्यौसवितुर्व्वः प्रसवऽउत्त्पुनाम्य च्छिद्रेणपवित्रेणसूर्यस्यरश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्त्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

पवित्रकरणम्ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।

यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।

मंगल तिलकम् -- ॐ युञ्जन्ति ब्रघ्नमरुपंचरन्तं परितस्थुषः रोचन्ते रोचनादिवि। युञ्जन्तस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे शोणाधृष्णु नृवाहसा ।।

आसन शुद्धिः -- ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।

शिखा बन्धनम्-- ब्रह्म वाक्य सहस्त्राणि रुद्र वाक्य शतानि च ।

विष्णु स्मरण मात्रेण शिखा बन्धन करोम्यहम् ।।

आसन शुद्धि

कुशा के माध्यम से आसन पर कर्मपात्र पर जल छिड़कना चाहिए।

शिखा बन्धनम- ब्रम्ह वाक्य सहस्त्राणि रूद्र वाक्य शतनि च।

विष्णु स्मरण मात्रेण् शिख् बन्धन करोम्यहम्।

पृथिवी पूजनम्

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी । यच्छानः शर्म्मसप्प्रथाः ।। ॐ भूर्भुवः स्वः आधार शक्त्यै पृथिव्यै नमः , भगवते वाराहाय नमः , सिद्धासनाय नमः, कमलासनाय नमः, कूर्मासनाय नमः, आवाहयामि पूजयामि । पूजन कर प्रार्थना करें--

प्रार्थना

इष्टं मे त्वं प्रयच्छस्व त्वामहं शरणं गतः ।पु

त्रदार धनायुष्यंकरीभव ||

अनया पूजया सवराहः पृथिवी देवी प्रीयतां न मम।

स्वस्ति वाचनम्

हस्ते अक्षत पुष्पाणि गृहीत्वा आ नो भद्रादीन् मंगल मंत्रान् पठेयुः

हरिः ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोदब्धासोऽअपरीता सऽउद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्वृधे ऽअसन्नप्प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥१॥

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवाना रातिरभिनो निवर्त्तताम्। देवाना सख्यमुपसेदिमाव्वयन्देवा नऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥ २ ॥

निविदाहूमहेव्वयम्भगम्मित्त्रमदितिन्दक्षमस्रिधम्। अर्य्यमणंव्वरुण सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥३॥

तन्नो व्वातो मयोभु व्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना युवम् ॥४॥

तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्प्पतिन्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। ५ ।। स्वस्ति न इन्द्रोतान्पूर्व्वयाव्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः

देवार्धन विधि प्रबन्धः

मसिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥६॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः पानी विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वामनवः सूरचक्षसो विश्वेदेवा अवसागमन्निह। ॥७॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितंय्यदायुः ॥ ८ ॥ शतमिन्नु शरदो ऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।। ९ ।। अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्मातासपितासपुत्रः। व्विश्वे देवाऽअदितिः पञ्चजनाऽ अदितिर्जातमदितिर्जनित्त्वम्। १० ॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः व्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि ॥ ११ ॥ यतोयतः समीहसे ततो नोऽअभयकुरु। शन्नः कुरुप्प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः ॥ १२ ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः

शान्तिःसुशान्तिर्भवतु, सर्वारिष्ट शान्तिर्भवतु ।

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः ।उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । शचीपुरन्दराभ्यां नमः । मातृपितृ चरण कमलेभ्यो नमः । इष्टदेवताभ्यो नमः । कुलदेवताभ्यो नमः । ग्रामदेवताभ्यो नमः । स्थानदेवताभ्यो नमः । वास्तुदेवताभ्यो नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः | सर्वेभ्यो तीर्थेभ्यो सर्वाभ्यो शक्तिभ्यो एतत् कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः । अविघ्नमस्तु । कल्याणमस्तु । अयमारम्भः शुभाय भवतु ।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।लम्बोदरश्चविकटोविघ्ननाशो
विनायकः ।धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षोभालचन्द्रो गजानन:
द्वादशैतानिनामानिपठेच्छृणुयादपि ।

स्वस्ति वाचनम्

विद्यारम्भेविवाहेच प्रवेशे निर्गमेतथा ।संग्रामे सङ्कटेचैवविघ्नस्तस्यशुक्लाम्बरधरंदेवं शशिवर्ण चतुर्भुजम् ।प्रसन्नवदनंध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ।।अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थंपूजितोसुरासुरैः ।सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतयेनमः ।।सर्वमङ्गलमङ्गल्येशिवेसर्वार्थसाधिके ।शरण्येत्र्यम्बकेगौरिनारायणिनमोऽस्तुते ।।सर्वदासर्वकार्येषुनास्तितेषाममङ्गलम् ।येषां हृदयस्थोभगवान् मङ्गलायतनोहरिः ।।तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव । विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ।।लाभस्तेषां जयस्तेषांकुतस्तेषां पराजयः ।येषामिन्दीवरश्यामोहृदयस्थोजनार्दनः ।।यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्रपार्थो धनुर्धरः ।तत्रश्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ||अनन्यांश्चिन्तयन्तो मां येजना: पर्युपासते ।तेषांनित्याभियुक्तानां योगक्षेमंवहाम्यहम्।।स्मृतेसकल कल्याणं भाजनंयत्रजायते ।पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ।।सर्वेष्वारम्भकार्येषुत्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ।देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः ।।विश्वेशं माधवं दुण्ढिं दंडपाणिंचभैरवम् ।वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणि कर्णिकाम् ।।वक्रतुण्ड निर्विघ्नंमहाकायसूर्यकोटि समप्रभ ।कुरुमे देव सर्वकार्येषु सर्वदा | |विनायकं गुरुंगुरुं भानुंभानुं ब्रह्म विष्णु महेश्वरान् ।सरस्वतींप्रणम्यादौसर्वकार्यार्थ सिद्धये ।।

संकल्प

दाहिने हाथ में गंध अक्षत पुष्प द्रव्य एवं जल लेकर सङ्कल्प करें-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणो अह्नि द्वितीये परार्धे विष्णु पदे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तेक देशे अमुकक्षेत्रे अमुकनगरे (ग्रामे वा) श्री गङ्गा यमुनयोः अमुकदिग्भागे देवब्राह्मणानां सन्निधौ श्रीमन्नृपति वीर विक्रमादित्य समयात अमुक संख्या परिमिते प्रवर्त्तमान सम्वत्सरे प्रभवादि षष्टि सम्वत्सराणां मध्ये अमुक नाम्नि सम्वत्सरे, अमुकायने, अमुकगोले, अमुकऋतौ, अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे, अमुकनक्षत्रे, अमुकयोगे, अमुककरणे, अमुक राशि स्थिते चन्द्रे , अमुक राशि स्थिते श्रीसूर्ये अमुक राशि स्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथं राशि स्थान स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह गण गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्माहं (वर्मा गुप्तो वा) सपरिवारः ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त पुण्य फल प्राप्त्यर्थं मम ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं अप्राप्त लक्ष्मी प्राप्त्यर्थं प्राप्त लक्ष्म्याश्चिरकाल संरक्षणार्थं सकल मनोभिलषित कामना संसिद्ध्यर्थं लोके सभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजय लाभादि प्राप्त्यर्थं समस्त भयव्याधि जरा पीडा मृत्यु परिहार द्वारा आयुः आरोग्य ऐश्वर्यादि अभिवृद्ध्यर्थं तथा च मम जन्मराशेः सकाशाद्ये केचिद्विरुद्ध चतुर्थाष्टम द्वादश स्थान स्थिताः क्रूरग्रहाः तैः सूचितं सूचयिष्यमाणञ्च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशद्वारा शुभफल प्रात्यर्थं पुत्रपौत्रादि सन्ततेरविच्छिन्न वृद्ध्यर्थं आदित्यादि नवग्रह अनुकूलता सिद्ध्यर्थं आधिदैविक आधिभौतिक आध्यात्मिक तापत्रयोपशमनार्थं धर्म अर्थ काम मोक्ष फलावाप्त्यर्थं यथोपलब्धोपचारैः अमुक देवस्य पूजन कर्मणि निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं गणपत्यादि देवतानां आवाहनं स्थापनं पूजनं च करिष्ये।

श्री गणेशाम्विका अर्चनम

दो सुपारियों पर मौली लपेटकर उनको किसी पात्र में चावल पर अष्टदल कमल बनाकर स्थापित करें। फिर हाथ में अक्षत पुष्प लेकर नीचे लिखे मंत्रों द्वारा ध्यानकर आवाहन करें।

ध्यानम् –

विघ्नध्वान्त निवारणैकरतरणि विघ्नाटवीहव्यवाड् विघ्नव्याल कुलाभिमानगरुड़ो विघ्ने भपञ्चाननः ।

विघ्नोतुङ्ग गिरिप्रभेदनपवि र्विघ्नाम्बुधेर्वाडवो विघ्नान्यौघ घनप्रचण्डपवनो विघ्नेश्वरः पातु नः ॥ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ध्यायामि ।

आवाहनम्-

हे हेरम्ब त्वमेह्येहि अम्बिका त्र्यम्बकात्मज । सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभ पितुः पितः । । नागास्यं नागहारं त्वं गणराजं चतुर्भुजम् । भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशाङ्कुशपरश्वधैः ॥ आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः । इहाऽगत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे ॥

मन्त्रः-

ॐ गणानां त्वा गणपति हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति हवामहे निधीनां त्वा निधिपति हवामहे व्वसो मम । आहमजानि गर्भधमात्त्वमजासि गर्भधम् ।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम् ।

लम्बोदरस्य जननी गौरी आवाहयाम्यहम् ॥

गौरी गणेश, कलश

हाथ में अक्षात पुष्प लेकर के गौरी गणेश कलश और नवग्रह का आवहन पूजन करना चाहिए।

पंचाग पूजन तथा पूजन मंत्र खण्ड एक की इकाई से देखें।

इकाई 12 : पुण्याह्वाचन, आचार्य-पूजन

प्रस्ता ूवना

प्रस्तु ूत इकाई मेंपुर्ण्याईवाचन एवं आचार्य पूजन पर प्रकाशडाला गया है।

उददेश्यू-

इस इकाई के अध्य यन से पुर्ण्याखवाचन एवं आचार्य पूजन सम्पूर्णज्ञान प्राप्तस होगा।

प्रश्नय -

१. पुर्ण्या-वाचन किसे कहतेहै।

२. पुर्ण्या-वाचन एवं आचार्य पूजन परसविस्तार वर्णन कीजिए।

पूर्णयः वाचन प्रारम्भः-

यजमान पूर्व दिशा या उत्तर दिशा में मुख करके वज्र आशन या बीर आसन पर बैठ जाए तथा अपने हाथ की अंगुलियों को कमलवत बना ले कहने का अभिप्राय ये है कि अंजलि न बनाते हुए दोनों हाथों को तजर्नि को तजर्नि अंगूठे से अंगूठे को जोड़ दें बाकी अंगुलियां खुली रहें। आचार्य पूर्व पूजित जल पात्र यजमान के हाथों में रख दें तथा यजमान उस पात्र को अपने सर पर स्पर्श करवाने तथा ब्राह्मणों द्वारा मन्त्र के माध्यम से अपने दीर्घ आयु की कामना करता हुआ प्रार्थना करे तथा ब्राह्मणों को निम्न मन्त्र का वाचन करना चाहिए-

पुष्याहवाचन

पुण्याह वाचन कलश उत्थाप्य दक्षिणपाख् े एकस्मिन कांस्यपात्र शरावकः (दक्षिणभागे संस्थापति पात्रे) शनैः शनैः कलशाद् जलं पातयेत्।)

यजमानः- ऊँ शान्तिरस्तु। ऊँ पुष्टिरस्तु। ऊँ तुष्टिरस्तु। ऊँ वृद्धिरस्तु। ऊँ अविघ्नमस्तु। ऊँ आयुष्ममस्तु। ऊँ आरोग्यमस्तु। ऊँ शिवमस्तु। ऊँ शिवं कर्माऽस्तु। ऊँ कर्मसमृद्धिरस्तु। ऊँ धर्मसमृद्धिरस्तु। ऊँ वेदसमृद्धिरस्तु। ऊँ शास्त्रसमृद्धिरस्तु। ऊँ धन-धान्यसमृद्धिरस्तु। ऊँ पुत्रपौत्र-समृद्धिरस्तु ऊँ

इष्टसम्पदस्तु।

तथा अब निम्न मन्त्र को पढ़ते हुए द्वितीय पात्र में

ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु। यत्पापं रोगं अशुभं अकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।

पुनः निम्न मन्त्र को पढ़ते हुए प्रथम पात्र में -

ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। ॐ उत्तरोत्तरमहरहरभि-वृद्धिरस्तु। ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथिकरणे सुमुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गा-पांचालयौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगाः विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगाः मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मपुरोगा सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णु-पुरोगाः सर्वे-देवाः प्रीयन्ताम्। ॐ ऋषयश्छन्दांसि-आचार्या वेदा देवा यज्ञाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मा ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ अम्बिका-सरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्।

ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वाः ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा इष्टदेवताः प्रीयतन्ताम्।

तथा द्वितीय पात्र में निम्न मन्त्रां द्वारा-

ॐ **हताश्च ब्रह्मद्विषः। हताश्च परिपन्थिनः। ॐ हताश्च विघ्नकर्त्तारः। ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु घोराणि। ॐ शाम्यन्तु पापानि। ॐ शाम्यन्तु ईतयः। ॐ शाम्य**न्तूपद्रवाः।

पुनः निम्न मन्त्र द्वारा प्रथम पात्र जल डाला जाए-

पात्रे - ॐ शुभानि वर्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा ओषधयः सन्तु। ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहुतयः सन्तु। ॐ शिवा अतिथयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्। ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो

नः कल्पताम्।।

ॐ शुक्राऽ◌ंगारक-बुध-बृहस्पति-शनैश्चर-राहु-केतु-सोम-सहितादित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान पर्जन्यः प्रीयताम। ॐ भगवान स्वामी महासेनः प्रीयताम्। पुरोऽनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु। याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। प्रायः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

इसके बाद कलश बगल रख दें तथा प्रथम पात्र का जल घर तथा परिवार के लोगों के ऊपर छिड़कवा दें तथा द्वितीय पात्र का जल नैपित्य था घर के किसी सदस्य द्वारा घर के बाहर एकान्त में डलवा दें पुण्यः वाचन करते समय सावधानी के साथ ही पात्रों में जल डालें प्रथम पात्र का जल इधर उधर गिरजाए तो कोई बात नहीं मगर द्वितीय पात्र का जल बड़ी सावधानी पूर्वक द्वितीय पात्र में ही डालना चाहिए तो इधर उधर नहीं गिरना चाहिए और ना हि उसके छीटें कहीं पड़ने चाहिए जल के मार्जन के उपरान्त बताए गए नियमानुसार निम्न वैदिक मन्त्रों द्वारा ब्राह्मण अपना आशीर्वाद प्रदान करें-

यजमान - ॐ एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

ब्राह्मण - वाच्यताम्।

इसके बाद यजमान फिरसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करे-

यजमान - ॐ ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्।

(पहली बार) वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ पुण्याहम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः! मम ..... करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः

(दूसरी बार) पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ पुण्याहम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम ....करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः

(तीसरी बार) पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ऊँ पुण्याहम्।

ऊँ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।

पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।

यजमान - पृथिव्यामुद्धृतायां तु यल्कल्याणं पुरा कृतम्।

(पहली बार) ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारर गृहे

करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ऊँ कल्यापाम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

(दूसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ऊँ कल्याणम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः। मम सकुटुम्बस्य सपिरवारस्य गृहे

(तीसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ऊँ कल्याणम्।

ऊँ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्या शूद्राय चार्याय च स्वाह चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुप मादो नमतु।

यजमान - ऊँ सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता।

(पहली बार) सम्पूर्णा सुप्रभावा च तामृद्धिं प्रब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ऊँ ऋद्ध्यताम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

(दूसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ ऋद्ध्यताम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

(तीसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ ऋद्ध्यताम्।

ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम। दिवं पृथिव्या अध्याऽरुहामाविदाम दिवान्त्स्वर्ज्योतिः।।

यजमान - ॐ स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा।

(पहली बार) विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः।। भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बभ्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणाय अमुककर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ आयुष्मते स्वस्ति।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणाय अमुककर्मणे (दूसरी बार) स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ आयुष्मते स्वस्ति।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणाय अमुककर्मणे (तीसरी बार) स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ आयुष्मते स्वस्ति।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।

स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

यजमान - ॐ समुद्रमनाज्जाता जगदानन्दकारिका।

(पहली बार) हरिप्रिया च मांगल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणाय अमुककर्मणः श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ अस्तु श्रीः।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः (दूसरी बार) श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ अस्तु श्रीः।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः (तीसरी बार) श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ अस्तु श्रीः।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण।

यजमान - ॐ मृकण्डुसूनोरायुर्यद् धुरवलामशयोस्तथा।
आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम्।।

ब्राह्मण - ॐ शतं जीवन्तु भवन्तः।
ॐ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।
मुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।।

यजमान - ॐ शिवगौरीविवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे।
धनदस्य गृहे या श्रीरस्मां सास्तु सद्मनि।।

ब्राह्मण - ॐ अस्तु श्रीः।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय। पशूना रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा।।

यजमान - प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्।
भगवांछाश्वतो नित्यं नो वै रक्षतु सर्वतः।।

ब्राह्मण - ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्।
ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय स्याम पतयो रयीणाम्।।

प्रण्यः वाचन के उपरान्त प्रथम पात्र का जल लेकर ब्राह्मण यजमान की पत्नी को यजमान बाग में बिठाकर निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा तथा सम्भव हो तो पूरे परिवार को पूजा स्थल पर बैठकार प्रथम पात्र के जल से निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ माजन करे-

यजमान - आयुष्पते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे।

श्रिये दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः।।

देवेन्द्रस्य यथा स्वस्ति यथा स्वस्ति गुरोर्गृहे।

एकलिंगे यथा स्वस्ति तथा स्वस्ति सदा मम।।

ब्राह्मण - ऊँ आयुष्मते स्वस्ति।

ऊँ प्रति पन्थामपद्यहि स्वस्तिगामनेहसम्।

येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु।।

ऊँ पुण्याहवाचनसमृद्धिरस्तु।।

यजमान - अस्मिन् पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिरुपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात् श्रीमहागणपतिप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु।

दक्षिणाका संकल्प - कृतस्य पुण्याहवाचनकर्मणः समृद्धर्थं पुण्याह

ऊँ पयः पृथिव्यांपय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो थाः।

सरस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

ऊँ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

ऊँ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमा सीद।।

ऊँ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।

पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।

ऊँ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।

सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभि विश्चाम्यसौ। (शु० य० 9/30)

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिंचामि।।
(शु० य० 18/3)

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभि षिंचामि सरस्वत्यै।
भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभि षिंचामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभि षिंचामि।।(शु० य० 20/3)

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रंतन्न आ सुव।।

ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः।
सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे।। (शु० य० 20/7)

ॐ त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄँ पाहि शृणुधी गिरः।
रक्षा तोकमुत त्मना।(शु० य० 18/77)

ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्र प्र दातारं तारिष उर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्व शान्ति शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।
शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।

सुशान्तिर्भवतु।

सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिंचन्तु सर्वकामार्थसिद्धये।।

शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु। अमृताभिषेकोऽस्तु।।

दक्षिणादान - ऊँ अद्य......कृतैतत्पुण्याहवाचनकर्मणः सांगता-सिद्धर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणोभ्यो यथाशक्ति मनसोद्दिष्टां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

आचार्य वरण पूणर्यावाचन नान्दीमुख श्राद्ध तथा वेदीस्थापन पूजन खण्ड एक के इकाई दो के निर्देशानुसार यहां भी उसी प्रकार आवाहन एवं पूजन करें।

इकाई 13 : असंख्यातरुद्र, इन्द्रादिदशदिक्पाल, अष्टद्वारपाल, पंचलोकपाल, इन्द्रध्वज-हनुमत्ध्वज-स्थापन

प्रस्ता्वना

इस इकाई में असंख्यातरुद्र, इन्द्रादिदशदिक्पाल, अष्टद्वारपाल, पंचलोकपाल, इन्द्रध्वज-हनुमत्ध्वज-स्थापन पर प्रकाश डाला गया है।

उददेश्य्-

इस इकाई के अध्य यन से असंख्यातरुद्र, इ न्द्रादिदशदिक्पाल, अष्टद्वारपाल, पंचलोकपाल, इन्द्रध्वज-हनुमत्ध्वज-स्थापन आदि का ज्ञान प्राप्तप होगा।

प्रश्नप -

१. असंख्यातरुद्र, का वैदिक मंत्र लिखें।

२. यज्ञोपवीत धारण करवाने का मंत्र लिखें।

असंख्यात रुद्र -

असंख्यात रुद्र तथा इन्द्राधि दसधिक पाल नवगृह वेदी के दाहिनी ओर दक्षिण दिशा की तरफ असंख्यात रुद्र की रचना करके कलश स्थापन करना चाहिए, मन्त्र-

ऊँ आजिग्घ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जा निवर्त्तस्व सानः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्माविशताद्र्‌यिः।।

ऊँ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम्।

तेषा ऽ सहस्र योजने वधन्वानितन्मसि।।

रुद्राः रुद्रगणाश्चैव असंख्याताः प्रकीर्तिताः।

तेषामावाहये भक्त्या स्वीकुर्वन्त्वर्चनं मम।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः असंख्यात रुद्रेभ्यो नमः , असंख्यात रुद्रान् आवाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा-

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं य्यज्ञ गुं समिमं दधातु। व्विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामों3 प्रतिष्ठ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यात रुद्रेभ्यो नमः , असंख्यातरुद्रानः सुप्रतिष्ठताः वरदाः भवन्तु।

पूर्व लिखित पूजन विधा द्वारा षोड्शो पचार पूजन करना चाहिए-

ॐ तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।

पशूँस्ताँश्चक्क्रे व्वायव्व्या नाण्ण्या ग्ग्राम्म्याश्च्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्ः- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नाने के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें , निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

गंधोदक स्नान-

इस स्नान के उपरान्त पुनः भगवान को शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्धादक स्नानम् - (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्व्व शुद्धवालो मणि वालस्त ऽआश्विनाः

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपते कर्ण्णा यामा

ऽअवलिप्प्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्न्याः।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु।।

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हुए चढ़ाएं तथा भगवान को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ऊँ युवा सुवासाः परिवीत ऽआगात्स ऽउश्श्रेयान्भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंगरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें वस्त्र के उपरान्त भगवान को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ऊँ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्त्स्वः।

व्वासो ऽअग्गने व्विश्वरूप गुं संव्व्ययस्व विभावसो।।

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न वाक्य बोलते हुए भगवान को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचनं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात् यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिर्वबृत्याद गुं होश्चिद्या वरिवोवित्तरा

सदादित्यीयस्त्वा।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमानी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।

त्वामोषधे सोपो राजा व्विद्द्वात्र्यक्ष्मादमुच्च्यत।।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया ऽअधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रा नविष्ठ्या मतीयोजात्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुड्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान को अर्पित करें मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ॐ ओषधीः प्प्रतिमोध्वं पुष्पतीः प्प्रसूवरीः।

अश्वा ऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्बा चढ़ाएं मन्त्र-

दूर्बा - (गणेश जी को कोमल दूर्बा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्रोण शतेन च।।

दूर्वाड.कुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयाणि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्बा गणेश जी को ही चढ़ती है , देवी जी पर दूर्बा न चढ़ाएं दूर्बा चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्प्राद्ध्वने शूघनासो व्वानप्प्रमियः पतयंत्रि यह्व्वाः।

घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठा भित्रदत्रूर्म्मिभिः पित्रवमानः।।

सिन्दूर शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामर्द चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान पर चढ़ाएं मन्त्र-

अबीरादि परिमलद्रव्यम् - (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्ज्याया हेतिं प्परिबाधमानः।

हस्तग्घ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्पुमान् पुमा गुं सं प्परिपातु व्विश्वतः।।

नाना-परिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं मन्त्र-

धूपम् - (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्समान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि व्वह्नितम गुं सस्नितमं पप्प्रितमं जुष्ट्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ॐ अग्निज्र्ज्योतिज्जर्योनिरग्निः स्वाहा सूर्य्यर्ज्ज्योतिज्र्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहह सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वाह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , दीपं दर्शयामि।

(हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर कहकर हाथ धुल लें , तत पश्चात् नैवेद्य भगवान को अर्पण करें, नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ॐ नाब्भ्या ऽआसीदन्तरिक्ष गुं शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्त्रात्तथा लोकाँ2ऽअकल्प्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा।ॐ उदानाय स्वाहा।

ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , नैवेद्यं निवेदयामि।

लाचमनीयं समर्पयामि

मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ऋतु फल भगवान को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्य्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व गुं ह सः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान पर चंदन दिड़के अगुलियों के माध्यम से करोधवर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ अ गुं शुना ते अ गुं शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गइधस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतंवत्।

व्वसन्तोऽयासीदाज्ज्यंग्रीषम ऽइध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।

एलादिचु ूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , मुखवासार्थे पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बोल के पश्चात् भगवान को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाता, चक्षो सूर्यो अयात्।

श्रीय द्ववाइदूच पुष्प मुखा दधर्निजात।।

आरती के पश्चात् जल घुमाकर गिरा दें, हाथ पुष्प लेकर पुष्पाँजलि करें मन्त्र-

पुष्पाँजलि -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्त्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर!।।

पूजन के उपरान्त निम्न मन्त्रों से प्रार्थना करनी चाहिए-

प्रार्थना

ॐ रुद्राः रुद्रगणाश्च रुद्र-सुहृदाः शान्तं शिवं शंकरम्।

कैलाशाचल-वासिनः शिव-समाः सर्वे च शूलं धराः।।

वृषभस्था च भुजंगहार-भसिता-भस्मांगरागान्विताः।

ते सर्वे शिवरूपि-भद्ररुद्राः कुर्वन्तु नः मंगलम्।।

हाथ में जल लेकर के असंख्यात रुद्र को समर्पित करें-

इस प्रकार प्रार्थना करके पूजन समर्पित करें- अनेन पुजनेन असंख्यात् रुद्राः प्रीयन्तां न मम।।

उक्त इकाई में असंख्यातरूद्र के पूजन विधान पर प्रकाश डाला गया है। मण्डप पूजन वेद पूजन दिग्पाल पूजन एवं द्वारपाल पूजन खण्ड एक के इकाई तीन में सविस्तार वर्णन किया गया है। उक्त विषय को वहां से देखें।

इकाई 14 : सर्वतोभद्र पूजन, गौरी तिलक मण्डल एवं संकल्पित पाठवाचन

प्रस्ताि‍वना

प्रस्तुि‍त इकाई में सर्वतोभद्र पूजन , गौरी तिलक मण्डल एवं संकल्पित पाठवाचन पर प्रकाश डाला गया है।

उददेश्यि-

इस इकाई के अध्य यन सेसर्वतोभद्र पूजन, गौरी तिलक मण्डल एवं संकल्पित पाठवाचन का सम्पू र्णज्ञान प्राप्तज होगा।

प्रश्नन -

१. गौरी तिलक मण्डूल पर प्रकाश डाले।

२. गौरी तिलक मण्डलल में नैरित्यप कोण में आवाहित देवताओं का नाम लिखें

गौरी तिलक मण्डलस्थ देवताना आवाहनं स्थापनम्

कलशसमीपे पीतकोष्ठेषु चतुरोदेवान् पूजयेत् – १. ॐ महाविष्णवे नमः, २. ॐ महालक्ष्म्यै नमः, ३. ॐ महेश्वराय नमः, ४. ॐ महामायायै नमः,	ॐ महाविष्णुमावाहयामि स्थापयामि (ऐशा०) ॐ महालक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि (आग्ने०) ॐ महेश्वरमावाहयामि स्थापयामि (नैऋत्याम्) ॐ महामायामावाहयामि स्थापयामि (वाय०)
हृदयाङ्गमध्ये चतुर्षु कोष्ठेषु चतुर्वेदान्पूजयेत् -	
५. ॐ ऋग्वेदाय नमः, ६. ॐ यजुर्वेदाय नमः, ७. ॐ सामवेदाय नमः, ८. ॐ अथर्ववेदाय नमः,	ॐ ऋग्वेदमावाहयामि स्थापयामि (पूर्व) ॐ यजुर्वेदमावाहयामि स्थापयामि (दक्षिणे) ॐ सामवेदमावाहयामि स्थापयामि (पश्चिमे) ॐ अर्थर्ववेद मावाहयामि स्थापयामि (उत्तरे)
पूर्वादीशानपर्यन्तं श्वेतकोष्ठेषु पञ्चदेवान् पूजयेत् -	
९. ॐ अद्भ्यो नमः, १०. ॐ जलोद्भवाय नमः,	ॐ अपः आवाहयामि स्थापयामि। ॐ जलोद्भवम् आवाहयामि स्थापयामि।

११. ॐ ब्रह्मणे नमः,	ॐ ब्रह्माणम् आवाहयामि स्थापयामि।
१२. ॐ प्रजापतये नमः,	ॐ प्रजापतिम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३. ॐ शिवाय नमः,	ॐ शिवम् आवाहयामि स्थापयामि।
अग्निकोणे श्वेतकोष्ठयोः	
१४. ॐ अनन्ताय नमः,	ॐ अनन्तम् आवाहयामि स्थापयामि।
१५. ॐ परमेष्ठिने नमः,	ॐ परमेष्ठिनम् आवाहयामि स्थापयामि।
अग्निकोणे चतुष्कोष्ठेषु -	
१६. ॐ धात्रे नमः,	ॐ धातारम् आवाहयामि स्थापयामि।
१७. ॐ विधात्रे नमः,	ॐ विधातारम् आवाहयामि स्थापयामि।
१८. ॐ अर्य्यणे नमः,	ॐ अर्य्यम्णम् आवाहयामि स्थापयामि।
१९. ॐ मित्राय नमः,	ॐ मित्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
दक्षिणश्वेतेषु -	
२०. ॐ वरुणाय नमः,	ॐ वरुणम् आवाहयामि स्थापयामि।
२१. ॐ अंशुमते नमः,	ॐ अंशुमन्तम् आवाहयामि स्थापयामि।
२२. ॐ भगाय नमः,	ॐ भगम् आवाहयामि स्थापयामि।
२३. ॐ इन्द्राय नमः,	ॐ इन्द्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
२४. ॐ विवस्वते नमः,	ॐ विवस्वन्तम् आवाहयामि स्थापयामि।
नैऋत्यकोणयोः	
२५. ॐ पूष्णे नमः,	ॐ पूष्णम् आवाहयामि स्थापयामि।
२६. ॐ पर्जन्याय नमः,	ॐ पर्जन्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
नैर्ऋत्यकोणे श्वेतेषु -	
२७. ॐ त्वष्ट्रे नमः,	ॐ त्वष्टारम् आवाहयामि स्थापयामि।
२८. ॐ दक्षयज्ञाय नमः,	ॐ दक्षयज्ञम् आवाहयामि स्थापयामि।
२९. ॐ देववसवे नमः,	ॐ देववसुम् आवाहयामि स्थापयामि।
३०. ॐ महासुताय नमः,	ॐ महासुतम् आवाहयामि स्थापयामि।
पश्चिमे श्वेतेषु	
३१. ॐ सुधर्मणे नमः,	ॐ सुधर्माणम् आवाहयामि स्थापयामि।
३२. ॐ शङ्खपदे नमः,	ॐ शङ्खपदम् आवाहयामि स्थापयामि।
३३. ॐ महाबाहवे नमः,	ॐ महाबाहुम् आवाहयामि स्थापयामि।
३४. ॐ वपुष्मते नमः,	ॐ वपुष्मन्तम् आवाहयामि स्थापयामि।

३५. ॐ अनन्ताय नमः,	ॐ अनन्तम् आवाहयामि स्थापयामि ।
वायौ श्वेतयोः -	
३६. ॐ महेरणाय नमः,	ॐ महेरणम् आवाहयामि स्थापयामि ।
३७. ॐ विश्वावसवे नमः,	ॐ विश्वावसुम् आवाहयामि स्थापयामि ।
वायौ श्वेतेषु –	
३८. ॐ सपुर्वणे नमः,	ॐ सुपर्वणंम् आवाहयामि स्थापयामि।
३९. ॐ विष्टराय नमः,	ॐ विष्टरम् आवाहयामि स्थापयामि।
४०. ॐ रुद्रदेवतायै नमः,	ॐ रुद्रदेवताम् आवाहयामि स्थापयामि।
४१. ॐ ध्रुवाय नमः,	ॐ ध्रुवम् आवाहयामि स्थापयामि ।
उत्तरेश्वेतेषु -	
४२. ॐ धरायै नमः,	ॐ धराम् आवाहयामि स्थापयामि ।
४३. ॐ सोमाय नमः,	ॐ सोमम् आवाहयामि स्थापयामि ।
४४. ॐ आपवत्साय नमः,	ॐ आपवत्सम् आवाहयामि स्थापयामि ।
४५. ॐ नलाय नमः,	ॐ नलम् आवाहयामि स्थापयामि ।
४६. ॐ अनिलाय नमः,	ॐ अनिलम् आवाहयामि स्थापयामि ।
ईशाने श्वेतयोः -	
४७. ॐ प्रत्यूषाय नमः,	ॐ प्रत्यूषम् आवाहयामि स्थापयामि ।
४८. ॐ प्रभासाय नमः,	ॐ प्रभासम् आवाहयामि स्थापयामि ।
ईशानकोणे श्वेतेषु	
४९. ॐ आवर्त्ताय नमः,	ॐ आवर्त्तम् आवाहयामि स्थापयामि।
५०. ॐ सावर्त्ताय नमः,	ॐ सावर्त्तम् आवाहयामि स्थापयामि।
५१. ॐ द्रोणाय नमः,	ॐ द्रोणम् आवाहयामि स्थापयामि ।
५२. ॐ पुष्कराय नमः,	ॐ पुष्करम् आवाहयामि स्थापयामि ।
(इति हृदयाङ्गपूजनम् । अथ शिरोङ्गशक्ति पूजयेत्)	
ईशाने हरित्कोष्ठेषु -	
५३. ॐ ह्रीं कार्ये नमः	ॐ ह्रीं कारीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
५४. ॐ ह्रीं यै नमः	ॐ ह्रीं मैं आवाहयामि स्थापयामि ।
५५. ॐ कात्यायन्यै नमः	ॐ कात्यायनीम् आवाहयामि स्थापयामि।
५६. ॐ चामुण्डायै नमः	ॐ चामुण्डाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
५७. ॐ महादिव्यायै नमः	ॐ महादिव्याम् आवाहयामि स्थापयामि।

५८. ॐ महाशब्दायै नमः	ॐ महाशब्दाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
५९. ॐ सिद्धिदायै नमः	ॐ सिद्धिदाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
६०. ॐ ऐं नमः	ॐ ऐं आवाहयामि स्थापयामि।
६१. ॐ श्रीं श्रियै नमः	ॐ श्रीं श्रियम् आवाहयामि स्थापयामि ।
६२. ॐ ह्रीं ह्रियै नमः	ॐ ह्रीं ह्रियम् आवाहयामि स्थापयामि।
ईशानकोणे पीतकोष्ठेषु -	
६३. ॐ लक्ष्म्यै नमः	ॐ लक्ष्मीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
६४. ॐ श्रियै नमः	ॐ श्रियम् आवाहयामि स्थापयामि ।
६५. ॐ सुघनायै नमः	ॐ सुघनाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
६६. ॐ मेधायै नमः	ॐ मेधाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
६७. ॐ प्रज्ञायै नमः	ॐ प्रज्ञाम् आवाहयामि स्थापयामि।
६८. ॐ मत्यै नमः	ॐ मतीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
६९. ॐ स्वाहायै नमः	ॐ स्वाहाम् आवाहयामि स्थापयामि।
७०. ॐ सरस्वत्यै नमः	ॐ सरस्वतीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
अग्निकोणे हरित्कोष्ठेषु -	
७१. ॐ गौर्यै नमः	ॐ गौरीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
७२. ॐ पद्मायै नमः	ॐ पद्माम् आवाहयामि स्थापयामि।
७३. ॐ शच्यै नमः	ॐ शचीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
७४. ॐ सुमेधायै नमः	ॐ सुमेधाम् आवाहयामि स्थापयामि।
७५. ॐ सावित्र्यै नमः	ॐ सावित्रीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
७६. ॐ विजयायै नमः	ॐ विजयाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
७७. ॐ देवसेनायै नमः	ॐ देवसेनाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
७८. ॐ स्वाहायै नमः	ॐ स्वाहाम् आवाहयामि स्थापयामि।
७९. ॐ स्वधायै नमः	ॐ स्वधाम् आवाहयामि स्थापयामि।
८०. ॐ मात्रे नमः	ॐ मातरम् आवाहयामि स्थापयामि।
८१. ॐ गायत्र्यै नमः	ॐ गायत्रीम् आवाहयामि स्थापयामि।
अग्निकोणे पीतकोष्ठेषु -	
८२. ॐ लोकमात्रे नमः	ॐ लोकमातरम् आवाहयामि स्थापयामि।
८३. ॐ धृत्यै नमः	ॐ धृतिम् आवाहयामि स्थापयामि।
८४. ॐ पुष्ट्यै नमः	ॐ पुष्टिम् आवाहयामि स्थापयामि।

८५. ॐ तुष्ट्यै नमः ८६. ॐ आत्मकुलदेवतायै नमः ८७. ॐ गणेश्वर्यै नमः ८८. ॐ कुलमात्रे नमः ८९. ॐ शान्त्यै नमः	ॐ तुष्टिम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ आत्मकुलदेवताम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ गणेश्वरीम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ कुलमातरम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ शान्तिम् आवाहयामि स्थापयामि ।
ईशानकोणे वाप्यां कृष्णकोष्ठे १ श्वेतेषु ४	
९०. ॐ जयन्त्यै नमः ९१. ॐ मङ्गलायै नमः ९२. ॐ काल्यै नमः ९३. ॐ भद्रकाल्यै नमः ९४. ॐ कपालिन्यै नमः ९५. ॐ दुर्गायै नमः ९६. ॐ क्षमायै नमः ९७. ॐ शिवायै नमः ९८. ॐ धात्र्यै नमः ९९. ॐ स्वाहास्वधाभ्यां नमः	ॐ जयन्तीम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ मङ्गलाम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ कालीम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ भद्रकालीम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ कपालिनीम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ दुर्गाम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ क्षमाम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ शिवाम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ धात्रीम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ स्वाहास्वधाम् आवाहयामि स्थापयामि।
(इति शिरांगपूजनम्) (अथ शिखांगदेवपूजनम्)	
नैर्ऋत्यकोणे हरित्कोष्ठेषु-११- १००. ॐ दीप्यमानायै नमः स्थापयामि । १०१. ॐ दीप्तायै नमः १०२. ॐ सूक्ष्मायै नमः १०३. ॐ विभूत्यै नमः १०४. ॐ विमलायै नमः १०५. ॐ परायै नमः १०६. ॐ अमोघायै नमः १०७. ॐ विधूतायै नमः १०८. ॐ सर्वतोमुख्यै नमः १०९. ॐ आनन्दायै नमः ११०. ॐ नन्दिन्यै नमः	 ॐ दीप्यमानाम् आवाहयामि ॐ दीप्ताम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ सूक्ष्माम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ विभूतिम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ विमलाम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ पराम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ अमोघाम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ विधूताम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ सर्वतोमुखीम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ आनन्दाम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ नन्दिनीम् आवाहयामि स्थापयामि।

नैर्ऋत्यकोणे पीतकोष्ठेषु – ८	
१११. ॐ शक्त्यै नमः	ॐ शक्तिम् आवाहयामि स्थापयामि।
११२. ॐ महासूक्ष्मायै नमः स्थापयामि।	ॐ महासूक्ष्माम् आवाहयामि
११३. ॐ करालिन्यै नमः स्थापयामि।	ॐ करालिनीम् आवाहयामि
११४. ॐ भारत्यै नमः	ॐ भारतीम् आवाहयामि स्थापयामि।
११५. ॐ ज्योतिषे नमः	ॐ ज्योतिषम् आवाहयामि स्थापयामि।
११६. ॐ ब्राह्मयै नमः	ॐ ब्राह्मीम् आवाहयामि स्थापयामि।
११७. ॐ माहेश्वर्यै नमः	ॐ माहेश्वरीम् आवाहयामि स्थापयामि।
११८. ॐ कौमार्यै नमः	ॐ कौमारीम् आवाहयामि स्थापयामि।
वायुकोणे हरित्कोष्ठेषु - ११ -	
११९. ॐ वैष्णव्यै नमः	ॐ वैष्णवीम् आवाहयामि स्थापयामि।
१२०. ॐ वारायै नमः	ॐ वाराहीम् आवाहयामि स्थापयामि।
१२१. ॐ इन्द्राण्यै नमः	ॐ इन्द्राणीम् आवाहयामि स्थापयामि।
१२२. ॐ चण्डिकायै नमः	ॐ चण्डिकाम् आवाहयामि स्थापयामि।
१२३. ॐ बुद्ध्यै नमः	ॐ बुद्धिम् आवाहयामि स्थापयामि।
१२४. ॐ लज्जायै नमः	ॐ लज्जाम् आवाहयामि स्थापयामि।
१२५. ॐ वपुष्मत्यै नमः	ॐ वपुष्मतीम् आवाहयामि स्थापयामि।
१२६. ॐ शान्त्यै नमः	ॐ शान्तिम् आवाहयामि स्थापयामि।
१२७. ॐ कान्त्यै नमः	ॐ कान्तिम् आवाहयामि स्थापयामि।
१२८. ॐ रत्यै नमः	ॐ रतिम् आवाहयामि स्थापयामि।
१२९. ॐ प्रीत्यै नमः	ॐ प्रीतिम् आवाहयामि स्थापयामि।
'वायुकोणे पीतकोष्ठेषु - ८	
१३०. ॐ कीर्त्यै नमः	ॐ कीर्तिम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३१. ॐ प्रभायै नमः	ॐ प्रभाम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३२. ॐ काम्यायै नमः	ॐ काम्याम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३३. ॐ कान्तायै नमः	ॐ कान्ताम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३४. ॐ ऋद्ध्यै नमः	ॐ ऋद्धिम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३५. ॐ दयायै नमः	ॐ दयाम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३६. ॐ शिवदूत्यै नमः	ॐ शिवदूतीम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३७. ॐ श्रद्धायै नमः	ॐ श्रद्धाम् आवाहयामि स्थापयामि।

नैर्ऋत्यवाप्यां कृष्णकोष्ठे १श्वेतेषु ४	
१३८. ॐ क्षमायै नमः	ॐ क्षमाम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३९. ॐ क्रियायै नमः	ॐ क्रियाम् आवाहयामि स्थापयामि।
१४०. ॐ विद्यायै नमः	ॐ विद्याम् आवाहयामि स्थापयामि ।
१४१. ॐ मोहिन्यै नमः	ॐ मोहिनीम् आवाहयामि स्थापयामि।
१४२. ॐ यशोवत्यै नमः	ॐ यशोवतीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
वायोवाप्यां कृष्ण कोष्ठे १ श्वेतेषु ४	
१४३. ॐ कृपावत्यै नमः	ॐ कृपावतीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
१४४. ॐ सलिलायै नमः	ॐ सलिलाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
१४५. ॐ सुशीलायै नमः	ॐ सुशीलाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
१४६. ॐ ईश्वर्यै नमः	ॐ ईश्वरीम् आवाहयामि स्थापयामि।
१४७. ॐ सिद्धेश्वर्ये नमः	ॐ सिद्धेश्वरीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
कवचाङ्गेषु ऋषीन्पूजयेत् पूर्वेऽरुणपीतकोष्ठेषु-४	
१४८. ॐ द्वैपायनाय नमः	ॐ द्वैपायनम् आबाहयामि स्थापयामि।
१४९. ॐ भरद्वाजाय नमः	ॐ भरद्वाजम् आवाहयामि स्थापयामि।
१५०. ॐ मित्राय नमः	ॐ मित्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
१५१. ॐ सनकाय नमः	ॐ सनकम् आवाहयामि स्थापयामि।
दक्षिणे ऽरुणपीत कोष्ठेषु-- ४	
१५२. ॐ गौतमाय नमः	ॐ गौतमम् आवाहयामि स्थापयामि।
१५३. ॐ सुमन्तवे नमः	ॐ सुमन्तम् आवाहयामि स्थापयामि ।
१५४. ॐ त्वष्ट्रे नमः	ॐ त्वष्टारम् आवाहयामि स्थापयामि।
१५५. ॐ सनन्दनाय नमः	ॐ सनन्दनम् आवाहयामि स्थापयामि।
पश्चिमेऽरुणपीतकोष्ठेषु - ४	
१५६. ॐ देवलाय नमः	ॐ देवलम् आवाहयामि स्थापयामि।
१५७. ॐ व्यासाय नमः	ॐ व्यासम् आवाहयामि स्थापयामि।
१५८. ॐ ध्रुवाय नमः	ॐ ध्रुवम् आवाहयामि स्थापयामि।
१५९. ॐ सनातनाय नमः	ॐ सनातनम् आवाहयामि स्थापयामि।
उत्तरेऽरुणपीतकोष्ठेषु - ४	
१६०. ॐ वसिष्ठाय नमः	ॐ वसिष्ठम् आवाहयामि स्थापयामि।
१६१. ॐ च्यवनाय नमः	ॐ च्यवनम् आवाहयामि स्थापयामि।

१६२. ॐ पुष्कराय नमः	ॐ पुष्करम् आवाहयामि स्थापयामि।
१६३. ॐ सनत्कुमाराय नमः	ॐ सनत्कुमारम् आवाहयामि स्थापयामि ।
ईशाने, अग्निकोणे, नैर्ऋत्यकोणे, वायुकोणे च कृष्णकोष्ठेषु एकैकम्-	
१६४. ॐ कण्वाय नमः	ॐ कण्वम् आवाहयामि स्थापयामि ।
१६५. ॐ मैत्राय नमः	ॐ मैत्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
१६६. ॐ कवये नमः	ॐ कविम् आवाहयामि स्थापयामि।
१६७. ॐ विश्वामित्राय नमः	ॐ विश्वामित्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
१९०. ॐ वाल्मीकये नमः	ॐ वाल्मीकिम् आवाहयामि स्थापयामि।
१९१. ॐ बहवृचाय नमः	ॐ बहवृचम् आवाहयामि स्थापयामि।
१९२. ॐ इन्द्रप्रमितये नमः	ॐ इन्द्रप्रमितिम् आवाहयामि स्थापयामि ।
१९३. ॐ देवमित्राय नमः	ॐ देवमित्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
१९४. ॐ जाजलये नमः	ॐ जाजलिम् आवाहयामि स्थापयामि।
१९५. ॐ शाकल्याय नमः	ॐ शाकल्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
१९६. ॐ मुद्गलाय नमः	ॐ मुद्गलम् आवाहयामि स्थापयामि ।
१९७. ॐ जातुकर्णाय नमः स्थापयामि ।	ॐजातुकर्ण्यम् आवाहयामि
१९८. ॐ बलाकाय नमः	ॐ बलाकम् आवाहयामि स्थापयामि ।
१९९. ॐ कृपाचार्याय नमः	ॐ कृपाचार्यम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२००. ॐ सुकर्मणे नमः	ॐ सुकर्माणम् आवाहयामि स्थापयामि।
२०१. ॐ कौशल्याय नमः	ॐ कौशल्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
(इति कवचांगपूजनम्)	
नेत्राङ्गपूजनम् ईशानकोणेऽरुणकोष्ठेषु – १२	
२०२. ॐ ब्रह्माग्नये नमः	ॐ ब्रह्माग्निम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२०३. ॐ गार्हपत्याग्नये नमः	ॐ गार्हपत्याग्निम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२०४. ॐ ईश्वराग्नये नमः स्थापयामि ।	ॐ ईश्वराग्निम् आवाहयामि
२०५. ॐ दक्षिणाग्नये नमः	ॐ दक्षिणाग्निम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२०६. ॐ वैष्णवाग्नये नमः	ॐ वैष्णवाग्निम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२०७. ॐ आहवनीयाग्नये नमः	ॐ आहवनाग्निम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२०८. ॐ सप्तजिह्वाग्नये नमः	ॐ सप्तजिह्वाग्निम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२०९. ॐ इध्मजिह्वाग्नये नमः	ॐ इध्मजिह्वाग्निम् आवाहयामि ।
२१०. ॐ प्रवर्त्याग्नये नमः स्थापयामि ।	ॐ प्रवर्गाग्निम् आवाहयामि

२११. ॐ बडवाग्नये नमः २१२. ॐ जठराग्नये नमः स्थापयामि। २१३. ॐ लोकाग्नये नमः	ॐ बडवाग्निम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ जठराग्निम् आवाहयामि ॐ लोकाग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।
अग्निकोणे ऽरुणकोष्ठेषु - १२ २१४. ॐ सूर्याय नमः २१५. ॐ वेदाङ्गाय नमः २१६. ॐ भानवे नमः २१७. ॐ इन्द्राय नमः २१८. ॐ खगाय नमः २१९. ॐ गभस्तिने नमः २२०. ॐ यमाय नमः २२१. ॐ अंशुमते नमः २२२. ॐ हिरण्यरेतसे नमः २२३. ॐ दिवाकराय नमः २२४. ॐ मित्राय नमः २२५. ॐ विष्णवे नमः	 ॐ सूर्यम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ वेदाङ्गम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ भानुम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ इन्द्रम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ खगम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ गभस्तिनम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ यमम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ अंशुमन्तम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ हिरण्यरेतसम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ दिवाकरम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ मित्रम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ विष्णुम् आवाहयामि स्थापयामि।
नैर्ऋत्यकोणेऽरुणकोष्ठेषु - १२ २२६. ॐ शम्भवे नमः २२७. ॐ गिरीशाय नमः २२८. ॐ अजैकपदे नमः २२९. ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः २३०. ॐ पिनाकपाणये नमः २३१. ॐ अपराजिताय नमः २३२. ॐ भुवनाधीश्वराय नमः २३३. ॐ कपालिने नमः २३४. ॐ विशांपतये नमः २३५. ॐ रुद्राय नमः २३६. ॐ वीरभद्राय नमः २३७. ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः	 ॐ शम्भुम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ गिरीशम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ अजैकपदम् आवाहयामि ॐअहिर्बुध्न्यम् आवाहयामिस्थापयामि। ॐ पिनाकपाणिम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ अपराजितम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ भुवनाधीश्वरम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ कपालिनम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ विशांपतिम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ रुद्रम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ वीरभद्रम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ अश्विनीकुमारौ आवाहयामि स्थापयामि।

वायुकोणेऽरुणकोष्ठेषु - ११	
२३८. ॐ आवहाय नमः	ॐ आवहम् आवाहयामि स्थापयामि।
२३९. ॐ प्रवहाय नमः	ॐ प्रवहम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२४०. ॐ उद्वहाय नमः	ॐ उद्वहम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२४१. ॐ संवहाय नमः	ॐ संवहम् आवाहयामि स्थापयामि।
२४२. ॐ विवहाय नमः	ॐ विवहम् आवाहयामि स्थापयामि।
२४३. ॐ परिवहाय नमः	ॐ परिवहम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२४४. ॐ धरायै नमः	ॐ धराम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२४५. ॐ अद्भ्यो नमः	ॐ अपः आवाहयामि स्थापयामि ।
२४६. ॐ अग्नये नमः	ॐ अग्निम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२४७. ॐ वायवे नमः	ॐ वायुम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२४८. ॐ आकाशाय नमः	ॐ आकाशम् आवाहयामि स्थापयामि।
(ऋषीन् पूजयेत्) ईशानादीशपर्यन्तं वाह्यपंक्तौ कृष्णकोष्ठेषु -	
२४९. ॐ हिरण्यनाभाय नमः	ॐ हिरण्यनाभम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२५०. ॐ पुष्पञ्जयाय नमः	ॐ पुष्पञ्जयम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२५१. ॐ द्रोणाय नमः	ॐ द्रोणम् आवाहयामि स्थापयामि।
२५२. ॐ श्रृंगिणे नमः	ॐ श्रृंगिणम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२५३. ॐ बादरायणाय नमः	ॐ बादरायणम् आवाहयामि स्थापयामि।
२५४. ॐ अगस्त्याय नमः	ॐ अगस्त्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
२५५. ॐ मनवे नमः	ॐ मनुम् आवाहयामि स्थापयामि।
२५६. ॐ कश्यपाय नमः	ॐ कश्यपम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२५७. ॐ धौम्याय नमः	ॐ धौम्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
२५८. ॐ भृगवे नमः	ॐ भृगुम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२५९. ॐ वीतिहोत्राय नमः	ॐ वीतिहोत्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
२६०. ॐ मधुच्छंदसे नमः	ॐ मधुच्छंदसम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२६१. ॐ वीरसेनाय नमः	ॐ वीरसेनम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२६२. ॐ कृतवृष्णवे नमः	ॐ कृतवृष्णिम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२६३. ॐ अत्रये नमः	ॐ अत्रिम् आवाहयामि स्थापयामि।
२६४. ॐ मेधातिथये नमः	ॐ मेधातिथिम् आवाहयामि स्थापयामि।
२६५. ॐ अरिष्टनेमये नमः	ॐ अरिष्टनेमिम् आवाहयामि स्थापयामि ।

२६६. ॐ अङ्गिरसाय नमः	ॐ अङ्गिरसम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२६७. ॐ इन्द्रप्रमदाय नमः	ॐ इन्द्रप्रमदम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२६८. ॐ इध्मबाहवे नमः	ॐ इध्मबाहुम् आवाहयामि स्थापयामि।
२६९. ॐ पिप्पलादाय नमः	ॐ पिप्पलादम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२७०. ॐ नारदाय नमः	ॐ नारदम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२७१. ॐ अरिष्टसेनाय नमः	ॐ अरिष्टसेनम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२७२. ॐ अरुणाय नमः	ॐ अरुणम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२७३. ॐ कपिलाय नमः	ॐ कपिलम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२७४. ॐ कर्दमाय नमः	ॐ कर्दमम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२७५. ॐ मरीचये नमः	ॐ मरीचिम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२७६. ॐ क्रतवे नमः	ॐ क्रतुम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२७७. ॐ प्रचेतसे नमः	ॐ प्रचेतसम् आवाहयामि स्थापयामि।
२७८. ॐ उत्तमाय नमः	ॐ उत्तमम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२७९. ॐ दधीचये नमः	ॐ दधीचिम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२८०. ॐ श्राद्धदेवेभ्यो नमः	ॐ श्राद्धदेवान् आवाहयामि स्थापयामि ।
२८१. ॐ गणदेवेभ्यो नमः	ॐ गणदेवान् आवाहयामि स्थापयामि।
२८२. ॐ विद्याधरेभ्यो नमः	ॐ विद्याधरान् आवाहयामि स्थापयामि ।
२८३. ॐ अप्सरेभ्यो नमः	ॐ अप्सरान् आवाहयामि स्थापयामि।
२८४. ॐ यक्षेभ्यो नमः	ॐ यक्षान् आवाहयामि स्थापयामि।
२८५. ॐ रक्षेभ्यो नमः	ॐ रक्षान् आवाहयामि स्थापयामि ।
२८६. ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः	ॐ गन्धर्वान् आवाहयामि स्थापयामि ।
२८७. ॐ पिशाचेभ्यो नमः	ॐ पिशाचान् आवाहयामि स्थापयामि।
२८८. ॐ गुह्यकेभ्यो नमः	ॐ गुह्यकान् आवाहयामि स्थापयामि ।
२८९. ॐ सिद्धदेवेभ्यो नमः	ॐ सिद्धदेवान् आवाहयामि स्थापयामि।
२९०. ॐ औषधीभ्यो नमः	ॐ औषधीः आवाहयामि स्थापयामि ।
२९१. ॐ भूतग्रामाय नमः	ॐ भूतग्रामम् आवाहयामि स्थापयामि।
२९२. ॐ चतुर्विधभूतग्रामाय नमः	ॐ चतुर्विधभूतग्रामं आवाहयामि स्थापयामि।
ॐ मनोजूतिर्जु०..........................	गौरीतिलक भद्र मण्डल देवताभ्यो

नमः आवाहयामि स्थापयामि यथोपलब्धोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत्

ब्रह्मा रुद्रः कुमारौ हरि वरुण यमः वन्हिरिन्द्रः कुबेरः,
चंद्रादित्यावुदधि युग नगाः, वायुरुर्वी भुजङ्गाः ।
सिद्धा नद्यावश्विनौ श्रीः दितिरदितिसुताः मातरश्चण्डिकाद्याः,
वेदास्तीर्थानि यज्ञः गुण वसु मुनयः पान्तु नित्यं सदा नः (वः) ॥

॥ अनेन पूजनेन गौरीतिलक भद्रमण्डलस्थ देवताः प्रीयन्ताम् न मम ॥

पीठ पूजनम्

हस्तेऽक्षतान् गृहीत्वा , ॐ पूर्वपीठाय नमः । ॐ पं पूर्णपीठार नमः । कं कामपीठाय नमः । प्राच्यां दिशि ॐ उं उड्यानपीठाय नमः आग्नेय्याम्-मां मातृपीठाय नमः । दक्षिणे-जं जालन्धर पीठाय नमः नैऋत्ये-कं कोल्हापुरपीठाय नमः ॥ पश्चिमे-पूं पूर्णगिरिपीठाय नमः वायव्याम्-सं संहारोपपीठाय नमः उत्तरे-कं कोल्हागिरिपीठाय नमः ऐशान्याम्- कं कामरूपीठाय नमः। इति पीठं सम्पूजयेत् ।

नमस्कारः- दक्षिणे ॐ गुरवे नमः । ॐ परमगुरवे नमः । ॐ परमेष्ठिगुरवे नमः । ॐ गुरुपंक्तये नमः । ॐ ' मातापितृभ्यां नमः । ॐ उपमन्यु नारद सनक व्यासादिभ्यो नमः ।

वामे- ॐ गं गणपतये नमः । ॐ दुं दुर्गायै नमः । ॐ सं सरस्वत्यै नमः । ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः। इति नत्वा, पीठदेवताः स्थापयेत्।

पीठमध्ये- ॐ मं मण्डूकाय नमः । ॐ आं आधारशक्त्यै नमः । ॐ मूं मूलप्रकृत्यै नमः । ॐ कां कालाग्निरुद्राय नमः । तदुपरि ॐ आं आदि-कूर्माय नमः । ॐ अं अनन्ताय नमः । ॐ आं आदिवराहाय नमः । ॐ पं पृथिव्यै नमः। तदुपरि ॐ अं अमृतार्णवाय नमः। ॐ रं रत्नद्वीपाय नमः । ॐ हं हेमगिरये नमः। ॐ नं नन्दनोद्यानाय नमः । ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः । ॐ मं मणिभूतलाय नमः । ॐ दं दिव्यमण्डपाय नमः । ॐ सं स्वर्ण- वेदिकायै नमः । ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः । ॐ धं धर्माय नमः । ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः । ॐ वैं वैराग्याय नमः। ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः। इति सम्पूज्य !

पूर्वे- ॐ अं अनैश्वर्याय नमः । पुनर्मध्ये ॐ सं सत्त्वाय नमः । ॐ प्रं प्रबोधात्मने नमः । ॐ रं रजसे नमः । ॐ प्रं प्रकृत्यात्मने नमः । ॐ तं तमसे नमः । ॐ मं मोहात्मने नमः । ॐ सों सोममण्डलाय नमः । ॐ सूं सूर्य-मण्डलाय नमः । ॐ वं वह्निमण्डलाय नमः । ॐ मं मायातत्त्वाय नमः । ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः । ॐ शं शिवतत्त्वाय नमः । ॐ ब्रं ब्रह्मणे नमः । ॐ मं महेश्वराय नमः । ॐ आं आत्मने नमः । ॐ अं अन्तरात्मने नमः ॐ पं परमात्मने नमः । ॐ जं जीवात्मने नमः । ॐ ज्ञं ज्ञानात्मने नमः । ॐ कं कन्दाय नमः । ॐ नं नीलाय नमः । ॐ पं पद्माय नमः । ॐ मं महापद्माय नमः । ॐ रं रत्नेभ्यो नमः । ॐ कं केसरेभ्यो नमः । ॐ कं कर्णिकायै नमः।

ततो नवशक्तीः स्थापयेत् । तद्यथा-

यन्त्रस्थ देवता स्थापनं पूजनम्

ॐ पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु- ॐ नन्दायै नमः । ॐ भगवत्यै नमः । ॐरक्तदन्तिकायै नमः । ॐ शाकम्भर्यै नमः । ॐ दुर्गायै नमः । ॐ भीमायैनमः । ॐ कालिकायै नमः । ॐ भ्रामयै नमः। मध्ये ॐ शिवदूत्यै नमः ।

इति संस्थाप्य , यथाशक्त्या "शक्ति-सहित-पीठदेवताभ्यो नमः"यथोपलब्धोपचारैः संपूजयेत् ।

॥ पीठपूजा समाप्ता ॥

यन्त्रस्थ देवता स्थापनं पूजनम्

हस्तेऽक्षतान् गृहीत्वा , बिन्दुमध्ये ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिणी त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गादेवतायै नमः , श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिणी त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गा देवतां आवाहयामि स्थापयामि ।बिन्दोः परितो गुरुचतुष्टयं आवाहयेत्-

ॐ गुरवे नमः । ॐ परम गुरवे नमः । ॐ परात्परगुरवे नमः । ॐ परमेष्ठिगुरवे नमः । ॐ गुरुपंक्तये नमः। (षडङ्गम्) ॐ ऐं हृदयाय नमः । ॐ ह्रीं शिरसे नमः । ॐ क्लीं शिखायै नमः । ॐ चामुण्डायै कवचाय नमः । ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय नमः ।

ततस्त्रिकोणे स्वाग्रादि- प्रादक्षिण्य क्रमेण ॐ स्वरया सह विधात्रे नमः । ॐ

श्रिया सह विष्णवे नमः। ॐ उमया सह शिवाय नमः। दक्षिणे- ॐ हुं सिंहाय नमः। वामे ॐ हुं महिषाय नमः।

षट्कोणे, अग्नीशासुरवायव्वे मध्ये दिक्षु च-

ॐ ऐं नन्दजायै नमः। ॐ ह्रीं रक्तदन्तिकायै नमः। ॐ क्लीं शाकम्भर्यै नमः। ॐ दुं दुर्गायै नमः। ॐ हुं भीमायै नमः। ॐ ह्रीं भ्रामयें नमः।

ततो अष्टपत्रे स्वाग्रादि प्रादक्षिण्यक्रमेण ॐ ऐं ब्राह्म्यै नमः। ॐ ह्रीं माहेश्वर्यै नमः। ॐ क्लीं कौमार्यै नमः। ॐ ह्रीं वैष्णव्यै नमः। ॐ हुं वारायै नमः। ॐ छौं नारसिंहयै नमः। ॐ लं ऐन्द्रयै नमः। ॐ ह्रीं चामुण्डायै नमः।

सर्वतोभद्र पूजन

यज्ञशाला के मध्य में या अग्नि या इसान कोण के मध्य में एवं पूर्व दिशा में एक विशेष वेदी का निर्माण करना चाहिए जिसकी लम्बाई , चौड़ाई सब वेदियों से बड़ी हो यहां पर प्रधान वेदी के रूप में सर्वतो भद्र मण्डल देवता की चर्चा कर रहे हैं , एक चौकोर वेदी की रचना कर सफेद वस्त्र पर ऊपर नीचे से चित्रानुसार 18 कोष्ठक बनाएं-

नोट-अक्षत ही पूजन में ग्राह्य एवं सर्वश्रेष्ठ है अतः वेदी रंगीन अक्षतों से ही पूरित करना चाहिए कुछ लोग नानावर्ण की दाल प्रयुक्त करते हैं वह शास्त्रसम्मत नहीं है। वैसे भी अनुष्ठानादि कार्य में द्विदल (दाल) वर्जित है।

रंगीन चावलों से सुसज्जित करने के उपरान्त निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा देवताओं का आवाहन करें मन्त्र-

सर्वतोभद्र-मण्डल (वेदी) निर्माण-विधिः

सवा हाथ की चौकोर काठ की चौकी पर श्वेत वस्त्र बांधकर बराबर-बराबर 18-18 खाने बनावे तथा पुस्तक के अन्त में दिये गये सर्वतोभद्र वेदी चित्र के अनुसार उन खानों में रंगीन अक्षत से पूरित करके यज्ञ मण्डप अथवा पूजन स्थल के पूर्व भाग में, मध्य में रखकर आवाहन व पूजन करें।

अथ सर्वतोभद्र-मण्डल-देवानामावाहनं पूजनश्च

(किसी भी देवी देवताओं के पूजन , अनुष्ठान यज्ञादि में प्रधान वेदी के रूप में सर्वतोभद्रमण्डल का निर्माण तथा पूजन किया जा सकता है। प्रायः लोग विष्णु इत्यादि देवताओं के पूजन में इसका प्रयोग करते हैं।

- **अक्षत छोड़ते हुए देवताओं का आवाहन करें।**
- **आवाहयामि.. के बाद स्थापयामि, पूजयामि का भी उच्चारण करें।**

प्रतिष्ठा:-

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्ट य्यज्ञ गुं समिमं दधातु। व्विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामौ3 प्रतिष्ठा।।

ॐ तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।

पशूँस्ताँश्चक्के व्वायव्व्या नाण्ण्या ग्ग्राम्म्याश्च्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्ः- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नाने के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें , निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

गंधोदक स्नान-

इस स्नान के उपरान्त पुनः भगवान को शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्धादक स्नानम् - (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्व्व शुद्धवालो मणि वालस्त ऽआश्विनाः

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपते कर्ण्णा यामा

ऽअवलिप्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु।।

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हुए चढ़ाएं तथा भगवान को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत ऽआगात्स ऽउश्रेयान्भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंगरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें वस्त्र के उपरान्त भगवान को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्त्स्वः।

व्वासो ऽअग्गने व्विश्वरूप गुं संव्व्ययस्व विभावसो।।

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न वाक्य बोलते हुए भगवान को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचनं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात् यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिर्वबृत्याद गुं होश्चिद्या वरिवोवित्तरा

सदादित्यैीयस्त्वा।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमानी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।

त्वामोषधे सोपो राजा व्विद्द्वात्र्यक्ष्मादमुच्च्यत।।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया ऽअधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रा नविष्ठया मतीयोजात्र्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान को अर्पित करें मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ॐ ओषधीः प्प्रतिमोध्वं पुष्पतीः प्प्रसूवरीः।

अश्वा ऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्बा चढ़ाएं मन्त्र-

दूर्बा - (गणेश जी को कोमल दूर्बा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्रोण शतेन च।।

दूर्वाड.्कुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयाणि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्बा गणेश जी को ही चढ़ती है , देवी जी पर दूर्बा न चढ़ाएं दूर्बा चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्प्राद्ध्वने शूघनासो व्वानप्प्रमियः पतयंत्रि यह्व्वाः।

घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठा भिन्त्रदत्रूर्म्मिभिः पित्र्वमानः।।

सिन्दूर शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान पर चढ़ाएं मन्त्र-

अबीरादि परिमलद्रव्यम् - (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्ज्याया हेतिं प्परिबाधमानः।

हस्तग्घ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्पुमान् पुमा गुं सं प्परिपातु व्विश्वतः।।

नाना-परिमलैर्द्रर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं मन्त्र-

धूपम् - (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्समान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि व्वह्नितम गुं सस्नितमं पप्प्रितमं जुष्ट्तमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ॐ अग्निज्ज्योतिज्जर्योनिरग्निः स्वाहा सूर्य्यर्ज्ज्योतिज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहह सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वाह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर कहकर हाथ धुल लें , तत पश्चात् नैवेद्य भगवान को अर्पण करें, नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ॐ नाभ्भ्या ऽआसीदन्तरिक्ष गुं शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्त्रात्तथा लोकाँ2ऽअकल्प्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा।ॐ उदानाय स्वाहा।

ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , नैवेद्यं निवेदयामि। लाचमनीयं समर्पयामि

मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ऋतु फल भगवान को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्प्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व गुं ह सः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान पर चंदन दिड़के अगुलियों के माध्यम से करोधवर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ अ गुं शुना ते अ गुं शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गइधस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतंवत्।

व्वसन्तोऽयासीदाज्ज्यंग्रीषम ऽइध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।

एलादिचु ूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , मुखवासार्थे पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बोल के पश्चात् भगवान को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ऊँ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाता, चक्षो सूर्यो अयात्।

श्रीय द्ववाइदूच पुष्प मुखा दधर्निजात।।

आरती के पश्चात् जल घुमाकर गिरा दें, हाथ पुष्प लेकर पुष्पाँजलि करें मन्त्र-

पुष्पाँजलि -

ऊँ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर!।।

पूर्व लिखित विधा द्वारा पूजन तथा हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करें-मन्त्र-

शांताकारं भुजगसयनमं, परमनायय सुरेसय,

विदूवाधारम् गगन सदृशम्, मेघ वर्णन सुभाष्म

लक्ष्मीसंतं

पुनः हाथ में जल लेकर समर्पित करें।

विशेष वेदी के ऊपर कलश स्थापन का विधान है तथा वेदी के सम्मुख जल पूरित कलश रखने का विधान है जल से युक्त कलश यदि वेदी पर रखा जाए तो वेदी बिगड़ सकती है इसलिए वेदी के ऊपर धातु कलश वस्त्र से आक्षादित करके रखना चाहिए तथा सम्मुख सुविधानुसार वरुण कलश भी रखा जा सकता है।

सतचण्डी सहस्त्रचण्डी यज्ञ में सर्वतोभद्र गौरी तिलक मण्डल का विधान है जिसमें गौरी तिलक मण्डल की रचना एवं आवाहन यहां पर दर्शाया गया है। सर्वतोभद्र मण्डल के लिए खण्ड दो की इकाई 9 में देखे तथा यजमान के संकल्पानुसार सप्तसती पाठ या अन्य पाठ करें।

इकाई 15 : हवन बलिविधान
पूर्णाहूति उत्त र पूजन एवं विसर्जन

प्रस्ता्ूवना

प्रस्तु्ूत इकाई में हवन हवन बलिविधान पूर्णाहूति उत्तवर पूजन एवं विसर्जनपर प्रकाश डाला गया है।

उददेश्यू-

इस इकाई के अध्य यन सेहवन बलिविधान पूर्णाहूति उत्तरर पूजन एवं विसर्जन के बारे में ज्ञान प्राप्तह होगा।

प्रश्ने -

१. हवन कुण्डाके कंथ देवता के आवाहन का मंत्र लिखें।

२. पंचभू संस्कावर पर प्रकाश डालें

कुण्डस्थदेवतापूजनपूर्वकाग्निस्थापनम्

सपत्नीको यजमानः कुण्डस्य समीपे कुण्डपश्चिमदिग्भागे उपविश्य आचमनं प्राणायामञ्च कृत्वा संकल्पं कुर्यात् ।। अद्येत्यादि० शुभपुण्यतिथौ मया सग्रहमखामुकयागकर्मणः साङ्गत्तासिद्धयर्थम् अस्मिन्कुण्डे कुण्डस्थदेवतानाम् आवाहनप्रतिष्ठापूजनानि तथा च कुण्डे पञ्चभूसंस्कारपूर्वकम् अग्निस्थापनं करिष्ये ।। प्रारब्धस्य

ततः आचार्यानुज्ञया कश्चिद्विप्र उत्थाय हस्ते कुशान् गृहीत्वा तैः अग्न्यायतं (कुण्डं) सम्मार्ज्य । ॐ आपोहिष्ट्मयो० । ॐ योव शिवतमो० । ॐ तस्माऽअरङ्गम् ।। कुशोदकेन प्रोक्षयेत् ।। तत आवाहयेत् आवाहयामि तत्कुण्डं विश्वकर्मविनिर्मितम् । शरीरं यच्च ते दिव्यमग्न्यधिष्ठानमद्भुतम् । ॐ भूर्भुवः स्वः कुण्डाय नमः कुण्डम् आवाह० स्थाप० ।। प्रार्थयत् - ये च कुण्डे स्थिता देवाः कुण्डाङ्गे याश्च देवताः । ऋद्धिं यच्छन्तु ते सर्वे यज्ञसिद्धिं ददन्तु इत्यावाह्य कुण्डमध्ये देवान् आवायहेत् व्विश्श्वकर्म्मन्हविषाव्वर्द्धनेन-त्त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्वम् ।

समनमन्तपूर्बीरयमुग्रोव्विहव्योयथासत् नः ॥ ॐ तरम्मैव्विशः उपयामगृहीतोसीन्द्रायत्त्वाव्विश्व- कर्म्मणऽएषते योनिरिन्द्रायत्त्वाव्विश्श्वकर्माणे ॥ कुण्डमध्ये-ॐ भूर्भुः स्वः विश्वकर्मणे नमः विश्वकर्माणम् आवा० स्थाप० । भो विश्वकर्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ प्रार्थयेत् - ब्रह्म वक्त्रं भुजौक्षत्रं ऊरूवैश्यः प्रकीर्तितः । पादौ यस्य तु शूद्रो हि विश्वकर्मात्मने नमः। अज्ञानात्ज्ञानतो वापि दोषाः स्युः खननोद्भवाः ॥ नाशय त्वखिलाँस्ताँस्तु विश्वकर्मन्नमोऽस्तु ते॥

तत्रादौ मेखलादेवतानाम् आवाहनम् - ॐ उपरिमेखलायाम् - ॐ इंदव्विपाष्णुर्व्विचक्रमेत्त्रेधानिदधेपदम् । समूढमस्यपा सुरेस्वाहा ॥ विष्णो यज्ञपते देव दुष्टदैत्यनिषूदन ॥ विभो यज्ञस्य रक्षार्थ कुण्डे सन्निहितो भव । ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुम् आवा० स्थाप० ॥ भो विष्णोइहागच्छ इह तिष्ठ ॥१॥

मध्यमेखलायां रक्तवर्णालङ्कृतायाम् ॐ ब्रह्म
यज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतःसुरुचोव्वेनऽआवः ॥
सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यव्विष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चव्विवः ॥
हंसपृष्ठ समारूढ़आदिदेव जगत्पते ।
रक्षार्थ मम यज्ञस्य मेखलायां स्थिरो भव ॥
ॐ भूर्भुवः स्वःब्रह्मणे नमः ब्रह्माणम् आवा० स्थाप० ॥
भो ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ॥२॥

अधो मेखलायां कृष्णवर्णालङ्कृतायाम् ॐ नमस्तेरुद्रमन्यवऽउतोतइषवेनमः॥ बाहुब्भ्यामुततेनमः ॥ गंगाधर महादेव वृषारूढ महेश्वर । आगच्छ मम यज्ञेऽस्मिन्रक्षार्थं रक्षसां गणात् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः रुद्रम् आवा० स्थाप० ॥ भो रुद्र इहागच्छ इह तिष्ठ ॥३॥

अथ योन्यावाहनम्- ॐ क्षत्रस्ययोनिरसिक्षत्रस्यनाभिरसि ॥

मात्त्वाहिथं सीन्माहिथं सीः ॥ आगच्छ देवि कल्याणि जगदुत्पत्तिहेतुके ॥ मनोभवयुते रम्ये योनि त्वं सुस्थिरा भव ॥१॥ जगदुत्पत्तिकायै मनोभवयुतायै योन्यै नमः योनिमावा० स्थापा० ॥ भो जगदुत्पत्तिके मनोभवयुते योनि

इहागच्छ इह तिष्ठ ।। प्रार्थयेत् सेवन्ते महतीं योनिं देवर्षिसिद्धमानवाः ।।

चतुरशीतिलक्षाणि पन्नगाद्याः सरीसृपाः ।। पशवः पक्षिणः सर्वे संसरन्ति यतो भुवि ।। योनिरित्येव विख्याता जगदुत्पत्तिहेतुका ।।

मनोभवयुता देवीरतिसौख्यप्रदायिनी। मोहयित्री सुराणाञ्च जगद्धात्रि नमोऽस्तु ते ।

योने त्वंविश्वरूपाऽसि प्रकृतिर्विश्वधारिणी ।। कामस्था कामरूपा च विश्वयोन्यै नमोनमः ।।

अथ कण्ठ देवता आवाहनम् ॐ नीलग्रीवाःशितिकण्ठादिवरुद्राऽउपश्रिताः ।।तेषा सहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ।। कुण्डस्य कण्ठदेशोऽयं नीलजीमूतसन्निभः ।। अस्मिन्नावाहये रुद्रं शितिकण्ठ कपालिनम् ।। ॐ भूर्भुवः स्वः कण्ठे रुद्राय नमः रुद्रम् आवा० स्थाप० । भो रुद्र इहागच्छ इह तिष्ठ ।। प्रार्थयेत् - कण्ठ मङ्गलरूपेण सर्वकुण्डे प्रतिष्ठितः । परितो मेखलास्त्वत्तो रचिता विश्वकर्मणा ।।

अथ नाभ्यावाहनम् ॐ नाभिम्मैचित्तं व्विज्ञानम्पायुर्मे पचितिर्भसत् । आनन्दनन्दावाण्डौमे भगः सौभाग्यम्पसः जङ्याभ्याम्पद्भ्यां धर्मोस्म्मि-व्विशिराजाप्प्रतिष्ठितः ।। पद्माकाराऽथवा कुण्डसदृशाकृतिबिभ्रती। आधारः सर्वकुण्डानां नाभिमावाहयाम्यहम् ।। ॐ भूर्भुवः स्वः नाभ्यैनमः नाभिम् आवा० स्थाप० ।। भो नाभे इहागच्छ इह तिष्ठ ।। प्रार्थयेत् नाभे त्वं कुण्डमध्ये तु सर्वदेवैः प्रतिष्ठिता । अतस्त्वां पूजयामीह शुभदा सिद्धिदा भव।।

अथ कुण्डमध्ये नैर्ऋत्यकोणे वास्तुपुरुषावाहनम् - ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः ।। यत्त्वेमहेप्रतितन्नो जुषस्व शन्नोभवद्विपदे शं चतुष्पदे ।। पा० गृ० ।। आवाहयामि देवेशं वास्तुदेव महाबलम् । देवदेवं गणाध्यक्ष पातालतलवासिनम् ।। ॐ भूर्भुवः स्वः नैऋत्यकोणे वास्तुपुरुषाय नमः वास्तुपुरुषम् आ० स्था० । भो वास्तुपुरुष इहागच्छ इह तिष्ठ ।। ततः प्रार्थयेत् यस्य देहे स्थिता क्षोणी ब्रह्माण्डं विश्वमंगलम्। व्यापिनं भीमरूपञ्च सुरूपं विश्वरूपिणम् ।। पितामहसुतं मुख्यं वन्दे वास्तोष्पतिं प्रभुम् ।। वास्तुपुरुष देवेश सर्वविघ्नहरो भव । शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे ।।

एवं कुण्डस्थितान् सर्वान्देवानावाह्यैकतन्त्रेण प्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ हस्तेऽक्षतानादाय ॥ ॐ मनोजूतिर्जु० ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्ताः सर्वे कुण्डस्थदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवेयुः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्तेभ्यः कुण्डस्थदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि सम० ॥ इति सम्पूज्य। कुण्डाद्बहिः एकस्मिन्पात्रे बलिदानार्थं दध्योदनं संस्थाप्य बलिदानं कुर्यात् ॥ हस्ते जलं गृहीत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मादि- वास्तुपुरुषान्तेभ्यः कुण्डस्थदेवताभ्यो नमः । दध्योदनबलिं सम० ॥ अनेन विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्ताः सर्वे कुण्डस्थदेवताः प्रीयन्तां न मम।

पञ्चभूसंस्कारः

अस्मिन् स-नवग्रहमख-अमुक यज्ञ कर्मणि पञ्च भू संस्कार पूर्वकं अग्नि स्थापनं करिष्ये ।

कुशैः परिसमुह्य, तान् कुशानैशान्यां परित्यज्य १ , गोमयो- दकेनोपलिप्य २ , सुवेण त्रिरुल्लिख्य ३ , अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य ऐशान्यां परित्यज्य ४ , जलेनाऽभ्युक्ष्य ५।

अग्निस्थापनम्

अग्निकोणादग्नि मानीय किञ्चित् क्रव्यादांशं नैऋत्यां दिशि परित्यज्य-

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्बुवे । देवाँ ॥ आसादयादिह ॥

इति मन्त्रेणाऽग्निमुपसमाधायाऽग्निं स्थापयेत् ।

ततोऽग्नौ आवाहनादिमुद्राः प्रदर्शयेत् ॥ भो अग्ने त्वं आवाहितो भव । भो अग्ने त्वं सन्निहितो भव । भो अग्ने त्वं सन्निरुद्धो भव । भो अग्ने त्वं सकलीकृतो भव । भो अग्ने त्वं अवगुण्ठितो भव । भो अग्ने त्वं अमृतीकृतो भव । भो अग्ने त्वं परमीकृतो भव । इति तत्तन्मुद्राः प्रदर्श्य अग्नि ध्यायेत् -

ॐचत्त्वारिश्रृङ्गात्रयोऽअस्यपादाद्वेशीर्षसप्तहस्तासोऽअस्य त्रिधावद्धोव्बृषभोरोरवीतिमहोदेवोमयाँ २ऽआविवेश ॥ रुद्रेतजः समुद्भूतं द्विमूर्धानं द्विनासिकम् ॥ षण्णेत्रं च चतुः श्रोतं त्रिपादं सप्तहस्तकम् । याम्यभागे चतुर्हस्तं सव्यभागे त्रिहस्तकम् ॥ सुवं सुचिञ्च शक्तिञ्च ह्यक्षमालाञ्च दक्षिणे। तोमरं व्यंजनं चैव

घृतपात्रञ्च वामके। बिभ्रतं सप्तभिर्हस्तैद्विमुखं सप्तजिह्वकम्॥ याम्यायने चतुर्जिवं त्रिजिह्व चोत्तरे मुखम्। द्वादशकोटिमूर्त्याख्यं द्विपञ्चाशत् कलायुतम्।

आत्माभिमुखमासीनं ध्यायेच्चैवं हुताशनम्॥ गोत्रमग्नेस्तु शाण्डिल्यं शाण्डिल्यासितदेवलाः। त्रयोऽमी प्रवरा माता त्वरणी वरुणः पिता॥ रक्तमाल्याम्बरधरं स्वाहास्वधावषट्कारैरङ्गितं रक्तपद्मासनस्थितम्। मेषवाहनम्॥ शतमङ्गलनामानं वह्निमावाहयाम्यहम्॥ त्वं मुखं सर्वदेवानां सप्तार्चिरमितद्युते। आगच्छ भगवन्नग्ने कुण्डेऽस्मिन्सन्निधो भव। भो वैश्वानर शाण्डिल्यगोत्र शाण्डिल्यासितदेवलेतित्रिप्रवरान्वित भूमिमातः वरुणपितः मेषध्वज प्राङ्मुख मम सम्मुखो भव। इति ध्यात्वा आवाहयेत्। ॐ मनोजूतिर्जु०॥ ॐ शतमङ्गलनामाग्ने सुप्रतिष्ठितो वरदो भव। इति प्रतिष्ठाप्य पूजनं कुर्यात्। ॐ भूर्भुवः स्वः शतमङ्गलनाम्ने वैश्वानराय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि सम०। इति कुण्डस्य नैर्ऋत्यकोणे मध्ये वा अग्नि सम्पूज्य प्रार्थयेत् - अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्। हिरण्यवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्॥

कुशकण्डिका करणम्

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनम्। अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम्। ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम्। यावत्कर्म समाप्यते तावत् त्वं ब्रह्मा भव इति यजमानः। भवामि इति ब्रह्मा वदेत्।

ततो ब्रह्मणाऽनुज्ञातः प्रणीताप्रणयनम्। तद्यथा-प्रणीता पात्रं पुरतः कृत्वा , वारिणा परिपूर्य, कुशैराच्छाद्य, प्रथमासने निधाय, ब्रह्मणो मुखमवलोक्य द्वितीयासने निदध्यात्।

ईशानादि पूर्वाग्रैः कुशैः परिस्तरणम्। तद्यथा-ततो आग्नेयादीशानान्तम् , बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय। ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं प्रागग्रैः , नैऋत्याद्वायव्यान्तम्, अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं प्रागग्रैः इतरथावृत्तिः। उदगग्रैर्वा। उदगग्रैर्वा।

पात्रासादनम्--

ततः पात्रासादनं कुर्यात्। तद्यथा-त्रीणि पवित्रे द्वे। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। सम्मार्जनकुशाः पञ्च। उपयमन्कुशाः सप्त। समिधस्तिस्रः

। स्रुवः । आज्यम् । तण्डुलाः । पूर्णपात्रम् । वृषनिष्क्रयदक्षिणा । उपकल्पनीयानि द्रव्याणि निधाय ।

ततो द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय । द्वौ मूलेन प्रदक्षिणीकृत्य , सर्वान् युगपदनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां धृत्वा । त्रिभिस्छिद्यः । द्वौ ग्राह्यौ , त्रिस्त्याज्यः, प्रोक्षणीपात्रे प्रणीतोदकमासिच्य, त्रिःपूर्ण, पवित्राभ्यामुत्पवनम् । प्रोक्षण्याः सव्यहस्तकरणम् । दक्षिणेनोद्दिङ्गनम् । प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणम् । प्रोक्षण्युदकेन आज्यस्थाल्याः प्रोक्षणम्। चरुस्थाल्याः प्रोक्षणम् । सम्मार्जनकुशानां प्रोक्षणम् । उपयमन कुशानां प्रोक्षणम् । समिधां प्रोक्षणम्। स्रुवस्य प्रोक्षणम् । आज्यस्य प्रोक्षणम् । तण्डुलानां प्रोक्षणम्। पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम्। उपकल्पनीयानां पदार्थानां प्रोक्षणम् । असञ्चरे प्रोक्षणीनिधाय ।

आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः । चरुस्थाल्यां प्रणीतोदकासेक- पूर्वकं तण्डुलप्रक्षेपः। ब्रह्मणो दक्षिणतः आज्याधिश्रयणम् । चरोरधिश्रयणं स्वयमाज्यस्तोत्तरतः । ज्वलदुल्मुकेनोभयोः पर्यग्नि करणम् । इतरथावृत्तिः । उदकोस्पर्शः । अर्धश्रिते चरौ अधोमुखस्य स्रुवस्य प्रतपनम् । सम्मार्जनकुशैः स्रुवस्योर्ध्वमुखस्य सम्मार्जनम् । अग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं सम्मृज्य , प्रणीतोदकेनाभ्युक्षणम् । सम्मार्जन्कुशानामग्नौ प्रक्षेपः । पुनः प्रतपनं , दक्षिणदेशे निधानम्। आज्योद्वासनम् । चरुं पूर्वेणानीयाऽग्नेरुत्तरतः चरोरुद्वासनम् । अग्नेरुत्तरतः एवाज्यस्य आज्यस्योत्तरतश्चरुं स्थापयेत् । आज्योत्पवनम् । स्थापयेत् । प्रदक्षिणीकृत्य

आज्यावेक्षणम् । अपद्रव्यनिरसनम् । पुनः प्रोक्षण्युत्पवनम् । वामहस्ते उपयमनकुशानादाय । उत्तिष्ठन् । समिधोभ्यादाय, घृताक्ताः

समिधस्तिस्रः अग्नौ क्षिपेत्। प्रोक्षण्युदकेन सपवित्रहस्तेन ईशानादि अग्नेः प्रदक्षिण पर्युक्षणम् । इतरथावृत्तिः ।

पवित्रयोः प्रणीतासु निधानम्। दक्षिण जान्वाच्य । ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्धः । समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाऽऽज्यहोमः ।

अग्नेरुत्तरभागे (मनसा) - ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये नमम ।

अग्नेर्दक्षिणभागे- ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय न मम ।

समिद्धतमे-- ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम।

ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम ।

ततः सूर्यादिग्रहाणामधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-गणपत्यादि- पञ्चलोकपाल-वास्तोष्पति-क्षेत्रपालदेवतानां इन्द्रादि दश दिक्पाल देवतानां च प्रत्येकं समिच्चरु-तिलाऽऽज्य-द्रव्यैरष्टोत्तर- शतमष्टाविंशतिमष्टौ वाऽऽहुतीर्जुहुयात्।

संकल्पः- अस्मिन् अमुक यज्ञ तद्दशांश होम कर्मणि इमानि समिच्चरु तिलाज्यादिहविर्द्रव्यैः विहितसंख्याहुतिपर्याप्तं या या यक्ष्यमाण देवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तं न मम। यथा दैवतानि सन्तु । अथ वराहुतिः ॐ गणानान्त्वा० स्वाहा। ॐ अम्बे० स्वाहा।

स असंख्यात्यादि ग्रहमण्डलस्थ देवतानां हवनम्

अर्कः पलाशः खदिरोह्यपामार्गोऽथ पिप्पलः । औदुम्बरः शमी दूर्वा कुशाश्च समिधः क्रमात् ॥

ॐ आदित्याय स्वाहा ॥१॥

ॐ सोमाय स्वाहा ॥२॥

ॐ भौमाय स्वाहा ॥३॥

ॐ बुधाय स्वाहा ॥४॥

ॐ बृहस्पतये स्वाहा ॥५॥

ॐ शुक्राय स्वाहा ॥६॥

ॐ शनैश्चराय स्वाहा ॥७॥

ॐ राहवे स्वाहा ॥८॥

ॐ केतवे स्वाहा ॥९॥

ॐ ईश्वराय स्वाहा ॥१०॥

ॐ उमायै स्वाहा ॥११॥

ॐ स्कन्दाय स्वाहा । ।१२ ॥

अथाग्निपूजनं स्विष्टकृद्धवनञ्च

ॐ अग्ने नय सुपथा राये ऽअस्मान्विश्वानि देव व्वयुनानि विद्वान्।

युयोद्ध्यस्म्मज्जु हुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम ऽउक्तिं विधेम।। ॐ स्वाहा स्वधायुतमृडनामाग्नये वैश्वानराय नमः । इति मन्त्रेणाग्निं सम्पूज्य ततो हुतशेषद्रव्यं वामहस्ते गृहीत्वा दक्षिणहस्तेनाज्यपूर्ण स्रुवं गृहीत्वा दक्षिणं जान्वाच्य ब्रह्मणाऽन्वारब्धः स्विष्टकृद्धवनं कुर्यात्-

ॐ अग्नयेस्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम । इति हुतशेषाऽऽज्यस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः ।

भूरादि नवाहुति प्रदानम्

ॐ भूः स्वाहा । इदमग्नये न मम ।।१।। ॐ भुवः स्वाहा । इदं वायवे न मम ।।२।। ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।।३।।

ॐ त्वन्नो अग्ने व्वरुणस्य विद्वान देवस्य हेडोऽ अवयासि सीष्ठाः । यजिष्ठोव्वनितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषासि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा । इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ।।४।।

ॐ स त्वन्नोऽ अग्नेवमो भवोती नेदिष्ठो ऽअस्याऽ उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्वनो व्वरुण रराणो व्रीहि मृडीक सुहवोन ऽएधि स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ।।५।।

ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽ असि । अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजः स्वाहा। इदमग्नये अयसे न मम ।।६।।

ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नोऽ अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ।।७।।

ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधमं व्विमध्यम श्रथाय । अथा व्वयमादित्यव्रते तवानागसोऽअदितये वरुणायादित्यायादितये न मम ।।८।। स्याम स्वाहा । इदंॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम ।।९।।

इस इकाई में हवन बलिविधान पूर्णाहूति उत्तर पूजन एवं विसर्जन के विषय में निर्देश दिया गया है इन उक्त विधान को विस्तार से जानने के लिए खण्ड एक की इकाई पांच का अनुसरण करें।

खण्ड 4 : पूराणार्दि यज्ञ

इकाई 16 : दश विध स्नानानि

प्रस्तारवना

प्रस्तुरत इकाई में पूराणार्दि महायज्ञ महायज्ञ में प्रयुक्ति दश विधि स्ना ान जल यात्रा क्षौर कर्म मण्डनप प्रवेश पंचाग पूजन पर प्रकाशडाला गया है।

उददेश्यर-

प्रस्तुरतइकाई के अध्ययन से पूराणार्दि महायज्ञ महायज्ञ में प्रयुक्त दश विधि स्ना्न जल यात्रा क्षौर कर्म मण्ड प प्रवेश पंचाग पूजन पर सम्पू्र्णज्ञान प्राप्तन होगा।

प्रश्नु -

१. दश विधि स्ना न एवं दधि स्नापन कामंत्र लिखें।

२. गणेश आवाहन का वैदिक मंत्र लिखें।

दसविधि स्नानः किसी भी याज्ञिक कर्म में लगने से पूर्व में किए गए ज्ञाता रात पाप से निवित्त के लिए दस विधि स्नाना का विधान है।

तीर्थेपर्वण्यनुष्ठानेसर्वपातकनाशनम् ।

भस्मादि विविधैर्द्रव्यैः स्नानं दशविधं चरेत् ।।

यस्मिन्कस्मिन्ननुष्ठानेवाह्यान्तरविशुद्धये ।

समग्रफलप्राप्त्यर्थ स्नानं दशविधंस्मृतम् ।।

तीर्थस्नाने तथा प्रायश्चित्तादिषु केचन दशविधस्नानानि कुर्वन्ति ।

सङ्कल्पः -अद्येत्यादि अस्मिन् अमुक तीर्थे स्थाने वा मम देहशुद्ध्यर्थं मनोदेहाश्रित सर्वविधदोष शुद्धयर्थं दशविध स्नानमहं करिष्ये ।

तीर्थ तथा यज्ञ स्थान पर दस विधि स्नान करने से देह तथा आत्मशुद्धि होती है। ऐसा मनीषियों का मत है।

अथ हेमाद्रि प्रोक्त स्नान सङ्कल्पः

श्रावण्यादिनैमित्तिकस्नानेप्रायश्चित्तेतीर्थस्नानादिषुचहेमाद्रिप्रोक्तं महास्नान सङ्कल्पं कुर्यात् ।।

स्वस्ति श्री समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारणस्य रक्षाशिक्षाविचक्ष-णस्य प्रणतपारिजातस्य अशेषपराक्रमस्य श्रीमदनन्तवीर्यस्यादिनारायणस्य अचिन्त्यापरिमितशक्त्या ध्रियमाणस्य महाजलौघमध्येपरिभ्रममाणानामनेककोटि ब्रह्माण्डानामेकतमेऽव्यक्तमहदहंकारपृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशाद्यावरणैरावृते अस्मिन्महति ब्रह्माण्डखण्डेआधारशक्तिश्रीमदादिवाराह दंष्ट्राग्रविराजिते कूर्मानन्त वासुकितक्षक कुलिक कर्कोटक पद्म महापद्म शंखाद्यष्टमहानागैर्धियमाणेऐरावत पुंडरीककुमुदांजन पुष्पदन्त सार्वभौमसुप्रतीकाष्टदिग्गजोपरि प्रतिष्ठितानां अतल वितल सुतल तलातल रसातल महातल पाताल लोकानामुपरिभागे भूर्लोक भुवर्लोक स्वर्लोक महर्लोक जनोलोक तपोलोक सत्यलोकाख्य सप्तलोकानामधोभागे चक्रवालशैलमहावलय नागमध्यवर्तिनो महाफणिराजशेषस्य सहस्रफणा मणिमण्डलमण्डिते दिग्दन्ति शुण्डादण्डोदंडिते अमरावती अशोकवती भोगवती सिद्धवती गान्धर्ववती काञ्च्यवन्ती अलकावती यशोवतीति पुण्यपुरी प्रतिष्ठिते लोकालोकाचलवलयिते लवण इक्षु सुरा सर्पिः दधि क्षीरोदकार्णव परिवृते जम्बू प्लक्ष कुश क्रौञ्च शाक शाल्मलि पुष्कराख्य सप्तद्वीपयुतेन्द्र कांस्य ताम्रगभस्ति नाग सौम्य गन्धर्व चारणभारतेति नवखण्ड मण्डिते सुवर्णगिरि कर्णिकोपेत महासरोरुहाकार पञ्चशत्कोटि योजनविस्तीर्ण भूमण्डले अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका द्वारावतीति सप्तपुरी प्रतिष्ठिते सुमेरुस्वर्णप्रस्थ चण्डप्रस्थ निषधत्रिकूट रजतकूट ताम्रकूट हिमवद्विन्ध्याचलानां हरिवर्ष किंपुरुष भारतवर्ष योश्च दक्षिणे नवसहस्र योजन विस्तीर्णे मलयाचल सह्याचल विंध्याचलानामुत्तरे चांद्रसूक्तावतक रमणक महारमणक पाञ्चजन्य सिंहललंकेति नवखण्ड मण्डिते गङ्गा भागीरथी गोदावरी क्षिप्रा यमुना सरस्वती नर्मदा तापी चन्द्रभागा कावेरी पयोष्णी कृष्णावेण्या भीमरथी तुङ्गभद्रा ताम्रपर्णी विशालाक्षी चर्मण्वती वेत्रवती कौशिकी गण्डकी विश्वामित्री सरयू करतोया ब्रह्मानंदा महीत्यनेक पुण्यनदी विराजिते भरतखण्डे भारतवर्षे जम्बूद्वीपे रामक्षेत्रे कूर्मभूमी साम्यवति कुरुक्षेत्रादिसमभूमौ मध्यरेखायाः पूर्वदिग्भागे श्रीशैलात्पश्चिमदिग्भागे श्रीकृष्णा वेण्या कावेरी मध्यदेशे तुङ्गभद्राया उत्तरे तीरे

श्रीगोदावर्या दक्षिणे तीरे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे हेमकूट मातङ्गमाल्यवत् किष्किन्धा सहित पंचक्रोश मध्ये चम्पकारण्य नैमिषारण्य बदरिकारण्य कामिकारण्य दण्डकारण्यार्बुदारण्य धर्मारण्य पद्मारण्य जम्बुकारण्य समस्त पुण्यारण्यानां मध्यदेशे भास्करक्षेत्रे सकलजगत्स्रष्टुः परार्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथमदिवसे अह्नो द्वितीये यामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादि द्वात्रिंशत्कल्पानां मध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायम्भुवादि मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृत त्रेता द्वापर कलिसंज्ञकानां चतुर्णा युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमचरणे भरतवर्षे भारतखण्डे जम्बूद्वीपे रामक्षेत्रे परशुरामाश्रमे दण्डकारण्यदेशे श्रीगोदावर्याः पश्चिमदिग्भागेश्रीमल्लवणाब्धेः उत्तरे तीरे श्रीशालिवाहन शाके बौद्धावतारे प्रभवादि षष्टि संवत्सराणां मध्येऽस्मिन् वर्तमाने अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौतुरुष्क स्पृष्ट द्रव्योपभोग तुरुष्कस्पर्श तुरुष्कदेशनिवासादीनाम् कुग्रामवास वानिष्ठुर दुर्गृह दुर्भाण्ड दुर्भोजनापक्वापाक यत्नकटकान्न नखनिकृन्तन नदीलंघन समुद्रस्नान ब्राह्मणवृत्तिच्छेदन अभक्ष्यभक्षणानिमित्त भार्याविसर्जन ब्राह्मणद्वेष द्विजभेद मित्रभेद स्त्रीपुरुषभेद स्थूलसूक्ष्म जीव हिंसन क्रूरकर्मानृत लुब्ध कपि शुन चौर पाखंड नारी लंपट चाण्डाल शवास्थि स्पर्श गुंजनभक्षण लशुनभक्षण मसूरान्न भक्षण मार्जारोच्छिष्टभोजन पतित पंक्ति भोजन पतितसंभाषणादीनाम् बालस्तेय ऋणापाकरणानाहिताग्नि तापक्रय परिवेद भृतकाध्ययनादान भृत्याध्यापन परदार परवित्त वात्सल्य स्त्री शूद्र क्षत्रविट् बन्धुनिन्दार्थोपजीवन नास्तिक्य व्रतलोप कुप्यपशु स्वाध्याय त्याग स्तेयायाज्ययाजन पितृ मातृ सुतत्याग तडागाराम विक्रय कन्यासंदूषण परनिंदकया जन तत्कन्याप्रदान कौटिल्य व्रतलोपन स्वार्थक्रियारम्भ परस्त्रीनिषेवण स्वाध्यायाग्नि सुतत्याग बांधवत्यागेन्धनार्थ द्रुमच्छेदन स्त्री हिंसौषधिजीवन हिंस्रमंत्रविधान व्यसनात्मविक्रय शूद्र प्रेष्य हीनयोनि निषेवणानाम् परान्नपुष्टत्वा सच्छास्त्राधिगतप्राकाराधिकारित्व भार्याविक्रयादि अपपातकानाम् तथा एकादशाहादि श्राद्धान्न भोजन शूद्रदत्त घृतादिभोजन आपोशनरहितभोजन यज्ञोपवीतरहितान्नभोजन परान्नभोजन रेतोमूत्रादि मृल्लोष्टभक्षण वैश्वदेव रहितादि दूषितान्नभोजन शूद्रादिम्लेच्छान्नभोजन पुंसवन सीमंतोन्नयनादि भोजन जातकर्मादिभोजन नीलवस्त्र

परिधान भोजनोच्छिष्ट भोजन कुत्सितपंक्तिभोजन चाण्डाल कूप भांडोदकपान चांडाल स्पृष्ट जलक्षीरादिपान द्विजद्रव्यापहरण श्राद्धदिनेगमन दिवामैथुन उन्मादक द्रव्यभक्षण सूर्योदयास्त शयन पतितादि दुष्ट प्रतिग्रहप्रायश्चित्त द्रव्यप्रतिग्रह स्वनिषिद्ध वृत्तिधनार्जन मिथ्या ब्राह्मणक्रोधोत्पादन बलात्कारित म्लेच्छादि संसर्ग म्लेच्छ भाषण ब्राह्मणान्नाह्वान देवागारकृतेष्ट शिलादिहरण व्रतभङ्ग खरोष्ट्रादियान कृतोपकारविस्मरण विविध विद्योपजीवन परमसन्मानदूरीकरण गुणयुक्तस्यापमान करणाकाल भोजनादेश भोजनसार्वकालिक परद्वेष्याभिनिवेश परमार्थाचिन्तन यजनयाजन. होमदानान्तराय करणादि सर्वपापानां विनाशार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं देव ब्राह्मण सवितृ सूर्यनारायणसन्निधौ अमुकतीर्थे स्नानमहं करिष्ये

।।परस्परानुरक्तद्वेषोत्पादनेन्द्रधनुःप्रदर्शन श्रद्धनिमंत्रितशिवनिर्माल्यस्पर्शशिवद्रव्योपजीवन विष्णुद्रव्योपजीवनोपाधिकत्रैवर्णिक देवार्चन द्वेष्याभिचारण कूटमंत्र कूटहोमकरणपूज्यापूजनापूज्यपूजन परवृत्तिहरण शरणागत परित्राणाकरणकपटपरविवाहान्तरायकरण देवर्षि द्विज निन्दाकरण

।। इति हेमाद्रि प्रोक्त स्नान सङ्कल्पः ।।

कलश यात्रा -

किसी भी यज्ञ के प्रारम्भ के पूर्व जल यात्रा का विधान हैं समस्त बनधु बान्धव सहित तथा समस्त शिष्य सहित गाजे बाजे के साथ किसी तीर्थ या सरोवर अभव हो तो कूप के पास जा कर सबसे पहले जल जीव तथा स्थल मातृका का अवहन करना चाहिए।

जल यात्रा विधि:

आयात च च देवी यमुना कूर्मयानस्थित सदा । प्राची सरस्वती पुण्या पयोष्णी गौतमी तथा ।। ३ ।। उर्मिला चन्द्रभागा सरयू गण्डकी तथा । वितस्ता च विपाशा च नर्मदा च पुनः पुनः ।।४।। कावेरी कौशिकी चैव गोदावरी महानदी । मन्दाकिनी वशिष्ठा च तुङ्गभद्रा शशिप्रभा ।। ५ ।। अमरेशः प्रभासञ्च नैमिषं पुष्करं तथा । • कुरुक्षेत्रं प्रयागं गङ्गासागर सङ्गमम् ।।६।। एता नद्यश्च तीर्थानि यानि सन्ति महीतले । तानि सर्वाणि आयान्तु पावनार्थ द्विजन्मनाम् । ७ ।। इति नदीनां तीर्थानाञ्चावाहनं कृत्वा गङ्गादिनदीभ्यो नमः पुष्करादितीर्थेभ्यो नमः सम्पूज्य जलमध्ये वरुणदेवस्य पूजनम् । ॐ इमम्मे वरुणश्श्रुधी० इति मन्त्रेण वरुणं सम्पूज्य जले ॐ पञ्च नद्यः० इति

मन्त्रेणपञ्चामृतस्य प्रक्षेपः । पश्चात् जले द्वादश आज्याहुतीर्जुहुयात् । ॐ अद्भ्यः स्वाहा । ॐ वार्भ्यः स्वाहा। ॐ उदकाय स्वाहा । ॐ तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा । ॐ स्रवन्तीभ्यः स्वाहा । ॐ स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा । ॐ कूप्याभ्यः स्वाहा । ॐ सूद्याभ्यः स्वाहा । ॐ धार्याभ्यः स्वाहा । ॐ अर्णवाय स्वाहा । ॐ समुद्राय स्वाहा । ॐ सरिराय स्वाहा ।

अथवा ॐ अद्भ्यः सम्भृतः० इत्यादिमन्त्रैः घृतेन दध्ना वा स्रुवेण विंशतिवारं आहुतीर्दद्यात्।

ततोऽर्घ्यपात्रे जलेन साकं गन्धाक्षत पुष्पाणि गृहीत्वा नद्यां जलाशये वा वारत्रयार्घ्यं दद्यात्। पश्चात् नद्यां श्रीफलं प्रक्षिपेत् । ततो देवतानां विसर्जनं कृत्वा आचार्यादि ऋत्विजां सुवासिनीनाञ्च पूजनं विधाय दक्षिणां च दद्यात् । पश्चात् पूजितान् नवकलशान् उत्थाप्य नवसंख्यानां सुवासिनीनां मस्तकोपरि धारयेत् । ततो यजमानः वेदमन्त्रैः भगवन्नामकीर्तनं कुर्वन् आचार्यादि ऋत्विग्भिः सह यज्ञस्थलं प्रति गच्छेत्। अर्धमार्गे स्थित्वा इन्द्रादि दश दिक्पालानां क्षेत्रपालस्य च आवाहनं पूजनं च कृत्वा सर्वेभ्यः बलिं दद्यात् । ततो यज्ञ मण्डपस्य पश्चिम द्वारस्य पूजनं विधाय तेनैव द्वारेण मण्डपे प्रविश्य पूजित नवकलशान् यज्ञ मण्डपस्य वारुण मण्डलोपरि स्थापयेत्। हरिः ॐ तत्सत्

तथा इन सब कर्मो के पश्चात नदी में गन्ध अक्षत पुष्प श्रीफल दक्षिणा इत्यादि

छेड़कर नौ या नौ से ज्यादा विषय संख्या में कन्या या सुहागिन स्त्रियों के साथ या मण्डप की तरफ प्रस्थान करना चाहिए साथ में ब्राम्हणों द्वारा वेद मंत्र का वाचन होता रहना चाहिए मण्डप और जहां से जल यात्रा प्रारम्भ् हुई हो उसके मध्य में रूक कर इन्द्रादि तथा दसपाल तथा क्षेत्रपाल वा आवहन पूजन करना चाहिए।

मण्डप प्रवेश

मण्डप के समीप जलयात्रा पहुंचने पर प्रामाश्चित संकल्प करके तथा देव पितरो को प्रणाम करके मण्डप के प्रवेश करना चाहिए।

पंचांग पूजन

पूजा करने वाले साधक को पूर्वामुख बैठकर अपनी बायी ओर घ्ण्टा धूप घी का दीपक तथ दाहिनी ओर शंख जलपात्र पूजन सामग्री रखकर पूजन कार्य में रत होना चाहिए।

कर्मपात्र पूजन

एक पात्र में जल रखकर पंचोपचार पूजन करना चाहिए।

पूजनारम्भ विधिः

पूजन कर्ता को पूर्वाभिमुख बैठकर अपने बायीं ओर घण्टा , धूप, घृत का दीपक तथा दाहिनी ओर शंख , जल पात्र तथा पूजन सामग्री रखकर पूजन करना चाहिये।

कर्मपात्र पूजनम् - अकुशमुद्रया तीर्थान्यावाह्य गन्धादिभिः वरुणं सम्पूज्य-

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती ।

नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।

पवित्री धारण- कुशा के मध्यम से आचार्य निम्न मंत्र बोलता हुआ पवित्र करे।

पवित्रीकरण मंत्र-

आचम्यॐ केशवाय नमः । ॐ माधवाय नमः । ॐ नारायणाय नमः । , हस्त प्रक्षालनम् । ॐ गोविन्दाय नमः । इसके बाद प्राणायाम करें। पवित्रधारणम्-- ॐ

पवित्रेस्त्थो वैष्णव्यौसवितुर्व्वः प्रसवऽउत्त्पुनाम्य च्छिद्रेणपवित्रेणसूर्यस्यरश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्त्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

पवित्रकरणम्ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।

यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।

मंगल तिलकम् -- ॐ युञ्जन्ति ब्रध्नमरुपंचरन्तं परितस्थुषः रोचन्ते रोचनादिवि।

युञ्जन्तस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे शोणाधृष्णु नृवाहसा ।।

आसन शुद्धिः -- ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।

शिखा बन्धनम्-- ब्रह्म वाक्य सहस्त्राणि रुद्र वाक्य शतानि च ।

विष्णु स्मरण मात्रेण शिखा बन्धन करोम्यहम् ।।

आसन शुद्धि

कुशा के माध्यम से आसन पर कर्मपात्र पर जल छिड़कना चाहिए।

शिखा बन्धनम- ब्रम्ह वाक्य सहस्त्राणि रूद्र वाक्य शतनि च।

विष्णु स्मरण मात्रेण् शिख् बन्धन करोम्यहम्।

पृथिवी पूजनम्

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी । यच्छानः शर्म्मसप्प्रथाः ।। ॐ भूर्भुवः स्वः आधार शक्त्यै पृथिव्यै नमः , भगवते वाराहाय नमः , सिद्धासनाय नमः, कमलासनाय नमः, कूर्मासनाय नमः, आवाहयामि पूजयामि । पूजन कर प्रार्थना करें--

प्रार्थना

इष्टं मे त्वं प्रयच्छस्व त्वामहं शरणं गतः ।पु

त्रदार धनायुष्यंकरीभव ||

अनया पूजया सवराहः पृथिवी देवी प्रीयतां न मम ।

स्वस्ति वाचनम्

हस्ते अक्षत पुष्पाणि गृहीत्वा आ नो भद्रादीन् मंगल मंत्रान् पठेयुः

हरिः ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोदब्धासोऽअपरीता सऽउद्भिदः।

देवा नो यथा सदमिद्वृधे ऽअसन्नप्प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥१॥

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवाना रातिरभिनो निवर्त्तताम्। देवाना सख्यमुपसेदिमाव्वयन्देवा नऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥ २ ॥

निविदाहूमहेव्वयम्भगम्मित्त्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम् । अर्य्यमणंव्वरुण सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥३॥

तन्नो व्वातो मयोभु व्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः । तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना युवम् ॥४॥

तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्प्पतिन्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये । । ५ । । स्वस्ति न इन्द्रोतान्पूर्व्वयाव्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः

देवार्धन विधि प्रबन्धः

मसिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥६॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः पानी विदथेषु जग्मयः । अग्निजिह्वामनवः सूरचक्षसो विश्वेदेवा अवसागमन्निह । ॥७॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितंय्यदायुः ॥ ८ ॥ शतमिन्नु शरदो ऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् । पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः । । ९ । । अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्मातासपितासपुत्रः । व्विश्वे देवाऽअदितिः पञ्चजनाऽ अदितिर्जातमदितिर्जनित्त्वम् । १० ॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः व्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि ॥ ११ ॥ यतोयतः समीहसे ततो नोऽअभयकुरु । शन्नः कुरुप्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः ॥ १२ ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिःसुशान्तिर्भवतु, सर्वारिष्ट शान्तिर्भवतु ।

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः ।उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । शचीपुरन्दराभ्यां नमः । मातृपितृ चरण कमलेभ्यो नमः । इष्टदेवताभ्यो नमः । कुलदेवताभ्यो नमः । ग्रामदेवताभ्यो नमः । स्थानदेवताभ्यो नमः । वास्तुदेवताभ्यो नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः । सर्वेभ्यो

तीर्थेभ्यो सर्वाभ्यो शक्तिभ्यो एतत् कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः । अविघ्नमस्तु । कल्याणमस्तु । अयमारम्भः शुभाय भवतु ।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।लम्बोदरश्चविकटोविघ्ननाशो विनायकः ।धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षोभालचन्द्रो गजानन: द्वादशैतानिनामानिपठेच्छृणुयादपि ।

स्वस्ति वाचनम्

विद्यारम्भेविवाहेच प्रवेशे निर्गमेतथा ।संग्रामे सङ्कटेचैवविघ्नस्तस्यशुक्लाम्बरधरंदेवं शशिवर्ण चतुर्भुजम् ।प्रसन्नवदनंध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ।।अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थंपूजितोसुरासुरैः ।सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतयेनमः ।।सर्वमङ्गलमङ्गल्येशिवेसर्वार्थसाधिके ।शरण्येत्र्यम्बकेगौरिनारायणिनमोऽस्तुते ।।सर्वदासर्वकार्येषुनास्तितेषाममङ्गलम् ।येषां हृदयस्थोभगवान् मङ्गलायतनोहरिः ।।तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव । विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ।।लाभस्तेषां जयस्तेषांकुतस्तेषां पराजयः ।येषामिन्दीवरश्यामोहृदयस्थोजनार्दनः ।।यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्रपार्थो धनुर्धरः ।तत्रश्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ||अनन्यांश्चिन्तयन्तो मां येजना: पर्युपासते ।तेषांनित्याभियुक्तानां योगक्षेमंवहाम्यहम्।।स्मृतेसकल कल्याणं भाजनंयत्रजायते ।पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ।।सर्वेष्वारम्भकार्येषुत्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ।देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः ।।विश्वेशं माधवं दुण्ढिं दंडपाणिंचभैरवम् ।वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणि कर्णिकाम् ।।वक्रतुण्ड निर्विघ्नंमहाकायसूर्यकोटि समप्रभ ।कुरुमे देव सर्वकार्येषु सर्वदा | |विनायकं गुरुंगुरुं भानुंभानुं ब्रह्म विष्णु महेश्वरान् ।सरस्वतींप्रणम्यादौसर्वकार्यार्थ सिद्धये ।।

संकल्प

दाहिने हाथ में गंध अक्षत पुष्प द्रव्य एवं जल लेकर सङ्कल्प करें-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणो अह्नि द्वितीये परार्धे विष्णु पदे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे

आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तेक देशे अमुकक्षेत्रे अमुकनगरे (ग्रामे वा) श्री गङ्गा यमुनयोः अमुकदिग्भागे देवब्राह्मणानां सन्निधौ श्रीमन्नृपति वीर विक्रमादित्य समयात अमुक संख्या परिमिते प्रवर्त्तमान सम्वत्सरे प्रभवादि षष्टि सम्वत्सराणां मध्ये अमुक नाम्नि सम्वत्सरे, अमुकायने, अमुकगोले, अमुकऋतौ, अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे, अमुकनक्षत्रे, अमुकयोगे, अमुककरणे, अमुक राशि स्थिते चन्द्रे , अमुक राशि स्थिते श्रीसूर्ये अमुक राशि स्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथं राशि स्थान स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह गण गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्माहं (वर्मा गुप्तो वा) सपरिवारः ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त पुण्य फल प्राप्त्यर्थं मम ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं अप्राप्त लक्ष्मी प्राप्त्यर्थं प्राप्त लक्ष्म्याश्चिरकाल संरक्षणार्थं सकल मनोभिलषित कामना संसिद्ध्यर्थं लोके सभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजय लाभादि प्राप्त्यर्थं समस्त भयव्याधि जरा पीडा मृत्यु परिहार द्वारा आयुः आरोग्य ऐश्वर्यादि अभिवृद्ध्यर्थं तथा च मम जन्मराशेः सकाशाद्ये केचिद्विरुद्ध चतुर्थाष्टम द्वादश स्थान स्थिताः क्रूरग्रहाः तैः सूचितं सूचयिष्यमाणञ्च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशद्वारा शुभफल प्रात्यर्थं पुत्रपौत्रादि सन्ततेरविच्छिन्न वृद्ध्यर्थं आदित्यादि नवग्रह अनुकूलता सिद्ध्यर्थं आधिदैविक आधिभौतिक आध्यात्मिक तापत्रयोपशमनार्थं धर्म अर्थ काम मोक्ष फलावाप्त्यर्थं यथोपलब्धोपचारैः अमुक देवस्य पूजन कर्मणि निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं गणपत्यादि देवतानां आवाहनं स्थापनं पूजनं च करिष्ये ।

श्री गणेशाम्विका अर्चनम

दो सुपारियों पर मौली लपेटकर उनको किसी पात्र में चावल पर अष्टदल कमल बनाकर स्थापित करें। फिर हाथ में अक्षत पुष्प लेकर नीचे लिखे मंत्रों द्वारा ध्यानकर आवाहन करें।

ध्यानम् –

विघ्नध्वान्त निवारणैकरतरणि विघ्नाटवीहव्यवाड् विघ्नव्याल कुलाभिमानगरुड़ो विघ्ने भपञ्चाननः ।

विघ्नोतुङ्ग गिरिप्रभेदनपवि र्विघ्नाम्बुधेर्वाडवो विघ्नान्यौघ घनप्रचण्डपवनो विघ्नेश्वरः पातु नः ।। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ध्यायामि ।

आवाहनम्-

हे हेरम्ब त्वमेह्येहि अम्बिका त्र्यम्बकात्मज । सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभ पितुः पितः ।। नागास्यं नागहारं त्वं गणराजं चतुर्भुजम् । भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशाङ्कुशपरश्वधैः ।। आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः । इहाऽगत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे ।।

मन्त्रः-

ॐ गणानां त्वा गणपति हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति हवामहे निधीनां त्वा निधिपति हवामहे व्वसो मम । आहमजानि गर्भधमात्त्वमजासि गर्भधम् ।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम् ।

लम्बोदरस्य जननी गौरी आवाहयाम्यहम् ।।

गौरी गणेश, कलश

हाथ में अक्षात पुष्प लेकर के गौरी गणेश कलश और नवग्रह का आवहन पूजन करना चाहिए।

पंचाग पूजन तथा पूजन मंत्र खण्ड एक की इकाई से देखें।

इकाई 17 : नान्दीत्मुख श्राद्ध पुण्यावाचन एवं वेदिका स्थानपन्मूजन

प्रस्ता्वना

प्रस्तुूत इकाई मेंान्दीज मुख्श्राद्ध पुण्यावाचन एवं वेदिका स्था पन पूजन पर प्रकाश डाला गया है।

उददेश्यड-

इस इकाई के अध्य यन सेनान्दीर मुख् श्राद्ध पुण्यावाचन एवं वेदिका स्थाजपन पूजन सम्पूकर्ष्ाान प्राप्ती होगा।

प्रश्नय -

१. ब्राम्ह ण पूजन कामंत्र लिखें।

२. पुण्र्या-वाचन में पुष्पी प्राप्ृ करते समय कौन साम्ंत्र बोलना चाहिए।

क. आचार्य पूजन का।

किसी भी पूजा का आधारभूत आचार्य होता है। उसी के निर्देशन में पूजा प्रारम्भ होती है उसके बताए गए मार्ग में चल करके साधक अपनी साधना पूर्ण करता है, देवादि यज्ञ में आचार्य भगवान के समान माना गया है। देवताओं के समान श्रद्धा रखकर आचार्य का पूजन एवं वरण करना चाहिए आचार्य पूजन में मन्त्रों के द्वारा आचार्य का तिलक तथा ससंकल्प आचार्य को दक्षिणा देकर उसका पूजन करना चाहिए, और उसकी अपनी श्रद्धा से संतुष्ट करना चाहिए तथा प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारा कार्य निर्विघन रूप से प्रारम्भ हो और उकसी पूर्णतः ही निर्विघन रूप से हो आपके बताए गए नियमानुसार हम पूजन को तैयार हैं आचार्य हमको उचित निर्देशन देते हुए हमारी पूजा सम्पन्न करवाए, ऐसा मन में भाव लेकर आचार्य का पूजन करना चाहिए।

आचार्यः-

आचार्य किसी भी पूजा में मुख्य भूमिका का निर्वाहन करता है आचार्य को

अपने यजमान के कल्याण हेतु लोभ , मोह और क्रोध से परे होकर यजमान के कल्याण के लिए साथ आए हुए नित्युज्यो (पण्डित सहायक) का सम्मान करते हुए यजमान की कल्याण की कामना के लिए जो ब्राह्मण के नवगुण हैं उनसे मुक्त होकर किसी भी या या पूजा का व आचार्यदल करना चाहिए क्रोध तथा लोभ और काम को त्यागकर वह अपने वैदिक मन्त्र तथा कर्मकाण्ड के माध्यम से साधक की साधना पूर्ण करवाना ही उसका लक्ष्य होना चाहिए।

विशेषः-

आचार्य चयन में ध्यान में देना चाहिए हम उसकी योज्ञता और साधना और कार्य कुशलता जो हमारे पूजन के लिए अत्यन्त आवश्यक है प्रयास यह रहे आचार्य पढ़ा लिखा तथा कुशल वैदिक विद्वान हो जरूरी नहीं की वो पुरोहित या सम्बन्ध में आने वाले आचार्य को ही हम वरण करें। प्रायः आचार्य की योग्यता को ध्यान में रखते हुए चाहिए पुरोहित का का परित्याग नहीं करना चाहिए यदि वह योग्य नहीं भी है तब भी पूजा में उसको अस्थान देकर के गणेश तथा सरल मन्त्रों को उससे जप करवाया जाए।

ब्राह्मण पूजन मन्त्रः-

ऊँ आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्टे[a] राजन्यः शूर ऽइषव्योति याधी महारथो जायतान्दोग्ध्री धेनुर्वोढा नड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः। सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतान्निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पंचन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभम्।
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कंकणम्।।
सर्वांगे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली।
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपाल चूडामणिः।।

यज्ञ की सम्पूर्णतः के लिए पूर्णः वाचन का विधान है पूर्णः वाचन ब्राह्मण या आचार्य द्वारा वचनों के माध्यम सेयजमान के कल्याण की कामना तथा वाचिक संकल्प द्वारा पूर्व अंकित आचार्य पूजन से सम्बन्धित है पूर्णः वाचन में वरुण कलश

के साथ ही एक धातु कलश (लोटा) स्थापना करनी चाहिए जिस प्रकार पूर्व लिखित कलश प्रतिष्ठा में वरुण कलश की प्रतिष्ठा होती है उन्हीं मन्त्रों के द्वारा और उसी विधा से सन्ति कलश की स्थापना एवं पूजन किया जाए साधारण शब्दों में पूजन के समय ही पूजन जिस दिन प्रारम्भ हो उसी दिन कलश के बगल ही एक जल पात्र और रखकर उसकी भी कलश के समान ही पूजन करना चाहिए तथा उसी जलपात्र से पूर्णयः वाचन करना चाहिए।

पूर्णयः वाचन प्रारम्भः-

यजमान पूर्व दिशा या उत्तर दिशा में मुख करके वज्र आशन या बीर आसन पर बैठ जाए तथा अपने हाथ की अंगुलियों को कमलवत बना ले कहने का अभिप्राय ये है कि अंजलि न बनाते हुए दोनों हाथों को तजर्नि को तजर्नि अंगूठे से अंगूठे को जोड़ दें बाकी अंगुलियां खुली रहें। आचार्य पूर्व पूजित जल पात्र यजमान के हाथों में रख दें तथा यजमान उस पात्र को अपने सर पर स्पर्श करवाने तथा ब्राह्मणों द्वारा मन्त्र के माध्यम से अपने दीर्घ आयु की कामना करता हुआ प्रार्थना करे तथा ब्राह्मणों को निम्न मन्त्र का वाचन करना चाहिए-

वरुण प्रार्थना- ॐ पाशपाणे नमस्तभ्यं पह्मिनीजीवनायक।

पुण्याहवाचनं यावत् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।

दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णु पदानि च।

तेनाऽऽयुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।।

मन्त्र के उपरान्त या हो सके तो यह मन्त्र यजमान द्वारा ही बोलवाया जाए वह ज्यादा उत्तम होगा। यदि बोलने में न सक्षम हो तो आचार्य यजमान का प्रतिनिधित्व करे मन्त्र के पूर्ण होने के उपरान्त ही सभी ब्राह्मण

अस्तु दीर्घामायुः।। अस्तु दीर्घमायुः।। अस्तु दीर्घमायुः।।

ॐ त्रीणि पदा व्विचक्क्रमे व्विष्णणुर्ग्गोपाऽअदाब्भ्यः। अतो धर्म्माणि धारयन्।।

इस वाक्य को कहकर के आशीर्वाद प्रदान करें, पुनः हाथ जोड़कर यजमान निम्न मन्त्र बोलता हुआ आशीर्वाद मांगे-

ब्राह्मण-पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुस्तु।

यजमान और ब्राह्मणों का यह संवा

ब्राह्मणः-

इस वाक्य को तीन बार बोलकर यजमान को आशीर्वाद प्रदान करें तथा कलश जमीन पर रखकर यजमान सभी ब्राह्मणों के हाथ में निम्न मन्त्र वाचन करता हुआ जल दे-

यजमान- ऊँ अपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम्।

ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु नः।।

ऊँ शिवा आपः सन्तु। ऐसा कहकर यजमान ब्राह्मणों के हाथ में जल दे।

ब्राह्मण ब्राह्मण-सन्तु शिवा आपः तीन बार इस वाक्य का उच्चारण करें तथा फिर यजमान निम्न मन्त्र बोलता हुआ पुष्प प्रदान करे-

यजमान - लम्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्कर।

सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं सदास्तु मे।। सौमनस्यमस्तु।

ब्राह्मण ब्राह्मण - अस्तु सोमनस्यम् पुनः तीन बार इन वाक्यों द्वारा पुष्प स्वीकार करें , तथा पुनः यजमान ब्राह्मण के हाथों में निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ अक्षत प्रदान करे-

यजमान - अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम्।

यद्यच्छेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम।।

अक्षतं चारिष्टं चास्तु।

ब्राह्मण ब्राह्मण - 'अस्त्वक्षतमरिष्टं च'। - ऐसा स्वीकार करें। निम्न वाक्यों द्वारा तीन बार बोलकर हाथ में गंध प्राप्त करे कहने का अभिप्राय यह है कि प्रत्येक सामग्री यजमान द्वारा मन्त्रों के माध्यम से ब्राह्मणों को प्रदान की जाए तथा ब्राह्मण वैदिक वाक्यों से तीन बार बोलकर आशीर्वाद देते जाए निम्न सामग्री यजमान ब्राह्मण को निम्न लिखित वाक्यों से प्रदान करें-

यजमान - (चन्दन) गन्धाः पान्तु।

ब्राह्मण - सौमंगल्यं चास्तु।

यजमान - (अक्षत) अक्षताः परन्तु।

ब्राह्मण - आयुष्यमस्तु

यजमान - (पुष्प) पुष्पाणि पान्तु।

ब्राह्मण - सौश्रियमस्तु।

यजमान - (सुपारी-पान) सफलताम्बूलानि पान्तु।

ब्राह्मण - ऐश्वर्यमस्तु।

यजमान - (दक्षिणा) दक्षिणाः पान्तु।

ब्राह्मण - बहुदेयं चास्तु।

यजमान - (जल) आपः पान्तु।

ब्राह्मण - स्वर्चितमस्तु।

यजमान - (हाथ जोड़कर) दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चायुष्यं चास्तु।

विप्राः - ऊँ तथाऽस्तु। तथाऽस्तु।

यजमानः- (हाथ जोड़कर) यं कृत्वा सर्व वेद-यज्ञ-क्रियाकरण-कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोंगारमादिं कृत्वा ऋग्-यजुः सामऽऽथर्वाऽशीर्वचनं बहु ऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

विप्राः - ऊँ वाच्यताम्। वाच्यताम्। वाच्यताम्।

यजमानः (हाथ जोड़कर) - ऊँ व्रत-जप-नियम-तपः-स्वाध्याय-क्रतु-शम-दम-दया-दान-वशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्।

ब्राह्मणाः - ऊँ समाहित-मनसः स्मः। समाहित-मनसः स्मः। समाहित-मनसः स्मः।

यजमानः - ऊँ प्रसीदत्त भवन्तः।

ब्राहमणाः - ऊँ प्रसन्नाः स्मः। प्रसन्नाः स्मः। प्रसन्नाः स्मः।

इसके बाद जल पात्र उठा करके यजमान के सम्मुख दो पात्र रखें जाएं जिसको प्रथम और द्वितीय की संज्ञा दी जाए निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ जल प्रथम पात्र को डाले।

पुष्याहवाचन

पुण्याह वाचन कलश उत्थाप्य दक्षिणपाख्ो एकस्मिन कांस्यपात्र शरावव: (दक्षिणभागे संस्थापति पात्रे) शनैः शनैः कलशाद् जलं पातयेत्।)

यजमान:- ऊँ शान्तिरस्तु। ऊँ पुष्टिरस्तु। ऊँ तुष्टिरस्तु। ऊँ वृद्धिरस्तु। ऊँ अविघ्नमस्तु। ऊँ आयुष्ममस्तु। ऊँ आरोग्यमस्तु। ऊँ शिवमस्तु। ऊँ शिवं कर्माऽस्तु। ऊँ कर्मसमृद्धिरस्तु। ऊँ धर्मसमृद्धिरस्तु। ऊँ वेदसमृद्धिरस्तु। ऊँ शास्त्रसमृद्धिरस्तु। ऊँ धन-धान्यसमृद्धिरस्तु। ऊँ पुत्रपौत्र-समृद्धिरस्तु ऊँ इष्टसम्पदस्तु।

तथा अब निम्न मन्त्र को पढ़ते हुए द्वितीय पात्र में

ऊँ अरिष्टनिरसनमस्तु। यत्पापं रोगं अशुभं अकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।

पुनः निम्न मन्त्र को पढ़ते हुए प्रथम पात्र में -

ऊँ यच्छ्रेयस्तदस्तु। ऊँ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। ऊँ उत्तरोत्तरमहरहरभि-वृद्धिरस्तु। ऊँ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ऊँ तिथिकरणे सुमुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्। ऊँ दुर्गा-पांचालयौ प्रीयेताम्। ऊँ अग्निपुरोगाः विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ऊँ इन्द्रपुरोगाः मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ऊँ वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ऊँ माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। ऊँ ब्रह्मपुरोगा सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ऊँ विष्णु-पुरोगाः सर्वे-देवाः प्रीयन्ताम्। ऊँ ऋषयश्छन्दांसि-आचार्या वेदा देवा यज्ञाश्च प्रीयन्ताम्। ऊँ ब्रह्मा ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। ऊँ अम्बिका-सरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ऊँ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ऊँ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्।

ऊँ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ऊँ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ऊँ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। ऊँ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। ऊँ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। ऊँ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ऊँ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ऊँ सर्वाः ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ऊँ सर्वा इष्टदेवताः प्रीयतन्ताम्।

तथा द्वितीय पात्र में निम्न मन्त्रां द्वारा-

ऊँ **हताश्च ब्रह्मद्विषः। हताश्च परिपन्थिनः। ऊँ हताश्च विघ्नकर्त्तारः। ऊँ शत्रवः**

पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु घोराणि। ॐ शाम्यन्तु पापानि। ॐ शाम्यन्तु ईतयः। ॐ शाम्यन्तूपद्रवाः।

पुनः निम्न मन्त्र द्वारा प्रथम पात्र जल डाला जाए-

पात्रे - ॐ शुभानि वर्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा ओषधयः सन्तु। ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहुतयः सन्तु। ॐ शिवा अतिथयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्। ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

ॐ शुक्राऽंगारक-बुध-बृहस्पति-शनैश्चर-राहु-केतु-सोम-सहितादित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान पर्जन्यः प्रीयताम। ॐ भगवान स्वामी महासेनः प्रीयताम्। पुरोऽनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु। याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। प्रायः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

इसके बाद कलश बगल रख दें तथा प्रथम पात्र का जल घर तथा परिवार के लोगों के ऊपर छिड़कवा दें तथा द्वितीय पात्र का जल नैपित्य था घर के किसी सदस्य द्वारा घर के बाहर एकान्त में डलवा दें पुण्यः वाचन करते समय सावधानी के साथ ही पात्रों में जल डालें प्रथम पात्र का जल इधर उधर गिरजाए तो कोई बात नहीं मगर द्वितीय पात्र का जल बड़ी सावधानी पूर्वक द्वितीय पात्र में ही डालना चाहिए तो इधर उधर नहीं गिरना चाहिए और ना हि उसके छीटें कहीं पड़ने चाहिए जल के मार्जन के उपरान्त बताए गए नियमानुसार निम्न वैदिक मन्त्रों द्वारा ब्राह्मण अपना आशीर्वाद प्रदान करें-

यजमान - ॐ एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

ब्राह्मण - वाच्यताम्।

इसके बाद यजमान फिरसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करे-

यजमान - ॐ ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्।

(पहली बार) वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ऊँ पुण्याहम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः! मम ..... करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः

(दूसरी बार) पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ऊँ पुण्याहम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम ....करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः

(तीसरी बार) पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ऊँ पुण्याहम्।

ऊँ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।

पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।

यजमान - पृथिव्यामुद्धतायां तु यल्कल्याणं पुरा कृतम्।

(पहली बार) ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारर गृहे

करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ऊँ कल्यापाम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

(दूसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ऊँ कल्याणम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः। मम सकुटुम्बस्य सपिरवारस्य गृहे

(तीसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ऊँ कल्याणम्।

ऊँ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्या शूद्राय चार्याय च स्वाह चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे

कामः समृद्ध्यतामुप मादो नमतु।

यजमान - ऊँ सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता।

(पहली बार) सम्पूर्णा सुप्रभावा च तामृद्धिं प्रब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ऊँ ऋद्ध्यताम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

(दूसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ऊँ ऋद्ध्यताम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

(तीसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ऊँ ऋद्ध्यताम्।

ऊँ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम। दिवं पृथिव्या अध्याऽरुहामाविदाम दिवान्त्स्वर्ज्योतिः।।

यजमान - ऊँ स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा।

(पहली बार) विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः।। भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बभ्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणाय अमुककर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ऊँ आयुष्मते स्वस्ति।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणाय अमुककर्मणे (दूसरी बार) स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ऊँ आयुष्मते स्वस्ति।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणाय अमुककर्मणे (तीसरी बार) स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ऊँ आयुष्मते स्वस्ति।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।

स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

यजमान - ॐ समुद्रमनाज्जाता जगदानन्दकारिका।

(पहली बार) हरिप्रिया च मांगल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणाय अमुककर्मणः श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ अस्तु श्रीः।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः (दूसरी बार) श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ अस्तु श्रीः।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः (तीसरी बार) श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ अस्तु श्रीः।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण।

यजमान - ॐ मृकण्डुसूनोरायुर्यद् ध्रुवलामशयोस्तथा।

आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम्।।

ब्राह्मण - ॐ शतं जीवन्तु भवन्तः।

ॐ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।

मुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।।

यजमान - ॐ शिवगौरीविवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे।

धनदस्य गृहे या श्रीरस्मां सास्तु सद्मनि।।

ब्राह्मण - ॐ अस्तु श्रीः।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय। पशूना रूपमन्नस्य रसो यशः

श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा।।

यजमान - प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्।

भगवांछाश्वतो नित्यं नो वै रक्षतु सर्वतः।।

ब्राह्मण - ऊँ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्।

ऊँ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव।

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय स्याम पतयो रयीणाम्।।

प्रण्यः वाचन के उपरान्त प्रथम पात्र का जल लेकर ब्राह्मण यजमान की पत्नी को यजमान बाग में बिठाकर निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा तथा सम्भव हो तो पूरे परिवार को पूजा स्थल पर बैठकार प्रथम पात्र के जल से निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ माजन करे-

यजमान - आयुष्पते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे।

श्रिये दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः।।

देवेन्द्रस्य यथा स्वस्ति यथा स्वस्ति गुरोर्गृहे।

एकलिंगे यथा स्वस्ति तथा स्वस्ति सदा मम।।

ब्राह्मण - ऊँ आयुष्मते स्वस्ति।

ऊँ प्रति पन्थामपद्यहि स्वस्तिगामनेहसम्।

येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु।।

ऊँ पुण्याहवाचनसमृद्धिरस्तु।।

यजमान - अस्मिन् पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिरुपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात् श्रीमहागणपतिप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु।

दक्षिणाका संकल्प - कृतस्य पुण्याहवाचनकर्मणः समृद्धर्थं पुण्याह

ऊँ पयः पृथिव्यांपय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो थाः।

सरस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

ऊँ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पंचधा सो

देशेऽभवत्सरित्।।

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमा सीद।।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।

पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।

सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभि विश्चाम्यसौ।
(शु० य० 9/30)

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।

सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिंचामि।।

(शु० य० 18/3)

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।

अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभि षिंचामि सरस्वत्यै।

भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभि षिंचामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभि षिंचामि।।(शु० य० 20/3)

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भंद्रतन्न आ सुव।।

ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः।

सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे।। (शु० य० 20/7)

ॐ त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄँ पाहि शृणुधी गिरः।

रक्षा तोकमुत त्मना।(शु० य० 18/77)

ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्र प्र दातारं तारिष उर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्व शान्ति शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।
शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।
सुशान्तिर्भवतु।
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिंचन्तु सर्वकामार्थसिद्धये।।
शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु। अमृताभिषेकोऽस्तु।।

दक्षिणादान - ऊँ अद्य......कृतैतत्पुण्याहवाचनकर्मणः सांगता-सिद्धर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणोभ्यो यथाशक्ति मनसोद्दिष्टां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

आचार्य वरण पूणर्यावाचन नान्दीमुख श्राद्ध तथा वेदीस्थापन पूजन खण्ड एक के इकाई दो के निर्देशानुसार यहां भी उसी प्रकार आवाहन एवं पूजन करें।

इकाई 18 : असंख्यातरुद्र, इन्द्रादिदशदिक्पाल, अष्टद्वारपाल, पंचलोकपाल, इन्द्रध्वज-हनुमत्ध्वज-स्थापन

प्रस्ता ावना

उक्त इकाई में असंख्यातरुद्र , इन्द्रादिदशदिक्पाल, अष्टद्वारपाल, पंचलोकपाल, इन्द्रध्वज-हनुमत्ध्वज-स्थापन पर प्रकाश डाला गया है।

उददेश्या-

इस इकाई के अध्यजयन से असंख्यातरुद्र, इन्द्रादिदशदिक्पाल, अष्टद्वारपाल, पंचलोकपाल, इन्द्रध्वज-हनुमत्ध्वज-स्थापन आदि का ज्ञान प्राप्त् होगा।

प्रश्नप -

१. मण्डयपपूजन में स्तवम्भोंथ की संख्या ा एवं उनका वर्ण क्या् होता है सविस्ता ुर वर्णन करें।

२. ईशान कोण के स्तयम्भों् का आवाहमंत्र लिखें।

असंख्यात रुद्र -

असंख्यात रुद्र तथा इन्द्राधि दसधिक पाल नवगृह वेदी के दाहिनी ओर दक्षिण दिशा की तरफ असंख्यात रुद्र की रचना करके कलश स्थापन करना चाहिए, मन्त्र-

ऊँ आजिग्घ्र कलशं मह्या त्वा व्विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जा निवर्त्तस्व सानः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्माव्विशताद्द्रयिः।।

ऊँ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम्।

तेषा ऽ सहस्र योजने वधन्वानितन्मसि।।

रुद्राः रुद्रगणाश्चैव असंख्याताः प्रकीर्तिताः।

तेषामावाहये भक्त्या स्वीकुर्वन्त्वर्चनं मम।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः असंख्यात रुद्रेभ्यो नमः , असंख्यात रुद्रान् आवाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा-

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं य्यज्ञ गुं समिमं दधातु। व्विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामोंउ प्रतिष्ठ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यात रुद्रेभ्यो नमः , असंख्यातरुद्रानः सुप्रतिष्ठताः वरदाः भवन्तु।

पूर्व लिखित पूजन विधा द्वारा षोड्शो पचार पूजन करना चाहिए-

ॐ तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।

पशूँस्ताँश्चक्के व्वायव्व्या नाण्ण्या ग्ग्राम्म्याश्च्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्ः- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नाने के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें , निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

गंधोदक स्नान-

इस स्नान के उपरान्त पुनः भगवान को शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्धादक स्नानम् - (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्व्व शुद्धवालो मणि वालस्त ऽआश्विनाः

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपते कर्ण्णा यामा

ऽअवलिप्पा रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु।।

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हुए चढ़ाएं तथा भगवान को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत ऽआगात्स ऽउश्रेयान्भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंगरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें वस्त्र के उपरान्त भगवान को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्त्स्वः।

व्वासो ऽअग्गने व्विश्वरूप गुं संव्व्ययस्व विभावसो।।

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न वाक्य बोलते हुए भगवान को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचनं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात् यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिर्वबृत्याद गुं होश्चिद्या वरिवोवित्तरा

सदादित्यैीयस्त्वा।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमानी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।

त्वामोषधे सोपो राजा व्विद्द्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत।।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया ऽअधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रा नविष्ठ्या मतीयोजान्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान को अर्पित करें मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ॐ ओषधीः प्प्रतिमोध्वं पुष्पतीः प्प्रसूवरीः।

अश्वा ऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्बा चढ़ाएं मन्त्र-

दूर्बा - (गणेश जी को कोमल दूर्बा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्रोण शतेन च।।

दूर्वाड.कुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयाणि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्बा गणेश जी को ही चढ़ती है , देवी जी पर दूर्बा न चढ़ाएं दूर्बा चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्प्राद्ध्वने शूघनासो व्वानप्प्रमियः पतयंत्रि यह्व्वाः।

घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठा भित्रदत्रूर्म्मिभिः पित्र्वमानः।।

सिन्दूर शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामर्द चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान पर चढ़ाएं मन्त्र-

अबीरादि परिमलद्रव्यम् - (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्ज्याया हेतिं प्परिबाधमानः।

हस्तग्घ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्पुमान् पुमा गुं सं प्परिपातु व्विश्वतः।।

नाना-परिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं मन्त्र-

धूपम् - (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्समान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि व्वह्नितम गुं सस्नितमं पप्प्रितमं जुष्ट्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ऊँ अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्जर्योनिरग्निः स्वाहा सूर्य्यर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहह सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वाह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , दीपं दर्शयामि।

(हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर कहकर हाथ धुल लें , तत पश्चात् नैवेद्य भगवान को अर्पण करें, नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ऊँ नाब्भ्या ऽआसीदन्तरिक्ष गुं शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्त्रात्तथा लोकाँ2ऽअकल्प्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ऊँ प्राणाय स्वाहा। ऊँ अपानाय स्वाहा। ऊँ व्यानाय स्वाहा।ऊँ उदानाय स्वाहा।

ऊँ समानाय स्वाहा।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , नैवेद्यं निवेदयामि।

लाचमनीयं समर्पयामि

मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ऋतु फल भगवान को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्य्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व गुं ह सः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान पर चंदन दिड़के अगुलियों के माध्यम से करोधवर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ अ गुं शुना ते अ गुं शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गइधस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतंवत्।

व्वसन्तोऽयासीदाज्ज्यंग्रीषम ऽइध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।

एलादिचु ूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , मुखवासार्थे पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बोल के पश्चात् भगवान को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाता, चक्षो सूर्यो अयात्।

श्रीय द्रवाइदूच पुष्प मुखा दधर्निजात।।

आरती के पश्चात् जल घुमाकर गिरा दें, हाथ पुष्प लेकर पुष्पाँजलि करें मन्त्र-

पुष्पाँजलि -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर!।।

पूजन के उपरान्त निम्न मन्त्रों से प्रार्थना करनी चाहिए-

प्रार्थना

ॐ रुद्राः रुद्रगणाश्च रुद्र-सुहृदाः शान्तं शिवं शंकरम्।

कैलाशाचल-वासिनः शिव-समाः सर्वे च शूलं धराः।।

वृषभस्था च भुजंगहार-भसिता-भस्मांगरागान्विताः।

ते सर्वे शिवरूपि-भद्ररुद्राः कुर्वन्तु नः मंगलम्।।

हाथ में जल लेकर के असंख्यात रुद्र को समर्पित करें-

इस प्रकार प्रार्थना करके पूजन समर्पित करें- अनेन पुजनेन असंख्यात् रुद्राः प्रीयन्तां न मम।।

मण्डप पूजनम्

अथ मण्डप पूजनम्

आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य ।। अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं करिष्यमाण सनवग्रहमख अमुकयाग कर्मणि मण्डप पूजां करिष्ये। तत्राऽदौ षोडश स्तम्भ पूजा-

(१)**ततो मध्यवेदीशान स्तम्भे रक्तवर्णं ब्रह्माणं पूजयेत् - एह्येहि विप्रेन्द्र पितामहादौ हंसाधिरूढ़ त्रिदशैकवन्द्य । श्वेतोत्पलाभास कुशाम्बुहस्त गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ।।**

ॐ ब्रह्मा यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेन ऽ आवः। स बुध्न्या उपमा ऽ अस्य व्विष्टाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः ।। ॐ भू० ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि।। ततो गन्धादिभिः सम्पूज्य ।। नमस्कारः-

कृष्णाजिनाम्बरधरं पद्मासन चतुर्मुख । जटाधर जगद्धातः प्रसीद कमलोद्भव ।।

इति प्रार्थ्य-

ॐ सावित्र्यै नमः ।। ॐ वास्तुदेवतायै नमः ।। ॐ ब्राह्मयै नमः ।। ॐ गङ्गायै नमः ।। इमाः सम्पूज्य स्तम्भमालभेत्

महावेद्यां तमीशाने ऋजुं वसुकरात्मकम् ।

सर्वविघ्नविनाशार्थं स्तम्भं चैवालभाम्यहम् ।।

ॐ ऊर्द्ध्व ऽऊ पुण ऽऊतये तिष्ठा देवो न सविता ।। ऊर्दो व्वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्व्वघद्भिर्व्वि ह्वयामहे ।। ततः स्तम्भशिरसि ।। ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमी-दसदन्मातरं पुरः ।। पितरं च प्रयन्त्स्वः ।। ॐ नागमात्रे नमः ।।

अथ शाखाबन्धनानि पूजयेत् -

नमोऽस्तु शाखाबन्धाय सुदृढाय महात्मने । महामण्डप रक्षार्थ नतयः सन्तु मे

सदा ।।

ॐ यतो यतः समीहसे ततो नो ऽ अभयं कुरु । शं नः कुरु प्प्रजाब्भ्योऽभयं नः पशुभ्यः ।। ॐ सर्वेभ्यो नमः ।। अनेन पूजनेन मध्यवेदीशान कोणस्थितस्तम्भाधिष्ठातृदेवताः प्रीयन्ताम् ।।१।।

(१) ततो मध्यवेद्याग्नेय कोण स्तम्भे कृष्णवर्ण विष्णुं पूजयेत्- आवाहयेत् तं गरुडोपरि स्थितं रमार्द्धदेहं सुराराजवन्दितम्। केशान्तकं चक्रगदाब्जहस्तं भजामि देवं वसुदेवसूनुम् ।। आगच्छ भगवन्विष्णो स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव ।।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पा सुरे स्वाहा ।।ॐ भू० विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि ।। गन्धादिभिःसम्पूज्य - नमस्कार:-

देवदेव पाहि जगन्नाथ विष्णो यज्ञपते विभो। दुःखाम्बुधेरस्मान् भक्तानुग्रहकारक ।।

ॐ लक्ष्यै नमः ।। आदित्यायै नमः ।। वैष्णव्यै नमः ।। वसुदायै नमः ।।सम्पूज्य - स्तम्भमालभेत्

महावेद्याश्चाग्निकोणे सुदृढं वस्त्रशोभितम् । सर्वकार्य प्रसिद्ध्यर्थ स्तम्भं चैवालभाम्यहम् ।।

ॐ ऊद्धर्व S ऊषुण० ।। स्तम्भशिरमिॐ आयं गौः ० ।। नागमात्रे नमः ।। शाखोद्वन्धनानि पू०।।ॐ यतो यतः ।। ॐ सर्वेभ्यो नमः ।।२।।

(३) महावेद्यां नैर्ऋत्यकोण स्तम्भं श्वेतं शङ्करं पूजयेत् पार्वतीप्राणबल्लभ । गङ्गाधर महादेव आगच्छ भगवन्नीश स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त ऽइषेव नमः । बाहुभ्यामुत ते नमः ।। ॐ भू० शम्भो इहागच्छा, इह तिष्ठ शम्भवे नमः शम्भुं आवाहयामि। सम्पूज्यनमस्कार

पञ्चवक्त्र महादेवमम स्वस्तिकरोभव ।।

चन्द्रमौले महादेव मम स्वस्तिकरोभव ।।

ॐ गौर्यै नमः ।। ॐ माहेश्वयै नमः ।। ॐ शोभनायै नमः ।। ॐ भद्रायै नमः ।। सम्पूज्य

।। स्तम्भमालभेत् ।। ॐ ऊर्द्धव ऊषुण० ।। स्तम्भशिरसि ।। ॐ आयं गौः ।। ॐ नागमात्रे नमः ।। ततः शाखोद्वन्धनानि पूजयेत् ।।

उद्वन्धन नमस्तेऽस्तु मण्डपं रक्ष मेऽधुना ।

अतस्त्वां पूजयाम्येव नित्यं मे वरदो भव ।।

ॐ यतो यतः० ।।३।।

(४). महावेद्यां वायव्यकोणे पीतस्तम्भे इन्द्रं पूजयेत् –

मवावाहो सर्वाभरणभूषित।

शचीपते आगच्छ भगवन् इन्द्र स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ।

ॐ त्रातारमिन्द्रवितारामिन्द्र हवे हवे सुहव शूरमिन्द्रम् । द्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र स्वस्ति नो मघवा धात्त्विन्द्रः ।। ॐ भू० इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठइन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयेत् - सम्पूज्य नमस्कार :-

देवराज गजारूढ पुरन्दर शतक्रतो ।

वज्रहस्त महाबाहो वाञ्छितार्थप्रदो भव।

ॐ इन्द्राण्यै नमः ।। ॐ आनन्दायै नमः ।। ॐ विभूत्यै नमः ।। ॐ अदित्यै नमः ।। सम्पूज्य ।। स्तम्भमालभेत् ।। ॐ ऊर्व ऽऊषुण० ।। स्तम्भशिरसि ।। ॐ आयं गौः 0 नागमात्रे नमः ।। शाखोद्वन्धनानि पूजयेत् -

तिर्यक्काष्ठयुते देवि रज्जुपाशयुते सदा ।

महामण्डप रक्षार्थ अर्चयिष्यामि त्वां मुदा ।।

ॐ यतो यतः

(५) ततो बाह्ये ईशाने रक्तस्तम्भे सूर्यम् -

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता स्थेना देवो याति भुवनानि पश्यन् । ॐ भू० सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठा ।। सूर्यायनमः सूर्य आवाहयामि ।। सम्पूज्य नमस्कारः

पद्महस्त रथारूढ पद्मासन सुमङ्गल।

क्षमां कुरु दयालो त्वं ग्रहराज नमोऽस्तु ते।।

ॐ शौर्यै नमः ।। ॐ भूत्यै नमः ।। ॐ सावित्र्यै नमः ।। ॐ मङ्गलायै नमः ।। सम्पूज्य - स्तमभमालभेत् ।। ॐ ऊर्दा ऽऊषुण० ।।५।।

(६) ईशानपूर्वयोर्मध्ये श्वेतस्तम्भे गणेशम्

लम्बेदर महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम् ।

आगच्छ गणनाथस्त्वं स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ।

ॐ गणानां त्वा गणपति हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिष्क हवामहे व्वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ।। ॐ गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ ।। गणपतये नमः गणपतिं आवाहयामि ।।सम्पूज्य नमस्कार:-

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः ।

नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः ।।

ॐ सरस्वत्यै नमः ।। ॐ विघ्नहरायै नमः ।। ॐ जयायै नमः ।। सम्पूज्य स्तमभमालभेत् ।। ॐ ऊर्ध्व ऽ ऊषुण० ।।६।।

(७) पूर्वाग्नेययोर्मध्ये कृष्णवर्णस्तम्भे यमम् –

एह्येहि दण्डायुध धर्मराज कालाञ्जनाभास विशालनेत्र ।

विशालवक्षः स्थल रौद्ररूप गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ।।

ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्य्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मवानक्तु पृथिव्याः स ंस्पृश स्पाहि ।। अचिरसि शोचिरसि तपोऽसि ।। ॐ भू० यम इहागच्छ इह तिष्ठ यमाय नमः यममावाहयामि।। सम्पूज्य नमस्कार-

धर्मराज महाकाय दक्षिणाधिपते यम।

रक्तेक्षण महाबाहो मम पीडां निवारय ।

ॐ सन्ध्यायै नमः ।। ॐ आञ्जन्यै नमः ।। ॐ क्रूरायै नमः ।। ॐ नियन्त्र्यै नमः सम्पूज्य - स्तम्भमालभेत् ।। ॐ ऊर्द्ध ऽऊषुण० ।।७।।

(८) आग्नेयकोणे कृष्णवर्णस्तम्भे नागराजम् –

आशीविष समोपेत नागकन्या विराजित ।

आगच्छ नागराजेन्द्र स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ।

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।। ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।। ॐ भू० नागराज इहागच्छ इह तिष्ठ नागराजाय नमः ।।

सम्पूज्य नमस्कार :-

खड्गखेटधराः फणामण्डलमण्डिताः ।

एकभोगाः साक्षश्रोत्राः वरदाः सन्तु मे सदा ।।

ॐ मध्यमसन्ध्यायै नमः ।। ॐ धरायै नमः ।। ॐ पद्मायै नमः ।। ॐ महापद्मायै नमः ।। सम्पूज्य - स्तम्भमालभेत् ।। ॐ ऊर्ध्व ऽऊषुण० ।।८ ।।

(९) अग्निदक्षिणयोर्मध्ये श्वेत स्तम्भे स्कन्दम् -

मयूरवाहनं शक्तिपाणिं वै ब्रह्मचारिणम् ।

आगच्छ भगवन् स्कन्द स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ।

ॐ यदक्रन्दः प्रथम जायमान ऽउद्यन्तसमुद्रादुत वा पुरीषात् । श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽउपस्तुत्यं महिजातं ते ऽअर्बन् । ॐ भू० स्कन्द इहागच्छ इह तिष्ठ स्कन्दाय नमः ।। सम्पूज्य नमस्कारः-

मयूरवाहन स्कन्दः गौरीसुत षडानन ।

कार्तिकेय महाबाहो दयां कुरु दयानिधे ।।

ॐ पश्चिमसन्ध्यायै नमः ।। सम्पूज्य - स्तम्भमालभेत् ।। ॐ ऊर्ध्व ऽऊषुण० ।।९।।

(१०) दक्षिणनैऋत्ययोर्मध्ये धूम्रस्तम्भे वायुम्

ध्वजाहस्तं गन्धवहं त्रैलोक्यान्तर चारिणम् ।

आगच्छ भगवन् वायो स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ।।

ॐ व्वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि । नियुत्वान्त्सोमपीतये । ॐ भू० वायो इहागच्छ इह तिष्ठ वायवो नमः सम्पूज्य नमस्कार :-

धावन्धरणिपृष्ठस्थ ध्वजहस्त समीरण ।

दण्डहस्त मृगारूढ वरं देहि वरप्रद ।।

ॐ वायव्यै नमः ।। ॐ गायत्र्यै नमः। मध्यमसन्ध्यायै नमः सम्पूज्य - स्तम्भमालभेत् ।। ॐ ऊर्व ऽऊषुण० ।।१०।।

(११) नैऋत्ये पीतस्तम्भे सोमम् –

सुधाकरं द्विजाधीशं त्रैलोक्यं प्रीतिकारकम् ।

आगच्छ भगवन् सोम स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ।।

ॐ आप्यायस्व समेतु ते व्विश्वतः सोम वृष्ण्यम् ।। भवा व्वाजस्य सङ्गथे ।। ॐ भू० सोम इहागच्छ इह तिष्ठ सोमाय नमः सम्पूज्य नमस्कार :-

अत्रिपुत्र निशानाथ द्विजराज सुधाकर ।

अश्वारूढं गदाहस्तं वंर देहि वरप्रद ।।

ॐ सावित्र्यै नमः ॐ अमृतकलायै नमः ।। ॐ पश्चिमसन्ध्यायै नमः ।। सम्पूज्य – स्तम्भमालभेत् ।। ॐ ऊर्ध्व S ऊषुण० ।।११।।

(१२) नैऋत्य-पश्चिमयोर्मध्ये श्वेतस्तम्भे वरुणम्-

कुम्भीरथ' समारूढं मणिरत्न समन्वितम्।

आगच्छ देव वरुण स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ।।

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके ।। ॐ भू०

वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ वरुणाय नमः सम्पूज्य - नमस्कारः -

शङ्खस्फटिकवर्णाभः श्वेतहाराम्बरावृतः ।

पाशहस्त महाबाहो दयां कुरु दयानिधे ।

ॐ वारुण्यै नमः । ॐ पाशधारिण्यै नमः ।। ॐ बृहत्यै नमः ।। सम्पूज्य ।। स्तम्भमालभेत् ।। ०ॐ ऊर्व ऽऊषुण० ।। १२ ।।

(१३) पश्चिम वायव्य अन्तराले श्वेतस्तम्भे अष्टवसून् –

शुद्धस्फटिक सङ्काशान् नानावस्त्र विराजितान्।

आवाहयामि स्तम्भेस्मिन् वसूनष्टौ सुखावहान् ।।

ॐ व्वसुष्भ्यास्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वाऽऽ दित्येभ्यस्त्वा सञ्जानाथां द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्यावताम् ।। व्यन्तु व्वयोऽक्कत रिहाणा मरुतां पृषतीर्गच्छ वशा पृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह। चक्षुष्पा ऽ अग्नेऽसि चक्षुर्मे पाहि ।।

ॐ भू० अष्टवसव इहागच्छत इह तिष्टत वसुभ्यो नमः ।। सम्पूज्य - नमस्कारः-

दिव्यवस्त्रा दिव्यदेहा पुष्पमाला विभूषिताः।।

वसवोऽष्टौ महाभागा वरदाः सन्तु मे सदा ।।

ॐ व्विश्वकर्मान्हविषा व्वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यम्। तस्म्मै व्विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्ग्रो व्विहव्यो यथासत् ।।

ॐ विश्वकर्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ भू० विश्वकर्मणे नमः सम्पूज्य -नमस्कार :-

नमामि विश्वकर्माणं द्विभुजं विश्वदर्शितम्।

त्रैलोक्य सूत्रकर्तारं महाबल पराक्रमम् ।।

ॐ सिनीवाल्यै नमः ।। ॐ सावित्र्यै नमः ।। ॐ वास्तुदेवतायै नमः।। सम्पूज्य - स्तम्भमालभेत् ।। ॐ ऊर्द्धव ऊषुण० ।। १६ ।।

स्तम्भशिरसि बलिकासु ।। नागमात्रे नमः ।।

सर्वेषां नागराजानां पाताल तलवासिनाम् ।।

नागमातर आयान्तु भवन्तु सगणाः स्थिराः ।।

ॐ आयं गौ:0-इति सम्पूज्य नमस्कारः- नमोऽस्तु बलिकाबन्ध सुदृढत्वं शुभाप्तिदम् ।। एनं महामण्डपं तु रक्ष रक्ष निरन्तरम् । ॐ यतो यतः ०।। प्रार्थना - शेषादि नागराजानः समस्ता मम मण्डपे ।। ॐ

पूजां गृह्णन्तु सततं प्रसीदन्तु ममोपरि ।। ततो भूमिस्पर्शः - ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरमि व्विश्वधाया व्विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीदृ ंह पृथिवी मा हि ं सीः ।। पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा -

नमस्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन ।।

नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुष पूर्वज ।।

ॐ नृसिंह उग्ररूप ज्वल ज्वल प्रज्ज्वल प्रज्ज्वल स्वाहा।। ॐ नमः शिवाय इति पुष्पाञ्जलिं मण्डपभूमौ विकिरेत् ।।

-: इति षोडश स्तम्भ पूजा :-

उक्त इकाई में असंख्यातरूद्र के पूजन विधान पर प्रकाश डाला गया है। मण्डप पूजन वेद पूजन दिग्पाल पूजन एवं द्वारपाल पूजन खण्ड एक के इकाई तीन में सविस्तार वर्णन किया गया है। उक्त विषय को वहां से देखें।

इकाई 19 : गौरी तिलक मण्डल एवं संकल्पित पाठवाचन

प्रस्तातवना

प्रस्तुतत इकाई में गौरी तिलक मण्डल एवं संकल्पित पाठवाचन पर प्रकाश डाला गया है।

उददेश्या-

इस इकाई के अध्य यन से गौरी तिलक मण्डल एवं संकल्पित पाठवाचन का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्तग होगा।

प्रश्नई -

१. यंत्रास्त देवता का आवाहन पूजन लिखें।

२. ईशान कोण में हरित कोष्ट क में आवाहन मंत्र लिखें।

गौरी तिलक मण्डलस्थ देवताना आवाहनं स्थापनम्

कलशसमीपे पीतकोष्ठेषु चतुरोदेवान् पूजयेत् – १. ॐ महाविष्णवे नमः, २. ॐ महालक्ष्म्यै नमः, ३. ॐ महेश्वराय नमः, ४. ॐ महामायायै नमः,	ॐ महाविष्णुमावाहयामि स्थापयामि (ऐशा०) ॐ महालक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि (आग्ने०) ॐ महेश्वरमावाहयामि स्थापयामि (नैऋत्याम्) ॐ महामायामावाहयामि स्थापयामि (वाय०)
हृदयाङ्गमध्ये चतुर्षु कोष्ठेषु चतुर्वेदान्पूजयेत् -	
५. ॐ ऋग्वेदाय नमः, ६. ॐ यजुर्वेदाय नमः, ७. ॐ सामवेदाय नमः, ८. ॐ अथर्ववेदाय नमः,	ॐ ऋग्वेदमावाहयामि स्थापयामि (पूर्व) ॐ यजुर्वेदमावाहयामि स्थापयामि (दक्षिणे) ॐ सामवेदमावाहयामि स्थापयामि (पश्चिमे) ॐ अर्थर्ववेद मावाहयामि स्थापयामि (उत्तरे)
पूर्वादीशानपर्यन्तं श्वेतकोष्ठेषु पञ्चदेवान् पूजयेत् -	
९. ॐ अद्भ्यो नमः, १०. ॐ जलोद्भवाय नमः,	ॐ अपः आवाहयामि स्थापयामि। ॐ जलोद्भवम् आवाहयामि स्थापयामि।

११. ॐ ब्रह्मणे नमः, १२. ॐ प्रजापतये नमः, १३. ॐ शिवाय नमः,	ॐ ब्रह्माणम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ प्रजापतिम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ शिवम् आवाहयामि स्थापयामि ।
अग्निकोणे श्वेतकोष्ठयोः १४. ॐ अनन्ताय नमः, १५. ॐ परमेष्ठिने नमः,	 ॐ अनन्तम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ परमेष्ठिनम् आवाहयामि स्थापयामि ।
अग्निकोणे चतुष्कोष्ठेषु - १६. ॐ धात्रे नमः, १७. ॐ विधात्रे नमः, १८. ॐ अर्य्यणे नमः, १९. ॐ मित्राय नमः,	 ॐ धातारम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ विधातारम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ अर्य्यम्णम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ मित्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
दक्षिणश्वेतेषु - २०. ॐ वरुणाय नमः, २१. ॐ अंशुमते नमः, २२. ॐ भगाय नमः, २३. ॐ इन्द्राय नमः, २४. ॐ विवस्वते नमः,	 ॐ वरुणम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ अंशुमन्तम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ भगम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ इन्द्रम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ विवस्वन्तम् आवाहयामि स्थापयामि ।
नैऋत्यकोणयोः २५. ॐ पूष्णे नमः, २६. ॐ पर्जन्याय नमः,	 ॐ पूष्णम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ पर्जन्यम् आवाहयामि स्थापयामि ।
नैर्ऋत्यकोणे श्वेतेषु - २७. ॐ त्वष्ट्रे नमः, २८. ॐ दक्षयज्ञाय नमः, २९. ॐ देववसवे नमः, ३०. ॐ महासुताय नमः,	 ॐ त्वष्टारम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ दक्षयज्ञम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ देववसुम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ महासुतम् आवाहयामि स्थापयामि।
पश्चिमे श्वेतेषु ३१. ॐ सुधर्मणे नमः, ३२. ॐ शङ्खपदे नमः, ३३. ॐ महाबाहवे नमः, ३४. ॐ वपुष्मते नमः,	 ॐ सुधर्माणम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ शङ्खपदम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ महाबाहुम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ वपुष्मन्तम् आवाहयामि स्थापयामि ।

३५. ॐ अनन्ताय नमः,	ॐ अनन्तम् आवाहयामि स्थापयामि ।
वायौ श्वेतयोः - ३६. ॐ महेरणाय नमः, ३७. ॐ विश्वावसवे नमः,	 ॐ महेरणम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ विश्वावसुम् आवाहयामि स्थापयामि ।
वायौ श्वेतेषु – ३८. ॐ सपुर्वणे नमः, ३९. ॐ विष्टराय नमः, ४०. ॐ रुद्रदेवतायै नमः, ४१. ॐ ध्रुवाय नमः,	 ॐ सुपर्वणंम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ विष्टरम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ रुद्रदेवताम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ ध्रुवम् आवाहयामि स्थापयामि ।
उत्तरेश्वेतेषु - ४२. ॐ धरायै नमः, ४३. ॐ सोमाय नमः, ४४. ॐ आपवत्साय नमः, ४५. ॐ नलाय नमः, ४६. ॐ अनिलाय नमः,	 ॐ धराम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ सोमम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ आपवत्सम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ नलम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ अनिलम् आवाहयामि स्थापयामि ।
ईशाने श्वेतयोः - ४७. ॐ प्रत्यूषाय नमः, ४८. ॐ प्रभासाय नमः,	 ॐ प्रत्यूषम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ प्रभासम् आवाहयामि स्थापयामि ।
ईशानकोणे श्वेतेषु ४९. ॐ आवर्त्ताय नमः, ५०. ॐ सावर्त्ताय नमः, ५१. ॐ द्रोणाय नमः, ५२. ॐ पुष्कराय नमः,	 ॐ आवर्त्तम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ सावर्त्तम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ द्रोणम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ पुष्करम् आवाहयामि स्थापयामि ।
(इति हृदयाङ्गपूजनम् । अथ शिरोङ्गशक्ति पूजयेत्)	
ईशाने हरित्कोष्ठेषु - ५३. ॐ ह्रीं कार्ये नमः ५४. ॐ ह्रीं यै नमः ५५. ॐ कात्यायन्यै नमः ५६. ॐ चामुण्डायै नमः ५७. ॐ महादिव्यायै नमः	 ॐ ह्रीं कारीम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ ह्रीं मैं आवाहयामि स्थापयामि । ॐ कात्यायनीम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ चामुण्डाम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ महादिव्याम् आवाहयामि स्थापयामि।

५८. ॐ महाशब्दायै नमः	ॐ महाशब्दाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
५९. ॐ सिद्धिदायै नमः	ॐ सिद्धिदाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
६०. ॐ ऐं नमः	ॐ ऐं आवाहयामि स्थापयामि।
६१. ॐ श्रीं श्रियै नमः	ॐ श्रीं श्रियम् आवाहयामि स्थापयामि ।
६२. ॐ ह्रीं ह्रियै नमः	ॐ ह्रीं ह्रियम् आवाहयामि स्थापयामि।
ईशानकोणे पीतकोष्ठेषु -	
६३. ॐ लक्ष्म्यै नमः	ॐ लक्ष्मीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
६४. ॐ श्रियै नमः	ॐ श्रियम् आवाहयामि स्थापयामि ।
६५. ॐ सुघनायै नमः	ॐ सुघनाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
६६. ॐ मेधायै नमः	ॐ मेधाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
६७. ॐ प्रज्ञायै नमः	ॐ प्रज्ञाम् आवाहयामि स्थापयामि।
६८. ॐ मत्यै नमः	ॐ मतीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
६९. ॐ स्वाहायै नमः	ॐ स्वाहाम् आवाहयामि स्थापयामि।
७०. ॐ सरस्वत्यै नमः	ॐ सरस्वतीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
अग्निकोणे हरित्कोष्ठेषु -	
७१. ॐ गौर्यै नमः	ॐ गौरीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
७२. ॐ पद्मायै नमः	ॐ पद्माम् आवाहयामि स्थापयामि।
७३. ॐ शच्यै नमः	ॐ शचीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
७४. ॐ सुमेधायै नमः	ॐ सुमेधाम् आवाहयामि स्थापयामि।
७५. ॐ सावित्र्यै नमः	ॐ सावित्रीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
७६. ॐ विजयायै नमः	ॐ विजयाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
७७. ॐ देवसेनायै नमः	ॐ देवसेनाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
७८. ॐ स्वाहायै नमः	ॐ स्वाहाम् आवाहयामि स्थापयामि।
७९. ॐ स्वधायै नमः	ॐ स्वधाम् आवाहयामि स्थापयामि।
८०. ॐ मात्रे नमः	ॐ मातरम् आवाहयामि स्थापयामि।
८१. ॐ गायत्र्यै नमः	ॐ गायत्रीम् आवाहयामि स्थापयामि।
अग्निकोणे पीतकोष्ठेषु -	
८२. ॐ लोकमात्रे नमः	ॐ लोकमातरम् आवाहयामि स्थापयामि।
८३. ॐ धृत्यै नमः	ॐ धृतिम् आवाहयामि स्थापयामि।
८४. ॐ पुष्ट्यै नमः	ॐ पुष्टिम् आवाहयामि स्थापयामि।

८५. ॐ तुष्ट्यै नमः ८६. ॐ आत्मकुलदेवतायै नमः ८७. ॐ गणेश्वर्यै नमः ८८. ॐ कुलमात्रे नमः ८९. ॐ शान्त्यै नमः	ॐ तुष्टिम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ आत्मकुलदेवताम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ गणेश्वरीम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ कुलमातरम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ शान्तिम् आवाहयामि स्थापयामि ।
ईशानकोणे वाप्यां कृष्णकोष्ठे १ श्वेतेषु ४	
९०. ॐ जयन्त्यै नमः	ॐ जयन्तीम् आवाहयामि स्थापयामि।
९१. ॐ मङ्गलायै नमः	ॐ मङ्गलाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
९२. ॐ काल्यै नमः	ॐ कालीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
९३. ॐ भद्रकाल्यै नमः	ॐ भद्रकालीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
९४. ॐ कपालिन्यै नमः	ॐ कपालिनीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
९५. ॐ दुर्गायै नमः	ॐ दुर्गाम् आवाहयामि स्थापयामि।
९६. ॐ क्षमायै नमः	ॐ क्षमाम् आवाहयामि स्थापयामि।
९७. ॐ शिवायै नमः	ॐ शिवाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
९८. ॐ धात्र्यै नमः	ॐ धात्रीम् आवाहयामि स्थापयामि।
९९. ॐ स्वाहास्वधाभ्यां नमः	ॐ स्वाहास्वधाम् आवाहयामि स्थापयामि।
(इति शिरांगपूजनम्) (अथ शिखांगदेवपूजनम्)	
नैर्ऋत्यकोणे हरित्कोष्ठेषु-११-	
१००. ॐ दीप्यमानायै नमः स्थापयामि ।	ॐ दीप्यमानाम् आवाहयामि
१०१. ॐ दीप्तायै नमः	ॐ दीप्ताम् आवाहयामि स्थापयामि।
१०२. ॐ सूक्ष्मायै नमः	ॐ सूक्ष्माम् आवाहयामि स्थापयामि ।
१०३. ॐ विभूत्यै नमः	ॐ विभूतिम् आवाहयामि स्थापयामि।
१०४. ॐ विमलायै नमः	ॐ विमलाम् आवाहयामि स्थापयामि।
१०५. ॐ परायै नमः	ॐ पराम् आवाहयामि स्थापयामि ।
१०६. ॐ अमोघायै नमः	ॐ अमोघाम् आवाहयामि स्थापयामि।
१०७. ॐ विधूतायै नमः	ॐ विधूताम् आवाहयामि स्थापयामि।
१०८. ॐ सर्वतोमुख्यै नमः	ॐ सर्वतोमुखीम् आवाहयामि स्थापयामि।
१०९. ॐ आनन्दायै नमः	ॐ आनन्दाम् आवाहयामि स्थापयामि।
११०. ॐ नन्दिन्यै नमः	ॐ नन्दिनीम् आवाहयामि स्थापयामि।

नैर्ऋत्यकोणे पीतकोष्ठेषु – ८	
१११. ॐ शक्त्यै नमः	ॐ शक्तिम् आवाहयामि स्थापयामि।
११२. ॐ महासूक्ष्मायै नमः स्थापयामि ।	ॐ महासूक्ष्माम् आवाहयामि
११३. ॐ करालिन्यै नमः स्थापयामि ।	ॐ करालिनीम् आवाहयामि
११४. ॐ भारत्यै नमः	ॐ भारतीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
११५. ॐ ज्योतिषे नमः	ॐ ज्योतिषम् आवाहयामि स्थापयामि ।
११६. ॐ ब्राह्मयै नमः	ॐ ब्राह्मीम् आवाहयामि स्थापयामि।
११७. ॐ माहेश्वर्यै नमः	ॐ माहेश्वरीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
११८. ॐ कौमार्यै नमः	ॐ कौमारीम् आवाहयामि स्थापयामि।
वायुकोणे हरित्कोष्ठेषु - ११ -	
११९. ॐ वैष्णव्यै नमः	ॐ वैष्णवीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
१२०. ॐ वारायै नमः	ॐ वाराहीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
१२१. ॐ इन्द्राण्यै नमः	ॐ इन्द्राणीम् आवाहयामि स्थापयामि।
१२२. ॐ चण्डिकायै नमः	ॐ चण्डिकाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
१२३. ॐ बुद्ध्यै नमः	ॐ बुद्धिम् आवाहयामि स्थापयामि ।
१२४. ॐ लज्जायै नमः	ॐ लज्जाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
१२५. ॐ वपुष्मत्यै नमः	ॐ वपुष्मतीम् आवाहयामि स्थापयामि।
१२६. ॐ शान्त्यै नमः	ॐ शान्तिम् आवाहयामि स्थापयामि ।
१२७. ॐ कान्त्यै नमः	ॐ कान्तिम् आवाहयामि स्थापयामि ।
१२८. ॐ रत्यै नमः	ॐ रतिम् आवाहयामि स्थापयामि ।
१२९. ॐ प्रीत्यै नमः	ॐ प्रीतिम् आवाहयामि स्थापयामि ।
'वायुकोणे पीतकोष्ठेषु - ८	
१३०. ॐ कीर्त्यै नमः	ॐ कीर्तिम् आवाहयामि स्थापयामि ।
१३१. ॐ प्रभायै नमः	ॐ प्रभाम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३२. ॐ काम्यायै नमः	ॐ काम्याम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३३. ॐ कान्तायै नमः	ॐ कान्ताम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३४. ॐ ऋद्ध्यै नमः	ॐ ऋद्धिम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३५. ॐ दयायै नमः	ॐ दयाम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३६. ॐ शिवदूत्यै नमः	ॐ शिवदूतीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
१३७. ॐ श्रद्धायै नमः	ॐ श्रद्धाम् आवाहयामि स्थापयामि।

नैर्ऋत्यवाप्यां कृष्णकोष्ठे १श्वेतेषु ४	
१३८. ॐ क्षमायै नमः	ॐ क्षमाम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३९. ॐ क्रियायै नमः	ॐ क्रियाम् आवाहयामि स्थापयामि।
१४०. ॐ विद्यायै नमः	ॐ विद्याम् आवाहयामि स्थापयामि ।
१४१. ॐ मोहिन्यै नमः	ॐ मोहिनीम् आवाहयामि स्थापयामि।
१४२. ॐ यशोवत्यै नमः	ॐ यशोवतीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
वायोवाप्यां कृष्ण कोष्ठे १ श्वेतेषु ४	
१४३. ॐ कृपावत्यै नमः	ॐ कृपावतीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
१४४. ॐ सलिलायै नमः	ॐ सलिलाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
१४५. ॐ सुशीलायै नमः	ॐ सुशीलाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
१४६. ॐ ईश्वर्यै नमः	ॐ ईश्वरीम् आवाहयामि स्थापयामि।
१४७. ॐ सिद्धेश्वर्ये नमः	ॐ सिद्धेश्वरीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
कवचाङ्गेषु ऋषीन्पूजयेत् पूर्वेऽरुणपीतकोष्ठेषु-४	
१४८. ॐ द्वैपायनाय नमः	ॐ द्वैपायनम् आबाहयामि स्थापयामि।
१४९. ॐ भरद्वाजाय नमः	ॐ भरद्वाजम् आवाहयामि स्थापयामि।
१५०. ॐ मित्राय नमः	ॐ मित्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
१५१. ॐ सनकाय नमः	ॐ सनकम् आवाहयामि स्थापयामि।
दक्षिणे ऽरुणपीत कोष्ठेषु-- ४	
१५२. ॐ गौतमाय नमः	ॐ गौतमम् आवाहयामि स्थापयामि।
१५३. ॐ सुमन्तवे नमः	ॐ सुमन्तम् आवाहयामि स्थापयामि ।
१५४. ॐ त्वष्ट्रे नमः	ॐ त्वष्टारम् आवाहयामि स्थापयामि।
१५५. ॐ सनन्दनाय नमः	ॐ सनन्दनम् आवाहयामि स्थापयामि।
पश्चिमेऽरुणपीतकोष्ठेषु - ४	
१५६. ॐ देवलाय नमः	ॐ देवलम् आवाहयामि स्थापयामि।
१५७. ॐ व्यासाय नमः	ॐ व्यासम् आवाहयामि स्थापयामि।
१५८. ॐ ध्रुवाय नमः	ॐ ध्रुवम् आवाहयामि स्थापयामि।
१५९. ॐ सनातनाय नमः	ॐ सनातनम् आवाहयामि स्थापयामि।
उत्तरेऽरुणपीतकोष्ठेषु - ४	
१६०. ॐ वसिष्ठाय नमः	ॐ वसिष्ठम् आवाहयामि स्थापयामि।
१६१. ॐ च्यवनाय नमः	ॐ च्यवनम् आवाहयामि स्थापयामि।

१६२. ॐ पुष्कराय नमः	ॐ पुष्करम् आवाहयामि स्थापयामि।
१६३. ॐ सनत्कुमाराय नमः	ॐ सनत्कुमारम् आवाहयामि स्थापयामि।
ईशाने, अग्निकोणे, नैर्ऋत्यकोणे, वायुकोणे च कृष्णकोष्ठेषु एकैकम्-	
१६४. ॐ कण्वाय नमः	ॐ कण्वम् आवाहयामि स्थापयामि।
१६५. ॐ मैत्राय नमः	ॐ मैत्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
१६६. ॐ कवये नमः	ॐ कविम् आवाहयामि स्थापयामि।
१६७. ॐ विश्वामित्राय नमः	ॐ विश्वामित्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
१९०. ॐ वाल्मीकये नमः	ॐ वाल्मीकिम् आवाहयामि स्थापयामि।
१९१. ॐ बहवृचाय नमः	ॐ बहवृचम् आवाहयामि स्थापयामि।
१९२. ॐ इन्द्रप्रमितये नमः	ॐ इन्द्रप्रमितिम् आवाहयामि स्थापयामि।
१९३. ॐ देवमित्राय नमः	ॐ देवमित्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
१९४. ॐ जाजलये नमः	ॐ जाजलिम् आवाहयामि स्थापयामि।
१९५. ॐ शाकल्याय नमः	ॐ शाकल्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
१९६. ॐ मुद्गलाय नमः	ॐ मुद्गलम् आवाहयामि स्थापयामि।
१९७. ॐ जातुकर्णाय नमः स्थापयामि।	ॐजातुकर्ण्यम् आवाहयामि
१९८. ॐ बलाकाय नमः	ॐ बलाकम् आवाहयामि स्थापयामि।
१९९. ॐ कृपाचार्याय नमः	ॐ कृपाचार्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
२००. ॐ सुकर्मणे नमः	ॐ सुकर्माणम् आवाहयामि स्थापयामि।
२०१. ॐ कौशल्याय नमः	ॐ कौशल्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
(इति कवचांगपूजनम्)	
नेत्राङ्गपूजनम् ईशानकोणेऽरुणकोष्ठेषु – १२	
२०२. ॐ ब्रह्माग्नये नमः	ॐ ब्रह्माग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।
२०३. ॐ गार्हपत्याग्नये नमः	ॐ गार्हपत्याग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।
२०४. ॐ ईश्वराग्नये नमः स्थापयामि।	ॐ ईश्वराग्निम् आवाहयामि
२०५. ॐ दक्षिणाग्नये नमः	ॐ दक्षिणाग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।
२०६. ॐ वैष्णवाग्नये नमः	ॐ वैष्णवाग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।
२०७. ॐ आहवनीयाग्नये नमः	ॐ आहवनाग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।
२०८. ॐ सप्तजिह्वाग्नये नमः	ॐ सप्तजिह्वाग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।
२०९. ॐ इध्मजिह्वाग्नये नमः	ॐ इध्मजिह्वाग्निम् आवाहयामि।
२१०. ॐ प्रवर्त्याग्नये नमः स्थापयामि।	ॐ प्रवर्गाग्निम् आवाहयामि

२११. ॐ बडवाग्नये नमः	ॐ बडवाग्निम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२१२. ॐ जठराग्नये नमः स्थापयामि ।	ॐ जठराग्निम् आवाहयामि
२१३. ॐ लोकाग्नये नमः	ॐ लोकाग्निम् आवाहयामि स्थापयामि ।
अग्निकोणे ऽरुणकोष्ठेषु - १२	
२१४. ॐ सूर्याय नमः	ॐ सूर्यम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२१५. ॐ वेदाङ्गाय नमः	ॐ वेदाङ्गम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२१६. ॐ भानवे नमः	ॐ भानुम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२१७. ॐ इन्द्राय नमः	ॐ इन्द्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
२१८. ॐ खगाय नमः	ॐ खगम् आवाहयामि स्थापयामि।
२१९. ॐ गभस्तिने नमः	ॐ गभस्तिनम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२२०. ॐ यमाय नमः	ॐ यमम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२२१. ॐ अंशुमते नमः	ॐ अंशुमन्तम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२२२. ॐ हिरण्यरेतसे नमः	ॐ हिरण्यरेतसम् आवाहयामि स्थापयामि।
२२३. ॐ दिवाकराय नमः	ॐ दिवाकरम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२२४. ॐ मित्राय नमः	ॐ मित्रम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२२५. ॐ विष्णवे नमः	ॐ विष्णुम् आवाहयामि स्थापयामि ।
नैर्ऋत्यकोणेऽरुणकोष्ठेषु - १२	
२२६. ॐ शम्भवे नमः	ॐ शम्भुम् आवाहयामि स्थापयामि।
२२७. ॐ गिरीशाय नमः	ॐ गिरीशम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२२८. ॐ अजैकपदे नमः	ॐ अजैकपदम् आवाहयामि
२२९. ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः	ॐअहिर्बुध्न्यम् आवाहयामिस्थापयामि ।
२३०. ॐ पिनाकपाणये नमः	ॐ पिनाकपाणिम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२३१. ॐ अपराजिताय नमः	ॐ अपराजितम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२३२. ॐ भुवनाधीश्वराय नमः	ॐ भुवनाधीश्वरम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२३३. ॐ कपालिने नमः	ॐ कपालिनम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२३४. ॐ विशांपतये नमः	ॐ विशांपतिम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२३५. ॐ रुद्राय नमः	ॐ रुद्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
२३६. ॐ वीरभद्राय नमः	ॐ वीरभद्रम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२३७. ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः	ॐ अश्विनीकुमारौ आवाहयामि स्थापयामि।
वायुकोणेऽरुणकोष्ठेषु - ११	

२३८. ॐ आवहाय नमः	ॐ आवहम् आवाहयामि स्थापयामि।
२३९. ॐ प्रवहाय नमः	ॐ प्रवहम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२४०. ॐ उद्वहाय नमः	ॐ उद्वहम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२४१. ॐ संवहाय नमः	ॐ संवहम् आवाहयामि स्थापयामि।
२४२. ॐ विवहाय नमः	ॐ विवहम् आवाहयामि स्थापयामि।
२४३. ॐ परिवहाय नमः	ॐ परिवहम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२४४. ॐ धरायै नमः	ॐ धराम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२४५. ॐ अद्भ्यो नमः	ॐ अपः आवाहयामि स्थापयामि ।
२४६. ॐ अग्नये नमः	ॐ अग्निम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२४७. ॐ वायवे नमः	ॐ वायुम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२४८. ॐ आकाशाय नमः	ॐ आकाशम् आवाहयामि स्थापयामि।
(ऋषीन् पूजयेत्) ईशानादीशपर्यन्तं वाह्यपंक्तौ कृष्णकोष्ठेषु -	
२४९. ॐ हिरण्यनाभाय नमः	ॐ हिरण्यनाभम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२५०. ॐ पुष्पञ्जयाय नमः	ॐ पुष्पञ्जयम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२५१. ॐ द्रोणाय नमः	ॐ द्रोणम् आवाहयामि स्थापयामि।
२५२. ॐ श्रृंगिणे नमः	ॐ श्रृंगिणम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२५३. ॐ बादरायणाय नमः	ॐ बादरायणम् आवाहयामि स्थापयामि।
२५४. ॐ अगस्त्याय नमः	ॐ अगस्त्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
२५५. ॐ मनवे नमः	ॐ मनुम् आवाहयामि स्थापयामि।
२५६. ॐ कश्यपाय नमः	ॐ कश्यपम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२५७. ॐ धौम्याय नमः	ॐ धौम्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
२५८. ॐ भृगवे नमः	ॐ भृगुम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२५९. ॐ वीतिहोत्राय नमः	ॐ वीतिहोत्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
२६०. ॐ मधुच्छंदसे नमः	ॐ मधुच्छंदसम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२६१. ॐ वीरसेनाय नमः	ॐ वीरसेनम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२६२. ॐ कृतवृष्णवे नमः	ॐ कृतवृष्णिम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२६३. ॐ अत्रये नमः	ॐ अत्रिम् आवाहयामि स्थापयामि।
२६४. ॐ मेधातिथये नमः	ॐ मेधातिथिम् आवाहयामि स्थापयामि।
२६५. ॐ अरिष्टनेमये नमः	ॐ अरिष्टनेमिम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२६६. ॐ अङ्गिरसाय नमः	ॐ अङ्गिरसम् आवाहयामि स्थापयामि ।

२६७. ॐ इन्द्रप्रमदाय नमः	ॐ इन्द्रप्रमदम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२६८. ॐ इध्मबाहवे नमः	ॐ इध्मबाहुम् आवाहयामि स्थापयामि।
२६९. ॐ पिप्पलादाय नमः	ॐ पिप्पलादम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२७०. ॐ नारदाय नमः	ॐ नारदम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२७१. ॐ अरिष्टसेनाय नमः	ॐ अरिष्टसेनम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२७२. ॐ अरुणाय नमः	ॐ अरुणम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२७३. ॐ कपिलाय नमः	ॐ कपिलम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२७४. ॐ कर्दमाय नमः	ॐ कर्दमम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२७५. ॐ मरीचये नमः	ॐ मरीचिम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२७६. ॐ क्रतवे नमः	ॐ क्रतुम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२७७. ॐ प्रचेतसे नमः	ॐ प्रचेतसम् आवाहयामि स्थापयामि।
२७८. ॐ उत्तमाय नमः	ॐ उत्तमम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२७९. ॐ दधीचये नमः	ॐ दधीचिम् आवाहयामि स्थापयामि ।
२८०. ॐ श्राद्धदेवेभ्यो नमः	ॐ श्राद्धदेवान् आवाहयामि स्थापयामि ।
२८१. ॐ गणदेवेभ्यो नमः	ॐ गणदेवान् आवाहयामि स्थापयामि।
२८२. ॐ विद्याधरेभ्यो नमः	ॐ विद्याधरान् आवाहयामि स्थापयामि ।
२८३. ॐ अप्सरेभ्यो नमः	ॐ अप्सरान् आवाहयामि स्थापयामि।
२८४. ॐ यक्षेभ्यो नमः	ॐ यक्षान् आवाहयामि स्थापयामि।
२८५. ॐ रक्षेभ्यो नमः	ॐ रक्षान् आवाहयामि स्थापयामि ।
२८६. ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः	ॐ गन्धर्वान् आवाहयामि स्थापयामि ।
२८७. ॐ पिशाचेभ्यो नमः	ॐ पिशाचान् आवाहयामि स्थापयामि।
२८८. ॐ गुह्यकेभ्यो नमः	ॐ गुह्यकान् आवाहयामि स्थापयामि ।
२८९. ॐ सिद्धदेवेभ्यो नमः	ॐ सिद्धदेवान् आवाहयामि स्थापयामि।
२९०. ॐ औषधीभ्यो नमः	ॐ औषधीः आवाहयामि स्थापयामि ।
२९१. ॐ भूतग्रामाय नमः	ॐ भूतग्रामम् आवाहयामि स्थापयामि।
२९२. ॐ चतुर्विधभूतग्रामाय नमः	ॐ चतुर्विधभूतग्रामं आवाहयामि स्थापयामि।
ॐ मनोजूतिर्जु०.........................	गौरीतिलक भद्र मण्डल देवताभ्यो

नमः आवाहयामि स्थापयामि यथोपलब्धोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत्

ब्रह्मा रुद्रः कुमारौ हरि वरुण यमः वन्हिरिन्द्रः कुबेरः,

चंद्रादित्यावुदधि युग नगाः, वायुरुर्वी भुजङ्गाः ।

सिद्धा नद्यावश्विनौ श्रीः दितिरदितिसुताः मातरश्चण्डिकाद्याः,

वेदास्तीर्थानि यज्ञः गुण वसु मुनयः पान्तु नित्यं सदा नः (वः) ॥

॥ अनेन पूजनेन गौरीतिलक भद्रमण्डलस्थ देवताः प्रीयन्ताम् न मम ॥

पीठ पूजनम्

हस्तेऽक्षतान् गृहीत्वा , ॐ पूर्वपीठाय नमः । ॐ पं पूर्णपीठार नमः । कं कामपीठाय नमः । प्राच्यां दिशि ॐ उं उड्यानपीठाय नमः आग्नेय्याम्-मां मातृपीठाय नमः । दक्षिणे-जं जालन्धर पीठाय नमः नैऋत्ये-कं कोल्हापुरपीठाय नमः ॥ पश्चिमे-पूं पूर्णगिरिपीठाय नमः वायव्याम्-सं संहारोपपीठाय नमः उत्तरे-कं कोल्हागिरिपीठाय नमः ऐशान्याम्- कं कामरूपीठाय नमः। इति पीठं सम्पूजयेत् ।

नमस्कारः- दक्षिणे ॐ गुरवे नमः । ॐ परमगुरवे नमः । ॐ परमेष्ठिगुरवे नमः । ॐ गुरुपंक्तये नमः । ॐ ' मातापितृभ्यां नमः । ॐ उपमन्यु नारद सनक व्यासादिभ्यो नमः ।

वामे- ॐ गं गणपतये नमः । ॐ दुं दुर्गायै नमः । ॐ सं सरस्वत्यै नमः । ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः। इति नत्वा, पीठदेवताः स्थापयेत्।

पीठमध्ये- ॐ मं मण्डूकाय नमः । ॐ आं आधारशक्त्यै नमः । ॐ मूं मूलप्रकृत्यै नमः । ॐ कां कालाग्निरुद्राय नमः । तदुपरि ॐ आं आदि-कूर्माय नमः । ॐ अं अनन्ताय नमः । ॐ आं आदिवराहाय नमः । ॐ पं पृथिव्यै नमः। तदुपरि ॐ अं अमृतार्णवाय नमः। ॐ रं रत्नद्वीपाय नमः । ॐ हं हेमगिरये नमः। ॐ नं नन्दनोद्यानाय नमः । ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः । ॐ मं मणिभूतलाय नमः । ॐ दं दिव्यमण्डपाय नमः । ॐ सं स्वर्ण- वेदिकायै नमः । ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः । ॐ धं धर्माय नमः । ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः । ॐ वैं वैराग्याय नमः। ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः। इति सम्पूज्य !

पूर्वे- ॐ अं अनैश्वर्याय नमः । पुनर्मध्ये ॐ सं सत्त्वाय नमः । ॐ प्रं प्रबोधात्मने नमः । ॐ रं रजसे नमः । ॐ प्रं प्रकृत्यात्मने नमः । ॐ तं तमसे नमः । ॐ मं मोहात्मने नमः । ॐ सों सोममण्डलाय नमः । ॐ सूं सूर्य-मण्डलाय नमः । ॐ वं वह्निमण्डलाय नमः । ॐ मं मायातत्त्वाय नमः । ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः । ॐ शं शिवतत्त्वाय नमः । ॐ ब्रं ब्रह्मणे नमः । ॐ मं महेश्वराय नमः । ॐ आं आत्मने नमः । ॐ अं अन्तरात्मने नमः ॐ पं परमात्मने नमः । ॐ जं जीवात्मने नमः । ॐ ज्ञं ज्ञानात्मने नमः । ॐ कं कन्दाय नमः । ॐ नं नीलाय नमः । ॐ पं पद्माय नमः । ॐ मं महापद्माय नमः । ॐ रं रत्नेभ्यो नमः । ॐ कं केसरेभ्यो नमः । ॐ कं कर्णिकायै नमः।

ततो नवशक्तीः स्थापयेत् । तद्यथा-

यन्त्रस्थ देवता स्थापनं पूजनम्

ॐ पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु- ॐ नन्दायै नमः । ॐ भगवत्यै नमः । ॐरक्तदन्तिकायै नमः । ॐ शाकम्भर्यै नमः । ॐ दुर्गायै नमः । ॐ भीमायैनमः । ॐ कालिकायै नमः । ॐ भ्रामयै नमः। मध्ये ॐ शिवदूत्यै नमः ।

इति संस्थाप्य , यथाशक्त्या "शक्ति-सहित-पीठदेवताभ्यो नमः"यथोपलब्धोपचारैः संपूजयेत् ।

॥ पीठपूजा समाप्ता ॥

यन्त्रस्थ देवता स्थापनं पूजनम्

हस्तेऽक्षतान् गृहीत्वा , बिन्दुमध्ये ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिणी त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गादेवतायै नमः , श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिणी त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गा देवतां आवाहयामि स्थापयामि ।बिन्दोः परितो गुरुचतुष्टयं आवाहयेत्-

ॐ गुरवे नमः । ॐ परम गुरवे नमः । ॐ परात्परगुरवे नमः । ॐ परमेष्ठिगुरवे नमः । ॐ गुरुपंक्तये नमः। (षडङ्गम्) ॐ ऐं हृदयाय नमः । ॐ ह्रीं शिरसे नमः । ॐ क्लीं शिखायै नमः । ॐ चामुण्डायै कवचाय नमः । ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय नमः ।

ततस्त्रिकोणे स्वाग्रादि- प्रादक्षिण्य क्रमेण ॐ स्वरया सह विधात्रे नमः । ॐ श्रिया सह विष्णवे नमः । ॐ उमया सह शिवाय नमः । दक्षिणे- ॐ हुं सिंहाय नमः । वामे ॐ हुं महिषाय नमः ।

षट्कोणे, अग्नीशासुरवायव्वे मध्ये दिक्षु च-

ॐ ऐं नन्दजायै नमः । ॐ ह्रीं रक्तदन्तिकायै नमः । ॐ क्लीं शाकम्भर्यै नमः । ॐ दुं दुर्गायै नमः । ॐ हुं भीमायै नमः । ॐ ह्रीं भ्रामयें नमः ।

ततो अष्टपत्रे स्वाग्रादि प्रादक्षिण्यक्रमेण ॐ ऐं ब्राह्म्यै नमः । ॐ ह्रीं माहेश्वर्यै नमः । ॐ क्लीं कौमार्यै नमः । ॐ ह्रीं वैष्णव्यै नमः । ॐ हुं वारायै नमः । ॐ छौं नारसिंहयै नमः । ॐ लं ऐन्द्रयै नमः । ॐ ह्रीं चामुण्डायै नमः ।

पुराण यज्ञ में सर्वतोभद्र गौरी तिलक मण्डल का विधान है जिसमें गौरी तिलक मण्डल की रचना एवं आवाहन यहां पर दर्शाया गया है। सर्वतोभद्र मण्डल के लिए खण्ड दो की इकाई 9 में देखे तथा यजमान के संकल्पानुसार श्रीमद् भागवत तथा अन्यॐ पुराण का पाठ करें।

इकाई 20 : हवन बलिविधान पूर्णाहूति
उत्त र पूजन एवं विसर्जन

प्रस्ता वना

प्रस्तु त इकाई में हवन बलिविधान पूर्णाहूति उत्तरर पूजन एवं विसर्जन पर प्रकाश डाला गया है।

उददेश्य -

इस इकाई के अध्य यन सेहवन बलिविधान पूर्णाहूति उत्तनरपूजन एवं विसर्जन के बारे में ज्ञान प्राप्तब होगा।

प्रश्ने -

१. दश दिगपाल बलि पर प्रकाश डालें।

२. वासोहधारा का मंत्र लिखें। ।

भूरादि नवाहुति प्रदानम्

ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये न मम ॥१॥ ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे न मम ॥२॥ ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय न मम॥३॥

ॐ त्वन्नो अग्ने व्वरुणस्य विद्वान देवस्य हेडोऽ अवयासि सीष्ठाः। यजिष्ठोव्वनितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषासि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥४॥

ॐ स त्वन्नोऽ अग्नेवमो भवोती नेदिष्ठो ऽअस्याऽ उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्वनो व्वरुण रराणो व्रीहि मृडीक सुहवोन ऽएधि स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥५॥

ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽ असि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजः स्वाहा। इदमग्नये अयसे न मम ॥६॥

ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नोऽ अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥७॥

ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधमं व्विमध्यम श्रथाय। अथा व्वयमादित्यव्रते तवानागसोऽअदितये वरुणायादित्यायादितये न मम ॥८॥ स्याम स्वाहा। इदंॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम ॥९॥

बलिप्रदानम्

अथ एकतन्त्रेण दशदिक्पालानां बलिदानम् - ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहार्बोच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहार्बोच्यै दिशे स्वाहोर्ध्वायै दिशे स्वाहार्बोच्यै दिशे स्वाहार्बोच्यै दिशे स्वाहा र्वाच्चैदिशे स्वाहा ॥१॥

ॐ इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यो नमः, देवबलये नमः इत्यनेन गन्धाऽक्षतपुष्पैः बलिं सम्पूज्य, हस्ते जलं गृहीत्वा--

ॐ इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः एतान् सदीपान् दधिमाषभक्तबलीन् समर्पयामि।

भो भो इन्द्रादिदशदिक्पालाः दिशं रक्षत बलिं भक्षत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवत। एभिर्बलिदानैः इन्द्रादि दशदिक्पालाः प्रीयन्ताम् न मम।

अथ एकतन्त्रेण नवग्रहमण्डलस्थदेवतानां बलिदानम्- ॐ ग्रहा ऽऊर्जा हुतयो व्यन्तो व्विप्प्राय मतिम्। तेषां व्विशिष्प्रियाणां वोहमिषमूर्ज समग्रभमुपयामगृहीतोसीन्द्राय त्त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्त्वा जुष्टतमम्।

सूर्यादिनवग्रहेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यःअधिदेव प्रत्यधिदेवता गणपत्यादि पञ्चलोकपाल वास्तोष्पति सहितेभ्यः इमं सदीप दधि माष भक्त बलिं समर्पयामि।

भो भो सूर्यादि नवग्रहाः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिता इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवत। अनेन बलिदानेन सूर्यादि ग्रह मण्डलस्थ देवताः प्रीयन्तां न मम।

अथ वास्तुमण्डलस्थ देवतानां बलिदानम् ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्वावेशो

ऽअनमीवो भवा नः।। यत्वे महे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मादि वास्तु मण्डल देवता सहिताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय वास्तुपुरुषाय इमं सदीपं आसादित बलिं समर्पयामि।

भो भो ब्रह्मादि वास्तु मण्डल देवता सहित वास्तुपुरुष इमं बलिं गृहाण। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन बह्मादि वास्तु मण्डल देवता सहित वास्तु पुरुषः प्रीयताम् न मम।

मातृणामप्येकबलिदानम्- ॐ अम्बेऽ अम्बिकेऽ म्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।

भो भो गौर्यादयः षोडशमातरः इमं बलिं गृहणीत आयुः कर्त्यः क्षेमकर्ण्यः शान्तिकर्ण्यः पुष्टिकर्त्यः तुष्टिकर्त्यः वरदा भवत। अनेन बलिदानेन गौर्यादि मातरः प्रीयन्ताम् न मम।

अथ योगिनी मण्डलस्थ देवीनां बलिदानम्- ॐ योगेयोगे तवस्तरं व्वाजेवाजे हवामहे।। सखाय ऽइन्द्रमूतये।

भो भो चतुः षष्टियोगिन्यः बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्त्यः क्षेमकर्ण्यः शान्तिकर्त्यः पुष्टिकर्त्यः तुष्टिकर्त्यः वरदा भवत। अनेन बलिदानेन चतुःषष्टि योगिन्यः प्रीयन्ताम् न मम।

अथ प्रधान देवता बलिदानम्- ॐ इदं व्विष्णुर्व्विचक्क्रमे० अथवा ॐ नमस्ते रुद्र०। अम्बेऽ अम्बिके०।

कूष्माण्ड बलिदानम्

देशकालद्युच्चार्य० मम सुकुटुम्बस्य सर्वाऽरिष्ट प्रशान्ति सर्वाभीष्ट कामसिद्धि कल्पोक्त फलावाप्तिद्वारा श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती त्रिगुणत्मिका स्वरूपिणी श्री दुर्गादेव्याः प्रीत्यर्थं कूष्माण्ड बलिदानं करिष्ये। तदङ्गत्त्वेन पञ्चोपचारैः बलिपूजनं च करिष्ये।तत्पश्चात् -

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

इत्यनेन दुर्गादेवीं पञ्चोपचारैः सम्पूज्य , तत्पुरतः स्वयमुदङ्मुखं च पीठे वस्त्रगुण्ठितं कूष्माण्डं निधाय , कूष्माण्डबलये नमः इत्यनेन पञ्चोपचारैः सम्पूज्य , अभिमन्त्रयेत्-

पशुस्त्वं बलिरूपेण मम भाग्यादवस्थितः ।
प्रणमामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणम् ॥१॥
चण्डिकाप्रीतिदानेन दातुरापद् विनाशनम् ।
चामुण्डाबलिरूपाय बले तुभ्यं नमोऽस्तु ते ॥२॥
यज्ञार्थं बलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयम्भुवा ।
अतस्त्वां घातयाम्यद्य यस्माद्यज्ञे मतो वधः ॥३॥

रसना त्वं चण्डिकायाः सुरलोक प्रसाधकः । इति । ह्रां ह्रीं खड्ग , आं हूं फट् । इति पठित्वा हस्ते शस्त्रं गृहीत्वा , वीरासने उपविश्य ॐ कालि कालि वज्रेश्वरि लौहदण्डाय नमः इति पठन् कूष्माण्डं छेदयेत् । छेदनावसरे न विलोकयेत्। ततश्छिन्ने बलौ कुङ्कुमेननुलेपयेत् । कौशिकि रुधिरेणाप्यायताम् इति देव्यै अर्धं निवेद्य , अवशिष्टार्धस्य तेनैव खड्गेन पुनः पञ्चभागान् कृत्वा - पूतनायै बलिभागं निवेदयामि । चरक्यै बलिभागं निवेदयामि। विदार्यै बलिभागं निवेदयामि । पापराक्षस्यै बलिभागं निवेदयामि । क्षेत्रपालाय बलिभागं निवेदयेत्--

क्षेत्रपाल बलिदानम्

एक बांस के पात्र में पत्ता बिछाकर उसमें काला उड़द , दही, भात और जलपात्र रखकर सिन्दूर, कज्जल द्रव्य, चौमुखा दीपक प्रज्वलित कर संकल्प करें -

ॐ अद्येत्यादि० मम सकल अरिष्ट शान्ति पूर्वकं प्रारब्धकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थ क्षेत्रपाल पूजनं बलिदानं च करिष्ये ।

अथ क्षेत्रपाल बलिदान मन्त्रः -

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद् व्वैश्वानरात्पुर ऽएतारमग्नेः ।
एमेनमव्वृधन्नमृता ऽअमर्त्य व्वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः ।

नमो वै क्षेत्रपालस्त्वं भूतप्रेतगणैः सह।
पूजा बलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा ॥
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे।
आयुरारोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा ॥

ॐ क्षौं क्षेत्रपालाय सांगाय भूत प्रेत पिशाच डाकिनी शाकिनी पिशाचिनी मारीगण वेतालादि परिवार सहिताय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय इमं सचतुर्मुख दीप दधि माष भक्तबलिं समर्पयामि।

ऐसा बोलकर प्रार्थना करें -

भो क्षेत्रपाल क्षेत्रं रक्ष बलिं भक्ष मम सपरिवारस्य सकुटुम्बस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयतां न मम।

(नापित अथवा किसी भृत्य आदि के द्वारा बलि को चौराहे पर रखवा दें बलि ले जाने वाले व्यक्ति के पीछे दरवाजे तक जल का छींटा दें और द्यौः शान्ति इत्यादि मन्त्र बोलें।)

पूर्णाहुत्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पादिभिः सम्पूज्य--

अथ पूर्णाहुतिमन्त्राः-

ॐ समुद्रादूर्म्मिर्मधुमाँ २॥ उदारदुपा शुना सममृतत्वमानट् ॥
घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः ॥१॥
व्वयं नाम प्रब्रव्वामा घृतस्यास्मिन्यज्ञे धारयामा नमोभिः ॥
उप ब्रह्मा श्रृणवच्छस्यमानं चतुः। श्रृङ्गेवमीद् गौर ऽएतत् ॥२॥
चत्वारि श्रृङ्गत त्रयो ऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो ऽअस्य ॥
त्रिधा वद्धो व्वृषभो रोरवीति महो देवो मर्तयाँ २॥ ऽआविवेश ॥३॥
त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन् ॥
इन्द्र ऽएक सूर्य ऽएकञ्जजान व्वेनादेक स्वधया निष्दृतक्षुः ॥४॥
एता ऽअर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्व्रजा रिपुणा नावचक्षे॥

घृतस्य धारा ऽअभिचाकशीमि हिरण्ययो व्वेतसो मध्य ऽआसाम् ॥५॥
सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेना ऽअन्तर्हदा मनसा पूयमानाः ॥
एते ऽअर्षन्त्यूर्म्मयो घृतस्य मृगाऽ इव क्षिपणोरीषमाणाः । ।६ ॥
सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूधनासो व्वातप्प्रमियः पतयन्ति यवाः॥
घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः ॥७॥
अभिप्प्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्ण्यः स्मयमानासो ऽअग्निम् ॥
घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्य्यति जातवेदाः ॥८॥
कन्या ऽइव व्वहतुमेतवा ऽउ ऽअञ्ज्यञ्जाना ऽअभिचाकशीमि ।
यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा ऽअभि तत्त्पवन्ते ॥९॥
अभ्यर्षत सुष्टुतिङ्गव्व्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त ॥
इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्त्पवन्ते ॥१० ॥
धामन्ते व्विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि ॥
अपामनीके समिथे य ऽआभृतस्तमश्याम मधुमन्तन्त ऽऊर्मिम् ॥११॥
पुनस्त्वादित्या रुद्रा व्वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो व्वसुनीथ यज्ञैः ॥
घृतेन त्वं तन्वं व्वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥१२॥
सप्त ते ऽअग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऽऋषयः सप्त धाम प्रियाणि ॥
सप्त होत्राः सप्तधा त्त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा । ।१३ ॥
मूर्धानं दिवो ऽअरतिं पृथिव्या व्वैश्वानरमृत ऽआ जातमग्निम् ॥
कवि सम्म्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥१४॥
पूर्णा दर्व्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत ॥
व्वस्नेव व्विक्क्रीणा वहा ऽइषमूर्ज शतक्क्रतो स्वाहा ॥१५॥

इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नये अद्भ्यश्च न मम-इति प्रोक्षणीपात्रे सुवाऽवशिष्टं घृतं त्यजेत् ।

अथ वसोर्धारामन्त्राः- ॐ सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऽऋषयः स धाम प्रियाणि ॥ सप्त होत्राः सप्तधात्त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्वघृतेन स्वाहा ॥१॥

शुक्क्रज्योति च चित्त्रज्योति च सत्यज्योतिश् च ज्योतिष्माँश् च । शुक्क्रश् च ऽऋतपाश्श्चात्य वहाः ॥२॥ ईदृङ् चान्यादृङ् च सदृङ् च प्रतिदृङ् च । मितश्च्च सम्मितश्च्च सभराः ॥३॥ ऋतश् च सत्यश् च ध्रुवश्च धरुणश् च । धर्त्ता च व्विधर्त्ता च व्विधारयः ॥४॥ ऋतजिच्चसत्त्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश् च । अन्तिमिन्त्रश् च दूरे ऽअमित्त्रश् च गणः ॥५॥ ई दृक्षास ऽएतादृक्षासऽऊषुणः न सदृक्षासः प्रतिसदृक्षास ऽएतन । मितासश्च्च सम्मितासो नो ऽअद्य सभरसो मरुतो यज्ञे ऽअस्मिन् ॥६॥ स्वतवाँश्श्च प्रघासी च सान्तपनश्श्च गृहमेधी च। क्क्रीडी च शाकी चोज्जेषी ॥७॥ इन्द्रं दैवीविंशो मरुतोऽनुवर्मानोऽभवन्यथेन्द्रं दैवीव्विंशो मरुतोऽनुवर्मानो भवन्। एवमिमं यजमानं दैवीश्च्च व्विशो मानुषीश्च्चानुवर्मानो भवन्तु ॥८ ॥ इम स्तनमूर्जस्वन्तं धयापां प्रपी नमग्ने सरिरस्य मध्येऽ उत्त्सं जुषस्व मधुमन्तमर्व्वन्त्स मुद्रिय सदनमा विशस्व ॥९॥

घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्वृते श्रितो घृतम्म्वस्य धाम ॥ अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं व्वृषभ व्वक्षि हव्यम् ॥१०॥

ॐ व्वसोः पवित्त्रमसि शतधारं व्वसोः पवित्त्रमसि सहस्रधारम् ॥ देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्त्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा ॥११॥ इदमग्नये वैश्वानराय न मम । अवशिष्ट आज्यं रुद्रकलशे त्यागः ।

अथ कुण्डाग्नेः प्रदक्षिणामन्त्रः :- ॐ अग्ने नय सुपथा राये ऽअस्मान्विश्वानि देव व्वयुनानि विद्वान् । यु योद्ध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम ऽउक्ति व्विधेम ॥

अथाग्नि स्तुतिः--

जिते ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन।
नमस्ते स्तु हृषीकेश महापुरुषपूर्वज ॥
देवानां दानवानां च सामान्यमधिदैवतम् ।
सर्वदा चरणद्वन्द्वं ब्रजामि एकत्स्वमसि लोकस्य सृष्टा शरणं , तव ॥
संहारकस्तथा । अध्यक्षश्चानुमन्ता च गुणमाया समावृतः ॥
संसारसागरं घोरं अनन्तक्लेशभाजनम् ।

त्वमेव शरणं प्राप्य निस्तरन्ति मनीषिणः ।।
न ते रूपं न चाकारोनायुधानि न चास्पदम् ।
तथापि पुरुषाकारोभक्तानां त्वं प्रकाशसे ।।
चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च।
हूयते च पुनर्द्धाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः ।।

अथ भस्मधारणमन्त्र :- ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे । -

कश्यपश्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम्। यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिण बाहुमूले । तन्नो (तत्ते) ऽअस्तु त्रायुषमिति हृदि ।

संस्रवप्राशनम्--

ततः प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षिप्तस्य आज्यस्य यजमानेन अनामिकांगुष्ठाभ्यां प्राशनं कार्यम्।

मन्त्रः-

ॐ यस्माद्यज्ञ पुरोडाशाद्यज्वानो ब्रह्मरूपिणः ।
तं संस्रव पुरोडाशं प्राश्नामि सुख पुण्यदम् ।।

ततः आचम्य प्रणीतापात्रे निहिते पवित्रं आदाय ग्रन्थिं मुक्त्वा ताभ्यां शिरः सम्मृज्य ते पवित्रे अग्नौ प्रक्षिपेत् ।

अथ ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्-

कृतस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गत्तासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं च इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे । इत्युक्त्वा ब्रह्मणे पूर्णपात्रं दद्यात् ।

पूर्णपात्र ग्रहणानन्तरं ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवीत्वा प्रतिगृह्णातु इति ब्रह्मा वदेत् ।

ततः प्राणीतापात्रं पश्चादानीय निनयेत् । अग्नेः पश्चात् प्रणीताविमोकः ।

ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्ते कृण्वन्तु भेषजम् । इत्यनेन यजमानं उपयमन कुशैर्मार्जयेत् । ततः उपयमन कुशाना अग्नौ प्रक्षेपः । ब्रह्म ग्रन्थि

विमोकः ।

गोदान सङ्कल्पः--

कृतस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं इदं गोनिष्क्रय भूतं द्रव्यं अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

भूयसी दक्षिणा सङ्कल्पः--

कृतस्य अमुकयागकर्मणः न्यूनातिरिक्त दोषपरिहारार्थं नानानां- गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नट-नर्तक-गायकेभ्यो दीनानाथेभ्यो पङ्गु अन्धेभ्यश्च यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां यथा काले विभज्य दातुमहमुत्सृजे ।

श्रेयो दानम्--

आचार्यः हस्ते जल अक्षतान् पूगीफलं आदाय - ॐ भवन्नियोगेन

मया एर्भिब्राह्मणैः सह अस्मिन् अमुकयागाख्ये कर्मणि यत्कृतं आचार्यत्वं तदुत्पन्नं श्रेयः तत् अमुना जलाक्षत पूगीफलेन तुभ्यमहं सम्प्रददे । तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भव । भवामि इति यजमानः ब्रूयात् ।

दक्षिणा सङ्कल्पः--

अद्य कृतस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गत्तासिद्धयर्थं तत्सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं च आचार्यादिभ्यो हस्तगत दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे ।

ब्राह्मण भोजन सङ्कल्पः--

कृतस्य अमुकयागकर्मणः तत्सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं च यथासङ्ग्याकान् ब्राह्मणान् पक्वान्नेन मिष्ठान्नेन भोजयिष्ये । तेभ्यः दक्षिणादिकं च दास्ये । तेन श्री कर्माङ्ग देवता प्रीयतां न मम।

पीठदान सङ्कल्पः--

कृतस्य अमुकयागकर्मणाः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफल प्राप्त्यर्थं च इदं प्रधानपीठं ग्रहपीठं मातृकापीठं सोपस्करं दक्षिणा सहितम् आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

अथ देवानामुत्तर पूजने सूक्त निर्णयः- विष्णुयागे पुरुष

सूक्तेन, रुद्रयागे रुद्रसूक्तेन तथा शक्तियागे श्रीसूक्तेन देवतानां पूजनं कर्त्तव्यम्।

अथोत्तर पूजनम्--

कृतस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं आवाहितदेवतानां उत्तरपूजनं करिष्ये।

अथाभिषेकः---

ततो आचार्यः स्थापितयोः रुद्रकलश प्रधानकलशयोः जलं एकस्मिन् पात्रे एकीकृत्य तज्जलेन दूर्वा कुशा पञ्चपल्लवैः प्राडमुखं सपरिवारं यजमानं अभिषिञ्चेयुः।

तत्राभिषेक मन्त्राः-

ॐ देवस्य त्त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो सरस्वत्यै हस्ताभ्याम्। साम्प्राज्ज्येनाभिषिञ्चामि ॥ व्वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः

ॐ देवस्य त्त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्ण्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्प्राज्येनाभिषिञ्चामि ॥

ॐ देवस्यत्त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥ अश्विनौभैषज्ज्येन तेजसे ब्ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्ज्येन व्वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि ॥ ३ ॥

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु महेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः ॥१॥
प्रद्युम्नश्चाऽनिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निरुद्धश्च यमो वै निर्ऋतिस्तथा ॥२॥

वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा ॥३॥
कीर्तिर्लक्ष्मीधृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ॥४॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।

आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसिताऽर्कजाः ॥५॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देव - दानव गन्धर्वा यक्ष राक्षस पन्नगाः ॥६॥
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाऽप्सरसां गणाः ॥७॥
अस्त्राणि सर्वशास्त्राणि राजानो वाहनानि च ।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ॥८॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः ।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ॥९॥
अमृताभिषेकोऽस्तु ।

छायापात्र दानम्--

कांस्यपात्रे स्थिताज्यं च आत्मरूपं निरीक्ष्य तु । ससुवर्णं तु यो दद्यात् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

ॐ रूपेण वो रूपमभ्यागां तुथो वो व्विश्ववेदा व्विभजतु । ऋतस्य पथा प्प्रेत चन्द्रदक्षिणा व्वि स्वः पश्श्य व्वयन्तरिक्षं यतस्व सदस्यैः ॥ इति मन्त्रमुक्त्वा आज्यावेक्षणं कृत्वा संकल्पं कुर्यात् ।

अद्येत्यादि० मम कलत्रादिभिः सह दीर्घायुः आरोग्यसुतेजस्वित्वसुभगत्व सर्वपाप प्रशमनोत्तर जन्मराशेः सकाशात् नामराशेः सकाशाद्वाजन्मलग्नात् वर्षलग्नात् गोचराद्वा ये केचित् चतुर्थ अष्टमद्वादश आदिअनिष्ट स्थान स्थिताः क्रूरग्रहास्तैः सूचितं सूचयिष्यमाणञ्च यत्सर्वारिष्टंतद्विनाशार्थं सर्वदा तृतीयैकादश शुभस्थान स्थितवत् उत्तम फल प्राप्त्यर्थंकांस्यपात्रे उपन्यस्तं घृत बिन्दुकणिका समसंख्यावच्छिन्न नैरुज्यचिरञ्जीवित्वकामैतत् स्वशरीर छाया अवलोकित घृत पूरितं कांस्य पात्रंस्वर्णसहितं सुपूजितं श्रीमहामृत्युञ्जय देवता प्रीत्यर्थं चन्द्रमा प्रजापति-बृहस्पति दैवतं यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ।

देवतानां विसर्जनम्--

ॐ उत्तिष्ठ ब्ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे ।
उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव ऽइन्द्र प्राशूर्भवा सचा ।।१।।
ॐ यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा ।
एषते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्व्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहा ।।२।।
यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादायमामकीम् ।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।।१।।
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानंपरमेश्वर ।
यत्र ब्रह्मादयो देवा तत्र गच्छ हुताशन ।।२।।
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषुयत् ।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः ।।३।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ।।४ ।।
ॐ विष्णवे नमः ।। ॐ विष्णवे नमः ।। ॐ विष्णवे नमः ।।

अथ अवभृथ स्नान विधिः

यजमानः प्रधानवेद्युपरि स्थापितं प्रधानकलशं , हवनकुण्डाद् बहिः पतितं हवनीयद्रव्यं, सुक्- सुवादियज्ञपात्रं पूजनसामग्रीं च गृहीत्वा वेदमन्त्रोच्चारण-भगवन्नामकीर्तन-वाद्यघोषपुरस्सरं आचार्यादिऋत्विग्भिः नगरवासिभिश्च सह नदीं जलाशयं वा गच्छेत् । अर्धमार्गोपरि क्षेत्रपालं सम्पूज्य क्षेत्रपालाय बलिं दद्यात् । नदीं जलाशयं वा गत्वा आचार्यादयः स्वस्तिवाचनं कृत्वा संकल्पं कुर्यात् ।

देशकालौ सङ्कीर्त्य मम सर्वेषां परिवाराणां तथान्येषांसमुपस्थितानां जनानाञ्च सर्वविधकल्याणपूर्वकं धर्मार्थकाममोक्ष-चतुर्विधपुरुषार्थ सिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीतिपूर्वकं च कृतस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्थं च पुण्यकालेऽस्मिन्अस्यां नद्यां जलाशये वा माङ्गलिकं अवभृथस्नानंसमस्तसमुपस्थितजनैःसह अहं करिष्ये ।

अनन्तरं नद्यां जलाशये वा जलमातृणां आवाहनं पूजनं च कुर्यात्।

ॐ मत्स्यै नमः मत्सीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ कूर्म्यै नमः कूर्मीमावा० । ॐ वारायै नमः वाराहीमावा० । ॐ दर्दुर्यै नमः दर्दुरीमावा० । ॐ मकर्यै नमः मकरीमावा० । ॐ जलूक्यै नमः जलूकीमावा० । ॐ तन्तुक्यै नमः, तन्तुकीमावा० ।

इस इकाई में हवन बलिविधान पूर्णाहूति उत्तर पूजन एवं विसर्जन के विषय में निर्देश दिया गया है इन उक्त विधान को विस्तार से जानने के लिए खण्ड एक की इकाई पांच का अनुसरण करें।

■ ■ ■